सुकरात का मुकदमा
और
उनकी मृत्यु

सुकरात का मुकदमा और उनकी मृत्यु

प्लेटो

अनुवाद

मन्मथनाथ गुप्त

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

इस पुस्तक का पहला संस्करण 'इंडियन नेशनल कमीशन फार कोआपरेशन विद यूनेस्को' द्वारा यूनेस्को की सहायता से प्रकाशित किया गया था।

ISBN 81-237-2934-0

पहला संस्करण : 1970

पहली आवृत्ति : 1999 *(शक 1921)*

SUKARAT KA MUQADAMA AUR UNAKI MRITYU *(Hindi)*

रु. 35.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया,
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

विषय-सूची

भूमिका

आज हम जिसे यूरोपीय सभ्यता और संस्कृति के नाम से जानते हैं, उसमें निश्चित रूप से ग्रीस का सबसे अधिक दान है। यों तो यह कहा जाता है कि यूरोप ने रोमनों से कानून की एक महान पद्धति तथा उसके साथ ही साथ राज्य-संचालन का कौशल प्राप्त किया, जूडिया से धर्म पाया और ग्रीस से दर्शन, विज्ञान और साहित्य पाया, पर इतने से सत्य प्रकट नहीं होता। विभिन्न क्षेत्रों के बड़े से बड़े साहित्यकारों ने ग्रीस की बात छिड़ते ही जिस उच्छ्वसित ढंग से उसकी प्रशंसा की है, वह बहुत ही विशिष्ट है।

हम सभी लोग जानते हैं कि किस प्रकार जर्मन महाकवि गेटे ने कालिदास के शकुंतला नाटक की प्रशंसा की है, पर ग्रीस के कवियों के संबंध में उनके ये मंतव्य विशेष ध्यान देने योग्य हैं। उनका कहना है : "इशीलस और सोफोक्लिस की तरह प्राचीन ग्रीक कवियों के सामने मैं तो बिल्कुल कुछ नहीं हूं।"

कवि वर्ड्सवर्थ ने इसी प्रकार कहा है : "भला डिमोस्थिनिस से बढ़कर वक्ता और शेक्सपियर के बाद इशीलस-सोफोक्लिस (यूरिपिडिस का तो कुछ कहना ही नहीं) के मुकावले में काव्यमय नाटक कहां मिल सकते हैं।"

हेरोडोटस के संबंध में वर्ड्सवर्थ का यह कहना था कि बाइबिल के बाद उससे बढ़कर दिलचस्प और शिक्षाप्रद कोई पुस्तक नहीं है। कविवर शैली की प्रशंसा इनके मुकाबले में कम उच्छ्वसित थी, पर उनका भी यह कहना था : "ग्रीकों की कविता दूसरे साहित्यों के मुकाबले में काफी ऊंचा मानदंड रखती है, यद्यपि वह इतनी ऊंची नहीं है कि वह बहुत ऊंची जंचे और दूसरी बहुत नीचे।"

उनका कहना था, "पैरिक्लिस के जन्म और अरस्तू की मृत्यु के बीच का युग निश्चित रूप से विश्व-इतिहास का सबसे स्मरणीय युग है। चाहे इस पर अलग से विचार किया जाए या बाद के सभ्य मानव पर उसका क्या असर रहा, उस दृष्टि से उस पर विचार किया जाए।...इन सूक्ष्म और गंभीर मनों के जो इतस्ततः विक्षिप्त टुकड़े हमें प्राप्त हुए हैं, वे सुंदर मूर्ति के भग्नांशों की तरह हमारे सामने अस्पष्ट रूप से उस समग्र की महत्ता तथा पूर्णता का चित्र पेश करते हैं जो अब नहीं रहा। विविधता, सरलता, नमनीयता, प्रचुरता, जिस दृष्टि से भी देखा जाए, पाश्चात्य जगत में ग्रीक भाषा से बढ़कर कोई भाषा न रही।"

इसी प्रकार सैकड़ों उद्धरण दिए जा सकते हैं। फ्रांस के युगांतरकारी लेखक अनातोल फ्रांस का यह वक्तव्य सुनिए : "मैं अब जानता हूं कि मैं ग्रीकों का कितना ऋणी हूं क्योंकि मेरा सब कुछ उन्हीं का है। हम जानते हैं कि जगत और मनुष्य का जो कुछ भी बुद्धिसंगत है, वह सब उन्हीं से आया हुआ है।"

मिल का तो यह कहना था कि ईसाइयत के अतिरिक्त बाकी सभी ऐसी चीजों की उत्पत्ति, जिन पर आधुनिक जगत नाज करता है, ग्रीस से हुई। और उद्धरणों की आवश्यकता नहीं है।

हम सुकरात के पहले के ग्रीक दर्शन-शास्त्र पर एक विहंगम दृष्टि डाल लें। थेलस या थेलिस को ग्रीक दर्शन का पिता बताया गया है। उनका जन्म ई. पू. 626 में एशियाई कोचक के मिलिटस नामक स्थान में हुआ था। इनका कहना था कि जल ही मौलिक उपादान है और उसी से जगत की उत्पत्ति हुई है। उन्होंने अपने चारों तरफ देखा और यह निष्कर्ष निकाला कि आर्द्रता एक ऐसा उपादान है, जो सब में परिव्याप्त है। इस प्रकार से वे भौतिकवादी थे, क्योंकि वे जल से ही जगत की उत्पत्ति मानते थे। मजे की बात यह है कि वे देवताओं को भी मानते थे, पर साथ ही यह भी बताते थे कि उत्पत्ति भी जल से ही हुई है।

ऐनैक्सिमिनिस नामक दार्शनिक भी मिलिटस में पैदा हुए थे। उनका जन्म ई. पू. 529 या ई. पू. 548 में हुआ। वे सब चीजों की उत्पत्ति वायु से मानते थे। उन्होंने यह अनुभव किया कि उनके अंदर जो वायु है, वही उन्हें चला रही है और यही जीवन है। उन्होंने इस प्रकार तर्क किया कि भीतर की वायु बाहर की वायु का ही अंग है, इसलिए सब चीजों की उत्पत्ति वायु से ही हुई। इस प्रकार ऐनैक्सिमिनिस भी भौतिकवादी रहे।

पर उनके अनुयायी ऐपोलोनिया के डोयोजिनिस ने एक नया मोड़ दिया और भाववाद का प्रारंभ किया। डायोजिनिस ने ऐनैक्सिमिनिस के अनुसार वायु को ही प्रथम माना। पर उन्होंने वायु को एक विस्तृततर और गंभीरतर अर्थ दिया, जिससे वह करीब-करीब आत्मा हो गयी। उन्होंने इसे शक्ति और बुद्धि से समन्वित करके कल्पना की। उन्होंने यह भी कहा कि यह विश्व एक सप्राण अस्तित्व है, जो स्वतःस्फूर्त रूप से अपना विकास कर रहा है और इसमें जो कुछ परिवर्तन हो रहा है, वह उसकी जीवनी-शक्ति के कारण हो रहा है।[1] उनका कहना यह था कि सारी सृष्टि और पादार्थिक क्रिया श्वास-प्रश्वासमूलक है। उन्होंने आर्द्रता के प्रति सूर्य के आकर्षण और लोहे के प्रति चुंबक के आकर्षण में भी श्वास-प्रश्वास ही की क्रिया देखी। पशुओं से मनुष्य की श्रेष्ठता की व्याख्या उन्होंने इस प्रकार की कि मनुष्य सिर ऊंचा करके श्वास लेता है, इसलिए वह पवित्रतर वायु ग्रहण करता है।

---

1. जी. एच. ल्यूस—दर्शन का जीवनीमय इतिहास, पृ. 9

ऐनाक्सिमिन्डेर (जन्म ई. पू. 610) एक गणितज्ञ थे। उन्होंने थेलिस के जल वाले सिद्धांत पर आपत्ति की और यह कहा कि जल तो एक वस्तु मात्र है और एक वस्तु सब वस्तु नहीं हो सकती। इसीलिए उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि संसार की उत्पत्ति जल से नहीं बल्कि सीमाहीन अखिल से हुई। यद्यपि सीमाहीन अखिल संबंधी उनकी धारणा बहुत कुछ सूक्ष्म है, फिर भी वह एक बड़ी हद तक पादार्थिक है। सीमाहीन अखिल से उनका मतलब किसी निराकार धारणा से नहीं बल्कि सब वस्तुओं से था। उन्होंने उसे एक विचार या प्रतीक तक पहुंचा नहीं दिया था जैसाकि ल्यूस ने लिखा है : ''उनकी सर्ववस्तु की धारणा असीम अस्तित्व की है न कि असीम मन की।'' दूसरे शब्दों में, हम ऐनाक्सिमिन्डेर को भी भाववादी नहीं कह सकते।

पाईथागोरस को इसके बाद गिना जाता है यद्यपि उनका काल ठीक-ठीक ज्ञात नहीं। विभिन्न हिसाबों के अनुसार उनकी काल-गणना में 84 साल का अंतर पड़ता है। उनके संबंध में यह कहा जाता है कि फिलॉसफी या दर्शन शब्द का प्रयोग पहले-पहल उन्होंने ही किया। यहां भारतीय पाठक के लिए एक दिलचस्पी की बात यह है कि उनके संबंध में यह जनश्रुति है कि उनके बड़प्पन का कारण प्राच्य शिक्षा थी। पर प्राच्य शब्द से क्या मतलब है, इसका स्पष्टीकरण नहीं किया गया है। वे फिलॉसफी शब्द से क्या अर्थ लेते थे, यह भी स्पष्ट कर दिया जाए। उन्होंने लियोन्टियस से कहा था, ''मुझे में कोई कला नहीं है, मैं तो फिलॉसफर (दार्शनिक) हूं।''

इसका स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने कहा था, ''दार्शनिक वही है जो लोभ और अहंकार त्याग कर प्रकृति का अध्ययन करता है।'' यह तो स्पष्ट है कि दर्शन से उनका मतलब मेटाफिजिक्स या ऐसी बातों पर दंतकटाकटी करना नहीं था, जो अप्रमेय हों। उन्होंने एक गुप्त समिति भी बनाई थी, जिसमें बड़ी गंभीर परीक्षाओं के बाद ही किसी को लिया जाता था। पांच साल तक तो अभ्यर्थी या उम्मीदवार को मौन धारण करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से कृच्छ साधन कराए जाते थे। इन परीक्षाओं के बाद प्रार्थी को गणित से आरंभ करना पड़ता था क्योंकि गणित के संबंध में यह समझा जाता था कि यह शरीर और शरीरी वस्तुओं के बीच एक माध्यम के रूप में काम करते हुए इंटेलिजिबिल यानी बौद्धिक वस्तुओं में ही जा सकता है।

पाईथागोरस की शिक्षा यह थी कि संख्या ही वस्तुओं का मूलतत्व है। उनका कहना था कि प्रत्येक वस्तु बराबर स्थिति और गुण बदल रही है, इसका कारण परिवर्तनीय है पर अस्तित्व का मूलतत्व परिवर्तनीय नहीं हो सकता। पाईथागोरस का कहना यह था कि इस परिवर्तनशीलता और विविधता की तह में कोई न कोई अपरिवर्तनीय अस्तित्व होगा, इसी का नाम उन्होंने संख्या रखा। उन्होंने यह कहा कि प्रत्येक वस्तु की स्थिति, गुण आदि में परिवर्तन हो सकता है, पर वह किसी भी रूप

में, किसी भी अवस्था में हो, वह संख्या से अलग नहीं हो सकता। उनका कहना था कि यह हमेशा 'एक' वस्तु रहेगी, किसी भी रूप में इस एकत्व में परिवर्तन नहीं हो सकता। यह न तो एक से बढ़ सकता है, न अनेक हो सकता है। यदि उसे तोड़ा जाए, तो भी वह एक ही रहेगा।

कहना न होगा कि यह विचार-पद्धति बहुत कुछ अद्‌भुत है क्योंकि किसी भी तरह एक शब्द को ला देने से ही इसे सार्थकता प्राप्त होती है। जो कुछ भी हो, इसी प्रकार तर्क करते हुए उन्होंने यह सिद्धांत स्थापित किया कि अनंत की संज्ञा एक ही है। उन्होंने कहा कि 'एक' निरवच्छिन्न संज्ञा है जिसे किसी और वस्तु से, यहां तक कि किसी और संख्या से, संबंध की आवश्यकता नहीं है। दो का अर्थ एक और एक है। इसी प्रकार सारी संख्याएं हैं। इन बातों से यह प्रमाणित करने की चेष्टा की गयी है कि पाईथागोरस एकेश्वरवादी थे। पर इस प्रकार की धारणा का कोई अर्थ नहीं मालूम होता क्योंकि वहां तो केवल 'एक' है, ईश्वर का कहीं पता नहीं; और वह एक किस प्रकार है, उसका कुछ दिग्दर्शन नहीं कराया गया।

जेनोफेनिस (जन्म लगभग ई. पू. 620) ने एकेश्वरवाद की बातें कहीं, पर उनके एकेश्वरवाद में विश्व, संसार और ईश्वर की एकता अंतर्निहित थी। वे विश्व, संसार और ईश्वर को पृथक करके देखने में असमर्थ थे।

हेराक्लिटस (जन्म ई. पू. 503) अग्नि से विश्व की उत्पत्ति मानते थे। उनका कहना था कि इस विश्व की रचना न ईश्वर ने की है, न मनुष्य ने, यह था, है, और हमेशा एक चिरंजीवी अग्नि के रूप में रहेगा, जो उचित प्रमाण में आत्म-निर्वासित है। उन्होंने इसी के साथ परिवर्तन के सिद्धांत को भी संयुक्त कर दिया क्योंकि आग तो हमेशा जलती, लपटें देती, राख बनाती रहती है।

ऐम्पेडोक्लिस (जन्म लगभग ई. पू. 444) ने यह कहा कि चार मूल तत्व हैं–क्षिति, अप्, तेज और मरुत्। उनको बुद्धि और प्रयोग में संदेह था।

डिमोक्रिटस (जन्म ई. पू. 460) बहुत धनी परिवार के थे। कहा जाता है कि उन्हें मिस्र में भ्रमण करने का मौका मिला और उससे उन्हें बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने एक तत्व या चार तत्वों के सिद्धांत का त्याग कर दिया और कहा कि परमाणु से ही जगत की उत्पत्ति हुई है। स्मरण रहे कि उनका परमाणु सिद्धांत आधुनिक परमाणु सिद्धांत से पृथक था।

प्रोटागोरस डिमोक्रिटस के ही समसामयिक थे। उन्होंने यह सिद्धांत रखा कि मनुष्य ही सब वस्तुओं का पैमाना है। उन्होंने यह कहा कि भूत बदलते रहते हैं, उम्र तथा अवस्था के अनुसार अनुभूतियां भी बदलती रहती हैं। स्वस्थ और अस्वस्थ व्यक्तियों की अनुभूतियों में भी फर्क होता है। इसलिए मनुष्य ही मानदंड है। जो कुछ मनुष्य अनुभव करता है, वह है। बाकी का अस्तित्व नहीं है।

ग्रीक दार्शनिक सुकरात का समय लगभग ई. पू. 441 से 399 के बीच समझा

जाता है। संसार के इतिहास में बहुत थोड़े से लोग ऐसे हुए, जिनके व्यक्तित्व और जीवन का अपने बाद के लोगों पर इतना अधिक प्रभाव पड़ा।

सुकरात ने स्वयं कोई ग्रंथ नहीं लिखा, पर उनके शिष्यों ने उन पर बहुत लेख लिखे और उसी के आधार पर हमारे सामने सुकरात का व्यक्तित्व उभरता है। मुझे कुछ ऐसा लगता है कि ऐतिहासिक दृष्टि से सुकरात के विचारों का महत्व इसलिए बहुत अधिक है कि उन्होंने पहले-पहल परंपरा से हटकर, बिल्कुल उससे ऊपर उठकर सत्य की खोज करने की आवाज दी। यह उस युग में ही नहीं बल्कि आज के युग में भी बहुत बड़ी आवाज है और यह नहीं कहा जा सकता कि आज इस प्रकार के चिंतन या नारे की आवश्यकता नहीं है।

सुकरात के समय में कुछ फिरके, संप्रदाय ऐसे थे, जिनकी बातों को लोग बिना सोचे-विचारे मान लिया करते थे। उन्हीं बातों को जानना उस समय विद्या कहलाती थी। दुख है, उनके लगभग ढाई हजार वर्ष बाद परंपराएं और अंधविश्वास आज भी सत्य के मार्ग को संपूर्ण रूप से अवरुद्ध किए हुए हैं। हमारे यहां तो मुसीबत यह है कि ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ लोगों के आचरण में कोई फर्क नहीं आता मानो ज्ञान का आयाम और हो, जीवन जीने का आयाम और हो। जब लोगों को सूर्य-ग्रहण या चंद्र-ग्रहण के संबंध में कुछ पता नहीं था और वे मात्र अनुमान और अटकल के सहारे चलते थे, उस युग में लोगों ने कुछ कल्पनाएं की थीं। हां, कुछ कल्पनाएं कवित्वपूर्ण हो गयीं; जैसे समुद्रमंथन। पर आज भी उन्हीं अटकलों और गपोड़ों को आधार बनाकर ग्रहण के अवसर पर राहु और केतु से चंद्र और सूरज की मुक्ति के लिए प्रार्थना करना, फिर मोक्ष स्नान करना—यह समझ में नहीं आता। इस समय लगभग बीस प्रतिशत व्यक्ति अपनी स्कूली किताबों में यह पढ़ते हैं कि चंद्र-ग्रहण या सूर्य-ग्रहण कैसे होता है? इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि लोग जानते नहीं हैं। फिर भी ग्रहणों के अवसरों पर विशेष दान देना और स्नान आदि करना जारी है। ये दोनों काम अच्छे हैं, पर उन्हें पहले के अज्ञान के साथ संयुक्त करके जारी रखना यही तो समस्या है।

सुकरात के युग में रूढ़ियां और परंपराओं के विरुद्ध विद्रोह करना और लोगों से विद्रोह की बात कहना, बहुत बड़ी उपलब्धि थी। इसीलिए सुकरात को विष का प्याला पिलाकर मृत्यु-दंड दिया गया। सुकरात ने जिन कुसंस्कारों के साथ लड़ाई की, आज वे कुसंस्कार उसी रूप में मौजूद नहीं हैं। फिर भी, जैसा कि मैंने बताया, अंधविश्वास और कुसंस्कारों की आज भी कमी नहीं है और हमने यह भी देख लिया कि ज्ञान की वृद्धि के साथ-साथ स्वयं कुसंस्कारों का अंत नहीं होता। यह स्थिति बहुत अद्भुत है। इसी कारण आज भी सुकरात की उतनी ही आवश्यकता है।

सुकरात के जिन वक्तव्यों को और मान्यताओं को इस पुस्तक में एकत्रित किया गया है, उनके संबंध में बराबर यह याद रखा जाए कि ढाई हजार वर्ष पहले ये

तर्क दिए गए थे। आज शायद इन तर्कों को उस प्रकार से देना या पेश करना, जैसा कि सुकरात ने किया था, कुछ अटपटा और पुराने ढंग का लगे।

एक बात की ओर मैं विशेषकर ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं। वह यह कि सुकरात ने अपने युग की परंपराओं और कुसंस्कारों के विरुद्ध विद्रोह किया और वह किसी भी दामों पर अपने वक्तव्यों से पीछे हटने के लिए तैयार नहीं हुए। फिर भी यह द्रष्टव्य है कि इतना बड़ा स्वतंत्र चिंतक भी अपने युग के कुसंस्कारों से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हो सका। अपने जीवन के अंतिम दिन सुकरात के मुख से परलोक का जो ब्योरा दिया गया है, उसे पढ़ते हुए यह धारणा बराबर याद आती है।

शायद मानव के लिए अपने युग के सारे कुसंस्कारों के विरुद्ध विद्रोह करना या उठ खड़ा होना संभव नहीं है। बहुत कम ऐतिहासिक विभूतियां इस कसौटी पर खरी उतर सकती हैं।

इस संबंध में हमारे प्राचीन इतिहास से दो बहुत मजेदार उदाहरण नीरद चौधरी ने अपनी एक पुस्तक में दिए हैं। एक उदाहरण 'मनुस्मृति' का है और दूसरा कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' का। कौटिल्य ने कूटनीति के संबंध में बहुत सुंदर ग्रंथ लिखा। बाद को चलकर जिसे 'रियल पॉलिटिक' कहा गया, कौटिल्य ने उसकी सबसे ठोस पाठ्य-पुस्तक लगभग सुकरात के समय ही प्रस्तुत कर दी। उसके प्रतिपादनों में किसी भी प्रकार के आदर्शवाद या भावुकता की गुंजाइश नहीं रखी गई है। यह बताया गया कि राजशक्ति को सुदृढ़ और शत्रु को कमजोर बनाकर उसे समाप्त कर देने का क्या तरीका है। इसी प्रकार मनुस्मृति में प्रचलित वर्णाश्रम, धर्म के अनुसार एक सुगठित समाज-व्यवस्था का ब्योरा दिया गया है। दोनों पुस्तकें अपने-अपने ढंग से अपने विषय की बहुत अच्छी पुस्तकें हैं, पर दोनों में उस समय के कुसंस्कार भी लिपिबद्ध हैं।

कौटिल्य और मनुस्मृतिकार अपने वक्तव्यों को बहुत ही ठोस आधार पर प्रस्तुत करते हैं। कहीं उनके तर्क में कोई कमी नहीं है। वे अपने प्रतिपाद्य को निर्मम और निरलस होकर सामने रखते हैं, पर वे अंततोगत्वा ऐसी ऊटपटांग बातें कह जाते हैं जो बहुत अजीब हैं।

कौटिल्य कूटनीतिमूलक राजनीतिशास्त्र का अत्यंत ठोस वर्णन करने के बाद एक अध्याय इस पर लिख मारते हैं कि भेजा हुआ दूत किन औषधियों तथा तरीकों के प्रयोग और अनुसरण से दूसरे के लिए अदृश्य हो सकता है। इसी प्रकार मनुस्मृति में यह बताया गया है कि मनुष्य रेशम चुराने पर कौन-सी चिड़िया के रूप में पैदा होता है और छींटे चुराने पर कौन-सी चिड़िया बन सकता है। उदाहरणस्वरूप यह बताया गया है कि सूती कपड़ा चुराने पर सारस और दूसरे प्रकार के कपड़े चुराने पर मनुष्य मेंढक के रूप में पैदा होता है।

इसी प्रकार सुकरात परलोक का बहुत ब्योरेवार वर्णन करते हैं। उनमें इस प्रकार की बात आती है कि कितनी नदियां और फाटक कब-कैसे पार करने पड़ते हैं।

पर सुकरात ने युग के बहकावे में आकर परलोक के संबंध में जो बातें कही हैं, उनके बावजूद न तो उनके महान व्यक्तित्व को कोई आंच आती है और न उनके साहस, अध्यव्यसाय, प्रामाणिकता या युग-पुरुषत्व पर कोई बट्टा लगता है। मेरा तो कुछ ऐसा ख्याल है कि यदि सुकरात की बहुत थोड़ी वाणी हमारे सामने आती और जेल के अंदर रहकर उन्होंने किस प्रकार का व्यवहार किया, किस प्रकार से तथा किन तर्कों से उन्होंने जेल से भागने से इनकार किया, किस प्रकार से उन्होंने मृत्यु को ग्रहण किया—उतना ही वर्णन हमारे सामने आता, तो भी उनका व्यक्तित्व इतना ही ऐतिहासिक, इतना ही प्यारा, इतना ही अनुप्रेरक, इतना ही सुंदर और इतना ही उज्जवल होता। उन्होंने अपने विचारों के लिए जिस प्रकार मृत्यु को अत्यंत तुच्छ समझा, वह सर्वकाल के लिए एक उज्जवल उपलब्धि है। उन्हें भागने का मौका मिला—वह चाहते तो उनके मित्र जेल के अधिकारियों को घूस देकर उन्हें एक बार बाहर निकाल लेते—पर उन्होंने इस प्रकार से भागना अस्वीकार किया। उनका कहना था कि जिस प्रकार उन पर मुकदमा चला और उन्हें मृत्यु-दंड दिया गया, उसके बावजूद यदि वे भाग जाते, तो उससे उन्हें कारागार में डालने वालों की हंसी नहीं होती बल्कि उन्हीं की हंसी होती। आज संसार सुकरात को युग-पुरुष मानता है और उन पर अभियोग लगाने वालों और उनके न्यायाधीशों पर हंसता है, यह स्थिति उनके भागने से उत्पन्न नहीं हो सकती थी, उनकी मृत्यु के कारण ही संभव हुई। उनका यह सोचना ठीक था कि यदि वह भाग जाते, तो उनकी ओर या उनके विचारों की ओर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता। उनके विचार उनके रक्त में घुलकर पवित्र बने। मृत्यु के कारण उनके विचारों की ओर ज्यादा ध्यान गया। संभव है कि यदि वे भाग जाते, तो वह अपने शिष्यों की आंखों में भी गिर जाते। सुकरात ने अपने विचारों के लिए मरने का यह जो उदाहरण प्रस्तुत किया, उससे उनके व्यक्तित्व और उनके विचारों पर चार चांद लग गए और हम यह देखते है कि उनके शिष्यों में संसार के सबसे बड़े विचारक और तत्ववादी हैं, जिन्होंने डंके की चोट पर पृथ्वी के चारों कोनों पर झंडा फहरा दिया और आज भी वह झंडा जोरों के साथ फहर रहा है। आज भी वह झंडा हर चिंतक को ललकार रहा है कि विचारों में यदि दम है और वे कुछ अर्थ रखते हैं, तो वे तभी ऐतिहासिक बन जाते हैं, जबकि शहादत से उनकी प्रामाणिकता बताई जाती है।

संसार में मृत्यु को साहस के साथ लेने के जो थोड़े से, बहुत थोड़े से, उदाहरण मौजूद हैं, उनमें सुकरात की मृत्यु की कहानी अन्यतम, अद्भुत और रोमांचकारी है। सुकरात ने अपनी मृत्यु के द्वारा यह सत्य हमेशा के लिए स्थापित कर दिया कि मृत्यु सत्य का गला नहीं घोंट सकती बल्कि किसी-किसी हालत में वह सत्य का प्रमाण है। शहीद अपनी शहादत से सत्य की गवाही देता है।

सुकरात की मृत्यु के इर्दगिर्द सारी घटनाओं को देखने-जांचने पर कई अद्भुत

तत्व निकलते हैं। स्मरण रहे कि सुकरात का मुकदमा एथेन्स की सारी जनता के सामने हुआ था। दूसरे शब्दों में यह कहा जाए कि लोकतांत्रिक एथेन्स में ही सुकरात का मुकदमा हुआ था, जिसमें एथेन्स का हर नागरिक न्यायाधीश के आसन पर बैठा था। उस समय पूंजीवाद का उदय नहीं हुआ था कि यह कहा जा सके कि पूंजीवादियों ने जनता को गुमराह किया। हां, उस समय भी कुछ गलत तरीके के नेता या उपनेता मौजूद थे और उन लोगों ने सुकरात को कटघरे में लाकर खड़ा किया और उन्हीं के प्रभाव में सुकरात को मृत्यु-दंड दिया गया। ऐसे लोगों को डेमागॉग कहा गया है, जो लोगों को अपनी वक्तृता के स्रोत में बहा ले जाते थे।

यहां एक मौलिक तथा तात्विक प्रश्न उठता है। वह यह कि इसका अर्थ यह हुआ कि लोकतंत्र की पद्धति ऐसी त्रुटिहीन पद्धति नहीं है, जो गलती से बरी हो। ईसा को सूली चढ़ाया गया, यह तो समझ में आता है क्योंकि जहां उन्हें सजा मिली, वहां लोकतंत्र नहीं था। वहां हम यह कहकर अपना छुटकारा कर सकते हैं कि वहां लोकतंत्र नहीं था, इस कारण यह महान अन्याय हुआ और ईसा को एक चोर के साथ अपराधी के रूप में सूली पर चढ़ाया गया। पर सुकरात के संबंध में हम यह बात नहीं कह सकते। एथेन्स में लोकतंत्र था और पूरा लोकतंत्र था। अवश्य यहां यह बता दिया जाए कि एथेन्स के लोकतंत्र में गुलामों को किसी प्रकार के मतदान का अधिकार नहीं था और चलते-चलते यह भी बता दिया जाए (यह भी उसी का एक और उदाहरण है कि व्यक्तित्व किस प्रकार अपने देश और काल से बाध्य होता है) कि अरस्तू जैसे विचारक यह समझते रहे कि सुंदर समाज की व्यवस्था के लिए दास-प्रथा की आवश्यकता है। इस संबंध में एक और बात यह भी है कि एथेन्स में जिन दिनों सुकरात को मृत्यु-दंड दिया गया, उन दिनों नागरिकों से शायद दासों की संख्या जयादा थी। अवश्य इस पर यह कहा जा सकता है कि एथेन्स का लोकतंत्र आदर्श लोकतंत्र नहीं था। पर उस समय सारे संसार में, यहां तक कि भारत में, दास-प्रथा एक मान्य प्रथा के रूप में स्वीकृत थी। यह स्वीकृति इतनी बड़ी थी कि बुद्ध ने यह नियम बनाया था कि कोई भी दास जब तक अपने को दासता से मुक्त न करा ले, तब तक वह भिक्षु नहीं बन सकता।

कुछ भी हो, सुकरात का मुकदमा और उनके मृत्यु-दंड की कहानी एक बहुत रोमांचकारी कहानी है। यह उस व्यक्ति की कहानी है, जिसके कारण ग्रीस से सारे संसार में सत्य की किरणें फैलीं। गलत विचार मृत्यु से सही नहीं हो जाते, पर सही विचार को अक्सर शहादत की जरूरत होती है।

14-डी, निजामुद्दीन ईस्ट,
नयी दिल्ली-13

—मन्मथनाथ गुप्त

यूथाइफ्रन

वार्ता के पात्र :

सुकरात
यूथाइफ्रन

स्थल :
किंग आरकन का तोरण

यूथाइफ्रन

यूथाइफ्रन–सुकरात, आप यहां आरकन के तोरण में भला क्या कर रहे हैं ? आप लाइसियम के अपने अड्डे को छोड़कर यहां क्यों आ गए ? अवश्य ही यहां आपको कोई फरियाद नहीं करनी है, जैसे कि मुझे।

सुकरात–नहीं, यूथाइफ्रन, एथेन्सवासी इसे दोषारोपण या मुकदमा कहते हैं न कि फरियाद।

यूथाइफ्रन–क्या ? आप यह कहना चाहते हैं कि आप पर कोई मुकदमा चला रहा है ? मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि आप स्वयं किसी पर मुकदमा चला रहे हैं ?

सुकरात–नहीं, निश्चय ही मैं मुकदमा नहीं चला रहा हूं।

यूथाइफ्रन–तो क्या कोई आप पर मुकदमा चला रहा है ?

सुकरात–हां।

यूथाइफ्रन–भला वह कौन है ?

सुकरात–यूथाइफ्रन, मैं उसे करीब-करीब नहीं जानता। मैं समझता हूं कि वह एक अज्ञात-सा युवक है। हां, उसका नाम है मेलिटस और वह पिथिस इलाके का रहनेवाला है। क्या आप इस इलाके के किसी मेलिटस नामक व्यक्ति को याद कर सकते हैं, जिसकी नाक तोते की तरह है, बाल लंबे हैं और दाढ़ी के बाल कम हैं ?

यूथाइफ्रन–सुकरात, मैं उसे नहीं जानता, पर यह तो बताइए कि वह आप पर किस बात का मुकदमा चला रहा है ?

सुकरात–किस बात का ? सो बात भी कोई तुच्छ नहीं है। ऐसे कम-उम्र व्यक्ति के लिए यह कोई छोटी बात नहीं है कि उसने कैसे-कैसे महत्वपूर्ण मामलों पर राय कायम कर ली है, क्योंकि वह बताता है कि उसे मालूम है कि किस प्रकार से नवयुवकों को भ्रष्ट किया जाता है। वह यह भी जानताा है कि उन्हें भ्रष्ट करने वाले कौन से लोग हैं। अवश्य ही वह कोई ज्ञानी व्यक्ति होगा, जो मेरे अज्ञान पर तरस-सा खाकर, मुझे नगरी के सामने, मानो नगरी उसकी मां हो, अपने मित्रों को भ्रष्ट करने का अभियोग लगा रहा है। मानो वह एकमात्र व्यक्ति है जो राजनैतिक सुधारों का

सूत्रपात सही बिंदु पर कर रहा है। मेरे कहने का मतलब यह है कि जैसे एक अच्छा खेतिहर नए पौधों का पहले ख्याल रखता है और उनका ख्याल रखने के बाद वह फिर दूसरे पौधों की तरफ ध्यान देता है, उसी तरह यह व्यक्ति चाहता है कि जहां तक हो सके, नौजवानों को अधिक से अधिक पूर्ण किया जाए। इसलिए मैं समझता हूं कि मेलिटस पहले हम जैसे लोगों को साफ कर रहा है, जिनके संबंध में उसका विश्वास यह है कि वे बढ़ते हुए नवयुवकों को भ्रष्ट करते हैं और जब वह ऐसा कर लेगा तो अवश्य ही अधिक बूढ़ों की तरफ ध्यान देगा और इस प्रकार से वह एक बहुत बड़ा देशोपकारक व्यक्ति होगा। सच्ची बात तो यह है कि वह जिस प्रकार से कार्यारंभ कर रहा है, उससे तो यही आशा की जा सकती है।

यूथाइफ्रन—आशा करता हूं कि ऐसी ही बात होगी सुकरात, पर मुझे इसमें बड़ा संदेह है। मुझे ऐसा लगता है कि आपको हानि पहुंचाने की चेष्टा करते हुए वह राष्ट्र के मर्मस्थल पर चोट पहुंचा रहा है, पर यह तो बताइए कि आप पर नवयुवकों को भ्रष्ट करने का अपराध किस तरह से लागू कर रहा है ?

सुकरात—वह जिस तरीके से लागू कर रहा है, वह तरीका मेरे मित्र, पहले-पहल अजीब लगता है। उसका कहना यह है कि मैं देवताओं का निर्माता हूं और वह मुझ पर इसलिए मुकदमा चला रहा है—मैंने नए देवताओं का आविष्कार किया है और पुराने देवताओं में विश्वास नहीं करता।

यूथाइफ्रन—मैं समझ रहा हूं, सुकरात। यह इस कारण है कि आप अक्सर यह कहते हैं कि आपको दिव्य इंगित मिलता है। इसलिए वह आप पर मुकदमा चला रहा है। आप धर्म में नई बातें जोड़ रहे हैं और वह यह जानकर ही अदालत में जा रहा है कि जनता के सामने इन बातों को बहुत आसानी से गलत रूप में पेश किया जा सकता है और उसका उद्देश्य यह है कि वह आप की निंदा करे। ऐसे लोगों की भला बात ही क्या है कि वे मुझसे भी घृणा करते हैं, मानो मैं कोई सिरफिरा होऊं। मैं सभा के अंदर दिव्य वस्तुओं की बात करता हूं और उनसे कहता हूं कि क्या होने जा रहा है। मजे की बात यह है कि अभी तक मैंने कोई ऐसी भविष्यवाणी नहीं की, जो बाद को चल कर पूरी नहीं हुई। पर वे ऐसे भी लोगों से ईर्ष्या करते हैं, जो हमारी तरह हैं। हमें उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए। हमें उनका सामना साहस के साथ करना चाहिए।

सुकरात—प्रिय यूथाइफ्रन, उनके व्यंग्य को मैं कोई बहुत गंभीर बात नहीं समझता। मुझे ऐसा लगता है कि एथेन्सवासियों को यदि कोई व्यक्ति बुद्धिमान लगता है, तो वे उसके प्रति तब तक ध्यान नहीं देते जब तक कि वे यह न देख लें कि ऐसा व्यक्ति लोगों को अपने ज्ञान की शिक्षा दे रहा है। पर ज्यों ही उनका यह विश्वास हो जाता है कि अमुक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों को बुद्धिमान बना रहा है, तो उन्हें क्रोध चढ़ आता है, चाहे इसका कारण, जैसा कि आप कहते हैं, ईर्ष्या ही हो या इसका कोई

और ही कारण हो।

यूथाइफ्रन–मैं उनकी इस प्रवृत्ति को अपनी ओर उकसाने के लिए बहुत व्यग्र नहीं हूं।

सुकरात–नहीं, शायद वे सोचते हैं कि जब आप कम दिखाई पड़ते हैं तो आप दूसरों को अपने ज्ञान की शिक्षा देने के लिए व्यग्र नहीं हैं; पर वे समझते हैं कि मुझमें यह प्रवृत्ति है क्योंकि मनुष्यों के प्रति प्रेम के कारण मैं हर व्यक्ति से बातचीत करना चाहता हूं और उनसे खुलकर सब कुछ सामने रख कर बात करना चाहता हूं। इसके लिए मैं कोई फीस भी नहीं लेता। सच्ची बात तो यह है कि यदि मुझमें सामर्थ्य होती, तो मैं पैसे देकर लोगों को अपनी बात सुनाता। जैसाकि मैंने अभी कहा, यदि वे मुझ पर हंसना भी चाहते जैसाकि वे आप पर हंसते हैं, तो दिन बिताने का बुरा तरीका न होता। अदालत में हंसी और मजाक में दिन बीत जाता। पर यदि वे हंसी-मजाक मात्र नहीं करना चाहते और गंभीर हैं तो आपकी तरह भविष्यवक्ता ही बता सकता है कि इस मामले का क्या होगा।

यूथाइफ्रन–तो सुकरात, मैं साहसपूर्वक कहता हूं कि इससे कुछ भी होने वाला नहीं है। बहुत संभव है कि आप अपने मुकदमे में सफल हों और मैं अपने मुकदमे में।

सुकरात–अच्छा, आपका मुकदमा क्या है, यूथाइफ्रन ? क्या आप कोई मुकदमा चला रहे हैं, या आप पर कोई मुकदमा चला रहा है ?

यूथाइफ्रन–नहीं, मैं मुकदमा चला रहा हूं।

सुकरात–किस पर ?

यूथाइफ्रन–मैं एक ऐसे व्यक्ति पर मुकदमा चला रहा हूं, जिस पर मुकदमा चलाने के कारण लोग मुझे पागल कह रहे हैं।

सुकरात–क्या ? क्या उसके पास उड़ जाने के लिए पंख हैं ?

यूथाइफ्रन–नहीं, वह उड़ने से कहीं दूर है। वह बहुत ही वृद्धा आदमी है।

सुकरात–वह कौन साहब हैं ?

यूथाइफ्रन–वह मेरे पिता हैं।

सुकरात–आपके पिता ? अच्छा, यह बात ?

यूथाइफ्रन–अवश्य ही वह मेरे पिता हैं।

सुकरात–आप उन पर किस बात का मुकदमा चला रहे हैं, अभियोग क्या है ?

यूथाइफ्रन–हत्या का अभियोग है, सुकरात।

सुकरात–बहुत आश्चर्य है, यूथाइफ्रन। अवश्य ही जनता यह नहीं जानती कि सचाई क्या है। मैं यह मान लेता हूं कि प्रत्येक व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता जैसाकि आप कर रहे हैं। केवल परिपक्व ज्ञानी आदमी ही ऐसा कर सकते हैं।

यूथाइफ्रन–सुकरात, आप सत्य बात कह रहे हैं।

सुकरात–जिस व्यक्ति को आपके पिता ने मार डाला है, क्या वह आपका कोई रिश्तेदार था ? हां, अवश्य ही वह रिश्तेदार होगा। आप अवश्य ही अपने पिता पर किसी अजनबी की हत्या के लिए मुकदमा नहीं चला रहे होंगे।

यूथाइफ्रन–सुकरात, आप भी अजीब बात कह रहे हैं। भला इससे क्या फर्क पड़ता है कि जो व्यक्ति मर गया, वह मेरा रिश्तेदार था या कोई अजनबी। आपको सिर्फ एक ही प्रश्न पूछना चाहिए कि मरने वाले को न्यायपूर्वक मारा गया है या अन्यायपूर्वक। यदि न्यायपूर्वक मारा गया है, तो आप हत्यारे को अलग छोड़ देंगे; यदि अन्यायपूर्वक मारा गया है, तो आपको उस पर हत्या के लिए मुकदमा चलाना चाहिए, चाहे वह एक ही छत के नीचे रहता और एक ही मेज पर आपके साथ खाना खाता रहा हो। दोनों हालतों में कलुष उतना ही है। यदि आप ऐसे व्यक्ति के साथ, यह जानते हुए भी कि उसने क्या किया है, अपनी और अदालत के सामने ले आकर उसकी शुद्धि के बिना उससे सहयोग करते हैं, तो कलुष उतना ही है। रहा इस मामले में क्या हुआ, सो बात यों है कि जो व्यक्ति मारा गया, वह मेरा एक बहुत पुराना और गरीब नौकर था, जो हमारे नेक्सस नामक स्थान के फार्म में काम करता था। उसने शराब के नशे में हमारे एक दास पर क्रुद्ध होकर उसे मार डाला। इस पर मेरे पिता ने उस आदमी के हाथ-पैर बांध कर एक खाई में डाल दिया और साथ ही उन्होंने एथेन्स में एक व्यक्ति को भेज दिया कि वह पता लगाकर आए कि इस संबंध में हमें क्या करना चाहिए। जब संदेशवाहक चला गया, तो मेरे पिता ने उस व्यक्ति की कोई परवाह नहीं की कि वह एक हत्यारा है और यदि वह मर भी जाए तो कोई ऐसी खास बात न होगी और हुआ भी ठीक ऐसा ही। भूख, ठंड और बंधनों से पीड़ित वह आदमी संदेशवाहक के लौटने से पहले ही मर गया और अब मेरे पिता और परिवार के सारे लोग मुझसे नाराज हैं कि मैं इस हत्यारे की हत्या के लिए पिता पर मुकदमा चला रहा हूं। उनका यह कहना है कि उन्होंने उस आदमी को बिल्कुल नहीं मारा। वे कहते हैं कि यदि उन्होंने उसे बार-बार भी मारा होता, तो स्थिति यह थी कि वह व्यक्ति स्वयं एक हत्यारा था और मुझे ऐसे व्यक्ति के संबंध में सोचना नहीं चाहिए, क्योंकि पुत्र के लिए पिता के विरुद्ध हत्या का मुकदमा चलाना गलत है। सुकरात, बात यह है कि लोग पवित्रता और अपवित्रता के दिव्य कानून के संबंध में बहुत कम ज्ञान रखते हैं।

सुकरात–तो यूथाइफ्रन, आपके कहने का मतलब यह है कि आप ईश्वरीय वस्तुओं के साथ-साथ ही पवित्रता और अपवित्रता के मसले को बारीकी से समझते हैं, इतनी बारीकी से, जैसाकि आपने अभी बताया, आप बिना किसी भय के अपने पिता पर मुकदमा चला रहे हैं और आपको कोई शंका नहीं है कि आप कोई अपवित्र कार्य कर रहे हैं।

यूथाइफ्रन–सुकरात, यदि मैं इन मामलों को सही ढंग से न समझता होता, तो मैं बिल्कुल निकम्मा होता और उस हालत में आपका यह यूथाइफ्रन दूसरे आदमियों

के मुकाबले में कतई बेहतर न होता।

सुकरात–तो प्रियवर, यूथाइफ्रन, मेरे लिए यह अच्छा रहेगा कि मैं आपका शिष्य बन जाऊं और मुकदमा शुरू होने से पहले इस बिंदु पर मेलिटस को चुनौती दूं। मुझे यह कहना चाहिए कि मैंने हमेशा दिव्य वस्तुओं के संबंध में ज्ञान रखना जरूरी समझा और अब, जबकि मेलिटस का यह कहना है कि मैं हलकेपन से देवताओं के संबंध में बात करके और उनमें नयापन पैदा कर उन्हें तैश दिला रहा हूं, तो मैं कहूंगा कि मैं आपका शिष्य बन गया हूं। मैं यह कहूंगा कि मेलिटस यदि आप को इन मामलों में ज्ञानी मानते हैं, तो मेरे संबंध में भी ऐसा ही सोचें और मुझ पर मुकदमा न चलाएं। पर यदि आप ऐसा नहीं मानते तो आप मुझ पर नहीं बल्कि मेरे गुरु के विरुद्ध अपने वजुर्गों को भ्रष्ट करने के लिए मुकदमा चलाएं यानी मुझे अपने सिद्धांत द्वारा भ्रष्ट करने और अपने पिता को तिरस्कृत करके और मजा देकर भ्रष्ट करने का मुकदमा चलाएं। यदि मैं मेलिटस को यह समझाने में समर्थ नहीं होता कि वह मुझे मुकदमे से मुक्त करे और मेरे स्थान पर आप पर मुकदमा चलाएं तो मैं यही प्रयास अदालत के सामने भी कर सकता हूं।

यूथाइफ्रन–अवश्य ही, सुकरात। ज्यूस की कसम है, यदि वह मुझ पर मुकदमा चलाने की चेष्टा करे तो मैं उसकी कमजोरियों को अवश्य ही पकड़ लूंगा। अपने बारे में बोलने से पहले मैं उसी के बारे में अदालत में बहुत कुछ कह दूंगा।

सुकरात–हां, मेरे प्रिय मित्र, और इसी बात को जानकर मैं आपका शिष्य बनने के लिए व्यग्र हूं। मैं यह देख रहा हूं कि यह मेलिटस और दूसरे लोग आप पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं, पर वह मुझे बिना कठिनाई के फौरन पहचान गये और मुझ पर अधर्म के लिए मुकदमा चलाने जा रहे हैं। अतः आप अपने जिस ज्ञान के संबंध में इतना आत्मविश्वास रखते हैं, कृपया मुझे उसका दिग्दर्शन कराएं। मुझे यह बताएं कि हत्या और अन्य सारी बातों के संदर्भ में धर्म और अधर्म, सत्कार्य और असत्कार्य क्या है ? मैं समझता हूं कि सारे कार्यों में पवित्रता का स्वरूप एक ही है और अपवित्रता हमेशा पवित्रता के विपरीत होती है और इसी तरह अपवित्रता में भी एक आवश्यक लक्षण है, जो सारी अपवित्र चीजों में प्राप्त होता है।

यूथाइफ्रन–अवश्य सुकरात, मैं ऐसा मानता हूं।

सुकरात–तो मुझे बताइए कि पवित्रता क्या है और अपवित्रता क्या है ?

यूथाइफ्रन–मैं मानता हूं कि पवित्रता का अर्थ है उस दुष्कर्म करने वाले व्यक्ति पर मुकदमा चलाना, जिसने हत्या की है या पवित्र वस्तुओं का असम्मान किया है या ऐसा कोई अन्य अपराध किया है। पवित्र कार्य वह है जैसा कि मैं अब कर रहा हूं, चाहे अपराधी आपके पिता हों या आपकी माता हों या कोई भी हों। मेरा यह कहना है कि अपवित्रता तव कहेंगे जब हम उन पर मुकदमा न चलाएं। सुकरात, मैं आपको

एक स्पष्ट प्रमाण देता हूं जो मैं दूसरों को दे चुका हूं। सत्कार्य[1] करने का अर्थ यह है कि पवित्र वस्तुओं के संबंध में किसी प्रकार के अपराध करने वाले व्यक्ति को सहन न किया जाए, चाहे वह कोई भी हो। लोग ज्यूस देवता को देवताओं में सबसे उत्तम और न्यायी मानते हैं और वह यह मानते हैं कि ज्यूस ने अपने पिता क्रोनस को बंद कर दिया था, क्योंकि उन्होंने अपने बच्चों का दुष्टतापूर्वक नाश किया और क्रोनस ने अपने बाप को इन्हीं कारणों से नपुंसक बना दिया था। अब ये ही लोग जो ज्यूस आदि को पूज्य मानते हैं, मुझसे इसलिए नाराज हैं कि मैं अपने पिता के विरुद्ध असत्कार्य के लिए मुकदमा चलाना चाहता हूं। आप देख रहे हैं कि वे देवताओं के संबंध में एक बात कहते हैं और मेरे लिए बिल्कुल दूसरी बात कहते हैं।

सुकरात–यूथाइफ्रन, क्या इसी कारण से मुझ पर मुकदमा चलाया जा रहा है ? कारण यह है कि मैं अब लोगों को देवताओं के संबंध में ऐसी कहानियां कहते सुनता हूं, तो मुझे नाखुशी होती है। मुझे आशंका है कि मैं पापी कहा जाऊंगा क्योंकि मैं देवताओं के संबंध में प्रचलित कहानियों को संदेह की दृष्टि से देखता हूं।[2] अब प्रश्न यह है कि आप, जो इन सारे मामलों को इतनी अच्छी तरह समझते हैं, इन कहानियों को सच्ची मानते हैं, अतः मुझे फिर अस्त्र डाल देना पड़ेगा। भला मैं इस संबंध में क्या कह सकता हूं, क्योंकि मैं यह मान रहा हूं कि मैं इस संबंध में कुछ भी नहीं जानता। पर मित्रता के नाते यह तो बताइए कि क्या आप सचमुच यह विश्वास रखते हैं कि इन कहानियों में वर्णित घटनाएं घटित हुई होंगी ?

यूथाइफ्रन–हां, और उनसे कहीं बढ़कर अद्भुत घटनाएं हुई हैं, सुकरात, जिन्हें साधारण लोग नहीं जानते।

सुकरात–तो आप सचमुच यह विश्वास करते हैं कि देवताओं में लड़ाई रही, बहुत कड़वी घृणा और युद्ध रहे, जैसा कि कवियों ने गाया है और जैसा कि हमारे मंदिरों पर हमारे बड़े चित्रकारों ने चित्र खींचे हैं; विशेषकर उस वस्त्र को लें जिस पर चित्र बने हैं, जिसे नेपनोथेन के त्योहार के समय एक्रोपोलिस में ले जाया जाता है। तो क्या, यूथाइफ्रन, हम मानें कि ये कहानियां सही हैं ?

यूथाइफ्रन–हां, सुकरात, और भी बहुत-सी अजीब बातें हैं, जैसाकि मैं आपसे बता रहा था। यदि आप चाहेंगे तो मैं देवताओं के मामले में आपको बहुत-सी दूसरी कहानियां सुनाऊंगा जिनको सुनकर आप दांतों तले उंगली दबा लेंगे।

सुकरात–अवश्य ही दबाऊंगा। आप उनको किसी और समय अपने अवकाश के अनुसार सुनाइएगा। इस समय मुझे उस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देकर कृतार्थ करें जो अभी मैंने आपसे पूछा था। मित्र, मैंने आपसे यह प्रश्न पूछा था कि पवित्रता क्या है ?

---

1. ग्रीक भाषा में इसके लिए एक शब्द आया है।

2. देखिए, रिपब्लिक 2,377 आदि।

और आपने इस संबंध में संतोषजनक व्याख्या नहीं की। आपने केवल इतना कहा कि आप जो कर रहे हैं यानी अपने पिता पर हत्या का मुकदमा चला रहे हैं, यह एक पवित्र कार्य है।

यूथाइफ्रन–हां, यह सच है सुकरात।

सुकरात–बहुत संभव है। पर इसके अलावा और भी तो बहुत से कार्य पवित्र होंगे, यूथाइफ्रन। बात ऐसी है कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो अब याद रखें कि मैंने आपसे यही नहीं कहा था कि पवित्र कार्यों में से एक या दो का आप उदाहरण दें। मैं जानना चाहता हूं कि पवित्र का वह आवश्यक रूप क्या है[1] जिससे पवित्र कार्य पवित्र बनता है ? मैं समझता हूं कि आप यह कह रहे थे कि एक ऐसा रूप है जिससे हर पवित्र कार्य पवित्र बन जाता है और दूसरा रूप है जिसमें सभी अपवित्र कार्य अपवित्र बनते हैं। आपको याद तो होगा ?

यूथाइफ्रन–मुझे याद है।

सुकरात–तो आप मुझे यह बताने की कृपा कीजिए कि यह स्वरूप क्या है ताकि मैं उसके लिए सोचूं और उसे एक मानदंड के रूप में लूं जिससे आपके कृत्यों तथा दूसरे लोगों के कृत्यों पर निर्णय कर सकूं और यह कह सकूं कि जो कुछ भी इस मानदंड के प्रतिकूल बैठता है, वह अपवित्र है।

यूथाइफ्रन–सुकरात, यदि आप ऐसा चाहते हैं तो मैं आपको अवश्य बताऊंगा।

सुकरात–निश्चित रूप से मैं ऐसा चाहता हूं।

यूथाइफ्रन–तो फिर मैं यह बताता हूं। जो कुछ देवताओं को पसंद है, वह पवित्र है और जो कुछ उन्हें नापसंद है, वह अपवित्र है।

सुकरात–यूथाइफ्रन, सुंदर ! आपने खुद ही वह उत्तर मुझे दे दिया जो मैं चाहता था। रहा यह कि आप जो कुछ कह रहे हैं, वह सत्य है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। आप इसकी सत्यता का प्रमाण तो देंगे न ?

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो आइए, फिर हम अपने शब्दों पर विचार करें। जो वस्तु या मनुष्य देवताओं को पसंद हैं, वे पवित्र हैं और जो वस्तुएं और मनुष्य देवताओं को नापसंद हैं, वे अपवित्र हैं। पर पवित्र और अपवित्र एक वस्तु नहीं हैं, वे बिल्कुल एक दूसरे के प्रतिकूल हैं। क्या आपका यही मतलब था ?

यूथाइफ्रन–निश्चित रूप से।

सुकरात–मैं यह सोचता हूं कि आपने जो कुछ कहा, बहुत अच्छा कहा।

यूथाइफ्रन–हां सुकरात, मैंने निश्चित रूप से कहा था।

---

1. एलूस

सुकरात–अच्छा यूथाइफ्रन, क्या हम लोगों ने ऐसा नहीं कहा कि देवताओं में भी गुटबंदी है और पारस्परिक घृणा है ?

यूथाइफ्रन–हां, हमने ऐसा माना है।

सुकरात–मेरे मित्र, यह बताइए कि किस प्रकार के मतभेदों से घृणा और क्रोध उत्पन्न होते हैं ? हम इस मामले को इस प्रकार से देखें कि यदि आप और हम इस संबंध में मतभेद रखें कि एक संख्या दूसरी से बड़ी है या नहीं तो क्या हमें क्रोध आ जाएगा और क्या हम एक-दूसरे के शत्रु हो जाएंगे ? क्या हम ऐसे झगड़ों को गिनगिना कर फौरन निबटा नहीं लेंगे।

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–इसी प्रकार यदि हम इस संबंध में मतभेद रखें कि दो चीजों में तुलनात्मक रूप से किसका आकार बड़ा है, तो हम उन्हें नाप लेंगे और हम उस मतभेद को निबटा लेंगे। क्या यह बात सही नहीं ?

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–इसी प्रकार से यदि दो वस्तुओं के तुलानात्मक वजन के प्रश्न पर कोई मामला हुआ, तो क्या हम उसे तौल कर निबटा नहीं लेंगे ?

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो वे कौन से प्रश्न हैं जिन पर मतभेद बने रहने और जिन्हें न निबटा पाने पर हम एक-दूसरे से घृणा करेंगे, हम एक-दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे ? शायद इसके लिए आपके पास कोई तैयार जवाब नहीं है। पर आप मेरी बात सुनिए। क्या यह प्रश्न सही और गलत, उदारता और नीचता, भलाई और बुराई संबंधी प्रश्न नहीं ? क्या यह सच नहीं है कि उन्हीं मामलों के कारण आप में और मुझमें और दूसरों में झगड़े पैदा होते हैं और यदि हमारा उस संबंध में मतभेद होता है और हम संतोषजनक निपटारे पर नहीं पहुंच पाते, तो हम झगड़ा करते हैं।

यूथाइफ्रन–हां, सुकरात। इन्हीं मामलों में मतभेद से ऐसी बात उत्पन्न होती है।

सुकरात–तो यूथाइफ्रन, देवताओं में भी जब लड़ाई है तो उन्हीं बातों पर लड़ाई होती होगी, यह सही बात है कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो मेरे प्यारे मित्र यूथाइफ्रन, कुछ देवता यही समझते हैं कि एक कृत्य सही है और दूसरे इस संबंध में दूसरी धारणा रखते हैं। कुछ जिसे सम्मानजनक और अच्छा समझते हैं, दूसरे उसे नीचतापूर्ण और बुरा समझते हैं। नहीं तो उनमें कोई गड़बड़ी न होती। यदि वे इन मामलों में असहमत न होते, तो क्या गड़बड़ी होती ?

यूथाइफ्रन–नहीं, आपका कहना सही है।

सुकरात–तो यह रहा कि उनमें से प्रत्येक उसी चीज से प्यार करता है, जिसे वह सम्मानजनक, अच्छा और सही समझता है और विपरीत वस्तु से घृणा करता है।

है यह बात कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–पर आप यह कहते हैं कि उनमें से कुछ तो एक कृत्य को सही मानते हैं, और दूसरे उसी को गलत मानते हैं और इसी कारण उनमें झगड़ा पैदा होता है, और वे आपस में लड़ाई-झगड़ा करते रहते हैं। क्या ऐसी बात नहीं है ?

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–तो एक ही बात को देवता घृणा की दृष्टि से देखते हैं और उसी को प्रेम की दृष्टि से भी देखते हैं और एक ही चीज उनको प्रसन्न करेगी और अप्रसन्न भी करेगी।

यूथाइफ्रन–बिल्कुल साफ बात है।

सुकरात–तो आपके ब्योरे के अनुसार वही कार्य पवित्र भी हैं और अपवित्र भी।

यूथाइफ्रन–ऐसा ही लगता है।

सुकरात–तो मेरे प्रिय मित्र, आपने फिर मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। मैंने आपसे यह नहीं पूछा था कि कौन-सा कार्य पवित्र और अपवित्र दोनों है। पर ऐसा लगता है कि जो कार्य उन्हें प्रसन्न करता है, वही उन्हें अप्रसन्न भी करता है और इसलिए यूथाइफ्रन, मैं इस बारे में कोई ताज्जुब नहीं करूंगा कि आप इस समय अपने पिता को सजा दिलवाने के संबंध में जो कार्रवाई कर रहे हैं, वह ज्यूस को प्रसन्न करेगी, पर क्रोनस और उरेनस को अप्रसन्न करेगी। वह हिफीस्टस को स्वीकार्य होगी और हेरे के लिए घृणित होगी और देवताओं के परस्पर मतभेद के कारण कुछ प्रसन्न होंगे और कुछ अप्रसन्न होंगे।

यूथाइफ्रन–पर सुकरात, मैं समझता हूं इस मामले में देवताओं में मतभेद नहीं है। सब देवता यह मानते हैं कि यदि कोई आदमी किसी दूसरे आदमी को अन्यायपूर्वक मार डालता है, तो उसे सजा होनी चाहिए।

सुकरात–यह आप क्या कह रहे हैं, यूथाइफ्रन ? मनुष्य जाति में क्या आपने इस तरह का कोई झगड़ा नहीं सुना कि अमुक आदमी को अन्यायपूर्वक मार डालने के लिए या किसी और दुष्कर्म के लिए सजा दी जाए या न दी जाए ?

यूथाइफ्रन–आप बजा कह रहे हैं, वे बराबर ऐसे झगड़ों में संलग्न रहते हैं, विशेषकर न्यायालयों में। वे सब तरह के दुष्कर्म करते हैं और फिर वे सजा से बचने के लिए कुछ भी करने या कहने को तैयार रहते हैं।

सुकरात–क्या ऐसा भी होता है कि कोई कहे, मैंने दुष्कर्म किया है पर साथ ही यह भी कहे कि मुझको सजा नहीं मिलनी चाहिए। क्यों यूथाइफ्रन ?

यूथाइफ्रन–नहीं, ऐसा नहीं, वे ऐसा नहीं करते।

सुकरात–तो वे कुछ भी करें या कहें, वही सब कुछ नहीं है। मैं मान लेता हूं कि वे ऐसा कहने या तर्क करने का साहस नहीं करते कि कोई दुष्कर्म करे, तो भी

उसे सजा नहीं मिलनी चाहिए। वे यह कहते हैं कि हमने दुष्कर्म किया ही नहीं। है यह बात सच कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–यह सच है।

सुकरात–तो इस साध्य पर कोई मतभेद नहीं कि दुष्कर्म करने वाले को सजा होनी चाहिए, मतभेद इतना ही रहता है कि कौन दुष्कर्मकारी है, क्या और कौन-सा कर्म दुष्कर्म है।. यह बात है या नहीं ?

यूथाइफ्रन–यही सही है।

सुकरात–क्या देवताओं के संबंध में भी यही बात सत्य नहीं है ? हां, वे भी गलत और सही के संबंध में झगड़ते हैं, जैसाकि आप बताते हैं। क्या उनमें से कुछ यह नहीं कहते कि दूसरे लोग दुष्कर्म कर रहे हैं, जबकि कुछ देवता इससे इनकार करते हैं ? तो मेरे प्रिय मित्र, स्थिति यह है कि चाहे देवता हो या मनुष्य, सब ऐसा नहीं कहते कि अमुक व्यक्ति ने दुष्कर्म किया है, और उसे सजा न मिले।

यूथाइफ्रन–सही है सुकरात, साधारणतः सही है।

सुकरात–तो यूथाइफ्रन, मैं यह मान लूं कि आपस में मतभेद रखने वाले, चाहे वे मनुष्य हों, या देवता, झगड़ा करते हैं। वे कार्य-विशेष के विषय में झगड़ते हैं कि वह सही है या गलत। जब वे किसी दूसरे कार्य-विशेष के संबंध में झगड़ते हैं, तो उनमें से कुछ कहते हैं कि यह सही कार्य था, और दूसरे कहते हैं कि यह गलत कार्य था। क्या यह बात सही नहीं है ?

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–प्रिय यूथाइफ्रन, आप अब इस विषय पर रोशनी डालिए। स्थिति यों है कि एक मजदूर ने एक आदमी को मार डाला। इस पर मारे हुए व्यक्ति के मालिक ने उसे कैद में रखा, साथ ही एक संदेशवाहक को ज्ञानियों के पास भेजा कि पता लगाए क्या करना चाहिए, पर संदेशवाहक के लौटने के पहले ही वह आदमी मर जाता है। अब आपके पास इसका क्या प्रमाण है कि देवता इसे जरूर अन्याय मानेंगे ?

आप यह कैसे जानते हैं कि बेटे के लिए अपने बाप पर दोषारोपण करना और ऐसे व्यक्ति की हत्या के लिए मुकदमा चलाना सही है ? आप मुझे यह स्पष्ट कीजिए कि देवतागण आवश्यक रूप से मानते हैं कि आपका कार्य सही है और यदि आप मुझे संतुष्ट कर देते हैं, तो मैं प्राप्त ज्ञान के लिए आपका यश गाता रहूंगा।

यूथाइफ्रन–सुकरात, मैं इस बात को आपके निकट स्पष्ट कर सकता था। पर मैं डरता हूं कि यह लंबा काम है।

सुकरात–तो इसका मतलब यह हुआ कि आप मुझे न्यायाधीशों से अधिक जड़मति मानते हैं। आप उनके सामने तो यह प्रमाणित करने को तैयार हैं कि आपके पिता ने गलत काम किया है और सब देवता ऐसे कृत्यों से घृणा करने के संबंध में

एकमत हैं।

यूथाइफ्रन–सुकरात, मैं अवश्य ही उन पर सारी बातें स्पष्ट कर दूंगा, बशर्ते कि वे मेरी बात सुनें।

सुकरात–यदि वे यह सोचें कि आप अच्छा बोल रहे हैं वे सुनेंगे। पर जब आप बोल रहे थे तो मेरे मन में यह विचार आया कि मैं आपसे यह प्रश्न पूछूं। मान लीजिए, यूथाइफ्रन, आप कई ढंग से यह प्रमाणित कर दें कि सारे देवताओं के अनुसार ऐसी मृत्यु अन्यायमूलक है, तो उससे मुझ में यह समझ कहां तक आ जाएगी कि पवित्र किसे कहते हैं और अपवित्र क्या है ? शायद यह विशेष कार्य देवताओं को नापसंद हो, पर अभी हमने देखा है कि उस प्रकार से पवित्रता की परिभाषा नहीं की जा सकती क्योंकि हमने यह देख लिया कि जो बात कुछ देवताओं को प्रसन्न करती है, वही कुछ दूसरे देवताओं को अप्रसन्न कर सकती है। इसलिए यूथाइफ्रन, मैं इस संबंध में यह मानकर चलूंगा कि सारे देवता इस पर सहमत हैं कि आपके पिता का कार्य गलत था और देवता आपके पिता से घृणा करते हैं जैसे कि आप भी चाहते हैं। क्या हम अपनी परिभाषा को इस तरह से सुधारें : सब देवता जिन कार्यों से अप्रसन्न होते हैं वह अपवित्र हैं और सब देवता जिन कार्यों को चाहते हैं, वह पवित्र हैं। इसके अलावा जिन कार्यों को कुछ चाहते हैं और कुछ नहीं चाहते, वह बुरे भी हैं और भले भी हैं या कुछ भी नहीं हैं। क्या आप भी चाहते हैं कि हम पवित्रता और अपवित्रता की परिभाषा भी इसी रूप में करें ?

यूथाइफ्रन–क्यों नहीं, सुकरात।

सुकरात–यूथाइफ्रान, कोई कारण नहीं है मैं ऐसा न करूं। बस आपको सोचना भर है कि उस परिभाषा के अनुसार आप मुझे उपदेश दे पाएंगे या नहीं जैसाकि आपने वायदा किया था ?

यूथाइफ्रन–अच्छी बात है, मैं यही कहूंगा कि पवित्रता वह है जिसे सब देवता चाहते हैं और अपवित्रता वह है, जिसे सब देवता घृणा करते हैं।

सुकरात–अच्छा यूथाइफ्रन, हम इस परिभाषा को कसौटी पर कसें और यह देखें कि यह सच्ची परिभाषा है या नहीं ? ऐसा तो नहीं कि हम बिना प्रश्न किए दूसरे लोगों के वक्तव्यों को मान लें या हम उन वक्तव्यों को कसौटी पर न कसें ?

यूथाइफ्रन–हमें उनकी जांच करनी चाहिए। पर जहां तक मेरा सवाल है, मैं समझता हूं कि परिभाषा इस बार सही है।

सुकरात–मेरे मित्र, थोड़ी देर में यह मालूम हुआ जाता है कि वह सही है या नहीं। अब इस प्रश्न पर विचार कीजिए कि क्या देवता-गण पवित्र कार्य को इस कारण पसंद करते हैं कि वह पवित्र है या इस कारण से कि कोई कार्य उनकी आंखों में पवित्र है क्योंकि वह उसे चाहते हैं।

यूथाइफ्रन–सुकरात, मैं आपको समझ नहीं पा रहा हूं।

सुकरात–मैं अपनी बात स्पष्ट करने की चेष्टा करूंगा। हम किसी वस्तु के संबंध में यह कहते हैं कि उसे ले जाया जा रहा है और वह जा रही है, उसे देखा जा रहा है और वह दीख रही है। क्या आप समझते हैं कि इन अभिव्यक्तियों के अलग-अलग अर्थ हैं और इनमें फर्क है ?

यूथाइफ्रन–मेरा ख्याल है कि मैं आपकी बात समझ रहा हूं।

सुकरात–हम किसी चीज के संबंध में यह कहते हैं कि उससे प्यार किया जा रहा है, पर यह दूसरी बात है कि वह प्यार करने योग्य वस्तु है या नहीं।

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–अब मुझे यह बताइए कि कोई वस्तु जो लाई जा रही है, वह इस कारण लाई जा रही है कि वह ले जाई जा रही है या किसी और कारण से ले जाई जा रही है।

यूथाइफ्रन–नहीं, क्योंकि यह ले जाई जा रही है।

सुकरात–और एक चीज है जिसको ले जाया जा रहा है, क्योंकि उसे ले जाया जा रहा है और देखा जा रहा है, क्योंकि उसे देखा जा रहा है।

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो यह हुआ कि कोई चीज इसलिए नहीं देखी जाती है कि यह दीखने की अवस्था में है बल्कि वह देखी इसलिए जाती है कि वह देखी जा रही है। कोई चीज इसलिए नहीं ले जाई जा रही है कि वह ले जाई जाने की हालत में है। वह ले जाई इस कारण जा रही है कि वह ले जाई जा रही है। क्या आप मेरा मतलब अच्छी तरह समझ गए, यूथाइफ्रन ? मेरा मतलब यह है कि यदि कोई चीज है या उस पर असर होता है, तो ऐसा इस कारण नहीं होता क्योंकि उसकी यह अवस्था है। यह होने की अवस्था में इसलिए है क्योंकि यह होता है और इस पर असर इसलिए नहीं होता है कि यह प्रभावित होने की अवस्था में है। यह प्रभावित होने की हालत में इसलिए है कि इस पर असर डाला जाता है। क्या आप इसे नहीं मानते हैं ?

यूथाइफ्रन–मैं मानता हूं।

सुकरात–इसी प्रकार किसी वस्तु से जब प्रेम किया जा रहा है, क्या वह किसी और वस्तु से प्रभावित होने की स्थिति में है ? है कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो यही इस मामले में सत्य है और पहले के सारे मामलों में भी। किसी चीज से इसलिए प्रेम नहीं किया जाता कि इससे जो लोग प्रेम करते हैं, वह चीज प्रेमास्पदता की अवस्था में है। यह प्रेम इसलिए किया जाता है कि वे इससे प्रेम करते हैं।

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो यूथाइफ्रन, आप पवित्रता के बारे में क्या करते हैं ? क्या आपकी

परिभाषा के अनुसार इससे सब देवता प्यार नहीं करते ?

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–क्योंकि यह पवित्र है या किसी और कारण से ?

यूथाइफ्रन–नहीं, ऐसा इसलिए है कि वह पवित्र है।

सुकरात–तो देवतागण इससे प्रेम करते हैं क्योंकि यह पवित्र है, वह इसलिए पवित्र नहीं है कि देवतागण उससे प्रेम करते हैं।

यूथाइफ्रन–ऐसा ही लगता है।

सुकरात–तो जो बात देवताओं को प्रसन्न करती है, वे उससे प्रेम करते हैं और वह उन्हें इसलिए प्रसन्न करती है कि वे उससे प्रेम करते हैं।

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो पवित्रता की परिभाषा देवताओं की प्रसन्नता से बंधी नहीं है और जिससे देवता प्रसन्न होते हैं, वह पवित्र नहीं है, जैसाकि आप यूथाइफ्रन कहते हैं, वे भिन्न चीजें हैं।

यूथाइफ्रन–ऐसा क्यों है, सुकरात ?

सुकरात–क्योंकि हम इस संबंध में सहमत हैं कि देवता पवित्रता से इस कारण प्रेम करते हैं कि यह पवित्र है और यह कार्य इस कारण पवित्र नहीं है वे इससे प्रेम करते हैं ? है यह सही बात कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–तो जो कुछ देवताओं को प्रसन्न करता है, वह इस कारण करता है कि वे उससे प्यार करते हैं। वह उन्हें इस कारण प्रसन्न करता है कि वे उससे प्यार करते हैं और वे इससे इस कारण प्रेम नहीं करते कि यह उनके लिए प्रसन्नताकारक है।

यूथाइफ्रन–सही है।

सुकरात–तो प्रिय यूथाइफ्रन, अब हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पवित्रता और देवताओं की प्रसन्नता अलग-अलग बातें हैं। यदि देवता पवित्रता से इस कारण प्रेम करते कि वह पवित्र है, तो उस हालत में वे अपने लिए प्रसन्नकारी बातों से भी प्रेम करते, क्योंकि यह उनकी प्रसन्नता का कारण होतीं; पर उनके लिए जो बात प्रसन्नकारी है, वह इसलिए प्रसन्नकारी होती है कि वे उससे प्रेम करते हैं, तो उस हालत में पवित्रता इस कारण पवित्र हो जाती कि वे उससे प्रेम करते हैं। पर अब आप यह देख रहे हैं कि ये दोनों बातें विपरीत हैं और एक दूसरे से भिन्न हैं। इनमें से एक बात[1] ऐसी है कि जिससे इस कारण प्यार किया जाता है कि उससे प्यार किया

1. देवता को प्रसन्न करने वाली बात

जाता है, जबकि दूसरी बात[1] से इस कारण प्रेम किया जाता है कि वह प्रेम करने के योग्य है। यूथाइफ्रन, मेरा प्रश्न यह था कि पवित्रता क्या है ? पर अब दीख पड़ रहा है कि आपने मुझे पवित्रता की सार वस्तु का वर्णन नहीं किया। आपने बस उसके एक गुण का उल्लेख भर कर दिया है कि देवता उससे प्रसन्न होते हैं।

आपने अब तक यह नहीं बताया कि पवित्रता का सत्व क्या है। मुझे पवित्रता की परिभाषा से वंचित न कीजिए और फिर से शुरू करके मुझे बताइए कि पवित्रता क्या है। इसे छोड़िए कि देवता उससे प्रेम करते हैं अथवा उसमें अन्य गुण हैं या नहीं, हमारा इस मामले में कोई मतभेद नहीं होगा। आप भरसक हमें यह स्पष्ट कीजिए कि पवित्रता क्या है और अपवित्रता क्या है ?

यूथाइफ्रन–पर, सुकरात, मैं सचमुच नहीं समझ पा रहा हूं कि मैं कैसे आपको बताऊं कि मेरे मन में क्या है ? मैं चाहे कोई भी बात पेश करूं, ऐसा लगता है कि वह गोल चक्कर में घूम रही है। जहां मैंने उसे छोड़ा था वहां नहीं रहती।

सुकरात–यूथाइफ्रन, मैं समझता हूं आपकी परिभाषाएं मेरे पूर्वजन डिडेलस के योग्य हैं। यदि वे मेरी परिभाषाएं होतीं और मैंने उन्हें प्रस्तुत किया होता, तो मैं साहस करके यह कह सकता हूं कि आप मेरा मजाक उड़ाते और यह कहते कि डिडेलस के वंशधर होने के कारण मैं ऐसी परिभाषाएं प्रस्तुत करता हूं, जो प्रस्तुत किए जाने पर डिडेलस की मूर्तियों की तरह, जहां वे बनाई जाती थीं, वहां से हट जाती हैं। इस तरह से उनकी परिभाषाएं भी हट जाती हैं। पर स्थिति यह है कि परिभाषाएं आपकी हैं और इस व्यंग्य की कोई पात्रता नहीं है। आप स्वयं भी यह देख रहे हैं कि आपकी परिभाषा कहां से कहां हट गई है।

यूथाइफ्रन–नहीं सुकरात, मैं समझता हूं कि यह मजाक बिल्कुल प्रासंगिक है। यह मेरा दोष नहीं है कि परिभाषा चक्कर काट रही है और वह स्थिर नहीं रह पाती। पर मैं समझता हूं कि आप ही डिडेलस हैं। जहां तक मेरा संबंध है, मेरी परिभाषाएं काफी टिकाऊ हैं।

सुकरात–तो मेरे मित्र, मैं शायद डिडेलस से बड़ा कलाकार हूं। वह अपनी कृतियों को ही गति देते थे, जबकि मैं दूसरे लोगों की कृतियों को भी गति दे सकता हूं और खूबसूरती यह है कि मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध ज्ञानी हूं। सचमुच मेरा वश चलता तो मैं यही चाहता कि डिडेलस के ज्ञान तथा टैंटेलस के ऐश्वर्य से मंडित होने के बजाय हमारी परिभाषाएं दृढ़ और अचल होतीं। पर छोड़िए, काफी हो गया। मैं आपकी यथासाध्य सहायता करना चाहता हूं। आप मुझे बताइए कि पवित्रता क्या है ? मैं यह सोचता हूं कि आप आलस्य कर रहे हैं। अभी हिम्मत न हारिए। मुझे बताइए कि क्या आप ऐसा नहीं समझते कि सारी पवित्रताएं न्यायपूर्ण होंगी ?

---

1. जो पवित्र है।

यूथाइफ्रन–मैं ऐसा समझता हूं।

सुकरात–तो अब प्रश्न यह उठता है कि क्या समस्त न्याय पवित्र है या ऐसा है कि समस्त पवित्रता तो न्यायपूर्ण है, पर उसका कुछ ही अंश न्याय में आता है और शेष अंश कुछ और ही तत्व है ?

यूथाइफ्रन–सुकरात, मैं आपको समझ नहीं पा रहा हूं।

सुकरात–फिर भी आपको यह सुविधा प्राप्त है कि आप ज्ञानवृद्ध होने पर भी कमउम्र हैं। पर जैसाकि मैं बता रहा हूं, आपके ज्ञानरूपी ऐश्वर्य के कारण ही आप आलसी हो गए हैं। मेरे प्रिय मित्र, आप चेष्टा करें, मैं आपसे कोई कठिन प्रश्न नहीं पूछ रहा हूं। कवि ने[1] जो कुछ कहा था, मैं बिल्कुल उसकी उलटी बात कह रहा हूं। कवि ने कहा था–आप ज्यूस का नाम न लें, जिन्होंने सारी वस्तुओं की रचना की, क्योंकि जहां भय है, वहां सम्मान है, बिनु भय होय न प्रीत। मैं कवि से मतभेद रखता हूं। क्या मैं बताऊं कि क्यों ?

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–मैं ऐसा कहना सही नहीं समझता कि जहां भय है वहीं सम्मान है। बहुत से लोग बीमारी, गरीबी और ऐसी बुराइयों से भय खाते हैं, पर उनको इससे भय ही होता है, न कि बातों के प्रति प्रीत या सम्मान पैदा होता है। आप ऐसा नहीं समझते ?

यूथाइफ्रन–जी हां, ठीक है।

सुकरात–पर मैं ऐसा समझता हूं कि जहां-जहां सम्मान है, वहां-वहां भय भी है। क्या किसी आदमी में सम्मान भावना और लज्जाबोध होने के बावजूद ऐसा हो सकता है कि वह नीचता से खौफ न खाए ?

यूथाइफ्रन–नहीं।

सुकरात–तो जहां सम्मान है वहां भय भी होता है, फिर भी ऐसा कहना उचित न होगा कि जहां भी भय है वहां सम्मान है। सम्मान हमेशा भय के पीछे-पीछे नहीं चलता बल्कि भय सम्मान से अधिक व्याप्ति रखता है। यह भय का अंशमात्र है जैसाकि फुट-संख्या का संख्या होना उसका एक गुण है, पर फुट में संख्या का सब कुछ नहीं आ जाता। सम्मान भय का एक गुण है जैसे फुट जहां होगा, वहां संख्या रहेगी, पर जहां भी संख्या होगी वहां फुट न होगा। मैं समझता हूं कि अब मेरी बात समझ रहे हैं ?

यूथाइफ्रन–मैं समझ रहा हूं।

सुकरात–जब मैंने आपसे यह पूछा कि जहां भी न्याय है, क्या वहीं पवित्रता है, तो मेरा मतलब यह था कि यद्यपि जहां-जहां न्याय है वहां-वहां पवित्रता है, फिर भी

---

1 स्टेसिनस

जहां न्याय है वहां सर्वत्र पवित्रता नहीं है क्योंकि पवित्रता न्याय का एक अंशमात्र है। तो यहां तक हम लोग सहमत हैं या हम में कोई मतभेद है ?

यूथाइफ्रन–नहीं, कोई मतभेद नहीं है। मैं समझता हूं कि आप सही हैं।

सुकरात–तो अब अगली बात पर आएं। यदि पवित्रता न्याय का एक अंश है, तो हमें यह पता लगाना चाहिए कि वह न्याय का कौन-सा भाग है। उदाहरणस्वरूप यदि आपने मुझे अभी पूछा होता कि फुट संख्या का कौन-सा भाग है और कौन-सी संख्या फुट है, तो मैं यही कहता कि जो भी संख्या जोड़वाली नहीं है, वह फुट है। क्या यह बात सही होती ?

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–तो क्या अब आप मुझे यह समझा सकते हैं कि न्याय पवित्रता का कौन-सा अंश है ताकि मैं मेलिटस को यह बता सकूं कि मैंने अब अच्छी तरह से आप से समझ लिया है कि कौन-सा कार्य धार्मिक और पवित्र है और कौन-सा नहीं है, इसलिए मेलिटस आपको चाहिए कि मुझ पर अधर्म के लिए अन्यायपूर्वक मुकदमा न चलाएं।

यूथाइफ्रन–तो सुकरात, मैं यह कहूंगा कि धर्म और पवित्रता न्याय का वह अंश है, जिसका संबंध देवताओं के प्रति मनोयोग या श्रद्धा से है और मनुष्य जो कुछ भी देवताओं की श्रद्धा में करता है, वह न्याय का बाकी बचा भाग होता है।

सुकरात–और मैं समझता हूं, यूथाइफ्रन, आपका उत्तर बहुत बढ़िया है, पर इसमें एक बिंदु है जिसके विषय में मैं आपसे और थोड़ा जानना चाहता हूं। मैं अब भी यह नहीं समझ पा रहा हूं कि आप किस श्रद्धा या मनोयोग की बात कह रहे हैं, वह क्या है ? आपका मतलब यह तो नहीं है कि हम देवताओं के प्रति जो श्रद्धा दिखलाते हैं, वह दूसरी वस्तुओं के प्रति मनोयोग या श्रद्धा की तरह है। उदाहरणस्वरूप हम ऐसा कहते हैं, यह तो आप जानिए कि कहते हैं या नहीं, कि प्रत्येक व्यक्ति यह नहीं जानता कि घोड़े के प्रति कैसा मनोयोग होना चाहिए बल्कि घोड़े का प्रशिक्षक ही उसे जानता है।

यूथाइफ्रन–जरूर।

सुकरात–मैं समझता हूं कि घोड़े की देखभाल की कला में घोड़े के प्रति मनोयोग आ जाता है।

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–घोड़े के प्रति मनोयोग की कला का अर्थ है घोड़ों की देखभाल।

यूथाइफ्रन–अवश्य ही।

सुकरात–हर व्यक्ति कुत्तों की देखभाल की कला नहीं जानता सिवा शिकारियों के।

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–मैं समझता हूं कि शिकारी की कला का अर्थ कुत्तों की देखभाल है।

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–चरवाहे की कला का अर्थ जानवरों की देखभाल है।

यूथाइफ्रन–हां।

सुकरात–और आप, यूथाइफ्रन, यह कहते हैं कि पवित्रता और सत्कार्य का अर्थ देवताओं की देखभाल करना है।

यूथाइफ्रन–हां, मैं ऐसा ही कह रहा हूं।

सुकरात–तो प्रश्न यह उठता है कि सारी देखभाल का एक ही उद्देश्य है या नहीं? जिसकी देखभाल की जाती है उसकी भलाई और लाभ के लिए ही देखभाल की जाती है। उदाहरणस्वरूप आप यह देखते हैं कि घोड़ों को तभी लाभ पहुंचता है और उनकी नस्ल सुधरती है जब उनसे संबंधित कला के द्वारा उनकी सेवा की जाती है। क्या यह सही बात नहीं है?

यूथाइफ्रन–हां, मेरा भी यही विचार है।

सुकरात–कुत्तों को शिकारी की कला से और जानवरों को चरवाहों की कला से लाभ पहुंचता है। यह बात सही है कि नहीं? अतः यह हर प्रसंग में ऐसा ही है या आप ऐसा समझते हैं कि जिसकी सेवा की जा रही है, उसको नुकसान पहुंचाने के लिए सेवा की जाती है?

यूथाइफ्रन–यह कैसे हो सकता है? अवश्य ही नहीं।

सुकरात–तो आप मानते हैं कि सेवा लाभ के लिए होती है।

यूथाइफ्रन–जरूर।

सुकरात–तो पवित्रता हमारे अनुसार देवताओं की भलाई या देखभाल है, जिसका उद्देश्य है देवताओं को लाभ पहुंचाया जाए, उनकी उन्नति की जाए। क्या आप ऐसा मानते हैं कि जब आप कोई पवित्र कार्य करते हैं, तो उससे देवता पहले से अच्छे हो जाते हैं?

यूथाइफ्रन–नहीं, बिल्कुल नहीं।

सुकरात–मैं बिल्कुल निश्चित हूं, यूथाइफ्रन, कि आपका यह मतलब नहीं है। इसीलिए मैंने आपसे पूछा था कि आप देवताओं के प्रति ध्यान देने या मनोयोग का क्या मतलब समझते हैं। मैं जानता था कि आपका मतलब कुछ और था।

यूथाइफ्रन–सुकरात, आप सही हैं, मेरा वह मतलब नहीं था।

सुकरात–अच्छी बात है। तो पवित्रता देवताओं के प्रति किस प्रकार का ध्यान है?

यूथाइफ्रन–सुकरात, यह ध्यान या देखभाल उसी प्रकार की है जैसे गुलाम अपने मालिकों की करते हैं।

सुकरात–मैं समझ गया। इसका मतलब यह हुआ कि यह एक तरह से

देवताओं की सेवा है।

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–क्या आप यह बता सकते हैं कि डाक्टर जिस कला का प्रयोग करता है, उसका क्या परिणाम होता है। क्या इसका परिणाम स्वास्थ्य की प्राप्ति नहीं है ?

यूथाइफ्रन– हां है।

सुकरात–अब यह बताइए कि जहाज-निर्माण-कला से क्या परिणाम निकलता है ?

यूथाइफ्रन–सुकरात, यह तो सरल बात है। इसका परिणाम जहाज है।

सुकरात–भवन-निर्माता की कला का परिणाम भवन है, है या नहीं ?

यूथाइफ्रन–जरूर।

सुकरात–तो मेरे प्रिय मित्र, मुझे यह बताइए कि देवताओं की सेवा की कला का क्या परिणाम होता है ? आप इस बात को अवश्य जानते होंगे क्योंकि आप यह दावा करते हैं कि आप किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा देवताओं की बातें ज्यादा जानते हैं।

यूथाइफ्रन–यह बात सच है, सुकरात।

सुकरात–तो मुझे कृपया यह बताइए कि देवता हमारी सेवाओं से क्या महान परिणाम उत्पन्न करते हैं ?

यूथाइफ्रन–बहुत से भव्य परिणाम निकलते हैं, सुकरात।

सुकरात–तो प्रिय बंधु, एक सेनाध्यक्ष से भी कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। सेनाध्यक्षों के कार्य का सर्वोपरि परिणाम तो युद्ध में विजय है, यह बात सही है कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–और मैं ऐसा कह सकता हूं कि काश्तकार बहुत से अच्छे परिणाम उत्पन्न करता है, पर उन सारी बातों में श्रेष्ठ परिणाम यह है कि वह धरती से अन्न पैदा करता है।

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो देवतागण जो बहुत से भव्य परिणाम उत्पन्न करते हैं, उनमें से सबसे प्रमुख क्या है ?

यूथाइफ्रन–मैंने अभी आपको बताया सुकरात कि इन सारे मामलों में सही सत्य जानना बहुत आसान नहीं है। फिर भी मोटे तौर पर यह कह सकता हूं कि यदि कोई मनुष्य यह समझ ले कि प्रार्थना और बलिदान संबंधी उसके वचन तथा कार्य देवताओं को स्वीकार्य हैं, तो हम उसे पवित्र कार्य कहेंगे। इससे सार्वजनिक कल्याण होता है, साथ ही गृहस्थ बुराई से बचा रहता है। जो बातें देवताओं को स्वीकार्य नहीं, वे अधर्म के अंतर्गत आती हैं और उसी से सब वस्तुओं का नाश और सर्वनाश होता है।

सुकरात–निश्चय ही यूथाइफ्रन, यदि आप चाहते तो आप मेरे मुख्य प्रश्न का उत्तर बहुत कम शब्दों में दे सकते थे। पर ऐसा लगता है कि आप मुझे शिक्षा देना नहीं चाहते। जब आप किसी तरह मुझे वह बात बताने को हुए, जिसे मैं जानना चाहता था, तो आप बीच में ही रुक गए। यदि आप अपना प्रवचन जारी रखते तो मैं अब तक बहुत स्पष्ट रूप से जान जाता कि पवित्रता क्या है। पर अब मैं प्रश्न करता हूं और आपके उत्तर के अनुसार ही मैं इसे समझने का प्रयत्न करूंगा। पहले मुझे बताइए कि आप पवित्र और पवित्रता से क्या अर्थ लेते हैं ? क्या आप का मतलब प्रार्थना और बलिदान के विज्ञान से नहीं है ?

यूथाइफ्रन–सही है।

सुकरात–बलिदान का मतलब है देवताओं को अर्पित करना और प्रार्थना का मतलब है उनसे कुछ कहना। है यह बात सही कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–सही है, सुकरात।

सुकरात–तो आपका कहना यह है कि पवित्रता का अर्थ देवताओं से कुछ कहना और उन्हें कुछ देना है।

यूथाइफ्रन–आप मेरी बात सही-सही समझ गए हैं।

सुकरात–हां, यूथाइफ्रन, मैं आपके ज्ञान में हिस्सा बंटाने के लिए व्यग्र हूं, अतः मैं बिल्कुल ध्यान देकर आपकी बातें सुन रहा हूं। आप जो कुछ भी कहेंगे, मैं उसका हर शब्द सुनूंगा। पर यह बताइए कि देवताओं की सेवा का क्या अर्थ है ? आप यह कहते हैं न कि यह उनसे कुछ कहना और उनको कुछ देना है ?

यूथाइफ्रन–मैं यही समझता हूं।

सुकरात–प्रार्थना का सही रूप यह होगा उनसे ऐसी बातें मांगना, जिनकी हमें जरूरत है, है ऐसी बात कि नहीं ?

यूथाइफ्रन–सही है।

सुकरात–तो उन्हें सही रूप से देने का अर्थ यह होगा कि उन्हें वह चीज दी जाए, जिन की जरूरत उन्हें हमसे है। किसी व्यक्ति को कोई ऐसी चीज उपहार में देना बुद्धिमानी नहीं कहलाएगी, जिसकी उसे जरूरत नहीं है।

यूथाइफ्रन–बात सही है, सुकरात।

सुकरात–तो यूथाइफ्रन, पवित्रता का अथ यह है कि यह देवताओं और मनुष्यों में लेन-देन की कला है ?

यूथाइफ्रन–हां, यदि आप इसे ऐसा कहना चाहते हैं, तो यह सही है।

सुकरात–नहीं, मैं तो केवल वही चाहता हूं जो सही है। पर मुझे यह बताइए कि देवतागण को उन उपहारों से कैसे लाभ होता है, जिन्हें हम उन्हें सौंपते हैं ? वे उन्हीं की देन हैं, फिर हम उन्हें जो कुछ देते हैं, उससे उन्हें कैसे लाभ होता है ? क्या इस लेन-देन में हमें यह सुविधा है कि हम उनसे जो कुछ भी अच्छा है, सारी चीजें ले

लेते हैं और उन्हें हम बदले में कुछ भी नहीं देते ?

यूथाइफ्रन–सुकरात, क्या आप यह समझते हैं कि देवताओं को जो उपहार दिए जाते हैं, उनसे उनको कुछ लाभ नहीं होता है ?

सुकरात–पहले बताइए कि ये उपहार क्या हैं, यूथाइफ्रन, जिन्हें हम देवताओं को देते हैं ?

यूथाइफ्रन–हम उन्हें सम्मान और श्रद्धा के अलावा क्या देते हैं और जैसाकि मैंने कहा ये उन्हें ग्राह्य हैं।

सुकरात–तो इसका अर्थ, यूथाइफ्रन, यह हुआ कि देवताओं को जो कुछ स्वीकार्य है, वह न तो उनके लिए लाभजनक है और न उन्हें प्रिय है, और यह दान वही पवित्रता है।

यूथाइफ्रन–मैं सोचता हूं कि कोई भी वस्तु उन्हें इससे अधिक प्रिय नहीं है।

सुकरात–तो मैं इस नतीजे पर पहुंचता हूं कि पवित्रता का अर्थ देवताओं का प्रिय होना है।

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–इसके बाद भी क्या आपको यही आश्चर्य होगा कि आपकी परिभाषाएं एक जगह स्थिर रहने के बजाय चक्कर काटती रहती हैं। क्या तब भी आप मुझे डिडेलस बताएंगे जो उन्हें इस प्रकार चक्कर कटवा रहा है ? हालांकि आप स्वयं डिडेलस से कहीं ज्यादा चतुर हैं और परिभाषाओं को चक्कर खिलाते हैं ? क्या आप इस बात को नहीं देखते कि हमारी परिभाषाएं वहीं पर आकर पहुंच गई हैं जहां से वे चली थीं। आपको अवश्य ही याद होगा कि पवित्रता और देवताओं को जो कुछ भी प्रिय है, विभिन्न वस्तुएं हैं। क्या आपको यह स्मरण है ?

यूथाइफ्रन–स्मरण है।

सुकरात–पर आप यह नहीं देखते कि आप अब कह रहे हैं कि देवतागण जो चाहते हैं, वह पवित्र है। पर देवता लोग जिस चीज से प्यार करते हैं, और जो वस्तु उनमें प्रसन्नता उत्पन्न करती है, वह एक ही बात हुई ?

यूथाइफ्रन–अवश्य।

सुकरात–तो इसका अर्थ यह हुआ कि या तो हमारा पहला निष्कर्ष गलत था या हम अब गलत हैं।

यूथाइफ्रन–ऐसा ही लगता है।

सुकरात–तो हम फिर से शुरू करें और यह पता लगाएं कि पवित्रता क्या है ? मैं तब तक माननेवाला नहीं हूं जब तक कि मुझे सत्य की प्राप्ति न हो जाए। मुझे आप नालायक न समझें, आप इस प्रश्न पर पूरा ध्यान दें और अब आप मुझे बताएं कि सत्य क्या है क्योंकि यदि कोई इसे जानता है तो वह आप ही हैं। और आप एक प्रोटियस हैं, जिन्हें मुझे तब तक नहीं छोड़ना चाहिए जब तक कि मैं आपसे सत्य नहीं

जान लेता। यह नहीं हो सकता कि आप अपने बूढ़े पिता को एक मजदूर की हत्या के अपराध में दोषी करार दे रहे हैं, और आप यह नहीं जानते कि पवित्रता और अपवित्रता सही तौर पर क्या है ? यदि आप गलत कार्य करते होते, तो आपको देवताओं के क्रोध का भय होता, साथ ही आपको लोग क्या कहेंगे इसका भी भय होता, पर अब मैं निश्चित हूं कि आप यह जानते हैं कि पवित्रता क्या है और पवित्रता क्या नहीं है ? इसलिए मेरे उत्तम बंधु यूथाइफ्रन, आप मुझे उसका रहस्य बताइए और मुझसे वह सत्य न छिपाइए जो आपको प्राप्त है।

यूथाइफ्रन–सुकरात, कभी अगले मौके पर बातचीत होगी। मैं इस वक्त जल्दी में हूं और मैं यहां से जाना चाहता हूं।

सुकरात–यह आप क्या कह रहे हैं बंधु। तो क्या आप चले जाएंगे और आप से मुझे पवित्रता क्या है और क्या नहीं है, इस विषय में जानकारी प्राप्त करने की सारी आशा नष्ट हो जाएगी और इस प्रकार मैं मेलिटस से बच नहीं सकूंगा। मैं यह चाहता हूं कि मैं मेलिटस को बताऊं कि यूथाइफ्रन ने मुझे देवता संबंधी विषयों की जानकारी दे दी है, इसलिए अब मैं अज्ञान के वश में होकर उन विषयों पर जल्दबाजी से बात नहीं करूंगा और उनमें नयापन प्रवर्तित नहीं करूंगा। मैं तो मेलिटस से यह प्रतिज्ञा करने जा रहा था कि भविष्य में ज्यादा नेकचलनी दिखाऊंगा।

कैफ़ियत

वार्ता के पात्र :

सुकरात
मेलिटस

स्थल :

न्यायालय

कैफ़ियत

सुकरात–एथेन्सवासियो, मैं यह नहीं वता सकता कि आप पर मेरे अभियोगकारियों ने क्या प्रभाव उत्पन्न किया है। जहां तक मेरा संवंध है, मैं यह करीब-करीब भूल गया हूं कि मैं कौन हूं क्योंकि उन लोगों ने जो वातचीत की है, उसमें सत्य का आभास है। फिर भी उन्होंने शायद ही एक भी सच्ची वात कही हो। उन्होंने जो वहुत-सी झूठी वातें कहीं, उनमें से एक वात पर मुझे सवसे अधिक आश्चर्य हुआ। वह यह कि मैं बहुत चतुर वक्ता हूं और आप को सावधान रहना चाहिए कि कहीं मैं आपको गुमराह न कर दूं। मैं सोचता हूं कि इस प्रकार से उन्होंने जो बात कही, वह अत्यंत निर्लज्जता का द्योतक है क्योंकि ज्यों ही मैं अपना मुंह खोलूंगा, त्योंही उन्होंने जो झूठ मेरे विरुद्ध कहा है कि मैं चतुर वक्ता हूं, उस कथन की कलई खुल जाएगी और यह प्रमाणित हो जाएगा कि किसी भी दृष्टि से मैं एक अच्छा वक्ता नहीं हूं। हां, यदि चतुर वक्ता से यह मतलब है कि मैं सत्य भापण करता हूं, तो यह और बात है। यदि उनका अर्थ यह है तो मैं उनसे सहमत हूं कि मैं उनसे कहीं बड़ा वक्ता हूं। मैं यह फिर से कहता हूं कि मेरे विरुद्ध अभियोग लगाने वालों ने करीब-करीब नहीं या नहीं के बराबर ही सत्य कहा है, पर मैं आपके सामने संपूर्ण सत्य बता दूंगा। अवश्य ही, एथेन्सवासियो, आप मुझसे लंबा-चौड़ा भाषण नहीं सुनने जा रहे हैं, जो उनके भापणों की तरह सुंदर शब्द-विन्यास से अलंकृत हो। मैं बिना किसी तैयारी के आपको वह वात बताना चाहूंगा जो मुझे वतानी है, और जा भी शब्द मेरे मुंह में आ जाएंगे उन्हीं में आपको बताऊंगा। मैं समझता हूं कि मेरा पक्ष न्याय का पक्ष है, इसलिए आप में से कोई इसके अलावा मुझसे कोई और आशा न रखे। सच्ची बात तो यह है कि मेरे मित्र, मेरी इस उम्र में मेरे लिए यह शायद शोभन न होगा कि मैं आपके सामने एक नवयुवक की तरह सत्य लगने वाला झूठ बोलूं। एथेन्सवासियो, एक बात ऐसी है, जिस संबंध में मैं आपसे बहुत नम्रतापूर्वक प्रार्थना करना चाहूंगा कि आप न तो चौंकें और न ही बीच में बोलें। यदि मैं अपनी सफाई देते हुए उसी प्रकार से बातचीत करूं जैसेकि मैं बाजार में, बट्टाखोरों की मेजों पर बोलता रहा हूं, जहां आप में से बहुत से लोगों ने मुझे सुना है, तो आप न तो आश्चर्य करें और न बीच में बोलें। सत्य यह है कि मेरी

उम्र 70 से ऊपर है और मैं पहली बार किसी न्यायालय के सामने आया हूं। इसलिए आप यहां जिस तरह बातचीत करते हैं, वह मेरे लिए बिल्कुल अपरिचित है। यदि मैं सचमुच अजनबी होता, तो आप मुझे अपने स्वदेश की भाषा और शैली में बोलने के लिए क्षमा करते। अब मैं उसके बाद एक प्रार्थना करता हूं। मैं समझता हूं कि मुझे ऐसी प्रार्थना करने का अधिकार है। आप मेरे भाषण की शैली पर न जाएं। यह अच्छी भी हो सकती है और बुरी भी। आप सिर्फ इस प्रश्न पर अपना ध्यान केंद्रित करें कि मैं जो कुछ कह रहा हूं, वह न्यायपूर्ण है अथवा नहीं ? अच्छे न्यायाधीश इसी पर विचार करते हैं और सत्य भाषण करने वाला ही अच्छा वकील बनता है।

एथेन्सवासियो, मुझे अव्वल तो अपने पुराने अभियोगकारियों के पुराने मिथ्या आरोपों के विरुद्ध और फिर अपने वर्तमान अभियोगकारियों के अभियोगों के विरुद्ध अपनी सफाई देनी है। बहुत से लोगों ने बहुत सालों तक मेरे विरुद्ध सिवा झूठ के कुछ नहीं कहा और मैं अनाइटस और उनके साथियों की अपेक्षा ऐसे लोगों से अधिक भय खाता हूं। पर मेरे मित्र, ऐसे ही लोग ज्यादा जबरदस्त होते हैं क्योंकि वे आपके मन पर तब से अधिकार जमाए हुए हैं जब आप बच्चे थे। तभी से वे मुझ पर निरंतर झूठा आरोप लगाते रहे हैं और वह आपको यह समझाते रहे हैं कि सुकरात नाम का एक ज्ञानी व्यक्ति है, जो दिव्य लोक के संबंध में अटकलपच्चू लड़ाता रहता है, जो धरती के नीचे की चीजों पर अपनी जांच की दृष्टि डालता रहता है, जो कमजोर युक्ति को प्रबल युक्ति के रूप में पेश कर सकता है।[1] एथेन्सवासियो, ये लोग जो इस तरह की बातें फैलाते हैं, वे ऐसे अभियोगकारी हैं जिनसे मैं भय खाता हूं क्योंकि उनके श्रोता समझते हैं कि जो लोग ऐसे विषयों में शोध करते हैं वे देवताओं में विश्वास नहीं करते। इसके अलावा बात यह है कि इन अभियोगकारियों की संख्या बहुत अधिक है, इनके आक्रमण बहुत समय से जारी हैं। वे आपको उस समय हमारे विरुद्ध सुनाते थे जब आप कच्ची उम्र के थे, जब व्यक्ति जल्दी से विश्वास करने के लिए तैयार होता है। बात यह है कि उस समय आप कम उम्र थे। आप में से बहुतेरे बच्चे थे और जब वे मुझ पर हमला बोलते थे, तो उन्हें जवाब देने के लिए कोई नहीं होता था। इसमें सबसे अयुक्तिसंगत बात यह है कि साधारण रूप से मैं उनके नाम भी नहीं जानता था। मैं यह नहीं बता सकता कि वे कौन हैं, सिवा कुछ हास्यरस के कवियों के।[2] बाकी लोग जो द्वेष और ईर्ष्या के वश आपको मेरे विरुद्ध उकसाने का प्रयत्न करते रहे हैं, संभव है, वे वास्तविक विश्वास के कारण भी ऐसे करते हों। पर ये हमारे वे शत्रु हैं जिनका मुकाबला करना बहुत कठिन है। बात यह है कि उनमें से किसी को

---

1. मिल्टन, पैराडाइज लॉस्ट, 2, 113
2. उदाहरणार्थ ऐरिस्टोफेनिस; देखिए भूमिका। यूपोलिस ओर शायद अमीप्सियास ने भी सुकरात पर इस तरह के आक्रमण किए थे।

मैं न्यायालय में बुला नहीं सकता और न मैं उनसे जिरह कर सकता हूं। दूसरे शब्दों में, मुझे अपनी सफाई में एक तरह से छायाओं से लड़ना पड़ रहा है और ऐसे प्रश्न उठाने पड़ रहे हैं, जिनका जवाब देने के लिए कोई मौजूद नहीं है। इसलिए आपसे यह प्रार्थना करता हूं कि आप यह विश्वास रखें कि मुझ पर दो प्रकार के अभियोगकारियों ने आक्रमण किया है। पहले प्रकार में मेलिटस तथा उनके बंधुगण आ जाते हैं और दूसरे प्रकार में वे वयोवृद्ध आते हैं, जिनके विषय में मैंने आपको बताया है। आपकी अनुमति से मैं पहले अपने पुराने शत्रुओं के अभियोगों के विरुद्ध अपना बचाव करूंगा क्योंकि आपने उनके अभियोग पहले सुने हैं और वे मेरे वर्तमान अभियोगकारियों से कहीं बढ़ कर तेजी से अभियोग लगाने वाले लोग थे।

एथेन्सवासियो, मुझे अपनी सफाई देनी है और जो थोड़ा-सा समय मुझे दिया गया है, उसमें मुझे उन कुसंस्कारों को दूर करने की कोशिश करनी है जो आपके मन में मेरे विरुद्ध बहुत दीर्घकाल से मौजूद हैं। मैं आशा करता हूं कि मैं ऐसा कर सकूंगा ताकि मेरा भला हो और आपका भी भला हो। पर मैं जानता हूं कि मेरे सामने कितना बड़ा कार्य है और मैं यह भी जानता हूं कि यह बहुत कठिन कार्य है। ईश्वर की यह इच्छा है कि चाहे जो भी परिणाम हों, मुझे विधि का सम्मान करना है और अपनी सफाई देनी है।

तो अब मैं फिर से शुरू करूं और यह देखूं कि मेरे विरुद्ध जो अभियोग पेश हैं, उनसे कैसे कुसंस्कार पैदा हुए हैं और जिनकी आड़ में मेलिटन ने अपना आरोप प्रस्तुत किया है। मेरे विरुद्ध मेरे दुश्मन कलंक फैलाते रहे हैं कि मुझे ऐसे नहीं चलना चाहिए मानो वे औपचारिक रूप से मुझ पर दोष लगा रहे हैं। उनका आरोप कुछ इस प्रकार का होगा : "सुकरात एक दुष्कर्म करनेवाला व्यक्ति है जो धरती और आकाश संबंधी विषयों में हस्तक्षेप करके शोध करता है, वह कमजोर युक्ति को प्रबल युक्ति करके पेश करता है और दूसरों को भी यही चीजें सिखाता रहता है।" ये लोग यही कहते हैं और एरिस्टोफेनिस के प्रहसन में[1] आपने स्वयं सुकरात नामक एक व्यक्ति को देखा होगा जो एक टोकरी के झूले में झूल रहा था और वह कह रहा था कि वह हवा में चलता है और ऐसे विषयों पर बहुत ऊलजलूल बातें कर रहा था जिन्हें मैं नहीं समझता और जिनके संबंध में मैं न तो ज्यादा जानता हूं और न कम। मैं ऐसे ज्ञान को निरुत्साह नहीं करना चाहता बशर्ते कि किसी को ऐसा ज्ञान हो। मैं विश्वास करता हूं कि मेलिटस कभी इसके लिए मुझ पर दोषारोपण नहीं कर सकते। पर एथेन्सवासियो, सत्य यह है कि मुझे इन बातों से कुछ भी नहीं लेना-देना है और लगभग आप सभी इस विषय में मेरे साक्षी हैं। मैं आप में से उन सभी से प्रार्थना करूंगा जो मुझे बात करते हुए सुन चुके हैं। आप अपने पड़ोसियों को यह बताएं और उन्हें यह कहें कि

1. मेघा

यदि आप में से किसी ने मुझे ऐसे मामले में बातचीत करते हुए सुना है, चाहे अधिक सुना हो या कम, तो वह कहे। इससे आपको मालूम हो जाएगा कि मेरे बारे में आम तौर से जो कहानियां कही जाती हैं, वे उतनी ही झूठी हैं जैसी कि ये।

तथ्य तो यह है कि इन कहानियों में से एक भी सच्ची नहीं है और यदि आपने यह सुना हो कि मैं लोगों को शिक्षा देता हूं और इसके लिए धन ऐंठता हूं, तो यह भी सच्ची बात नहीं है। यद्यपि मैं समझता हूं कि लोगों को इस प्रकार से शिक्षा देना, जैसे लियोनटिनी के गोर्जियास, सेओस के प्राडिकस और एलिस के हिप्पियास शिक्षा देते हैं, कुछ बुरी बात न होती। मेरे मित्र, उक्त लोगों में से कोई भी किसी भी शहर में जा सकता है और वे तरुणों को फुसला सकते हैं कि वे अपने सह-नागरिकों की संगत छोड़ दें, जिनके साथ वे व्यर्थ में मिलते रहे हैं और उनसे संयुक्त होने की रियायत के लिए उनको धन देने के लिए भी तैयार हैं। मैं विश्वास करता हूं कि पेरोस से आए हुए एक और ज्ञानी व्यक्ति इस समय हैं, जो एथेन्स में इस समय मौजूद हैं। मैं हिप्पोनिकश के बेटे केल्लियस से मिला था जिसने, सब लोगों ने मिलकर जितना खर्च किया था, अकेले सोफिस्टों पर उससे अधिक खर्च किया था। इसलिए मैंने उनसे (उनके दो बेटे हैं) कहा कि केल्लियस, तुम्हारे दो बेटे यदि बछड़े या घोड़े के बच्चे होते, तो हम उनके लिए एक साईस या शिक्षक भाड़े पर रख देते, जो उन्हें उन विषयों में उत्तम बना देता, जो उनकी प्रकृति के अनुकूल है। वह या तो कोई साईस होता या कोई किसान। पर आप यह देखते हुए कि आपके बच्चे आदमी हैं, उनको शिक्षा देने के लिए कैसे आदमी लेना चाहते हैं ? कौन आदमी मनुष्यों और नागरिकों की उत्तमता को समझता है ? आपने अपने बच्चों के कारण इस विषय पर सोचा होगा। मैंने पूछा कि क्या आपकी निगाह में आपके बच्चों को शिक्षा देने के योग्य ऐसा व्यक्ति है या नहीं ? इस पर उन्होंने जवाब दिया कि अवश्य ऐसा आदमी है। तब मैंने पूछा कि वह व्यक्ति कौन है और कहां से आया है और उसकी फीस क्या है ? उन्होंने कहा, सुकरात, उनका नाम इविनस है, वह पेरोस से आए हैं और उनकी फीस 5 मिना चांदी है। तब मैंने सोचा कि इविनस भाग्यशाली व्यक्ति हैं, क्योंकि वह इस कला को समझता है और इतनी चतुरता से शिक्षा दे सकता है। यदि मुझमें उस प्रकार का ज्ञान होता, तो मैं अपने को गर्वित समझता और उस पर फूला न समाता। पर एथेन्सवासियो, सत्य तो यह है कि मुझमें वह ज्ञान नहीं है।

शायद आप में से कुछ इस पर जवाब दें : "तो सुकरात तुम यह क्या करते रहते हो ? तुम्हारे विरुद्ध ये कुत्साएं कहां से चलती रहती हैं ? अवश्य ही तुम किसी असाधारण काम में लगे होंगे। यदि तुम दूसरे आदमियों से किसी न किसी प्रकार से भिन्न न होते तो तुम्हारे बारे में जो कहानियां और प्रतिवेदन बने हैं, वे न बनते। इसलिए तुम हमें यह बताओ कि तुम्हारा शगल क्या है ताकि हम अंधेरे में अपना निर्णय न दें।" मैं समझता हूं कि यह एक अच्छा प्रश्न है और मैं आपको यह बताने

की कोशिश करूंगा कि मेरे विरुद्ध इन कुत्साओं का क्यों प्रचार हुआ है और मुझे यह कुख्याति क्यों मिली है ? तो आप सुनिए, आप में से कुछ लोग समझेंगे कि मैं मजाक कर रहा हूं, पर मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपको पूर्ण सत्य बताऊंगा। एथेन्सवासियो, मुझे यह ख्याति इसलिए मिली है कि मुझमें एक प्रकार का ज्ञान है, पर वह ज्ञान किस प्रकार का है ? मैं विश्वास दिलाता हूं कि मैं आपको पूरा सत्य बताऊंगा। मैं विश्वास करता हूं कि यह वह ज्ञान ऐसा है, जो मनुष्यों के लिए संभव है। हो सकता है कि जहां तक इस बात को जानने का संबंध है, मैं वास्तविक रूप से ज्ञानी होऊं, पर जिन लोगों के संबंध में मैं अभी बता रहा था, वे शायद ऐसे ज्ञान के धनी हों, जो मानवीय ज्ञान से महत्तर है और जिसका वर्णन मैं किसी हद तक नहीं कर सकता। बात यह है कि मैं उस संबंध में स्वयं कुछ नहीं जानता और यदि कोई कहता है कि मैं जानता हूं तो वह झूठ बोलता है और वह मेरे, विरुद्ध कुत्सा का प्रचार करना चाहता है। एथेन्सवासियो, भले ही आप यह समझें कि मैं उद्धत ढंग से बोल रहा हूं, आप बीच में न बोलें। मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं, वह मेरी बात नहीं है। मैं आपको यह बताऊंगा कि कौन ऐसा कहता है। वह आपका विश्वासपात्र है। मैं डेलफी के देवता को इस तथ्य का साक्षी मानूंगा क्योंकि वह मेरे ज्ञान और उसकी प्रकृति से परिचित हैं। आपको किरिफन याद होगा। बचपन से ही वह मेरे साथी थे और वह अधिनायकत्व के जमाने में लोगों के साथ निर्वासन में गए और फिर अल्प-तंत्र के अंत के बाद अन्य लोगों के साथ ही वापस आए।[1] आपको यह भी याद होगा कि किरिफन का चरित्र कैसा है ? वह जिस भी काम का बीड़ा उठा लेते थे, उसको तेजी से करते थे। एक दफा वह डेलफी में गए और उन्होंने वहां के भविष्यवक्ता से एक प्रश्न पूछा—मैं आप बंधुओं से यह प्रार्थना करूंगा कि आप चिल्लाएं नहीं।" उन्होंने पूछा, "क्या कोई ऐसा मनुष्य है, जो मुझ से ज्ञानी है।" इस पर पुरोहित ने उत्तर दिया—"नहीं, कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है। किरिफन स्वयं मर चुके हैं, पर यहां उनके भाई मौजूद हैं। वह उन मेरी बातों का अनुमोदन करेंगे।

अब आप यह सोचिए कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं। मैं लोगों में अप्रिय हूं। इस अप्रियता की उत्पत्ति कैसे हुई, यह मैं बताने जा रहा हूं। जब मैंने इस भविष्यवाणी की बात सुनी, तो मैं सोचने लगा कि इस धुंधली-सी उक्ति से ईश्वर का क्या मतलब हो सकता है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मैं कतई ज्ञानी नहीं हूं। बिल्कुल नहीं। तो उस हालत में जब यह कहा गया कि मैं सबसे ज्ञानी हूं, उसका क्या अर्थ हो सकता है ? ऐसा नहीं हो सकता कि वह झूठ बोल रहे हों क्योंकि वह देवता हैं और देवता झूठ नहीं बोलते। बहुत दिनों तक मैं उनका मतलब नहीं समझ सका, फिर बड़ी अनिच्छा से मैं इसका अर्थ जानने के लिए इस प्रकार से तैयार हुआ। मैं एक आदमी के पास

1. तीस व्यक्तियों के अल्प-तंत्र के युग में 404 ई. पू.

गया जिसकी यह ख्याति थी कि वह ज्ञानी है। मैं यह सोचकर कर उसके पास गया था कि यदि कहीं मैं यह प्रमाणित कर सकूं कि यह उत्तर गलत है और भविष्यवक्ता को मैं उसकी गलती बता सकूं मैं यह कह तो सकूंगा, "आपने कहा कि मैं सबसे ज्ञानी व्यक्ति हूं, पर यह व्यक्ति मुझसे अधिक ज्ञानी है।" इसलिए मैंने उस व्यक्ति को कसौटी पर कसा, उस व्यक्ति का नाम बताने की जरूरत नहीं। वह एक राजनीतिज्ञ है। पर एथेन्सवासियो, नतीजा यह हुआ कि जब मैंने उससे बातचीत की, तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि बहुत से लोग, और सबसे अधिक ऐसे व्यक्ति जो स्वयं अपने को ज्ञानी मानते हैं, ज्ञानी नहीं हैं। तब मैंने यह प्रमाणित करने की कोशिश की कि वह ज्ञानी नहीं है यद्यपि वह समझते थे कि वह ज्ञानी हैं। ऐसा करते हुए मैंने उन्हें तथा आसपास खड़े बहुत से लोगों से अपना दुश्मन बना लिया। इसलिए जब मैं चला गया, तो मैंने अपने मन में सोचा, मैं इस आदमी की तुलना में ज्ञानी हूं। शायद हम दोनों में से कोई भी वास्तविक अच्छाई की कोई बात नहीं जानता, पर फर्क इतना है कि वह अपने को ज्ञानी मानता है जबकि वह है नहीं। और मैं ज्ञानी नहीं हूं और साथ ही यह सोचता भी हूं कि मैं ज्ञानी नहीं हूं। कम से कम इस बिंदु पर मैं उस व्यक्ति से कुछ ज्ञानी हूं। मैं कम से कम यह तो नहीं समझता कि मैं उस बात को जानता हूं, जिस बात को मैं नहीं जानता। इसके बाद मैं एक दूसरे व्यक्ति के पास गया, जो उपरोक्त व्यक्ति से ज्ञान की अधिक ख्याति रखता था और वहां भी वही माजरा पेश आया और वहां भी मैंने उन्हें तथा बहुत से दूसरे लोगों को अपना शत्रु बना लिया।

इसके बाद मैं एक के बाद एक कई आदमियों के पास गया और यह समझते हुए गया कि मैं हर रोज दुश्मनों की संख्या बढ़ा रहा हूं। मेरे मन में बड़ी व्यग्रता और बेचैनी पैदा होती थी, फिर भी मैंने यह सोचा कि सर्वोपरि ईश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए। इसलिए मैं ऐसे हर व्यक्ति के पास गया, जो कुछ ज्ञानी लगता था और मैं भविष्यवक्ता के अर्थ को खोजता रहा। एथेन्सवासियो, मुझे आपको सत्य अवश्य ही बता देना चाहिए। मिस्र के पवित्र कुत्ते की कसम, ईश्वर की आज्ञा से मैंने जो खोज की, उसका मैंने यह नतीजा देखा कि जिन व्यक्तियों को ज्ञानी होने का बहुत अधिक यश प्राप्त है, वे सबसे अधिक ज्ञानहीन थे और जो लोग साधारण व्यक्ति समझे जाते थे, वे उनसे कहीं अधिक सिखाने की योग्यता रखते थे। अब मैं आपको यह बताऊं कि मैं किस प्रकार से घुमक्कड़ी करता रहा, ताकि भविष्यवक्ता की वाणी की पूरी तरह जांच हो जाए। मैं राजनीतिज्ञों के बाद में कवियों के पास गया जिनमें दुखांत के कवि, उच्छ्वास के कवि और अन्य कवि थे। मैं यह सोचकर उनके पास गया था कि अवश्य ही उनमें महान ज्ञानियों के दर्शन होंगे। इसलिए मैंने उन कविताओं को लिया जिन पर मैं ऐसा सोचता था। उन्होंने बहुत साधना की है। मैंने उनसे पूछा कि इनके मायने क्या है ? मुझे ऐसी आशा थी कि उनसे मैं कुछ सीखूंगा। पर प्रिय मित्र, मैं सत्य बताने में लज्जित हो रहा हूं, फिर भी मुझे कहना पड़ेगा।

कवियों की वाणी के संबंध में जब मैंने बातचीत की, तो यह लगा कि पास खड़े लोगों में कोई भी व्यक्ति इन कवियों से कहीं अधिक अच्छी तरह उनकी कविता पर बातचीत कर सकता था। इसलिए मुझे जल्दी ही यह ज्ञात हो गया कि कविगण अपनी कृतियों की रचना ज्ञान के द्वारा नहीं करते बल्कि प्राकृतिक शक्ति और अनुप्रेरणा के द्वारा करते हैं, जैसे पैगंबर और मंत्रसिद्ध लोग करते हैं। जो बहुत अच्छी बातें कहते हैं, पर वे जो कुछ कहते हैं उसे वे पूरी तरह नहीं समझते। मुझे कवि इसी कोटि के मालूम हुए। पर साथ ही मैंने यह अनुभव किया कि अपनी कविता के कारण वे समझते थे कि वे कविता के अलावा दूसरे मामलों में भी मनुष्यों में सबसे अधिक ज्ञानी हैं, जबकि वे वस्तुतः ऐसे नहीं थे। इसलिए मैं फिर निकल पड़ा, यह सोचकर कि मैं राजनीतिज्ञों से उतना ही श्रेष्ठ हूं जितना कि कवियों से।

इस प्रकार मैं कारीगरों में गया क्योंकि मैं बहुत अच्छी तरह जानता था कि मुझे कहने योग्य कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं था और मैं इस बारे में निश्चित था कि कारीगर बहुत-सी अच्छी बातें जानते होंगे। इस मामले में मैं गलती पर नहीं था। वे बहुत-सी ऐसी बातें जानते थे, जिन्हें मैं नहीं जानता था और इस हद तक वे मुझसे ज्यादा ज्ञानी थे। पर एथेन्सवासियो, मुझे ऐसा लगा कि कारीगर लोग भी उसी गलती के शिकार हैं, जिसके कवि। उनमें से हरेक अपने को बहुत महत्वपूर्ण मामलों में अत्यंत ज्ञानी मानता था, क्योंकि वह अपनी कला में पारंगत था और उनकी इस गलती के कारण उनका वास्तविक ध्यान ओझल हो जाता था। अतः मैंने डेल्फी के भविष्यवक्ता की तरह अपने से पूछा कि मैं वैसे ही रहूं जैसे कि मैं था यानी उनके ज्ञान और अज्ञान से हीन, या मैं उन दोनों का अधिकारी बनूं जैसाकि वह थे। और मैंने अपने को और भविष्यवक्ता को यह उत्तर दिया कि मैं जैसा हूं वैसा ही रहना बेहतर है।

एथेन्सवासियो, इस जांच के फलस्वरूप मेरे बड़े-बड़े भयंकर दुश्मन हो गए हैं, जिन्होंने मेरे बारे में तरह-तरह की कुत्सा का प्रचार किया है और लोग यह कहते हैं कि मैं एक 'ज्ञानी व्यक्ति'[1] हूं। पास खड़े साधारण आदमी हमेशा यह समझते हैं कि जब मैं शास्त्रार्थ में किसी व्यक्ति को परास्त कर देता हूं, तो मैं उस मामले में ज्ञानी हूं। पर मेरे मित्र, मेरा एक विश्वास है कि केवल ईश्वर ही वास्तविक रूप से ज्ञानी है और इस भविष्यवाणी के द्वारा देवता का अर्थ यह था कि मनुष्य के ज्ञान का मूल्य नहीं के बराबर है। मैं नहीं समझता कि उनका मतलब यह था कि सुकरात ज्ञानी है। उन्होंने बस मेरे नाम को एक दृष्टांत के रूप में रखा, मानो देवता मनुष्य जाति को यह कहना चाहते हों—"तुम लोगों में सुकरात ही सबसे ज्ञानी है क्योंकि वह इस बात को जानता है कि उनके ज्ञान का मूल्य दो कौड़ी भी नहीं है।" इसीलिए जो भी व्यक्ति मुझे

1. ग्रीक भाषा में 'ज्ञानी व्यक्ति' के लिए जो शब्द आया है, वह एथेन्स में प्राकृतिक दार्शनिकों और सोफिस्ट के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में चला था—रिडेल, भूमिका, पृष्ठ 32

मिलता है और जिसे मैं ज्ञानी समझता हूं, चाहे वह नागरिक हो या अजनबी हो, मैं अब भी बराबर उसे जांचता और परखता चलता हूं जैसाकि ईश्वर ने मुझे आदेश दिया है। और जब भी यह परख लेता हूं कि वह ज्ञानी नहीं है तो मैं ईश्वर की तरफ से उसे बता देता हूं कि आप ज्ञानी नहीं हैं। मैं इस काम में इतना अधिक संलग्न रहा कि मुझे सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने या निजी मामलों की देखरेख करने का अवसर ही नहीं मिला। ईश्वर की सेवा के कारण मैं घोर गरीबी में गोते खा रहा हूं।

इसके अलावा जो नौजवान मेरे पीछे चलते हैं, धनवानों के पुत्र हैं और उनके पास काफी अवकाश है, वे लोगों की जिरह में प्राकृतिक खुशी का अनुभव करते हैं और कभी-कभी आपस में मेरा अनुकरण करके अपना हाथ आजमाते हैं, इसके बाद वे बाहरी लोगों को भी आजमाते हैं। मैं ऐसा समझता हूं कि बहुत से लोग उन्हें मिलते हैं, जो यह समझते हैं कि वे बहुत कुछ जानते हैं, जबकि स्थिति यह है कि वे बहुत कम जानते या कुछ नहीं जानते हैं। इस प्रकार जिन लोगों से जिरह की जाती है, वे प्रश्नकर्ताओं से नाराज होने की बजाए मुझसे नाराज हो जाते हैं और कहते हैं कि सुकरात एक बहुत ही घृणित व्यक्ति है जो नवयुवकों को भ्रष्ट करता है। और जब उनसे यूं पूछा जाता है—"क्यों भई, वह क्या करते हैं ? वह क्या सिखाते हैं ?" तो वे इसका जवाब नहीं दे पाते, पर अपना मुंह बचाने और झेंप मिटाने के लिए वे दार्शनिकों के विरुद्ध अपने प्रचलित अभियोग लगाकर यह कहते हैं कि मैं हवा पर की तथा धरती के नीचे की चीजों पर खोज करता हूं और मैं लोगों से कहता हूं कि वे देवताओं में विश्वास न करें। वे यह भी कहते हैं कि मैं कमजोर युक्ति को प्रबल युक्ति करके दिखाता हूं। मेरा ऐसा ख्याल है कि वे सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहते। और सत्य यह है कि वे ज्ञान का दिखावा करने वाले अज्ञ लोग हैं और वह जिस ज्ञान का दावा करते हैं, वह उनके पास नहीं है। इसलिए वे दीर्घकाल से कड़वी कुत्साओं से आपके कान भरते रहे हैं। वे जोशीले हैं, बहुसंख्यक हैं और मेरे कड़वे विरोधी हैं। वे अच्छी तरह संगठित हैं और ऐसी बातचीत करते हैं जो आपात दृष्टि से सच्ची लगती है। इन्हीं आधारों पर मेलिटस, अनाइटस और लाइसन ने मुझ पर हमला किया है। मेलिटस मुझसे नाराज है कि मैंने कवियों की पोल खोली और अनाइटस मुझसे नाराज है कि मैंने कारीगरों और राजनीतिज्ञों के गुब्बारे की हवा निकाल दी और लाइसन वक्ताओं की भद्द के कारण दुखी है। जैसाकि मैंने शुरू में ही कहा कि जो थोड़ा समय मुझे सफाई के लिए दिया गया है, उसमें मैं आपके मन से वे संस्कार, उन प्रबल संस्कारों को नहीं निकाल सकूंगा। एथेन्सवासियो, मैंने आपको जो कुछ बताया है, वह सत्य है। मैं छोटी या बड़ी किसी बात को न तो छिपाता हूं, न तथ्यों का दमन करता हूं। फिर भी मैं यह जानता हूं कि मेरी वाणी की सादगी के ही कारण लोग मेरे दुश्मन हो गए हैं। पर यह इस बात का प्रमाण है कि मेरे वचन तथा मेरे विरुद्ध व्याप्त लोगों के असंतोष के मेरे द्वारा बताए कारण सत्य हैं। मेरे विरुद्ध कुसंस्कार उसी तरह हैं,

जैसा मैंने बताए और आप अब यह इसके बाद देखेंगे कि तथ्य वैसे ही हैं जैसाकि मैं बता रहा हूं।

मेरे प्रथम प्रकार के अभियोगकारियों द्वारा लगाए हुए अभियोगों के विरुद्ध सफाई में जो कुछ मैंने कहा है वह काफी होगा। अब मैं अपने को अच्छे देशभक्त कहने वाले मेलिटस तथा बाद के अभियोगकारियों के विरुद्ध अपनी सफाई देना चाहूंगा। हम यह मान लें कि ये लोग मेरे नए अभियोगकारी वर्ग के हैं और वे मुझ पर दोष लगा रहे हैं। वे दोष क्या हैं ? मेलिटस कहता है कि सुकरात एक दुष्कर्मकारी है जो नवयुवकों को भ्रष्ट करता है, जो नागरिकों के देवताओं में विश्वास नहीं करता, यही नहीं वह नए देवताओं में विश्वास करता है। तो यह रहा मेरे विरुद्ध अभियोग ! अब हम हर बिंदु को अलग-अलग लें। मेलिटस का कहना यह है कि मैं नवयुवकों को भ्रष्ट करने का बुरा काम करता हूं। पर एथेन्सवासियो, मैं यह कहता हं कि वे गलत काम कर रहे हैं क्योंकि वे लोगों पर बहुत थोड़े कारणों से मुकदमे चलाकर एक व्यावहारिक मजाक कर रहे हैं। साथ ही यह बहाना कर रहे हैं कि वह उन मामलों में बहुत जोश और दिलचस्पी रखते हैं जिन पर उन्होंने कभी मुहूर्त भर भी नहीं सोचा। अब मैं यह प्रमाणित करने की कोशिश करूंगा कि बात ऐसी ही है जैसे कि मैंने बताई है।

मेलिटस, अब आप इधर आइए। क्या यह तथ्य नहीं है आप यह महत्वपूर्ण मानते कि तरुण लोगों को उत्तम से उत्तम होना चाहिए।

मेलिटस–हां।

सुकरात–तो फिर आप न्यायाधीशों को यह बताइए कि नवयुवकों का उन्नयन कौन करता है ? आप इस संबंध में इतनी दिलचस्पी ले रहे हैं ? अतः अवश्य ही आप इस मामले की जानकारी रखते होंगे। आप मुझ पर दोषारोपण कर रहे हैं और मुझ पर मुकदमा चला रहे हैं। जैसाकि आपका कहना है, आपने यह आविष्कार किया है कि मैं नवयुवकों को भ्रष्ट करता हूं। अब कृपया न्यायाधीशों को यह बताइए कि वे कौन से लोग हैं, जो नवयुवकों को उन्नयन मार्ग पर ले जाते हैं। मेलिटस, आप चुप हैं, इससे मालूम होता है कि आपको कुछ कहना नहीं है, पर आप यह न समझिए कि यह कोई कुत्सामूलक बात है। जैसा कि मैं कहा करता हूं क्या आपकी चुप्पी इस बात का अंतिम प्रमाण नहीं है कि आपने इस मामले पर एक मुहूर्त भी नहीं सोचा है। तो अब प्रिय महाशय यह बताइए कि कौन ऐसा है जो नवयुवकों को बेहतर नागरिक बनाता है ?

मेलिटस–विधि ही लोगों को उन्नत करती है।

सुकरात–मेरे प्रिय मित्र, यह मेरा प्रश्न नहीं है। मैं यह पूछ रहा हूं कि वे कौन से आदमी हैं, जो नवयुवकों का उन्नयन करते हैं, वे कौन से लोग हैं, जो विधि के ज्ञान से चलते हैं ?

मेलिटस--सुकरात, यहां उपस्थित न्यायाधीश ऐसे ही लोग हैं।

सुकरात–मेलिटस, आपका मतलब क्या है ? क्या वे नवयुवकों को शिक्षा देने तथा उनके उन्नयन के योग्य हैं ?

मेलिटस–अवश्य।

सुकरात–उनमें से सभी ? या उनमें से कुछ ?

मेलिटस–सभी !

सुकरात–हेरे नामक देवता की कसम है कि यह बहुत सुंदर समाचार है। मतलब यह निकला है कि उपकार करने वालों की भरमार है। यहां जो लोग मुकदमा सुन रहे हैं, वे भी नवयुवकों का उन्नयन करते हैं या नहीं ?

मेलिटस–करते हैं।

सुकरात–क्या सिनेटर भी ऐसा करते हैं ?

मेलिटस–हां।

सुकरात–तो मेलिटस, एसेंबली के सदस्य नवयुवकों को भ्रष्ट करते हैं या वे भी सबके सब उनका उन्नयन करते हैं ?

मेलिटस–वे भी उनका उन्नयन करते हैं।

सुकरात–तो इसका मतलब यह हुआ कि मेरे सिवा मेरे एथेन्सवासी नवयुवकों का उन्नयन करते हैं, केवल मैं ही उनको भ्रष्ट करता हूं। क्या यही आपका मतलब है ?

मेलिटस–अवश्य ही यही मेरा मतलब है ?

सुकरात–आपने मुझे एक बहुत ही अभागे व्यक्ति के रूप में खोजा है। अब यह बताइए कि क्या घोड़ों के विषय में भी यही बात सत्य है ? क्या उन्हें एक ही व्यक्ति हानि पहुंचाता है, बाकी सब लोग उनका उन्नयन करते हैं ? बजाय इसके क्या यह सत्य नहीं है कि केवल एक व्यक्ति या बहुत थोड़े व्यक्ति यानी जो घोड़ों के मामले में चतुर हैं, वे ही उनका उन्नयन करते हैं, जबकि अधिकांश लोग जो उनका प्रयोग करते हैं या उनसे काम लेते हैं उनको हानि पहुंचाते हैं। क्या मेलिटस, ऐसा नहीं है कि घोड़ों और दूसरे सारे जानवरों पर यही बात लागू होती है ? अवश्य ही ऐसा है, पर यह बताइए कि आप या अनाइटस इस पर हां या ना क्या कहते हैं। यह नवयुवकों का बहुत बड़ा सौभाग्य होता, यदि केवल उन्हें भ्रष्ट करने वाला एक ही व्यक्ति होता, बाकी सब उनकी भलाई करने वाले होते। मेलिटस, सत्य यह है कि आप इस बात को अंतिम रूप से प्रमाणित कर देते हैं कि अपने जीवन में आपने नवयुवकों पर कुछ नहीं सोचा है। आपकी अपनी बातों से यह स्पष्ट हो गया कि आप उन मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं लेते, जिनके संबंध में आप मुझ पर मुकदमा चला रहे हैं।

अब, मेलिटस, कृपा करके हमें बताइए कि अच्छे नागरिकों में रहना बेहतर है या बुरे नागरिकों में ? मेरे मित्र, आप इसका उत्तर दीजिए। मैं आपको कतई कोई

कठिन प्रश्न नहीं पूछ रहा हूं। क्या बुरे नागरिक अपने पड़ोसियों को हानि और अच्छे नागरिक अपने पड़ोसियों को लाभ नहीं पहुंचाते ?

मेलिटस–हां, ठीक है।

सुकरात–क्या कोई आदमी ऐसा होगा जो अपने साथियों से लाभवान होने के बजाय हानिग्रस्त होना चाहेगा ? मेरे प्रिय महोदय, आप इसका उत्तर दीजिए। आप विधि के अनुसार इसका उत्तर देने के लिए बाध्य हैं। क्या कोई हानिग्रस्त होना चाहता है ?

मेलिटस–अवश्य नहीं।

सुकरात–तो क्या आप मुझ पर मुकदमा इसलिए चला रहे हैं कि मैं नवयुवकों को भ्रष्ट करता हूं और उन्हें अपने जान या अनजान में बदतर बनाता हूं ?

मेलिटस–ऐसा आप अपनी जानकारी में करते हैं, इसी के लिए मैं मुकदमा चला रहा हूं।

सुकरात–क्या बात है मेलिटस ? क्या आपके कहने का मतलब यह है कि आप, जो कि मुझसे काफी छोटे हैं और मुझसे ज्ञानी भी हैं, यह तो जानते होंगे कि सत्कर्म करने वाले लोगों के साथ बुरा नागरिक हमेशा बुराई करता है और अच्छा नागरिक हमेशा अच्छाई ही करता है। पर मैं इतना असाधारण वृद्ध हूं कि मैं यह नहीं जानता कि यदि मैं अपने साथियों में से किसी को बदमाश बना दूं, तो वह मुझे किसी न किसी प्रकार से कष्ट पहुंचाएगा। क्या आपका कहना यह है कि मैं इस अपराध को जानबूझकर कर रहा था ? यदि आप ऐसा कहते हैं कि तो आप किसी को भी यह विश्वास नहीं दिला सकते कि आप सही बात कह रहे हैं। या तो मैं नवयुवकों को बिल्कुल ही भ्रष्ट नहीं करता हूं और यदि मैं करता हूं तो मैं बिना जाने करता हूं। इसलिए आप दोनों क्षेत्रों में झूठे हैं और यदि मैं उन्हें अनजाने में भ्रष्ट करता हूं, तो विधि आपको यह अधिकार नहीं देती कि आप मुझ पर इस अनिच्छाकृत दोष के लिए अदालत में मुकदमा चलाएं। हां, आप मुझे अलग ले जाकर डांट सकते हैं और मुझे शिक्षा दे सकते हैं क्योंकि मैं ज्यों ही यह समझ जाऊंगा कि मैं दुष्कर्म करता रहा हूं, त्यों ही मैं अपने अनजान में दुष्कर्म करने से बाज आऊंगा। पर आपने मुझे शिक्षा देने से इनकार किया। आपका मुझसे कोई संपर्क नहीं रहा। इसके बजाय आप मुझे न्यायालय के सामने लाए, जहां विधि व्यक्तियों को शिक्षा देने के लिए नहीं बल्कि सजा देने के लिए भेजती है।

एथेन्सवासियो, जैसाकि मैंने कहा, सच्ची बात यह है कि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मेलिटस ने कभी इन मामलों पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। कुछ भी हो, मेलिटस, अब हमें यह बताइए कि आप यह कैसे कहते हैं कि मैं अपने से कम उम्र के लोगों को भ्रष्ट करता हूं ? स्पष्ट ही आपके दोषारोपण के अनुसार मैं उन्हें नगर के देवताओं में विश्वास न करने को तथा उनके बजाय नए देवताओं में विश्वास करने की शिक्षा

देकर भ्रष्ट करता हूं। क्या आपका मतलब यही है कि मैं इस प्रकार की शिक्षा से ही नवयुवकों को भ्रष्ट करता हूं ?

मेलिटस–हां, अवश्य मेरा यही मतलब है।

सुकरात–तब जिन देवताओं के नाम पर हम लोग बातचीत कर रहे हैं, उनके विषय में आप थोड़ा और स्पष्ट करके मुझे और न्यायाधीशों को सारी बातें बताइए। मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि आपका क्या मतलब है। क्या आपका मतलब यह है कि मैं नवयुवकों को कुछ देवताओं में विश्वास करने की शिक्षा तो देता हूं, पर नगर के देवताओं में विश्वास करने की शिक्षा नहीं देता ? क्या आप मुझ पर यह दोष लगाते हैं कि मैं उन्हें अजनबी देवताओं में विश्वास करने की शिक्षा देता हूं ? यदि आपका यही अर्थ है, तो मैं स्वयं कुछ देवताओं में विश्वास करता हूं और मेरा अपराध निरीश्वरवाद का नहीं है। या आपका मतलब यह है कि मैं किसी भी देवता में स्वयं विश्वास नहीं करता और मैं दूसरे लोगों को भी यह शिक्षा देता हूं कि उनमें विश्वास न करें ? असली बात क्या है ?

मेलिटस–मेरा मतलब यह है कि आप किसी भी रूप में देवताओं में विश्वास नहीं करते।

सुकरात–बहुत खूब मेलिटस। आप ऐसा क्यों कहते हैं ? क्या आपका मतलब यह है कि मैं सूर्य या चंद्र को दूसरे लोगों की तरह देवता नहीं मानता।

मेलिटस–न्यायाधीश, मैं कसम खाकर कहता हूं कि ये विश्वास नहीं करते। वह कहते हैं कि सूर्य एक पत्थर मात्र है और चांद मिट्टी है।

सुकरात–प्रिय मेलिटस, क्या आप समझते हैं कि आप एनेक्सागोरस पर मुकदमा चला रहे हैं ? आप अवश्य न्यायाधीशों को बहुत तुच्छ समझ रहे हैं यदि आप यह समझ रहे होंगे कि वे कुछ पढ़े-लिखे नहीं हैं। यदि आप यह समझते हैं कि क्लेजोमीनी के एनेक्सागोरस की रचनाएं ऐसे सिद्धांतों से भरी पड़ी हैं, इसलिए नौजवान मुझसे यह बातें सीखते हैं जबकि वे अकसर अधिक से अधिक एक ड्रैक्मा देकर रंगशाला के लिए टिकट ले सकते हैं[1] और वे सुकरात पर हंसेंगे, यदि सुकरात यह दावा करे कि ये अद्भुत सिद्धांत सुकरात के सिद्धांत हैं। पर आप सचमुच बताइए कि क्या आप ऐसा समझते हैं कि मैं देवताओं में बिल्कुल विश्वास नहीं करता ?

मेलिटस–निश्चित रूप से मैं ऐसा समझता हूं। आप संपूर्ण रूप से निरीश्वरवादी हैं।

---

1. यहां सुकरात के हवाले का संबंध एरिस्टोफेनिस द्वारा रचित एनेक्सागोरस के व्यंग्य चित्रों तथा दूसरे कवियों तथा यूरोपिडिस की तरह दुखांत नाटककारों की कृतियों से है, जिन्होंने अपने नाटकों में एनेक्सागोरस के सिद्धांतों का प्रवर्तन किया। सूर्य एक पत्थर है, यह सिद्धांत एक प्रचलित नाटक में दिया गया है।

सुकरात–मेलिटस, कोई भी ऐसा विश्वास नहीं करता और मैं समझता हूं कि आप स्वयं जानते ही होंगे कि यह झूठ है। एथेन्सवासियो, मुझे ऐसा लगता है कि मेलिटस एक बहुत ही उद्धत और मनचला व्यक्ति है और वह केवल नौजवानी के औद्धत्य और मनचलेपन में आकर मुझ पर मुकदमा चला रहा है। वह मुझ पर प्रयोग करने वाले एक ऐसे व्यक्ति की तरह है, जो मुझसे एक ऐसी पहेली बुझवा रहा है जिसका कोई हल नहीं है। वह अपने को शायद ऐसा कह रहा है–क्या यह ज्ञानी सुकरात भला यह समझ पाएगा कि मैं मजाक कर रहा हूं और आत्मविरोध कर रहा हूं, क्या मैं इसे और बाकी सारे श्रोताओं को बेवकूफ बना पाऊंगा ? मुझे ऐसा लगता है मेलिटस दोषारोपण में आत्मविरोध कर रहा है, मानो वह यह कह रहा है–सुकरात एक बुरा आदमी है, जो देवताओं में विश्वास नहीं करता, पर वह देवताओं में विश्वास करता है। पर उसके दोषारोपण में जो खामियां हैं, उन्हें देखते हुए यह तो बहुत तुच्छ बात है।

अब, मित्रो, हम यह देखें कि क्यों मैं यह सोचता हूं कि उसका मतलब यही है। मेलिटस, आप मुझे जवाब दें और एथेन्सवासियो, आप मेरा यह अनुरोध याद रखें जो मैंने शुरू में ही किया था कि जब मैं अपने ढंग से बोल रहा हूं तो आप बीच में न बोलें।

मेलिटस, क्या कोई ऐसा आदमी है जो मनुष्यों से संबंधित चीजों में तो विश्वास करता है, पर मनुष्यों के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता ? मेरे मित्र, इस प्रकार बेतुकेपन से बीच में न बोलकर आप मेलिटस से इस प्रश्न का उत्तर लें। क्या कोई ऐसा आदमी है जो यह विश्वास करता है कि बांसुरी-वादन तो है, पर बांसुरी-वादक नहीं है। मेरे मित्र, स्पष्ट ही ऐसा कोई आदमी हो नहीं सकता। यदि आप इसका उत्तर न दें, तो मैं आपको तथा न्यायाधीशों को उत्तर बताऊंगा, पर आपको चाहिए कि आप हमारे अगले प्रश्न का उत्तर दें। क्या कोई ऐसा आदमी है, जो दैवी वस्तुओं के अस्तित्व में तो विश्वास करता है, पर दैवी शक्तियों के अस्तित्व में नहीं ?

मेलिटस–नहीं, ऐसा कोई आदमी नहीं है।

सुकरात–मुझे बड़ी खुशी है कि न्यायाधीशों ने आपसे कोई उत्तर तो निकाला। स्थिति यह है कि आप यह कहते हैं कि मैं अस्तित्वों में विश्वास करता हूं, चाहे वे पुराने हों या नए और मैं लोगों को उनमें विश्वास करने के लिए कहता हूं, कुछ भी हो, आपके बयानों के अनुसार मैं दिव्य अस्तित्वों में विश्वास करता हूं। आपने अपने बयान में शपथ लेकर यह कहा है। पर यदि मैं दिव्य अस्तित्वों में विश्वास करता हूं, तो मैं समझता हूं कि इसका मतलब आवश्यक रूप से यह होता है कि मैं दिव्य शक्तियों में विश्वास करता हूं। क्या ऐसी बात नहीं है ? मैं मान लेता हूं कि आप इसे मानते हैं क्योंकि आप उत्तर नहीं दे रहे हैं। पर क्या हम यह विश्वास नहीं करते कि दिव्य शक्तियां या तो स्वयं देवता हैं या देवताओं की संतान हैं। आप इसे मानते हैं या नहीं ?

मेलिटस—मैं मानता हूं।

सुकरात—तब आप यह मानते हैं कि मैं दिव्य शक्तियों में विश्वास करता हूं। यदि ये दिव्य शक्तियां देवताओं के रूप में हैं, तो मैं कहता हूं कि आप मजाक कर रहे हैं और यह कहकर पहेली बुझा रहे हैं कि मैं देवताओं में विश्वास करता हूं, साथ ही नहीं करता हूं, क्योंकि मैं दिव्य शक्तियों में विश्वास करता हूं। पर ये दिव्य शक्तियां देवताओं की अवैध संतान हैं, जो परियों से या दूसरी माताओं से उत्पन्न हुई हैं, जैसाकि कहा जाता है, तो मैं यह पूछता हूं कि ऐसा कौन आदमी हो सकता है कि जो देवताओं की संतानों के अस्तित्व में तो विश्वास करे, पर देवताओं के अस्तित्व में विश्वास न करे ? यह ऐसी बात होगी जैसे कोई घोड़ों और गधों के बच्चों के अस्तित्व में तो विश्वास करे, पर घोड़ों और गधों के अस्तित्व में विश्वास न करे। मेलिटस, या तो ऐसा आपने मेरी चतुरता की जांच करने के लिए किया होगा या बात यों है कि आप सच्चाई के साथ मेरे विरुद्ध कोई अपराध लगा नहीं सकते थे, इसलिए आपने इसी रूप में मुझ पर दोष लगाया है। पर आप बिल्कुल बुद्धू को भी यह समझा सकते हैं कि दिव्य वस्तुओं तथा देवताओं की वस्तुओं में विश्वास का अर्थ आवश्यक रूप से दिव्य शक्तियों, देवताओं और वीरों में विश्वास नहीं है।

पर, एथेन्सवासियो, सच्ची बात यों है कि मुझे इस संबंध में यह प्रमाणित करने के लिए कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैंने वह अपराध नहीं किया, जिसके नाम पर मेलिटस मुझ पर मुकदमा चला रहे हैं। मैंने जो कुछ कहा है, वह इसे प्रमाणित करने के लिए यथेष्ट है। फिर से मैं यह कहता हूं कि यह बिल्कुल सही है जैसाकि मैं पहले ही बता चुका हूं कि मैं लोगों का बहुत अप्रिय हो गया हूं और मैंने बहुत से दुश्मन बना लिए हैं। यदि मुझे सजा हुई भी, तो इसी कारण मिलेगी। उसका कारण मेलिटस या अनाइटस नहीं हैं, बल्कि जनता के कुसंस्कार और संदेह हैं। इस प्रकार से कुसंस्कार और संदेह के कारण मेरे पहले बहुत से अच्छे आदमी विनष्ट हो चुके हैं और मैं समझता हूं कि ऐसा फिर होगा। मुझे यह भय नहीं है कि मैं उनका अंतिम शिकार बनूंगा।

शायद कोई यह कहे, 'सुकरात, क्या तुम शर्मिंदा नहीं हो कि तुम ऐसे काम करते रहते हो, जिससे तुम को मृत्यु-दंड मिल सकता है ?' इस पर मैं न्याय के साथ यह उत्तर देना चाहूंगा, मेरे मित्र, यदि आप समझते हैं कि बिलकुल दो कौड़ी के आदमी के अलावा कोई व्यक्ति किसी कार्य का बीड़ा उठाते समय यह हिसाब लगाने बैठेगा कि इससे मैं जिंदा रह सकूंगा या मर जाऊंगा। ऐसा आदमी सिवा इसके कुछ नहीं सोचेगा कि वह सही काम कर रहा है या बुरा काम कर रहा है, वह अच्छे आदमी की हैसियत से काम कर रहा है या बुरे आदमी की तरह। यदि आप इसके अलावा कोई विचार रखते हैं तो आप बहुत सख्त गलती कर रहे हैं। आपके अनुसार ट्राय में जो देवोपम लोग और उनमें थैटिस का पुत्र, जो अपमान के मुकाबले में खतरे के अन्य

विकल्प की बिल्कुल परवाह नहीं करता था, वह बिल्कुल ही बेकार आदमी था ? जब वह हेक्टर को मारने के लिए तैयार था, तब उसकी देवी मां उससे बोली थी, "मेरे पुत्र, यदि तू अपने साथी पेट्रोक्लुस की मृत्यु का बदला लेता है और हेक्टर को मार डालता है, तो तू स्वयं मर जाएगा क्योंकि भाग्य हेक्टर की मृत्यु के एन बाद तेरी प्रतीक्षा कर रहा है।" उसने अपनी मां की बात सुन ली, पर उसने खतरे और मृत्यु की परवाह नहीं की। डर था तो उसे एक कायर के रूप में जीने का तथा अपने मित्र की मृत्यु का बदला न लेने का। उसने कहा, मैं दुष्कर्म करने वाले को सजा देकर फौरन मर जाऊंगा, यह मुझे ज्यादा पसंद है और मैं यह नहीं चाहता कि मैं लोगों की घृणा का पात्र बन कर व धरती का भार बनकर कलंकित हो जिंदा रहूं।[1] क्या आप सोचते हैं कि वह खतरे या मृत्यु की परवाह करता था ? एथेन्सवासियो, मैं इसे सत्य मानता हूं। चाहे मनुष्य की चौकी या कर्तव्य जो भी हो, चाहे उसने इसे अपनी इच्छा से चुना हो और चाहे उसके सेनाध्यक्ष ने उसे वहां तैनात किया हो, उसका कर्तव्य है कि वह खतरे से लोहा ले और मृत्यु या और किसी बात की परवाह किए बिना सब संकटों का सामना करे, सिवा उस संकट के जिसे असम्मान कहते हैं।

एथेन्सवासियो, जब आपने जो सेनाध्यक्षों को मेरा अधिकारी चुना था, उन्होंने मुझे पोटिडिया, एम्फीपोलिस और डेलियम में चौकी सौंपी थी। मैं दी हुई चौकी पर डटा रहा और दूसरे लोगों की तरह वहां मृत्यु का जोखिम उठाता रहा और अब मेरे लिए यह बहुत ही अद्भुत होगा, यदि मैं मृत्यु के भय से या और किसी कारण से अपनी वह चौकी छोड़ दूं, जिसे ईश्वर ने मुझे सौंपा है। मेरी यह धारणा है कि उन्होंने ही मुझे ज्ञान के अन्वेषण के लिए जीवन व्यतीत करने और अपने को तथा दूसरे को कसौटी पर चढ़ाने के लिए आदेश दिया था, अतः मैं पीछे नहीं हट सकता। ऐसा करना बहुत अजीब होगा। और उस हालत में न्याय के साथ मैं इसलिए अभियुक्त किया जा सकता हूं कि मैं देवताओं में विश्वास नहीं करता क्योंकि ऐसा करना भविष्यवक्ता की अवज्ञा करना होगा। ऐसी हालत में मेरे लिए मृत्यु से डरना बहुत गलत होगा। ऐसा करना समतुल्य होगा अपने को ज्ञानी मानने के जबकि मैं ज्ञानी नहीं हूं। मेरे मित्र, मृत्यु से डरना वैसा ही है जैसे कोई अपने को ज्ञानी समझे और वह ज्ञानी न हो और यह ऐसा सोचना होगा कि हम जानते हैं जबकि स्थिति यह है कि हम नहीं जानते। जहां तक मनुष्य जानता है, संभव है कि मृत्यु घटित होने वाली सबसे अच्छी बात हो, पर वे इससे इस प्रकार डरते हैं मानो वे यह जानते ही हों कि यह सबसे बड़ी बुराई है। और यदि हम अपने को उस विषय का ज्ञानी समझें, जिसे हम नहीं जानते हैं तो यह चिंतन संबंधी सबसे लज्जाजनक अज्ञान होगा। मेरे मित्र, इस मामले में भी मैं शायद साधारण व्यक्तियों से बिल्कुल भिन्न हूं और यदि मैं दूसरों

1. होमर, इलियड, अध्याय 18, पृष्ठ 96, 98

से किसी भी तरह अधिक ज्ञानी होने का दावा करता हूं, तो वह इसलिए कि मैं नहीं समझता कि मुझे दूसरे जगत के विषय में कोई स्पष्ट ज्ञान है, वास्तव में मुझे कोई भी ज्ञान नहीं है। पर मैं इतनी अच्छी तरह जानता हूं कि बुराई करना और अपने बड़ों की बात न मानना, बुरा और नीचतापूर्ण कार्य है, चाहे वे बड़े मनुष्य हों या देवता हों। मैं ऐसा काम कभी नहीं करूंगा जिसे मैं बुरा करके जानता हूं और मैं उस कार्य से भी कभी भय खाकर हटने वाला नहीं हूं जो अच्छा है। इसलिए यदि आप मुझे इस समय छोड़ भी देते हैं और अनाइटस का तर्क नहीं मानते, तो मुझ पर मुकदमा चलना ही नहीं चाहिए था। इसी कारण आप मुझे दंड देने के लिए बाध्य हैं क्योंकि, जैसाकि उन्होंने कहा, यदि मैं बच गया तो आपके सारे बच्चे सुकरात की शिक्षा से भ्रष्ट हो जाएंगे। इसलिए यदि आप मुझसे यों कहें, "सुकरात, इस बार हम लोग अनाइटस की बात नहीं मानते और हम तुमको इस शर्त पर छोड़ देते हैं कि तुम अपने अन्वेषण से तौबा कर लो और दर्शनशास्त्र से हाथ खींच लो। यदि फिर तुम इन कामों को करते हुए पाए जाओगे तो तुम्हें मृत्यु-दंड दिया जाएगा।"

यदि आप मुझे इन शर्तों पर छोड़ना चाहते हैं, तो उसके उत्तर में मैं यही कहूंगा कि एथेन्सवासियो, मैं आपके प्रति बहुत अधिक सम्मान और प्रेम रखता हूं, पर मैं ईश्वर की आज्ञा मानूंगा न कि आपकी। जब तक मुझमें सांस और शक्ति है, तब तक मैं दर्शनशास्त्र से बाज नहीं आऊंगा, न आपको यह कहने से बाज आऊंगा और न आप में से हरेक को यह सत्य बताने से चूकूंगा। जैसाकि मेरी आदत है, मैं कहूंगा, "मेरे प्रिय बंधुओं, आप उस एथेन्स नगर के नागरिक हैं जो ज्ञान और चिंतन के लिए बहुत बड़ा और विख्यात माना जाता है। क्या आप धन, ख्याति और सम्मान को इतना महत्व देने के लिए लज्जित नहीं हैं ? क्या आप को ज्ञान, सत्य और आत्मा की पूर्णता के विषय में फिक्र नहीं है ?"

यदि एथेन्स का नागरिक मेरी बातों को न माने और यह कहे कि वह इन चीजों की परवाह नहीं करता है, तो मैं इतने पर उसको छोड़कर चला नहीं जाऊंगा। मैं उसे प्रश्न-प्रतिप्रश्न से जर्जरित कर दूंगा और उसकी जांच करूंगा। और यदि मैं देखूंगा कि उसमें सत्कर्म का अभाव है, भले ही वह दावा करे कि वह सत्कर्मकारी है, तो मैं उसका इसलिए तिरस्कार करूंगा कि वह सबसे महत्वपूर्ण चीजों को कम मूल्य देता है और जो चीज कम मूल्य की है उसे वह अधिक महत्व देता है। मित्र, ऐसा हर व्यक्ति के साथ, जो भी मुझे मिले, नौजवान हो, बूढ़ा हो, नागरिक हो या अजनबी हो, मैं करता जाऊंगा, पर विशेषकर मैं एथेन्स के नागरिकों के साथ ऐसा करूंगा क्योंकि वे मेरे बहुत नजदीकी हैं। आप यह जान लें कि ईश्वर ने मुझे ऐसा करने के लिए आज्ञा दी है। मैं यह सोचता हूं कि एथेन्स में आप लोगों को इससे बड़ा कोई सौभाग्य प्राप्त नहीं रहा कि मैं ईश्वर की सेवा में प्रस्तुत हूं। मैंने अपनी सारी जिंदगी घूमने-फिरने तथा आपको यह समझाने में लगा दी कि आप अपनी आत्मा की पूर्णता के लिए सबसे

अधिक प्रयत्न करें और जब तक ऐसा नहीं हो जाता, आप शरीर और धन के संबंध में न सोचें। मैं आपको यह बताता रहा कि धन से सत्कार्य नहीं आता और धन और हर अच्छी चीज जो मनुष्य को मिलती है, चाहे सार्वजनिक रूप से या निजी रूप से, वह सत्कार्य से ही आती है। यदि मैं इस शिक्षा से नवयुवकों को भ्रष्ट करता हूं, तो यह बात बड़ी बुरी है, यदि कोई व्यक्ति यह कहता है कि मैं भ्रष्ट करता हूं, तो यह बात वाकई बुरी है, पर यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि मैं उन्हें और किसी बात की शिक्षा देता हूं, तो वह गलत है। इसलिए एथेन्सवासियो, मैं यह कहता हूं कि आप अनाइटस की बात सुनें या उसकी बात न सुनें, आप मुझे छोड़ें या मुझे न छोड़ें, पर एक बात के संबंध में आप निश्चित रहें कि मैं अपने जीवन का तरीका नहीं बदलूंगा—चाहे इसके फलस्वरूप मुझे एक बार नहीं, कई बार मरना पड़े।

एथेन्सवासियो, आप मुझे बीच में न टोकिए। आप उस अनुरोध को याद रखें जो मैंने आपसे किया था और आप मेरी बात सुनें। मैं समझता हूं कि यदि आप मेरी बात सुनेंगे, तो आपको लाभ होगा। मैं आपसे कुछ बात कहना चाहता हूं, जिससे आप शायद चिल्ला पड़ेंगे, पर आप ऐसा न कीजिए। यह आप निश्चित जानिए कि यदि आप मुझे मृत्यु-दंड देते हैं, यह जानते हुए कि मैं कौन हूं और मैं क्या कहता हूं, तो आपको मुझसे ज्यादा हानि होगी। मेलिटस और अनाइटस मुझे किसी प्रकार हानि नहीं पहुंचा सकते। यह असंभव है, क्योंकि मैं निश्चित हूं कि ईश्वर एक भले आदमी को एक बुरे आदमी से हानिग्रस्त नहीं होने देंगे। वे मुझे मार सकते हैं, निर्वासित कर सकते हैं या मुझे सब नागरिक अधिकारों से वंचित कर सकते हैं। और शायद मेलिटस और दूसरे लोग सोचें कि यह बहुत बुरा हुआ, पर मैं ऐसा नहीं सोचता। मैं सोचता हूं कि वह अब जैसा कर रहे हैं, वह कहीं बड़ी बुराई है क्योंकि वह मुझे अन्यायपूर्वक मृत्यु-दंड दिलाने की कोशिश कर रहे हैं। अब, एथेन्सवासियो, मैं बिल्कुल अपनी सफाई नहीं दे रहा हूं, जैसाकि आप मुझसे आशा करते हैं। मैं आपसे यह अनुरोध करता हूं कि आप मुझे सजा करके या आपको उन्होंने जो वरदान दिया है, उससे इनकार करके ईश्वर के विरुद्ध पाप न करें। यदि आप मुझे मृत्यु-दंड देते हैं, तो आपको आसानी से मेरे रिक्त स्थान की पूर्ति करने वाला कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा। ईश्वर ने मुझे इस शहर पर आक्रमण करने के लिए भेजा है—एक अजीब उपमा देते हुए कहता हूं मानो यह एक बड़ा और भव्य घोड़ा हो। यह घोड़ा आकार को देखते हुए सुस्त है और इसे एक मक्खे से कटवाकर उठाने की जरूरत है। मैं समझता हूं कि वह मक्खा मैं हूं जिसे ईश्वर ने इस शहर पर आक्रमण करने के लिए भेजा है। मैं आप पर भिनभिना और आप पर बैठ-बैठकर आपको जगाने और प्रोत्साहित करने से, सारा दिन हर आदमी का तिरस्कार करने से, नहीं चूकता। मेरे मित्र, आपको आसानी से कोई व्यक्ति मेरी जगह लेनेवाला नहीं मिलेगा और यदि आप मेरी सलाह मानें, तो आप मुझे मृत्यु-दंड न दें। आलसी लोगों की तरह आप परेशान हैं क्योंकि आप जगाए

जा रहे हैं। और यदि आप अनाइटस की बात मानें, तो आप मुझे एक ही बार में आसानी से मार सकते हैं और तब बाकी सारी जिंदगी मजे में सो सकते हैं। हां, यदि ईश्वर आप पर तरस खाकर फिर किसी व्यक्ति को आपको जगाने के लिए भेजे, तो वह दूसरी बात है। आप यह आसानी से देख सकते हैं कि ईश्वर ने ही मुझे आपके शहर को सौंपा है। मानवीय आवेग भर होता तो मैं अपने सारे स्वार्थों को तिलांजलि न देता और इतने सालों के अपने निजी मामलों को मैं बिगड़ने न देता। बात यह है कि मैं बराबर आपकी सेवा में लगा रहा और हर आदमी को, एक पिता या एक बड़े भाई की तरह मिलकर, यह समझाता रहा कि वह सत्कार्य पर ध्यान दे। यदि इस तरह के कार्य से मुझे कोई लाभ होना होता या मुझे अपने व्याख्यानों आदि के कारण कुछ पैसे मिलने होते, तो वह कोई कारण होता। पर आप स्वयं जानते हैं कि मेरे विरुद्ध अभियोग लगानेवाले यद्यपि मुझ पर बेहया या बेशर्म होने के सभी तरह के दोष लगाते हैं, फिर भी वे मुझ पर निर्लज्जता के साथ यह आरोप नहीं लगाते कि मैंने कभी किसी से पैसा वसूला या मांगा है। वे इस संबंध में कोई भी गवाह पेश नहीं कर सकते हैं और मैं सोचता हूं कि मेरी गरीबी में मेरे पास इस सत्य का यथेष्ट बड़ा प्रमाण मौजूद है।

शायद यह आपको अद्‌भुत लगे कि मैं निजी तौर पर तो अपनी बातों के प्रचार में इतना व्यस्त रहता हूं, फिर भी मैं न सभा में आने का साहस करता हूं और न सार्वजनिक परिषदों में भाग ही लेता हूं। आपने अक्सर मुझे यह कहते सुना होगा कि मैं ऐसा क्यों नहीं करता हूं। इसका कारण मैंने अनेक स्थलों पर दिया है। और वह यह है कि मुझे ईश्वर से कुछ दिव्य इंगित मिलते रहते हैं। ये वही दिव्य इंगित हैं जिनके विरुद्ध मेलिटस ने व्यंग्य करते हुए दोषारोपण किया है। मुझे इस प्रकार के दिव्य इंगित बचपन से मिलते रहे हैं। यह एक तरह की आवाज है, जिसे जब भी सुनता हूं, तो फौरन उस काम से पीछे हट जाता हूं जिसे मैं करने जा रहा था। यह आवाज मुझे कभी किसी काम के लिए उकसाती नहीं। यही आवाज मुझसे राजनीति में भाग लेने के लिए मना करती है और मैं समझता हूं कि यह निषेध अच्छा ही है। एथेन्सवासियो, यह निश्चित है कि यदि मैं राजनीति में भाग लेने की चेष्टा करता तो फौरन मारा जाता। तब मैं बहुत पहले ही मर जाता और उससे न तो आपको कोई लाभ होता और न ही मुझे कोई लाभ होता। आप मुझसे इस कारण नाराज न हों कि मैं सच्ची बात कर रहा हूं। एथेन्स या और किसी भी स्थान में कोई भी आदमी यदि जनगण की इच्छाओं का विरोध करता और राज्य के अंदर जो भयंकर अन्याय और अवैधता जारी है, उन्हें रोकने की कोशिश करता, तो वह अधिक दिनों तक जिंदा नहीं रह सकता था। जो भी व्यक्ति न्याय-पक्ष के लिए वास्तविक रूप से लड़ना चाहता है, उसे यह लड़ाई एक निजी व्यक्ति के रूप में जारी रखनी होगी, न कि सार्वजनिक व्यक्ति के रूप में। तभी वह अपनी जान थोड़े दिनों के लिए बचा सकता है।

अब मैं बताऊंगा कि यह बात बहुत प्रबल प्रमाणों से सिद्ध है—न केवल शब्दों

से बल्कि आप जिसे सबसे अधिक महत्व देते हैं, कार्यों से। तो आप सुनिए कि मुझे क्या हुआ है। तभी आप जानेंगे कि ऐसा कोई भी आदमी नहीं है जो मुझे मृत्यु के भय से दुष्कर्म करने के लिए राजी कर सके; मैं घुटने टेकने के बजाय तुरंत मर जाना पसंद करूंगा। मैं आपको जो कुछ कहने जा रहा हूं, वह शायद अदालतों के लिए बहुत मामूली व रोजमर्रा की बात हो, फिर भी यह है सत्य। एथेन्सवासियो, जिस एकमात्र पद पर मैं आरूढ़ रहा, वह सीनेटर का पद था। जब आपने आर्गीनूसी की लड़ाई के बाद अपने आदमियों का उद्धार नहीं कर पाने के कारण जिन दस सेनाध्यक्षों पर सामूहिक रूप से मुकदमा चलाना चाहा—यद्यपि ऐसा करना अवैध था, जैसाकि आप बाद को समझ भी गए—उस समय एन्टीओकिस कबीले के हाथों में, जिस कबीले का मैं भी हूं, अध्यक्षता का पद था। उस अवसर पर अध्यक्षों में से केवल मैंने आपकी अवैध कार्रवाई का विरोध किया और आपके विरुद्ध मतदान दिया था। वक्तागण मुझे मुअत्तल करने और गिरफ्तार करने के लिए तैयार थे और आप मेरे विरुद्ध हल्ला मचा रहे थे एवं मुझ पर जोर डाल रहे थे कि मैं मान जाऊं। पर मैंने सोचा कि मुझे न्याय और विधि की रक्षा के लिए जोखिम उठाना ही चाहिए और कैद या मृत्यु के भय से आपके अन्यायपूर्ण प्रस्ताव का समर्थन नहीं करना चाहिए। यह उस जमाने की बात है जब लोकतंत्र का विनाश होने ही वाला था। जब अल्प-तंत्र (थोड़े से लोगों द्वारा शासित सरकार) की स्थापना हुई तो तीस अधिनायकों ने मुझे चार दूसरे लोगों के साथ परिषद-भवन[1] में बुला भेजा और हमें यह आज्ञा दी गई कि हम सलामिस से सलामिनियन लिओन को ले आएं ताकि वे उसे मृत्यु-दंड दे सकें। वे लोग इस प्रकार के आदेश दूसरों को जब-तब दिया करते थे और चाहते थे कि अपने अपराधों में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करें। पर उस समय भी मैंने न केवल शब्दों से बल्कि कार्यों से भी यह प्रमाणित कर दिया था कि मैं (यदि एक इतर अभिव्यक्ति का सहारा लूं) मौत से बाल भर भी नहीं डरता, पर ईश्वर और मनुष्य के कानूनों के विरुद्ध आचरण न करने का बहुत प्रयास करता हूं। अपनी सारी शक्ति के बावजूद वह सरकार मुझे डराकर कोई गलत काम नहीं करा सकी। पर जब हम परिषद-भवन छोड़कर कर चले गए, तो बाकी चारों व्यक्ति सलामिस गए और वे लिओन को एथेन्स में ले आए। मैं घर चला गया। यदि इस बीच तीस अधिनायकों का शासन फौरन ही खत्म न हो जाता तो बहुत संभव है कि मैंने उस वक्त जो कुछ किया था, उसके लिए मैं मौत के घाट उतार दिया जाता। आप में से बहुत सारे लोग मेरे इस मामले के साक्षी हैं।

यदि मैं सार्वजनिक मामलों में भाग लेता, एक ईमानदार व्यक्ति की तरह न्याय-पक्ष का साथ देता और इसी को अपना परम कर्तव्य समझता, तो क्या आप यह

1. यह वह स्थान है जहां प्रिटनी-गण भोजन करते थे और बलि चढ़ाते थे।

सोचते हैं कि मैं इतने साल जिंदा रहता ? एथेन्सवासियो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि तब न तो मैं जीवित रहता और न ही कोई दूसरा आदमी ऐसा करके जीवित रह सकता है। पर अपनी सारी जिंदगी में, चाहे निजी रूप में हो चाहे सार्वजनिक रूप में, जब भी मुझे सार्वजनिक मामलों में भाग लेना पड़ा, तो आप देखेंगे कि मैंने किसी भी व्यक्ति से दबकर भलाई और बुराई के मामले में एक भी बिंदु पर तरह देने से अस्वीकार किया। मैं उन लोगों से भी नहीं दबा जिन्हें मेरे शत्रु गलत ढंग से मेरे छात्र बतलाते रहते हैं।[1] पर मैं कभी किसी व्यक्ति का शिक्षक नहीं था; मैंने युवक या वृद्ध किसी से कभी भी, जो मेरी बात सुनना चाहते थे, बात करने से इनकार नहीं किया। मैं जो बातचीत करता हूं, वह पैसे लेकर नहीं करता और न ही मैंने पैसे न देने पर कभी बातचीत से इनकार किया। मैं धनी तथा गरीब सभी से समान रूप से प्रश्न पूछने के लिए तैयार रहता हूं और यदि कोई व्यक्ति मेरे प्रश्न का उत्तर देना चाहे या मेरी बात सुनना चाहे, तो उसे पूरी आजादी रहती है। सच्ची बात तो यह है कि ऐसे लोगों को बुरा या अच्छा नागरिक बनाने के संबंध में मुझे दोषी करार नहीं दिया जा सकता क्योंकि मैंने किसी को कुछ शिक्षा देने या ज्ञान देने का दावा नहीं किया। यदि कोई व्यक्ति यह कहता है कि उसने मुझसे निजी तौर पर कुछ सीखा या सुना है, जो किसी दूसरे ने नहीं सुना, तो आप समझ लीजिए कि वह सच नहीं बोल रहा है।

आखिर ऐसी क्या बात है कि लोग मेरे साथ इतना अधिक समय बिताने में आनंद प्राप्त करते हैं ? एथेन्सवासियो, आप सुन ही चुके हैं कि इसका कारण क्या है। मैंने उस समय पूरा सत्य खोलकर रख दिया था, जब मैंने आपसे यह कहा था कि वे ऐसे लोगों को कसौटी पर कसे जाते देखकर खुश होते हैं, जो अपने को ज्ञानी मानते हैं पर असल में ज्ञानी नहीं हैं। इसमें संदेह नहीं कि ऐसी बातचीत सुनकर बहुत मनोरंजन होता है। मैं यह कहता हूं कि ईश्वर ने मुझे भविष्यवाणियों में, स्वप्नों में और हर प्रकार से (जैसे भी ईश्वरीय इच्छा मनुष्य पर प्रकट होती है) मनुष्यों को कसौटी पर कसने का आदेश दिया है। एथेन्सवासियो, यह रहा सत्य; और यदि यह सत्य न होता तो आसानी से इसका निराकरण हो सकता था। यदि यह सच्चाई होती कि मैंने वाकई नवयुवकों को भ्रष्ट किया है और अब दूसरों को भी भ्रष्ट कर रहा हूं, तो उनमें से जो अब बड़े हो चुके हैं, वे मुझ पर दोषारोपण करने के लिए आगे आते और अपना बदला लेते कि मैंने उन्हें कम उम्र में बुरी सलाह दी थी। यदि वे स्वयं ऐसा करने के अनिच्छुक होते, तो उनके रिश्तेदार, पिता, भाई या दूसरे नातेदार–बशर्ते कि मैंने उन्हें हानि पहुंचाई होती–उन्हें याद कर अब मुझसे बदला लेने के लिए यहां आते। उनमें से बहुतों को मैं निश्चित रूप से न्यायालय में उपस्थित देख रहा हूं। मेरे इलाके के

---

1. यह उल्लेख विशेषकर तीस व्यक्तियों के अल्प-तंत्र से संबंधित क्रिटियस तथा अल्सीबियाडिस के विषय में है।

क्रीटोबूलस के पिता, मेरे हम-उम्र क्रीटो, यहां मौजूद हैं। ईशीनस के पिता, स्फेटस के लिसानियस, मौजूद हैं और एपीजेनिस के पिता, सेफीसवासी एन्टीफोन, यहां मौजूद हैं। और भी बहुत से लोग मौजूद हैं, जिनके भाइयों ने मेरी संगत में समय बिताया है—थियोजोटीयस के पुत्र और थिओडोटस के भाई निकोसट्राटस। खैर, थिओडोटस तो मर चुके पर अपने भाई से यह नहीं कह सकते थे कि वह चुप रहें। इसी प्रकार डिमोडोकस के पुत्र और थियाजिस के भाई पैरालस, एरिस्टोन के पुत्र और अफलातून के भाई एडीमेन्टस और एरिस्टोडोडस के भाई इन्टाडोरस यहां मौजूद हैं। और भी बहुत से लोगों के नाम मैं ले सकता हूं। मेलिटस को चाहिए था कि इनमें से कुछ को अपने व्याख्यान के दौरान गवाहों के रूप में बुलाते। पर यदि वह ऐसा करना भूल गए हैं, तो वे अब भी उन्हें बुला सकते हैं। और जब तक वह उनसे प्रश्न करेंगे, मैं अलग खड़ा हो जाऊंगा। वह हमें बताएं कि उनके पास ऐसा कोई गवाह है कि नहीं। मेरे मित्रो, इसके विपरीत आप देखेंगे कि ये सारे लोग मेरा समर्थन करने के लिए तैयार हैं, हालांकि मेलिटस और अनाइटस ने मुझे भ्रष्टाचारी तथा उनके रिश्तेदारों को बिगाड़नेवाले के रूप में दोषी माना है। उनमें से वे, जो भ्रष्ट हो चुके हैं, मेरा समर्थन करने के उनके पास शायद कोई कारण हों, पर उनके अ-भ्रष्ट रिश्तेदार, जो इस समय ज्यादा उम्र के हैं, उनके लिए भला क्या कारण हो सकता है कि वह सत्य और न्याय के अलावा कोई बात कहें। वे बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि मेलिटस झूठा है और मैं सत्य बोल रहा हूं।

तो, मित्रो, इस बात को यदि इसी प्रकार की अन्य बातों के साथ मिला दिया जाए, तो यही वह सफाई है, जो मैं आपके सामने पेश करना चाहूंगा। आप में से कुछ लोग ऐसे होंगे, जो इससे भी कम महत्वपूर्ण मुकदमे में देख चुके होंगे कि अभियुक्त किस प्रकार परेशान हो जाते हैं और न्यायाधीशों से रो-धो कर यह प्रार्थना करते हैं कि उन्हें छोड़ दिया जाए। वे अपने बच्चों, मित्रों और रिश्तेदारों को अदालत में ले आते हैं ताकि भावुकता को उभारा जा सके पर आप यह देख रहे होंगे कि मैं इनमें से कोई भी बात करने के लिए तैयार नहीं हूं यद्यपि मुझ पर बहुत भारी खतरा है। शायद इससे आप मेरे खिलाफ और कड़े पड़ जाएंगे, नाराज होंगे और क्रोध में अपने मत देंगे। यदि आप में से किसी को इस कारण क्रोध हुआ है, मैं नहीं समझता कि ऐसा हुआ है, पर यदि ऐसा हुआ है तो मैं समझता हूं कि युक्तिसंगत रूप से मुझे उस व्यक्ति से यह कहना चाहिए, मेरे मित्र, मेरे भी नातेदार हैं, और होमर के शब्दों में 'मैं डंठलों या पत्थरों से पैदा नहीं हुआ हूं बल्कि एक स्त्री के गर्भ से पैदा हुआ हूं।'[1] इसलिए एथेन्सवासियो, क्या मैं आपको यह बताऊं कि मेरे भी नाते-रिश्तेदार हैं, मेरे तीन बच्चे हैं, उनमें से एक नवयुवक है और दो अभी छोटे हैं। फिर भी मैं उनमें से किसी को

1. ओड, 19, 163

आपके सामने न तो पेश करूंगा और न आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप मुझे छोड़ दें। पूछा जा सकता है कि मैं ऐसी बातें क्यों न करूं? एथेन्सवासियो, आप विश्वास रखें कि ऐसा मैं किसी प्रकार की गुस्ताखी की भावना से या इसलिए नहीं कर रहा हूं कि मैं आपको सस्ता या हल्का मानता हूं। रहा यह कि मैं मृत्यु का सामना साहस के साथ कर सकता हूं या नहीं, यह दूसरा प्रश्न है। पर अपने सम्मान तथा आपके सम्मान तथा इस शहर के सम्मान के लिए मैं इसे अच्छा नहीं मानता कि इस उम्र में और इतना नाम होते हुए भी मैं इस प्रकार की कोई बात करूं। लोगों ने गलत या सही यह मत बना लिया है कि सुकरात साधारण मानव से बिल्कुल भिन्न है और यह एक लज्जाजनक बात होगी, यदि आप में से कोई ज्ञानी, साहसी या किसी अन्य गुण के गुणी इस प्रकार से काम करें। मैंने अक्सर ख्यातिमान लोगों को अपने मुकदमों में अजीब व्यवहार करते हुए पाया है, मानो वे यह समझते हों कि मौत के घाट उतारा जाना बहुत भयंकर दुर्भाग्य हो, मानो आप यदि उन्हें मृत्यु-दंड न दें तो वे कभी मरेंगे ही नहीं। मैं समझता हूं कि ऐसे लोग नगर को अपयश का भागी बनाते हैं क्योंकि बाहर का आदमी यही समझेगा कि जिन श्रेष्ठ तथा अत्यंत प्रमुख एथेन्सवासियों को अपने नागरिकों के द्वारा किसी पद के लिए या दूसरे सम्मानों के लिए चुना जाता है, वे वस्तुतः स्त्रियों से बढ़कर नहीं हैं। एथेन्सवासियो, आप में से जिनकी कुछ ख्याति है, उन्हें ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए और आपको यह भी चाहिए कि आप हम लोगों को ऐसा न करने दें। आपको यह दिखा देना चाहिए कि आप शांत रहने वाले अभियुक्तों की तुलना में ऐसे लोगों के प्रति और भी ज्यादा निष्करुण होंगे, जो इस प्रकार दयापूर्ण दृश्य रच कर नगर को हास्यास्पद बनाते हैं।

पर ख्याति और सम्मान के अलावा भी, मेरे मित्र, मैं यही सोचता हूं कि न्यायाधीश से यह नहीं कहना चाहिए कि आप मुझे छोड़ दें और इस तरह से हम सजा से बचें। मैं इसे उचित नहीं समझता। हमारा कार्य यह है कि हम न्यायाधीश के मन को तर्क द्वारा मोड़ने की कोशिश करें। बात यह है कि न्यायाधीश यहां अपने मित्रों को रेवड़ी बांटने नहीं बल्कि फैसले सुनाने के लिए बैठे हैं। मन से वे भले ही किसी को फायदा पहुंचाना चाहें, पर वे किसी के साथ पक्षपात नहीं करेंगे बल्कि वे कानून के अनुसार प्रश्नों का फैसला देंगे। इसलिए हमें यह कोशिश नहीं करनी चाहिए कि हम आपको शपथ-भंग करने का सबक पढ़ाएं और न ही आपको ऐसी कोई शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए क्योंकि उस हालत में हम और आप दोनों ही गलत होंगे। इसलिए, एथेन्सवासियो, आप मुझसे इन बातों की अपेक्षा न करें क्योंकि मैं इन तरीकों को न तो अच्छा समझता हूं, न न्यायपूर्ण और न ही पवित्र। और विशेषकर आज आप मुझे ऐसी बातें करने के लिए न कहें क्योंकि मेलिटस मुझ पर अधर्म और असत्कार्य का दोष लगा रहे हैं। सफलता पाने के नाम पर यदि मैं अपनी प्रार्थनाओं द्वारा आपकी शपथ तुड़वा देता हूं तो स्पष्ट ही मैं आपको देवताओं में विश्वास न करने की शिक्षा

देता हुआ लगूंगा। उस हालत में मैं अपने अविश्वास के कारण ही दोषी ठहरा दिया जाऊंगा। पर एथेन्सवासियो, यह दोषारोपण सत्य से कहीं दूर है। मैं देवताओं में इतना अधिक विश्वास करता हूं कि मुझ पर अभियोग लगाने वालों में से कोई भी नहीं करता होगा। मैं आपके और ईश्वर के सामने इस मामले को फैसले के लिए पेश करता हूं। आप इसे अपनी भलाई और मेरी भूल को देखकर, जैसा भी चाहें, फैसला करें।

[सुकरात 281 बनाम 220 मतों से दोषी पाए जाते हैं।]

एथेन्सवासियो, आपने जो फैसला सुनाया है, उससे मैं बहुत से कारणों से परेशान नहीं हूं। मैं यह आशंका करता था कि आप मुझे दोषी पाएंगे पर मुझे इस फैसले पर ज्यादा आश्चर्य नहीं है बल्कि आश्चर्य है तो मतों की संख्या पर। मैं अवश्य ही यह नहीं सोचता था कि मेरे विरुद्ध बहुमत इतना अल्प होगा। पर अब मैं देख रहा हूं कि यदि तीस मत इधर से उधर हो जाते तो मैं बच जाता। इसका अर्थ यह हुआ कि मैं मेलिटस से बच गया और न केवल बच गया बल्कि यह स्पष्ट हो गया कि यदि अनाइटस और लाइसन आकर मुझ पर दोषारोपण न करते तो वह इसके बीस प्रतिशत मत भी न पाते और उन्हें 1000 ड्रेकमा जुर्माना के रूप में अदा करने पड़ते।[1]

वह सजा के रूप में मृत्यु-दंड का प्रस्ताव रख रहे हैं जो ठीक ही है। एथेन्सवासियो, मैं आपके सामने इसके विपरीत कौन-सी सजा सुझाऊं ? क्या यह बात सही नहीं है कि मुझे जो सजा मिलनी चाहिए, वही मुझे मिलनी चाहिए ? मैंने अपनी जिंदगी आराम में न बिताने की प्रतिज्ञा की, उसके लिए मुझे क्या भुगतान करना चाहिए या क्या सजा भुगतनी चाहिए। मैंने उन वस्तुओं की अवहेलना की जिन्हें अधिकांश मनुष्य मूल्यवान मानते हैं—जैसे, धन, पारिवारिक स्वार्थ, सैनिक उच्चपद, लोकप्रिय भाषणबाजी, एथेन्स की महत्वपूर्ण राजनैतिक नियुक्तियां, क्लब और गुट। मैं यही सोचता रहा कि यदि इन मामलों में मैं पड़ता, तो बहुत विवेकशील होने के कारण मैं अपनी जान नहीं बचा पाता। इसलिए मैं उन कामों में नहीं फंसा क्योंकि उन कामों से न तो आपकी भलाई होनी थी और न मेरी ही। इसके बजाय लोगों की महान सेवा करने के निमित्त मैं आपमें से हरेक को मिलता रहा। आप लोगों को यही समझाता रहा कि आप अपने काम-काज के बारे में तब तक चिंता न करें, जब तक कि आप अपने विषय में सोच न लें और अपने को जहां तक हो सके, पूर्ण और ज्ञानी न बना लें। यही नहीं, मैं यह कहता रहा कि आप एथेन्स के मामलों में भी तब तक न पड़ें, जब तक कि स्वयं एथेन्स के विषय में सोच न लें। इसलिए मैं ऐसे ही विचारों

---

1. यदि कोई अभियोग लगानेवाला न्यायाधीशों में से 1/5 मत प्राप्त नहीं कर पाता था तो उसे एक हजार ड्रेकमा जुर्माना देना पड़ता और कई अन्य अनर्हताएं उस पर लादी जाती थीं। देखिए, प्राचीनता संबंधी शब्दकोश।

पर इसी प्रकार चिंतन करता रहा। अब प्रश्न यह उठता है कि मैंने जो ऐसी जिंदगी बिताई, उसके लिए मुझे क्या मिलना चाहिए ? सच बात तो यह है कि मुझे भलाई ही मिलनी चाहिए क्योंकि मैं अपनी फुरसत बिगाड़ कर आपको समझाता रहा। सोचिए, ऐसे गरीब परोपकारी के योग्य कौन-सा पुरस्कार है, जो मिलना चाहिए। एथेन्सवासियो, ऐसे व्यक्ति के लिए यही उपयुक्त है कि उसे प्रिटेनियम में सार्वजनिक खर्च पर रखा जाए—जैसे ओलंपिक खेलों में घोड़े या रथ के खेल में विजय के फलस्वरूप यहां रखा जाता है। मैंने उनसे बढ़कर काम किए हैं। इस कारण मुझे उनसे कहीं बड़ा पुरस्कार मिलना चाहिए। खिलाड़ी आपको सुखी बनाने का दिखावा मात्र करता है, पर मैं आपको वाकई सुखी बनाता हूं। खिलाड़ी तो खूब गुलछर्रे उड़ाता है, पर मैं अभाव पीड़ित हूं। इसलिए मैं आपके सामने उस सजा का प्रस्ताव पेश करता हूं, जिसका मैं हकदार हूं। वह सजा यह है कि मुझे प्रिटेनियम में सार्वजनिक खर्च पर आनंद मनाने के लिए रखा जाए।

शायद आप समझ रहे होंगे कि मैं इस समय जो कुछ कह रहा हूं, उससे मेरा जिद्दी और गुस्ताख स्वभाव उभर कर सामने आ रहा है। इसी स्वर में मैंने प्रार्थनाओं और आंसुओं की चर्चा की है। पर एथेन्सवासियो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ऐसी कोई बात नहीं है। बल्कि मुझे यह विश्वास है कि मैंने किसी भी व्यक्ति को जानबूझ कर नुकसान नहीं पहुंचाया पर मैं आपको इस संबंध में पूरी तरह अपने से सहमत नहीं कर सकता क्योंकि हमने बहुत थोड़ी देर बातचीत की है। यदि अन्य स्थानों की तरह एथेन्स में भी यह कानून होता कि जीवन और मृत्यु के मुकदमे का फैसला एक ही दिन में नहीं हो जाना चाहिए तो मेरा ख्याल है कि मैं आपको समझा लेता। पर अब इतने थोड़े समय में मेरे लिए यह संभव नहीं है कि मेरे शत्रुओं ने मेरे विरुद्ध जो गलत निंदाएं नहीं की हैं, मैं उनसे आपको मुक्त करूं। जब मुझे इस बात का निश्चय है कि मैंने किसी व्यक्ति को कष्ट नहीं पहुंचाया या किसी के साथ बुराई नहीं की, तो मैं यह कह कर अपनी बुराई नहीं करूंगा कि मुझे किसी प्रकार का कष्ट या सजा मिलनी चाहिए या मैं अपने लिए किसी प्रकार की सजा या बुराई का कोई प्रस्ताव ही रखूं। भला मैं ऐसा क्यों करूं ? मेलिटस ने मेरे लिए जिस सजा की तजवीज की है, उस संबंध में मैं भला क्या कहूं कि यह अच्छी है या बुरी ? जिसे मैं बुराई समझता हूं, क्या मैं उसके बदले में कोई प्रस्ताव करूं जो सजा के रूप में हो ? क्या मैं अपने लिए कैद का प्रस्ताव रखूं ? भला मैं यह प्रस्ताव कैसे रखूं कि एक के बाद एक अधिकारियों का गुलाम बनकर मैं अपने अंतिम दिन जेल में काटूं ? क्या मैं यह प्रस्ताव रखूं कि मुझे जुर्माने की सजा और उसे अदा न करने पर कैद मिले ? मैंने आपको बताया है कि मैं ऐसा क्यों नहीं करूंगा। बात यह है कि मेरे पास जुर्माना अदा करने के लिए धन नहीं है, इसलिए मुझे उस हालत में जेल में ही सड़ना पड़ेगा। तो क्या मैं देशनिकाले का प्रस्ताव रखूं ? शायद इस पर आप राजी हो जाएं। यदि

अयुक्तिसंगत रूप से मैं ऐसा समझता कि देशनिकाले के बाद बाहर जाने पर लोग खुशी से मेरे तर्कों को सराहेंगे और कसौटी पर कसा जाना पसंद करेंगे, अवश्य ही जीना मेरे लिए बहुत प्रिय होता। जब आप ही लोग, जो कि सह-नागरिक हैं, मेरे तर्कों को सह नहीं सके और इन्हें आपने इतना कष्टकर और घृणित पाया कि आप छुटकारा चाहते हैं, तो भला दूसरे लोग मेरी बात क्यों सुनने लगे ? इसलिए, एथेन्सवासियो, मैं यह प्रस्ताव नहीं रखने जा रहा हूं। अगर मैं एथेन्स से चला भी जाऊं तो ऐसा नहीं है कि मेरा जीवन बूढ़े आदमी की तरह सुखपूर्वक बीतेगा बल्कि मुझे एक शहर से दूसरे शहर में भटकते रहना पड़ेगा और बार-बार देशनिकाला भोगना पड़ेगा। क्योंकि मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कि जहां भी मैं जाऊंगा, नवयुवक मेरी बात सुनेंगे, जैसेकि यहां भी सुनते हैं और यदि मैं उन्हें भगा दूं तो वे अपने बड़ों को मुझे निकाल देने को कहेंगे और यदि मैं उन्हें न भगाऊं, तो बाप और नातेदार उनकी भलाई के नाम पर मुझे निकाल बाहर करेंगे।

शायद इस पर कोई यह कहे, 'सुकरात, आप एथेन्स से निकलकर शांतिपूर्ण जीवन क्यों नहीं बिताते ?' मैं ऐसा क्यों नहीं कर सकता यह आपको समझाना संसार में सबसे कठिन कार्य है। यदि मैं यह कहूं कि मैं चुप इसलिए नहीं रह सकता कि उसका अर्थ होगा ईश्वर की आज्ञा को न मानना, तो आप यह समझेंगे कि मैं ठीक से बात नहीं कर रहा हूं और आप मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे। और यदि मैं आप से यह कहूं कि एक आदमी के लिए इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है कि वह प्रति दिन सत्कार्य या ऐसे मामले, जिन पर आपने मुझे बातचीत करते सुना, बातचीत करे तथा अपने को तथा दूसरों को कसौटी पर कसे ? मेरा तो यह कहना है कि कसौटी पर कसे बिना जीवन जीने योग्य नहीं है, तो आप मुझ पर और भी कम विश्वास करेंगे। पर मेरे मित्र, सच्चाई यही है। पर आपको यह बात समझाना सरल नहीं है और इससे भी बड़ी बात यह है कि मैं अपने को किसी सजा का हकदार सोचने का अभ्यस्त नहीं हूं। यदि मैं धनी होता, तो मैं बड़ी से बड़ी रकम का जुर्माना आपके सामने विकल्प के रूप में रखता। उससे मुझे कोई हानि नहीं होती, पर मैं उतना धनी नहीं हूं कि जुर्माना अदा कर सकूं। हां, अगर आप जुर्माने की रकम मेरे साधनों के अंदर निर्धारित करें, तो बात और है। मैं शायद आपको एक मीना[1] दे सकूं। इसलिए मैं इसका प्रस्ताव आपके सामने रखता हूं। यहां मौजूद अफलातून, क्रीटो, क्रीटोबूलस, एपोलोडोरस, मुझसे यह कह रहे हैं कि मैं 30 मीना का प्रस्ताव आपके सामने रखूं। वे इस रकम के लिए हमारे अच्छे जमानतदार होंगे।

1. चांदी की एक नाप

[उन्हें फिर मृत्यु-दंड दिया जाता है।]

एथेन्सवासियो, आपने बहुत समय नहीं लिया और इसका आपको यह मूल्य चुकाना पड़ेगा कि जो लोग इस शहर को बदनाम करना चाहते हैं, उनसे आपको कुख्याति मिलेगी और वे आपके मुंह पर यह बात दे मारेंगे कि आपने ज्ञानी सुकरात को मृत्यु-दंड दिया। जब वे आपका तिरस्कार करेंगे, तो वे अवश्य ही मुझे ज्ञानी बताएंगे—चाहे मैं ज्ञानी होऊं या न होऊं। यदि आप थोड़े समय के लिए रुकते तो आपकी इच्छा प्रकृति के नियमों के अनुसार पूरी हो जाती क्योंकि आप देख ही रहे हैं कि मैं एक बूढ़ा आदमी हूं, काफी बूढ़ा हूं और मृत्यु के समीप हूं। मैं आप सबसे यह बात नहीं कह रहा हूं, केवल उन लोगों से कह रहा हूं, जिन लोगों ने मेरे मृत्यु-दंड के लिए मत दिया है और मैं उनसे यह और भी कहता हूं : मेरे बंधु, शायद आप यह समझ रहे होंगे कि मैं हार गया क्योंकि मैं उन तर्कों को आपके सामने नहीं पेश कर सका, जिनसे मैं आपको मुझे छोड़ने के लिए समझा सकता था। मैं सजा से बचने के लिए आपसे ऐसी-वैसी कोई बात कहना सही नहीं समझता। मैं इसलिए पराजित नहीं हुआ कि मेरे पास तर्कों की कमी है बल्कि इसलिए कि मुझमें बेशर्मी नहीं थी; मैंने आपके सामने उस तरह से अपना मुकदमा पेश नहीं किया जैसाकि आप चाहते हैं; मैंने रो-धोकर आपसे दया की भिक्षा नहीं मांगी; न ऐसी बातें कहीं या ऐसे कार्य किए जो मेरी दृष्टि में अनुपयुक्त होते पर जिन्हें आप दूसरे व्यक्तियों में देखने के अभ्यस्त हैं। आत्म-समर्थन करते समय मैंने खतरे के कारण ऐसी कोई बात नहीं की जो मनुष्यता से गिर कर हो। मैंने इस संबंध में किसी सोपान में अपना मत-परिवर्तन नहीं किया। मैंने जिस प्रकार से आत्म-समर्थन किया, उसी प्रकर से आत्म-समर्थन करना और मर जाना बेहतर समझता हूं, बजाए इसके कि मैं आपके अनुसार आत्मपक्ष-समर्थन करूं और इसके फलस्वरूप जीऊं। मुकदमे में या युद्ध में मृत्यु से बचने के लिए ऐसी बहुत-सी बातें हैं, जिन्हें न तो मैं कर सकता हूं और न कोई दूसरा इनसान कर सकता है। युद्ध में मनुष्य की कई बार ऐसी स्थिति होती है, जब वह समझता है कि मैं मृत्यु से बच सकता हूं यदि मैं हथियार छोड़ दूं और घुटनों के बल खड़ा होकर पीछा करने वाले से अपने जीवन की भिक्षा मांगूं। हर खतरे में इस प्रकार से मृत्यु से बचने के बहुत से उपाय हैं बशर्ते कि मनुष्य में विवेक न हो और वह कुछ भी कहने और करने को तैयार हो जाय। पर मेरे मित्र, मैं समझता हूं कि मृत्यु से बचना उतना कठिन कार्य नहीं, जितना कि दुष्टता से बचना क्योंकि दुष्टता मृत्यु से अधिक तेज है; और मैं बूढ़ा भी हूं और तेज भी नहीं हूं। मृत्यु ने मेरा पीछा किया है और मैं पकड़ा गया हूं। मुझ पर दोष लगाने वाले बुद्धिमान भी हैं और तेज भी हैं। पर दौड़ में वे भी दुष्टता नामक तेज, पीछे दौड़ने वाली, वस्तु से हरा दिए गए हैं। अब मैं आपसे सजा पाकर मृत्यु प्राप्त करूंगा और वे सत्य के हाथ सजा पाकर दुष्टता और बुराई रूपी दंड पाएंगे। मैं इस फैसले को कबूल करता हूं, जैसाकि वे इस फैसले को कबूल करते हैं। जो कुछ

हुआ शायद ठीक ही हुआ और मैं समझता हूं कि सब नियमपूर्वक ही हुआ।

एथेन्सवासियो, अब आपने मुझे सजा दी है तो मैं कुछ भविष्यवाणी भी करना चाहता हूं। मैं मरने जा रहा हूं और यही वह समय होता है जब मनुष्यों में भविष्यवाणी की शक्ति अधिक होती है। मैं यह भविष्यवाणी करता हूं कि जिन लोगों ने मुझे मृत्युदंड दिया है—मुझे जो सजा मिली है—उन्हें इससे कहीं गुरु गंभीर सजा त्यों ही मिलेगी ज्यों ही मैं मर जाऊंगा। आपने शायद यह समझ कर यह सब किया है कि आप अपने जीवनों का हिसाब देने से छुट्टी पा जाएंगे, पर मैं कहता हूं कि परिणाम इससे बिल्कुल भिन्न होगा। बहुत से और लोग पैदा होंगे, जो आपसे हिसाब मांगेंगे, जिन्हें मैंने पीछे रखा था और जिन्हें आपने देखा नहीं। वे मुझसे कहीं कठोर शिक्षक होंगे क्योंकि वे मुझसे कम-उम्र होंगे और आप उनसे और ज्यादा नाराज होंगे। यदि आप यह सोचते हैं कि लोगों को मृत्यु-दंड देकर आप दुष्कर्म भरे जीवनों के लिए तिरस्कार को रोक पाएंगे, तो आप बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। उससे छुट्टी संभव नहीं है और छुट्टी पाना अच्छा भी नहीं है। इससे कहीं अच्छा और कहीं आसान यह है कि आलोचना को दबाया न जाए बल्कि जितना भी करते बने, आलोचना उतनी हो पूर्ण हो। जिन्होंने मुझे मृत्यु-दंड दिया है, उनके प्रति जाते समय मेरी भविष्यवाणी यही है।

जिन लोगों ने मुझे मुक्त कर दिए जाने का मत दिया है, मैं उन लोगों से भी इस घटना के संबंध में बातचीत करना चाहूंगा। अभी अधिकारीगण व्यस्त हैं और मैं चाहता हूं कि मृत्युस्थान पर जाने के पहले ही आपसे मैं बातचीत कर लूं। इसलिए मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे साथ तब तक रहें, जब तक कि मैं यहां से न जाऊं। कोई कारण नहीं कि जब तक बातचीत करना संभव है, तब तक मैं क्यों न बातचीत करूं। मैं आपको अपने मित्रों के रूप में यह बताना चाहता हूं कि मुझे क्या हुआ है। न्यायाधीशो, एक बहुत ही अद्भुत घटना घटित हुई है। मैं आपको न्यायाधीश ही कहूंगा। दिव्य आदेश से भविष्य के संबंध में इंगित अब तक बराबर मेरे जीवन में मिलते रहे हैं। यदि मैं सही काम नहीं कर रहा होता हूं, तो वही आवाज मुझे बहुत छोटे मामलों में भी रोकती है और अब आप स्वयं देख रहे हैं कि मुझे क्या हुआ है। लोग सोचेंगे, और अक्सर वास्तविक रूप से यह माना भी जाता है, कि यह बहुत बड़ी बुराई है। पर जब मैं आज सबेरे अपने मकान से निकल रहा था, तो ईश्वर की तरफ से कोई इंगित नहीं आया और न उस वक्त कोई इंगित आया, जब मैं इस न्यायालय में आया और न तब आया जब मैं बोल रहा था। बोलने के दौरान भी किसी प्रकार का इंगित नहीं हुआ। यद्यपि दूसरे समयों में अक्सर ऐसा हुआ है कि मैं बोल रहा हूं और बीच में ही आदेश आ गया; पर इस मामले में एक बार भी न तो मेरे शब्दों का विरोध आया और न मेरे कार्यों का। मैं आपको बताना चाहता हूं कि इसका कारण क्या है। मुझ पर यह जो घटना घटित हुई है, यह जरूर अच्छी होगी और हम में से जो यह समझते हैं कि मृत्यु एक बुराई है, वे अवश्य ही गलती पर हैं। मेरे पास

इसका स्पष्ट प्रमाण मौजूद है कि यह गलत है। यदि मेरी सचमुच कोई बुराई होनी होती तो मेरा अभ्यस्त इंगित मुझे जरूर कहीं न कहीं रोकता।

यदि हम दूसरे तरीके से भी सोचें, तो हम यह देखेंगे कि यह एक भलाई है। मृत्यु दो में से एक प्रकार की बात है। या तो मृत व्यक्ति बिल्कुल ही अस्तित्व खो बैठता है और उसकी सारी क्रियाएं खत्म हो जाती हैं या मृत्यु साधारण विश्वास के अनुसार एक परिवर्तन है और आत्मा की एक स्थान से दूसरे स्थान में यात्रा मात्र है। यदि मृत्यु सारी क्रियाओं का अंत है और ऐसी नींद की तरह है, जो स्वप्न के द्वारा भी छिन्न नहीं होती, तो यह भी एक बहुत आश्चर्यजनक उपलब्धि है। यदि मनुष्य उस रात की तुलना, जिसमें नींद इतनी गहरी होती है कि कोई स्वप्न नहीं आता, अपने जीवन की उन रातों और दिनों से करता और फिर उसे यह बताना पड़ता कि अपने जीवन के कितने दिन और कितनी रातें ऐसी रहीं, जो उस रात के मुकाबले में अच्छी और सुखकर रहीं, तो मैं समझता हूं कि कोई भी साधारण व्यक्ति, यहां तक कि ईरान का बादशाह यह बता सकेगा कि स्वप्नों से हीन वह रात्रि ही अच्छी रही। यदि मृत्यु की यही प्रकृति है कि वह स्वप्नहीन निद्रा है, तो मैं इसे लाभ ही समझूंगा क्योंकि इसका यह अर्थ निकलता है कि चिरंतनता एक रात से ज्यादा नहीं है। पर यदि मृत्यु किसी दूसरे स्थान के लिए यात्रा है और साथ ही इस संबंध में प्रचलित विश्वास सही है कि जो लोग मर चुके हैं, वे सब मौजूद हैं, तो मेरे न्यायाधीश, इससे बढ़ कर अच्छी बात क्या हो सकती है ? क्या ऐसी यात्रा करने लायक नहीं है, जिनके अंत में हम इन बने हुए न्यायाधीशों से छुट्टी पा जाते और सच्चे न्यायाधीशों से हमारा साबका पड़ता जो मीनोस, राडामांटस, इयाकस, ट्रिप्टोलेमस और दूसरे अर्द्ध-देवताओं की तरह होते, जो अपने जीवन में न्यायी थे। आप आरफ्यूस, मूसियस, हैसियोड और होमर से वार्ता करने के लिए क्या नहीं न्यौछावर करेंगे ? यदि यह सच है तो मैं एक बार नहीं, कई बार मरना पसंद करूंगा और जहां तक मेरा संबंध है, मैं वहां पेलामिडिस, टेलामन के पुत्र एजाक्स से मिलना चाहूंगा और पुराने जमाने के दूसरे लोगों से मिलना चाहूंगा जो अन्यायमूलक फैसले के कारण मरे हैं और मैं उनके साथ अपने तजुर्बे की तुलना करना चाहूंगा। मैं समझता हूं कि इस प्रकार का मिलना बहुत बड़ी खुशी होगी। सर्वोपरि मैं वहां के लोगों को भी कसौटी पर कसना चाहूंगा जैसे कि मैं मनुष्यों को कसौटी पर कसता हूं और मैं यह जानना चाहूंगा कि उनमें से कौन वाकई ज्ञानी है और कौन अपने को ज्ञानी समझते हैं, पर असल में ज्ञानी नहीं हैं। मेरे न्यायाधीश, हम ट्राय के विरुद्ध महान अभियान के नेता, ओडिसियस, सिसिफस या अगणित दूसरे पुरुषों तथा स्त्रियों को कसौटी पर कसना कितना पसंद करेंगे ? इन लोगों से बातचीत करने, इन लोगों में रहने और इन लोगों को कसौटी पर कसने से अनंत सुख प्राप्त हो सकता है। निश्चित रूप से वहां वे कसौटी पर कसने के लिए अपराध में मृत्यु-दंड नहीं देते होंगे। अधिक सुखी होने के अन्य कारणों के अलावा वे अमर भी हैं। यदि

इस संबंध में प्रचलित विश्वास सही हो, तो वे अमर हैं।

और न्यायाधीशो, आप भी मृत्यु का सामना साहस के साथ करें और इसे एक सत्य के रूप में समझें कि इस जीवन में या मृत्यु के बाद भी, किसी भी अच्छे आदमी पर कोई बुराई नहीं आ सकती। देवता अच्छे आदमी के भाग्य की अवहेलना नहीं करते और मुझ पर आज जो घटित हुआ है, वह एकाएक नहीं हुआ है। मैं यह विश्वास करता हूं कि मेरे लिए इस समय मरना और कष्ट से मुक्त होना ज्यादा अच्छा है, इसीलिए मुझे इस क्षेत्र में दिव्य इंगित ने कभी पीछे की ओर नहीं लौटाया है। अतः मैं अपने अभियोगकारियों पर या जिन लोगों ने मुझे मृत्यु-दंड दिया है, उन लोगों से बिल्कुल खफा नहीं हूं। फिर भी सही यह है कि उन लोगों ने मुझ पर जो दोषारोपण किया है और मुझे जो सजा दी है, वह इस ख्याल से नहीं हुआ कि मुझे कष्ट-मुक्त किया जाए बल्कि उन्होंने यह सब इस कारण किया कि मुझे हानि पहुंचे। बस इसी बात तक मैं उन्हें दोषी मानता हूं।

फिर भी मुझे उनसे एक अनुरोध करना है। जब मेरे बेटे बड़े हो जाएं और आपको यह दिखायी पड़े कि वे धर्म या सत्कार्य के मुकाबले में धन तथा दूसरी चीजों को ज्यादा महत्व देने लगे हैं तथा वे यह सोचने लगे हैं कि वे भी कुछ हैं, जब कि वे कुछ नहीं है, तो मेरे मित्र, उनका उसी प्रकार तिरस्कार कीजिए और उन्हें उसी प्रकार परेशान कीजिए जैसे मैंने आपको किया है। यदि वे जिस वस्तु के लिए अधिक परवाह करनी चाहिए, उसकी परवाह न करके दूसरी बातों की परवाह करते हैं और अपने को बड़ा आदमी समझते हैं, जब कि वे असल में निकम्मे लोग हैं, तो आप उनकी अवज्ञा करें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो मैं स्वयं और मेरे पुत्र यह समझेंगे कि आपने बड़ी कृपा की।

पर अब समय हो चुका है और हमको जाना चाहिए—मुझे मरने के लिए और आपको जीने के लिए। रहा यह कि जीवन बड़ा है या मृत्यु, इसे तो ईश्वर जानता है और केवल ईश्वर ही जानता है।

क्रीटो

वार्ता के पात्र :

सुकरात
क्रीटो

स्थल :
सुकरात की जेल

क्रीटो

सुकरात–क्रीटो, आप इस घड़ी क्यों चले आए हैं ? क्या अभी बहुत सवेरा नहीं है ?

क्रीटो–हां, बहुत सवेरा है।

सुकरात–क्या समय होगा ?

क्रीटो–अभी उषाकाल ही है।

सुकरात–मुझे आश्चर्य है कि जेलर ने इस समय आपको आने दिया ?

क्रीटो–सुकरात, वह मुझे जान गया है क्योंकि मैं यहां अक्सर आता हूं और इसके अलावा मैंने उसकी कुछ सेवा भी की है।

सुकरात–क्या आप यहां कुछ देर से हैं ?

क्रीटो–हां, कुछ देर से हूं।

सुकरात–तो आप चुपचाप क्यों बैठे रहे ? आपने मुझे फौरन क्यों नहीं जगाया ?

क्रीटो–सचमुच, सुकरात, यह सोचने की बात है। मैं चाहता हूं, काश ! मैं इतना दुखी और निद्राहीन न होता। मुझे बहुत आश्चर्य हो रहा था कि आप कितने मजे में मीठी नींद ले रहे हैं। मैंने जानबूझ कर आपको नहीं जगाया क्योंकि मैं चाहता था कि आपके विश्राम में बाधा न पहुंचाऊं। आपके जीवन को देख कर अक्सर मैंने यही सोचा है कि आपका स्वभाव बहुत मधुर है। अब मैं पहले से ज्यादा इस बात को मानता हूं क्योंकि साफ देख रहा हूं कि विपत्ति पड़ने के बावजूद आप किस आसानी से शांतिपूर्वक उसे सह रहे हैं।

सुकरात–नहीं, क्रीटो, अपनी इस उम्र में यदि मैं मरने की संभावना पर रुष्ट होता, तो वही आश्चर्यजनक होता।

क्रीटो–सुकरात, आपकी तरह वयोवृद्ध लोगों पर जब ऐसी विपत्ति पड़ी तो मैंने उन्हें दूसरे तरीके का व्यवहार करते पाया। उम्र के कारण वे अपने भाग्य पर रुष्ट होने से कहां रुकते हैं।

सुकरात–है तो सही बात, पर यह बताइए कि आप आज इतने सवेरे क्यों आये हैं ?

क्रीटो–मैं कुछ बुरी खबर लेकर आया हूं, सुकरात। यह आपके लिए तो बुरी

नहीं है, पर मेरे और आपके मित्रों के लिए बुरी भी है और कड़वी भी। मैं यही सोचता हूं कि मेरे लिए तो अति कष्टकर है।

सुकरात–यह कौन-सी खबर है ? क्या वह जहाज डेलोस से वापस आ गया, जिसके आने पर मुझे मरना है ?

क्रीटो–नहीं, वह अभी पहुंचा नहीं है। पर मैं सोचता हूं कि वह आज यहां पहुंच जाएगा। ऐसा मुझे सुनियम नामक स्थान से आनेवाले कुछ लोगों से पता लगा है, जो उस जहाज को वहां छोड़ आए हैं। उनकी दी हुई खबर से यह स्पष्ट है कि आज वह जहाज यहां पहुंच जाएगा और तब, सुकरात, आपके जीवन का अंत हो जाएगा।

सुकरात–ठीक है, क्रीटो, इसका अंत सत्कर्म में हो जाय, तो अच्छा है। यदि देवताओं की यही इच्छा है, तो ऐसा ही हो। पर मैं नहीं समझता कि वह आज यहां पहुंचेगा।

क्रीटो–आप ऐसा क्यों नहीं समझते ?

सुकरात–मैं आपको बताता हूं। मुझे उस दिन के बाद मृत्यु-दंड दिया जाएगा, जिस दिन जहाज यहां पहुंचता है, सही है कि नहीं ?

क्रीटो–अधिकारीगण ऐसा ही कहते हैं।

सुकरात–तब मैं यह नहीं समझता कि वह आज पहुंचेगा बल्कि वह कल पहुंचेगा। अभी थोड़ी देर पहले रात में मैंने एक स्वप्न देखा था, जिससे मैंने यह अनुमान किया है। यह अच्छा ही हुआ कि आपने मुझे जगाया नहीं।

क्रीटो–आपने क्या स्वप्न देखा ?

सुकरात–मैंने यह देखा कि एक श्वेत वस्त्रधारिणी बहुत सुंदर, भव्य स्त्री मेरे पास आई और मुझे पुकार कर कहा, 'हे सुकरात, आज से तीसरे दिन तुम सुंदर पथ में पहुंचोगे।'[1]

क्रीटो–सुकरात, यह तो बहुत अजीब स्वप्न है।

सुकरात–पर इसका अर्थ बहुत ही स्पष्ट है, कम से कम, क्रीटो, मेरे लिए तो है ही।

क्रीटो–हां, बहुत ही स्पष्ट है। पर मेरे प्रिय सुकरात, मैं आपसे अंतिम बार प्रार्थना करता हूं कि आप मेरी बात सुनें और अपनी जान बचाएं। बात यह है कि आपकी मृत्यु मेरे लिए एक विपत्ति से कहीं बढ़ कर होगी। न केवल मैं एक ऐसा मित्र खो दूंगा, जिसकी न तो कोई तुलना है और न ही ऐसा मित्र मुझे फिर कभी मिल ही सकता है बल्कि बहुत से लोग, जो मुझे और आपको नहीं जानते, यह सोचेंगे कि यदि मैं पैसा खर्च करने के लिए तैयार होता, तो मैं आपको बचा सकता था; पर मैंने कोताही की। कोई व्यक्ति अपने मित्रों के लिए पैसा खर्च करने से घबराए, इससे

1. होमर, इलियड, 9, 363

घृणित और क्या हो सकता है। संसार कभी यह विश्वास नहीं करेगा कि हम आपको बचाने को तैयार थे और आपने स्वयं भागने से इनकार किया।

सुकरात–पर मेरे अच्छे क्रीटो, हम संसार के मत की इतनी परवाह क्यों करें ? जिन लोगों के मत का कोई मूल्य है, उनमें से जो सबसे अच्छे आमदी हैं, वे यह सोचेंगे कि हमने वैसा ही व्यवहार किया जैसाकि हमें करना चाहिए था।

क्रीटो–पर सुकरात, संसार के जनमत की भी परवाह करना जरूरी है। आप पर जो कुछ घटित हो रहा है, उससे यही प्रमाणित होता है कि भीड़ एक व्यक्ति को न केवल मामूली हानि बल्कि अधिक से अधिक हानि पहुंचा सकती है बशर्ते कि उसके सामने किसी पर झूठा आरोप लगाया जाए और वह झूठ को ताड़ न पाए।

सुकरात–मैं चाहता हूं कि भीड़ किसी व्यक्ति को अधिक से अधिक हानि पहुंचाए क्योंकि तभी यह उसका सबसे ज्यादा उपकार कर सकेगी। सच्ची बात तो यह है कि वह न तो व्यक्ति का उपकार कर सकती है न अपकार ही कर सकती है। वह किसी व्यक्ति को न तो ज्ञानी बना सकती है, न मूर्ख। भीड़ तो मनमाने ढंग से काम करती है।

क्रीटो–कुछ भी हो, सुकरात, मुझे यह बताइए कि आप मेरे या अपने अन्य मित्रों के संबंध में बिल्कुल भी चिंतित नहीं हैं और आपको यह डर लगा हुआ है कि यदि आप भाग जाएं तो मुखबिर लोग यह कहेंगे कि हम लोग आपको चुरा कर ले गए। उस हालत में हम पर बहुत विपत्ति आएगी, हमें बहुत खर्च करना पड़ेगा और संभव है कि हमारी सारी संपत्ति ले ली जाए।

हो सकता है कि इसके अलावा हमको कोई और सजा भी मिले। आपको हम लोगों के संबंध में ऐसा कुछ डर है, तो आप उसे दूर कर लीजिए। अवश्य ही हम लोगों पर ये सब खतरे आएंगे। आपको बचाने में इससे भी अधिक खतरे आएं, तो उन्हें झेलना हमारा कर्तव्य है, यदि वे जरूरी हो। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरी बात सुनने से इनकार न करें।

सुकरात–क्रीटो, मैं आप लोगों के संबंध में भी चिंतन तो करता ही हूं, इसके अलावा और बहुत-सी बातों के संबंध में भी चिंतन करता रहता हूं।

क्रीटो–तो आप उस संबंध में किसी प्रकार का कोई भय न रखें। ऐसे आदमी हैं जो बहुत बड़ी रकम न लेकर भी आपको जेल के बाहर निरापद स्थान में ले जाने को तैयार हैं और आप जानते हैं कि मुखबिरों को बहुत आसानी से खरीदा जा सकता है। उन पर बहुत अधिक खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मेरी सारी संपत्ति आपकी सेवा में है और मैं समझता हूं कि यह यथेष्ट है।

यदि आपको ऐसी कोई अनुभूति हो कि मेरा धन खर्च नहीं होना चाहिए, तो मैं आपको बताता हूं कि एथेन्स में बहुत से अज्ञात लोग हैं जो अपनी संपत्ति इस कार्य के लिए खर्च करने को तैयार हैं और उनमें से थिबिस के सिमियास नामक व्यक्ति इसी

काम के लिए बहुत यथेष्ट धन ले आए हैं और सिबिस तथा दूसरे बहुत से लोग इस काम के लिए तैयार हैं। इसलिए मैं फिर से कहता हूं कि इन मामलों से परेशान होकर आप अपने को बचाने में न चूकिए। और आपने अदालत में यह जो कहा कि अगर आपको देश-निकाला हुआ तो आपको यह पता नहीं है कि आप क्या करेंगे, आप विचलित न होइए। बहुत से ऐसे स्थान हैं जहां आप जा सकते हैं और जहां आपका स्वागत होगा। यदि आप थेसाली जाना चाहते हैं, तो वहां मेरे बहुत से मित्र हैं जो आपकी बड़ी कद्र करेंगे और थेसाली की जनता से किसी भी प्रकार की छेड़खानी से आपको बचाएंगे।

इसके अलावा, सुकरात, मैं यह सोचता हूं कि आपके लिए यह उचित न होगा कि आप प्राण त्याग दें, जबकि आप बच सकते हैं। आप महज अपने शत्रु के हाथों में खेल रहे हैं। उन लोगों की यही तो इच्छा थी कि आप समाप्त हो जाएं। इसके अलावा आप अपने बच्चों को भाग्य पर छोड़ रहे हैं, जबकि आप जिंदा रहें तो आप उनका पालन-पोषण कर सकते हैं और उन्हें शिक्षा दे सकते हैं। बहुत संभव है कि उनकी हालत अनाथ बच्चों जैसी हो जाए। यदि कोई बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा का कष्ट न उठा सके, तो उससे बच्चे पैदा करने ही नहीं चाहिए। मुझे ऐसा लगता है कि आप बहुत आसान रास्ता अपना रहे हैं और एक अच्छे और साहसी व्यक्ति की तरह आचरण नहीं कर रहे हैं जैसाकि आपको करना चाहिए; आप बराबर सारा जीवन यही कहते आए हैं कि आप सत्कार्य को महत्व देते हैं। जहां तक मेरा संबंध है, मैं आपके लिए तथा अपने लोगों के लिए, जो आपके मित्र हैं, लज्जित हूं। लोग यह सोचेंगे कि आप पर जो कुछ घटित हुआ है—आपका अदालत में उपस्थित होना जबकि आपको उपस्थित होने की कतई जरूरत नहीं थी, जिस तरीके से मुकदमा किया गया और अंत में यह जो सबसे बढ़कर मूर्खता होने जा रही है—उस पर लोग यह कहेंगे कि यह हमारी कायरता के कारण हुआ। ऐसा लगेगा कि हमने हद दर्जे की कायरता के कारण खतरा नहीं उठाया। हमने आपके बचाया नहीं, और आपने अपने को बचाया नहीं, जबकि हम में कुछ दम हो तो ऐसा करना निश्चय ही संभव है।

सुकरात, आप अच्छी तरह सोच लीजिए, कहीं ऐसा न हो कि आपके लिए और हमारे लिए यह सारी बात न केवल एक बुरी बात कहलाए बल्कि असम्मानजनक भी। जल्दी से सोचिए क्योंकि सोचने का समय भी करीब-करीब चला ही गया। हमें किसी संकल्प पर पहुंचना चाहिए और अब केवल एक ही योजना संभव है। आज रात को सब कुछ हो जाना चाहिए। यदि हम कुछ और देरी करेंगे तो हमारा सर्वनाश हो जाएगा। सुकरात, मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरी बात मानने से इनकार न करें।

सुकरात—मेरे प्यारे क्रीटो, यदि मुझे बचाने के लिए आपकी व्यग्रता सही है तो वह बहुत ही मूल्यवान है। पर यदि वह गलत है, तो जिस हद तक आपकी व्यग्रता

अधिक है, उसी हद तक वह खतरनाक भी है। इसलिए हमें इस पर विचार करना चाहिए कि हम क्या करें या क्या न करें क्योंकि मैं अब भी वही हूं जो मैं हमेशा रहा हूं; एक ऐसा व्यक्ति जो युक्ति की सच्ची आवाज को सुनता है। मुझ पर यह दुर्भाग्य आ पड़ा है, इसलिए मैं अपने पहले के तर्कों का परित्याग नहीं कर सकता। वे तर्क मुझे हमेशा की तरह इस समय भी सही लगते हैं। मैं जिनको पहले सम्मान और श्रद्धा की दृष्टि से देखता था, आज भी उन्हें उसी दृष्टि से देखता हूं। यदि अब उनकी जगह पर किसी दूसरी बात को मैं उससे ज्यादा युक्तिसंगत पाऊं, तभी मैं आपके प्रस्ताव को मानूंगा। बच्चों की तरह मैं भूतप्रेत से घबराने का नहीं, भले ही हम पर नया जुर्माना, कैद और मृत्यु लद जाए। तो इस प्रश्न पर बहुत अच्छी तरह विचार करें। आपने सबसे पहली बात कही कि लोकमत क्या रहेगा यानी लोग क्या कहेंगे। क्या हम पहले उसी पहलू पर विचार करें ? क्या हम पहले ऐसा सोचते थे कि कुछ मत सही होते हैं और कुछ गलत ?

मृत्यु-दंड पाने के पहले मैं जिन बातों को सही समझता था और जिन बातों को ठीक कहता था, क्या अब मृत्यु-दंड के बाद मनमानी बातचीत लगती हैं ? क्या ऐसा तो नहीं लगता कि हम सिर्फ तर्क के लिए तर्क कर रहे थे और वे महज खेल और बेकार की बातें थीं ? क्रीटो, मैं इस बात के लिए व्यग्र हूं कि आपकी सहायता से हम अपनी पहले वाली युक्ति पर विचार करें और इस बात का भी परीक्षण करें कि मेरी वर्तमान स्थिति से इसकी सत्यता में किसी प्रकार की बदल आ गयी है अथवा नहीं; और हम सत्य को अलग कर दें या फिर उसे मान ले। हम में से वे लोग जो गंभीरता से सोचते थे, हमेशा वही कहा करते थे, जो अब हम कह रहे हैं यानी हमें कुछ मतों का सम्मान करना चाहिए, जिन्हें मनुष्य उच्च विचार करने के बाद रखता है और शेष का नहीं। क्रीटो, कृपया मुझे बताइए कि क्या आप यह नहीं समझते कि हमारे वे विचार सही थे ? मानवीय दृष्टि से यदि बातचीत की जाए, तो कल आपको मरना नहीं है, अतः इस मरने वाली स्थिति से आपका निर्णय प्रभावित नहीं होगा। इसलिए आप इस तरह सोचिए कि क्या यह युक्तिसंगत नहीं है कि हम लोगों के सारे मतों को न मानें बल्कि कुछ मतों को मानें, सब व्यक्तियों के मतों को न मानें बल्कि कुछ व्यक्तियों के मतों को न मानें ? बताइए कि आपके विचार क्या हैं ? क्या यह बात सही नहीं है ?

क्रीटो—सही है।

सुकरात—तो यह निष्कर्ष निकला कि हम केवल अच्छे मतों को ही मानें और बाकी बेकार मतों को न मानें।

क्रीटो—हां !

सुकरात—यह भी निष्कर्ष निकला कि अच्छे मत उन लोगों के हैं जो ज्ञानी हैं। और बेकार के मत उन लोगों के हैं, जो मूर्ख हैं।

क्रीटो–अवश्य !

सुकरात–हम इस संबंध में क्या कहा करते थे ? मान लीजिए, एक व्यक्ति प्रशिक्षण ले रहा है। यही नहीं, वह प्रशिक्षण को गंभीरता के साथ लेता है। क्या वह सब व्यक्तियों की प्रशंसा या निंदा या मत पर चलता है या वह डाक्टर या प्रशिक्षक यानी एक व्यक्ति के मत पर चलता है ?

क्रीटो–वह केवल एक व्यक्ति के मत पर चलता है।

सुकरात–तो उस हालत में उसे इसी एक व्यक्ति की निंदा से डरना चाहिए और उसकी प्रशंसा का स्वागत करना चाहिए, न कि दूसरे लोगों की।

क्रीटो–बिल्कुल सही है।

सुकरात–तो यह निष्कर्ष निकला कि उसे उस डाक्टर के अनुसार काम करना चाहिए, अभ्यास करना चाहिए, खाना चाहिए, पीना चाहिए और उस एक व्यक्ति के मत पर चलना चाहिए जो उस मामले को समझता है न कि दूसरों की आज्ञा या इशारे पर।

क्रीटो–बिल्कुल सही है।

सुकरात–अच्छी बात है। यदि वह उस एक व्यक्ति यानी डाक्टर की आज्ञा का पालन न करे, उसके मत और प्रशंसा की अवज्ञा करे और इसके बजाय बहुत से ऐसे लोगों के मत पर चले जो इस मामले में कुछ भी नहीं जानते, तो क्या उसे मुसीबत का सामना करना पड़ेगा या नहीं ?

क्रीटो–अवश्य। उस पर मुसीबत पड़ेगी।

सुकरात–यह मुसीबत किस प्रकार की होगी ? उसकी दिशा क्या होगी और उसके किस भाग पर मुसीबत पड़ेगी ?

क्रीटो–अवश्य उसके शरीर को कष्ट पहुंचेगा, वह पंगु बन जाएगा।

सुकरात–आप सही बात कह रहे हैं। क्रीटो, संक्षेप में कहें तो क्या यह बात हर मामले में लागू नहीं होती ? क्या भला है और क्या बुरा है, क्या नीचतापूर्ण है और क्या सम्मानजनक है, क्या सही है और क्या गलत है यानी इन परीक्षाधीन प्रश्नों पर क्या हमें बहुत से लोगों के मतों पर चलना चाहिए और उनसे डरना चाहिए या उस व्यक्ति के मत पर चलना चाहिए जो इन चीजों का जानकार है (बशर्ते कि ऐसा व्यक्ति मिले) और हमें दूसरों की तुलना में उसके सामने अधिक शर्म और भय का अनुभव करना चाहिए ? यदि हम डाक्टर का अनुसरण न करें तो हम अपने उन अंशों को पंगु बना देंगे और अपने उन अंगों को पंगु बना देंगे जो सही व्यवहार से उन्नत होते हैं और बुरी बातों से पंगु बन जाते हैं। क्या हम ऐसा नहीं कहते थे ?

क्रीटो–यह यही है, सुकरात, मैं आपसे सहमत हूं।

सुकरात–अब यदि दूसरों के मतों को सुनने के बाद भी जो उन चीजों को नहीं समझते, वे अपने उन भागों को पंगु बना लेते हैं जो स्वास्थ्य से उन्नत होते हैं और

रोग से पंगु बनते हैं, तब क्या हमारा जीवन जीने योग्य रहेगा ? शरीर की यही बात है न ?

क्रीटो–हां

सुकरात–जब शरीर पंगु हो जाए और स्वास्थ्य बिगड़ जाए, तब क्या जीवन जीने योग्य रहता है ?

क्रीटो–नहीं, बिल्कुल नहीं !

सुकरात–तो क्या उस हालत में जीवन जीने योग्य रह जाता है जब हमारा वह अंश, जो गलत कार्य से बिगड़ जाता है और अच्छे काम से लाभवान होता है, खराब हो जाए ? यह तो शरीर की बात हुई। अब उस प्रश्न को लिया जाए कि क्या भला है, क्या बुरा है। क्या भलाई बुराई के निर्णय संबंधी प्रश्न को शरीर से कम महत्व देना उचित होगा ?

क्रीटो–नहीं, बिल्कुल सही न होगा।

सुकरात–तो कौन ज्यादा मूल्यवान है : शरीर या आत्मा ?

क्रीटो–वह तो आप बता ही रहे हैं।

सुकरात–तो मेरे प्रिय बंधु, हमें इस बात पर नहीं जाना चाहिए कि बहुत से लोग क्या कहेंगे। हमें सिर्फ यह सोचना चाहिए कि जो भलाई और बुराई को समझ सकता है, वह क्या कहता है और सत्य किस पक्ष में है ? आप जब सम्मानजनक और अच्छे तथा इनके विपरीत जाने वाले कार्यों के निर्णय का भार भीड़ पर छोड़ते हैं, तो आपका बिस्मिल्ला ही गलत होगा। हां, यह कहा जा सकता है कि भीड़ हमें मौत की सजा दे सकती है।

क्रीटो–हां, यह तो दिखाई पड़ रहा है। इसे हम मान सकते हैं।

सुकरात–ठीक है, पर मेरे प्रिय मित्र, मुझे ऐसा लगता है कि हम अब उसी उपसंहार पर पहुंचे हैं, जिस पर हम पहले पहुंच चुके थे। अब इस पर विचार कीजिए कि हम अभी तक उसी विश्वास पर चल रहे हैं या नहीं कि हमें जीने को सबसे अधिक मूल्य नहीं देना चाहिए बल्कि अच्छाई के साथ जीने पर ही ध्यान देना चाहिए।

क्रीटो–हां।

सुकरात–अच्छाई के साथ और सम्मानपूर्ण सही तरीके से जीने का अर्थ एक ही है। क्या हम इसको मानते हैं कि नहीं ?

क्रीटो–मानते हैं।

सुकरात–तो इन बातों से आरंभ करके हमें यह सोचना है कि एथेन्सवासियों की राय लिए बिना मेरा जेल से भाग जाना सही कार्य होगा या गलत कार्य। यदि यह कार्य सही है तो हम इसका प्रयत्न करेंगे, यदि ऐसा नहीं है तो हम इसे छोड़ देंगे। मुझे भय है कि आपने इस संबंध में खर्च, ख्याति, बच्चों का पालन-पोषण आदि जो बातें उठाई हैं, वे महज अपने मित्रों के चिंतन को प्रतिफलित करती हैं। यह वह बहुमत है

जो लोगों को हल्केपन के साथ मृत्यु-दंड देता है और जिसका वश चले तो बिना सोचे-समझे उन्हें फिर से जीवन दान देता है। पर साथ ही युक्ति या बुद्धि, जो हमारी पथ-प्रदर्शक हैं, यह दिखलाती हैं कि हम इस संबंध में केवल उन्हीं पहलुओं पर विचार कर सकते हैं जिनका मैंने अभी जिक्र किया है यानी प्रश्न यह है कि क्या हम उन लोगों को धन और धन्यवाद दें जो हमें भागने में मदद देंगे और मेरे भागने में अपना अपना हिस्सा अदा करेंगे ? यह क्या सही बात होगी ?

प्रश्न यह है कि हम यदि ऐसा करें, तो क्या हम गलत बात करेंगे ? और यदि हमें यह लगे कि हम गलत काम करेंगे, तो उस हालत में हमें फिर यह नहीं सोचना चाहिए कि यहां शांति बने रहने पर हम पर मृत्यु या ऐसी कोई विपत्ति आएगी या नहीं, मृत्यु तो आएगी ही; बल्कि हमें यही सोचना चाहिए कि कहीं हम बुरी बात तो नहीं कर रहे हैं ?

क्रीटो–सुकरात, मैं सोचता हूं कि आप सही हैं, पर हम क्या करें ?

सुकरात–हम दोनों इस प्रश्न पर साथ-साथ सोचें और मैं जो कुछ कहूं आप उसमें मीनमेख निकाल सकें तो निकालिए। यदि आपकी आलोचना ठीक हुई, तो मैं अपना मत बदल दूंगा। पर यदि आप ऐसा नहीं कर सके, तो मेरे प्रिय मित्र, आप फिर मुझसे यह बार-बार न कहें कि मैं एथेन्सवासियों की राय के बिना जेल से भाग जाऊं। मैं आपकी बात पर चलने के लिए बहुत उत्सुक हूं। मैं यह नहीं चाहता कि आप मुझे गलत समझें। अब मुझे यह बताइए कि जिस सिद्धांत को लेकर मैं चल रहा हूं, वह सही है या नहीं ? मेरे प्रश्नों का आप जैसा भी समुचित उत्तर देना चाहें, दें।

क्रीटो–मैं कोशिश करूंगा।

सुकरात–क्या हम जानबूझ कर गलत काम करें या सत्य यों है कि हम किसी-किसी मामले में गलत काम कर सकते हैं और कुछ मामलों में नहीं कर सकते ? हम पहले सहमत थे कि बुरे काम करना किसी भी हालत में अच्छा या सम्मानजनक नहीं हो सकता है ? क्या इन बातों पर हम पहले जिन नतीजों पर पहुंचे थे, वे भुला दिए गए हैं। क्रीटो, हम लोग बूढ़े आदमी हैं, फिर भी हमने पहले जमाने में यह देखा कि जब हम एक-दूसरे से बहुत गंभीरता के साथ बात करते थे, तो हम बच्चों से कुछ बेहतर नहीं माने जाते थे। या बात यों थी कि हम निश्चित रूप से सत्य बात कहते थे, चाहे लोग हमसे सहमत हों या मतभेद रखें। क्या हर हालत में बुरे काम करना एक बुराई और लज्जाजनक बात नहीं है, चाहे इसके विपरीत अच्छे काम करने के लिए हमें मृत्यु से हल्की या ज्यादा सजा मिले। क्या हम ऐसा विश्वास करते हैं ?

क्रीटो–हम करते हैं ?

सुकरात–तब हमें किसी भी हालत में बुरा काम नहीं करना चाहिए ?

क्रीटो–बेशक।

सुकरात–इसलिए न तो हमें बुरे काम करने चाहिए और न बुरे काम का जवाब

बुरे से देना चाहिए जबकि संसार समझता हो कि हम ऐसा कर सकते हैं।

क्रीटो–ठीक है।

सुकरात–तो क्रीटो, क्या हम किसी के प्रति बुराई कर सकते हैं ?

क्रीटो–नहीं सुकरात, नहीं कर सकते।

सुकरात–क्या बुराई का जवाब बुराई से देना चाहिए जैसा कि संसार सोचता है या भलाई से देना चाहिए ? इनमें से क्या सही है ?

क्रीटो–बुराई का जवाब बुराई से देना सही नहीं है।

सुकरात–किसी व्यक्ति के प्रति बुराई करना या उसके साथ अन्याय करना एक ही बात हुई, है न ?

क्रीटो–जी हां।

सुकरात–तो हम किसी व्यक्ति द्वारा की गई बुराई या हानि के बदले उसकी बुराई न करें, न उसे हानि पहुंचाएं, चाहे हमें उससे कैसे भी कष्ट मिलें। यदि हमने यह मान लिया, क्रीटो, तो आप सावधानी से सोचिए कि आप जितना चाहते हैं, कहीं उससे अधिक तो नहीं मान रहे हैं क्योंकि मैं जानता हूं कि बहुत थोड़े आदमी इस मत के प्रतिपादक हैं या होंगे। रहा यह कि जो लोग इस मत के प्रतिपादक हैं और जो लोग इस मत के विरुद्ध हैं, उन दोनों में तर्कों की कोई सामान्य जमीन नहीं है। वे एक दूसरे के विश्वास को घृणा के साथ देख सकते हैं। इसलिए आप इस पर सावधानी के साथ विचार करें कि क्या आप मुझसे सहमत हैं और मेरा मत मानते हैं या नहीं ? क्या हम अपनी चर्चा को इस स्थापना से शुरू करें कि किसी भी हालत में बुराई करना, बुराई का बदला बुराई से देना या किसी ऐसे आदमी से जिसने हमें हानि पहुंचाई है, बदला लेना, उसे हानि पहुंचाना गलत है ? क्या आप मुझसे सहमत नहीं या मेरे सिद्धांत से मतभेद रखते हैं ? मैं इस स्थापना में बहुत दीर्घकाल से विश्वास करता रहा हूं और मैं अभी तक इसमें विश्वास करता हूं। पर यदि आप किसी तरह मतभेद रखते हैं, तो मुझे इसका ब्योरा बताइए और यदि आप हमारे पहले के मत में अब भी डटे हैं, तो मेरे अगले तर्क को सुनिए।

क्रीटो–मैं पुरारी बात पर डटा हूं और मैं आपसे सहमत हूं, आप बोलिए।

सुकरात–तो मेरा अगला बिंदु या यों कहिए कि मेरा अगला प्रश्न यह है, क्या कोई आदमी अपने न्यायपूर्ण अनुबंधों को माने या वह उनसे छूट कर भाग जाए ?

क्रीटो–उसे चाहिए कि वह अनुबंध का पालन करे।

सुकरात–तो जरा इस बात पर सोचिए कि यदि मैं राष्ट्र की अनुमति के बिना भाग जाता हूं, तो क्या मैं उन लोगों को हानि नहीं पहुंचाता जिन्हें मुझे हानि नहीं पहुंचानी चाहिए। तब क्या मैं अपने न्यायपूर्ण अनुबंधों का पालन कर रहा हूंगा ?

क्रीटो–सुकरात, मैं आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता। मैं इसे समझ नहीं पा रहा हूं।

सुकरात–तो इस पर इस तरतीब से सोचिए। मान लीजिए कि कानून और राष्ट्र हमारे सामने उस समय प्रकट होकर खड़े हो जाएं, जब मैं भागने को होऊं (यदि पलायन के वर्णन के लिए यह सही शब्द हो) और मुझसे पूछें, 'सुकरात, यह बताइए कि आपके मन में क्या है ? आप भागने के कार्य के द्वारा सिवा इसके क्या कर रहे हैं कि आप विधि-शास्त्र तथा सारे नगर को नष्ट कर रहे हैं ? क्या आप समझते हैं कि जिस राष्ट्र के कानून में कोई बल नहीं है, जिस राष्ट्र के नागरिक उसे नहीं मानते, क्या वह राष्ट्र टिक सकता है ? क्या ऐसा राष्ट्र परास्त नहीं होगा ?' क्रीटो, मैं इन प्रश्नों का क्या उत्तर दूंगा। जिस विधि-शास्त्र के कारण कानूनी फैसले सर्वोपरि मान्य हैं, उनकी सफाई में बहुत कुछ कहा जा सकता है, विशेषकर एक पेशेवर वक्ता के द्वारा। क्या मैं यह कहूं 'राज्य ने मुझे हानि पहुंचाई है और इसने मेरे मुकदमे का गलत फैसला किया है।' क्या हम यह उत्तर दें ?

क्रीटो–निश्चय ही, सुकरात, हम ऐसा ही करने को कहेंगे।

सुकरात–मान लीजिए कि इसके उत्तर में कानून हमसे यह कहे कि 'क्या यही हमारा अनुबंध था ? या हमारा अनुबंध यह था कि राष्ट्र जो भी फैसला करे, आप उसको मान लेंगे ?' और यदि हम उनके शब्दों पर भटकें, तो शायद वे कहे, 'सुकरात, आप हमारे शब्दों को न पकड़िए बल्कि जवाब दीजिए, आप स्वयं प्रश्न पूछने के अभ्यस्त हैं और उत्तर भी देते हैं, आपको हमारे और नगर के विरुद्ध क्या शिकायत है कि आप हमें नष्ट करने की चेष्टा कर रहे हैं ? क्या हम सबसे पहले आपके माता-पिता नहीं हैं। हमारे जरिए से आपकी माता ने आपको उत्पन्न किया, मुझे बताइए कि आप विवाह की विधियों में क्या गलती पाते हैं ?'

इस पर मुझे यह उत्तर देना पड़ेगा कि मेरे पास आपके विरुद्ध कोई तर्क नहीं है। तब वे उत्तर देंगे, 'क्या आप उन कानूनों में कोई नुक्स पाते हैं, जिनके द्वारा संतान का पालन-पोषण और शिक्षा का नियंत्रण होता है ? आपको इन्हीं कानूनों की बदौलत दूसरों की तरह शिक्षा मिली और आपका पालन-पोषण हुआ है ? क्या हमने आपके पिता को ऐसा आदेश देकर अच्छा नहीं किया कि वह संगीत और व्यायाम की शिक्षा दे ?' इस पर मुझे कहना पड़ेगा कि आपने अच्छा ही किया। इस पर उस तरफ से कहा जाएगा, 'तो आप इस राष्ट्र में हमारे द्वारा उत्पन्न, पालित और शिक्षित हुए। उस हालत में पहली बात तो यह है कि आप यह कैसे इनकार कर सकते हैं कि आप सब से पहले हमारी ही संतान और दास हैं, जैसाकि आपके पहले आपके पितर लोग थे। यदि बात ऐसी है, तो आप यह मानते हैं कि आपके हक हमारे हकों की सतह पर आधारित हैं। क्या आप समझते हैं कि यदि हम आपको किसी प्रकार हानि पहुंचाएं, तो आपको उस हालत में बदला लेने का अधिकार है ? संतान और दास के नाते आपको न तो वे अधिकार प्राप्त हैं, जो आपके पिता को थे और न आपके मालिक को थे। यदि वे आपके साथ दुर्व्यवहार करते, तो दास के नाते आपको बदला लेने का

कोई अधिकार न होता और यदि वह आपको गालियां देते, तो आपको जवाब देने का अधिकार न होता और यदि वे मारते तो उन्हें मारने का और बुराई के बदले बुराई करने का कोई अधिकार न होता। तो आप यह कैसे सोचते हैं कि आप अपने देश और उसके कानून के विरुद्ध प्रतिहिंसा से काम ले सकते हैं। यदि हम आपको यह समझकर नष्ट करने की चेष्टा करें कि हम सही हैं तो क्या आप भी इसके बदले में यथासाध्य हमें यानी कानून को तथा देश को नष्ट करने में कुछ उठा न रखेंगे ? क्या आप कहेंगे कि यह आचरण आपके लिए सही होगा—विशेपकर जब आप सद्धर्म के विषय में इतने गंभीर ढंग से सोचते रहते हैं ? क्या आप इतने ज्ञानी हो गए हैं कि आप यह देख ही नहीं सकते कि आपका देश आपसे अधिक श्रेष्ठ और योग्य है, पवित्र और दिव्य है; इसे सभी बुद्धिमान व्यक्ति और देवता सम्मान की दृष्टि से देखते हैं, आपके माता-पिता और आपके सारे पूर्वज इसे इज्जत देते थे।

'क्या आपका यह परम कर्तव्य नहीं है कि आप देश तथा कानून की आज्ञा हर हालत में मानें ? जब आपके पिता आपसे नाराज होकर कभी गलत आज्ञा भी देते हैं, उस समय आप उन्हें दुतकारते नहीं ! आपके सामने दो ही रास्ते होते हैं; या तो आप माफी मांग कर उन्हें समझा लेते हैं या आज्ञा मानते हैं। यदि आपको देश यह आज्ञा दे कि आपको बेंत लगें, कैद हो या आपको लड़ाई में आहत होने या मरने के लिए भेजे, तो आप उसे चुप्पी के साथ मान लें, यही आपका कर्तव्य है। आपको न तो पीछे हटना चाहिए, न कर्तव्य छोड़ देना चाहिए और न ही चौकी छोड़ कर चल देना चाहिए। युद्ध में, न्यायालय में तथा सर्वत्र आपको वही करना चाहिए, जिसका आदेश आपका नगर या आपका देश आपको देता है। यदि किसी आज्ञा पर आपत्ति हो तो आपको चाहिए कि आप उन्हें यह समझा दें कि उनकी आज्ञा अन्यायपूर्ण है; पर यह तो ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है कि आप अपने पिता या माता के प्रति विद्रोह, हिंसा का प्रयोग करें और इससे कहीं खराब यह बात है कि आप ईश्वरीय नियमों के खिलाफ चलें या अपने देश के विरुद्ध हिंसा का बर्ताव करें।' क्रीटो, यह बताइए कि इसका हम क्या उत्तर देंगे ? क्या हमें विधि-शास्त्र ने जो बातें कही हैं, वे सही नहीं हैं ?

क्रीटो—मैं समझता हूं कि विधि-शास्त्र की आवाज सही है।

सुकरात—तो शायद वे लोग कहें, 'तो सुकरात, इस बात पर सोचिए कि आप भागने की चेष्टा करके क्या हमें हानि पहुंचाने का प्रयत्न नहीं कर रहे हैं ? हमने आपको जन्म दिया, आपका पालन-पोषण किया, आपको शिक्षा दी, हमने आपको तथा प्रत्येक नागरिक को उन सारी अच्छी चीजों का एक भाग दिया, जिसे हम दे सकते थे। इसके बावजूद हमारी यह खुली घोषणा है कि यदि एथेन्सवासियों में से कोई व्यक्ति हमसे असंतुष्ट है, तो वह अपना मालमता लेकर यहां से जा सकता है। हर वयस्क व्यक्ति को, यदि उसे यहां की विधि और शासन पसंद नहीं, यहां से जा

सकने की अनुमति है। यदि वह हमारे नगर से असंतुष्ट है तो हममें से कोई भी उसके रास्ते में रोड़ा बन कर खड़ा नहीं होगा और मना नहीं करेगा; वह अपना मालमता लेकर चाहे जहां चला जाए, चाहे वह एथेन्स के उपनिवेश में चला जाए, चाहे वह विदेश चला जाए। यहां का प्रत्येक व्यक्ति यह तो देखता ही है कि हम कैसे न्याय का प्रशासन करते हैं और दूसरे मामलों में शहर को किस प्रकार चलाते हैं। यहां रहने वाले व्यक्ति ने इस तथ्य को स्वीकार कर ही लिया है कि हम जो भी आदेश देंगे, वह उनका पालन करेगा। हम कहते हैं कि जो विधि-शास्त्र की अवज्ञा करता है, वह तिहरी बुराई करता है—वह हमारी अवज्ञा करता है, जबकि हम उनके माता-पिता हैं; वह हमारी अवज्ञा करता है जबकि हमने उसका पालन किया है; और वह हमारी अवज्ञा करता है जबकि उसने हमारी आज्ञा मानने का अनुबंध किया है और ऐसा करते हुए वह हमें यह समझा नहीं रहा है कि हम गलती पर हैं। फिर भी हमने सख्ती के साथ कोई आदेश नहीं दिया कि यह करो या वह करो। हमने हर हालत में विकल्प दिया है। हमने उसे चुनाव का यह अधिकार दिया कि वह या तो हमारी आज्ञा माने या हमें यह समझाए कि हम गलती पर हैं। पर वह इन दोनों में से कुछ भी नहीं करता।

'सुकरात, ये वे अभियोग हैं जिनके लिए आप दोषी होंगे, यदि आपके मन में जो है उसे कार्यान्वित करेंगे। और आप किसी भी दूसरे एथेन्सवासी से कम नहीं बल्कि अधिक दोषी होंगे।' इस पर मैं विधि-शास्त्र से यह पूछ सकता हूं, 'भला क्यों ?' तो इसके जवाब में वे न्यायपूर्वक यह कह सकते हैं कि मैंने अपने को दूसरे एथेन्सवासियों के मुकाबले में कहीं अधिक कड़ाई से इस अनुबंध में बांध दिया है। विधि-शास्त्र इस प्रकार उत्तर देंगे, 'सुकरात, हमारे पास इसके बड़े पुष्ट प्रमाण हैं कि आप हमसे और हमारे शहर से संतुष्ट थे। आप दूसरे एथेन्सवासियों के मुकाबले में यहां अधिक संतुष्ट रहते थे। आप कभी किसी त्योहार के मौके पर भी एथेन्स के बाहर नहीं गए। हां, एक बार आप इस्थमियन खेलों में गए थे और हां, तब भी आप बाहर गए थे, जब आपने सैनिक सेवा की थी। आपने दूसरे लोगों की तरह यात्राएं नहीं कीं। दूसरे शहरों और दूसरी विधियों को देखने की आपको कोई इच्छा नहीं थी। आप हमसे और हमारे नगर से संतुष्ट थे। आप हमें तरजीह देते थे और हमसे शासित होना पसंद करते थे। इससे भी बड़ी बात यह है कि आपने अपने इसी शहर में अपनी संतानों को जन्म दिया, आपको यह बहुत सुखद लगा। यदि आप चाहते तो आप अपने मुकदमे में यह प्रस्ताव रख सकते थे कि आप देशनिकाला चाहते हैं। उस हालत में आप राज्य की सम्मति से वही कर सकते थे, जिसकी अब आप कोशिश कर रहे हैं। तब तो आपने नगर को तरजीह दी और आपको उसमें गौरव का बोध हुआ। आपने यह कहा कि आप देशनिकाले की अपेक्षा मृत्यु-दंड पसंद करते हैं। क्या अब आप उन शब्दों पर लज्जित हैं ? आप हमारे विधि-शास्त्र की इज्जत नहीं कर रहे हैं क्योंकि आप हमें नष्ट करने की चेष्टा कर रहे हैं और आप ऐसा काम कर रहे हैं

जैसाकि भागने की चेष्टा करने वाला एक अभागा दास करेगा। आप उन सारी शर्तों और अनुबंधों को तोड़ रहे हैं, जिन्हें आपने अपनी सरकार के साथ किया था। इसलिए पहले इस प्रश्न का उत्तर दीजिए : यदि हम यह कहें कि आपने हमारी सरकार के अधीन रहने के लिए शाब्दिक रूप से ही नहीं बल्कि वास्तविक रूप से भी सहमति प्रकट की थी, तो यह कह कर हम गलती पर होंगे या सही होंगे ?' क्रीटो, हम इस संबंध में क्या कहें। क्या हम यह न मानें कि यह सही है ?

क्रीटो–सुकरात, हम अवश्य मानें।

सुकरात–तब वे कहेंगे, 'क्या आप हमारे साथ किए गए अपने राजीनामों और अनुबंधों को नहीं तोड़ रहे हैं ? स्मरण रहे कि आपने ये अनुबंध किसी जबरदस्ती या धोखाधड़ी के फलस्वरूप नहीं किए थे और न ही आपको यह अनुबंध जल्दी में करने पड़े थे। आपको 70 साल मिले। इस बीच यदि आप असंतुष्ट होते या आपको यह लगता कि अनुबंध अन्यायपूर्ण हैं, तो आप यहां से जा सकते थे। पर आपने न तो लैसिडीमन को तरजीह दी और न क्रीट को तरजीह दी। यद्यपि आप यह कहने के आदी हैं कि उनमें अच्छा शासन है। आपने ग्रीकों या बर्बरों के किसी दूसरे राज्य को भी पसंद नहीं किया। लंगड़े, अंधे तथा लूले एथेन्स से बाहर नहीं जाते, यह तो समझ में आता है, पर आप भी तो कहीं नहीं गए। यह स्पष्ट है कि दूसरे एथेन्सवासियों के मुकाबले आप इस नगर से और हमसे, जो कि इसकी विधियां हैं, अधिक संतुष्ट थे, क्योंकि भला कोई भी व्यक्ति विधि-हीन नगर से कैसे संतुष्ट हो सकता है ? और अब क्या आप ही उन अनुबंधों का पालन नहीं करेंगे ? यदि आप हमारी सलाह मानेंगे तो उस हालत में आप एथेन्स से जाकर अपने को हास्यास्पद नहीं बनाएंगे।

'जरा सोचिए तो सही कि अनुबंध तोड़कर या उसका लंघन कर आप अपने मित्रों का तथा अपना क्या लाभ करेंगे ? यह लगभग निश्चित है कि आपके भाग जाने पर आपके मित्रों को कम से कम देशनिकाला होगा या उनके नागरिक अधिकार छीन लिए जाएंगे या उनकी संपत्ति जब्त कर ली जाएगी। आप थिबिस या मैगारा इन दो पड़ोसी नगरों में जा सकते हैं क्योंकि दोनों में अच्छा शासन है; पर सुकरात, आप वहां उन नगरों के शत्रु के रूप में जाएंगे क्योंकि जो भी अपने नगर का कल्याण चाहता है, वह आपकी तरफ तिरछी नजरों से देखेगा और यह कहेगा कि आप विधि-भंजक हैं। ऐसी स्थिति में यही प्रमाणित होगा कि न्यायाधीशों ने आपके मुकदमे में जो निर्णय दिया, वह बिल्कुल न्यायपूर्ण था। जो व्यक्ति विधि-भंजक हो, उसके संबंध में यह भी मान लिया जा सकता है कि वह नवयुवकों को भ्रष्ट करने वाला और बुद्धिहीन व्यक्ति है। तो आप सुशासित राज्यों और सभ्य लोगों के बीच जाना टाल जाएंगे ? उस हालत में क्या जिंदगी जीने लायक रह जाएगी ? तब आप ऐसे लोगों के साथ कैसे मिलेंगे और क्या उनसे निर्लज्जतापूर्वक बातचीत करेंगे ? पर प्रश्न तो यह है, सुकरात, कि आप उनसे किस विषय पर बातचीत करेंगे ? क्या आप उन विषयों पर बातचीत

करेंगे, जिन पर आप यहां बातचीत करते थे ? क्या आप उन्हें यह बताएंगे कि सत्कर्म या धर्म, न्याय, संस्थाएं और विधि मनुष्यों की सबसे मूल्यवान संपत्ति हैं ? क्या ऐसा करते हुए आपको यह महसूस नहीं होगा कि सुकरात के लिए यह कितनी निर्लज्जता की बात है ? आपको इस विषय पर गहन विचार करना चाहिए। पर आप इन स्थानों को छोड़ जाएंगे। आप थेसाली में क्रीटो के मित्रों के पास जाएंगे क्योंकि वहां बिल्कुल अव्यवस्था और उच्छृंखलता है और संभव है कि वे यह सुन कर बहुत खुश हों कि आप किसी अजीबोगरीब तरीके से जेल से भाग आए हैं—किसानों के कपड़े पहनकर या कोई छद्म भेष धारण कर या अपना चेहरा बदलकर , जैसाकि भागने वाले लोग किया करते हैं। क्या कोई यह नहीं कहेगा कि आप एक वृद्ध व्यक्ति हैं और शायद कुछ ही साल और जीते; आप जीवन से बहुत लोभी ढंग से चिपके रहे और आपने इतने से लाभ के कारण सर्वोच्च विधियों का लंघन किया ? यदि आप उन्हें नाखुश न करें, सुकरात, शायद वे ऐसा न कहें पर यदि आप उन्हें नाखुश करेंगे तो, आपको बहुत-सी बातें ऐसी सुनने को मिलेंगी जिनसे आप झेंप जाएंगे। आपको उन लोगों के खुशामदी और दास के रूप में जीवन व्यतीत करना पड़ेगा और थेसाली में आप भोज खाने के अतिरिक्त और क्या करेंगे ? मानो थेसाली की यात्रा आपने महज मनोरंजन के लिए की हो और उस हालत में न्याय और सत्कर्म के विषय में पुरानी उक्तियां कहां जाएंगी ? क्या आप अपने बच्चों के लिए जीना चाहते हैं ? आप उनका पालन-पोषण और उनको शिक्षा देना चाहते हैं ? या आप उन्हें अपने साथ थेसाली ले जाएंगे और उन्हें वहां पर शिक्षा देकर उनका पालन-पोषण करेंगे ? क्या आप उन्हें अपने देश के प्रति अजनबी इसलिए बना देंगे कि आप स्वयं अजनबी हो गए। या यह मान लिया जाए कि आप उन्हें एथेन्स में छोड़ देंगे, तो उस हालत में क्या आपके जिंदा रहने पर, भले ही आप साथ न हों, उनकी शिक्षा और पालन-पोषण बेहतर होगा ? आपके मित्र उनकी देखभाल करेंगे ? पर क्या आपके मित्र उसी हालत में उनकी देखभाल करेंगे, जबकि आप थेसाली चले जाएं या आपके परलोक चले जाने पर भी उनकी उसी प्रकार सहायता करते रहेंगे। वे तो हर हालत में देखभाल करते बशर्ते कि जो लोग अपने को आपका मित्र बताते हैं, वे किसी काम के हों।

'सुकरात, आप हमारी सलाह लीजिए, हमने आपको पाला-पोसा है। न तो आप बच्चों की बात सोचिए, न जीवन की और न न्याय के सामने आप किसी और बात को सोचिए। आप जब परलोक जाएंगे, तो क्या आप वहां के शासकों के सामने अपनी सफाई दे सकेंगे ? यह स्पष्ट है कि आपके भागने पर इस जीवन में न तो आपके मित्र अधिक सुखी होंगे, न अधिक न्यायी और न अधिक पवित्र कहलाएंगे। यदि आप यहां से भाग जाएं तो भी आप मर जाने के बाद अधिक पवित्र नहीं कहलाएंगे। अधिक सुखी भी नहीं होंगे। इस समय तो आप हम लोगों के यानी विधि-शास्त्र के द्वारा अपकृत होकर नहीं बल्कि मनुष्यों के द्वारा अपकृत होकर चले जाएंगे। पर यदि आप

बुराई का बदला बुराई से और अपकृत्य का बदला अपकृत्य से देते हैं, हमारे साथ अपने अनुबंधों और शर्तनामों को तोड़ते हैं और अपने को, अपने मित्रों को, अपने देश को तथा हमें भी नुकसान पहुंचाते हैं तो जब तक आप जिंदा रहेंगे, हम आपसे नाराज रहेंगे। आपके मर जाने पर हमारे बंधु तथा परलोक का न्यायकर्ता आपका स्वागत प्रेम से नहीं करेंगे क्योंकि वे यह जान जाएंगे कि पृथ्वी पर आपने हमें नष्ट करने का यथासाध्य प्रयत्न किया था। तो हमारी बात मानिए और क्रीटो की बातों में न आइए।'

मेरे प्रिय मित्र क्रीटो, आप यह समझ लीजिए कि जैसे सिबिल की पूजा करने वाले लोग भक्ति की अतिशयता में बांसुरी का राग सुनते हैं, उसी तरह मैं इन बातों को अपने कानों में गूंजते हुए पा रहा हूं और उनकी आवाज के सामने दूसरी सारी वाणियां डूब रही हैं। विश्वास है कि यदि आप मेरी राय बदलने का प्रयत्न करेंगे तो आपका प्रयत्न व्यर्थ होगा, फिर भी आप समझते हैं कि आप सफल होंगे तो आप बोलते जाएं।

क्रीटो–मैं जो कुछ कह चुका हूं उससे अधिक नहीं कह सकता, सुकरात।

सुकरात–तो ठीक है, क्रीटो, हम वैसा ही करें जैसाकि मैं कहता हूं। ईश्वर की ऐसी ही आज्ञा है।

फीडो

वार्ता के पात्र :

फीडो

एचेक्राटिस

सुकरात

सिबिस

सिम्मियास

अपोलोडोरस

क्रीटो

ग्यारह नौकर

स्थल :

प्रथम फ्लियस, बाद में सुकरात की जेल

फीडो

एचेक्रातिस–फीडो, क्या आप उस दिन सुकरात के साथ थे, जिस दिन उन्होंने जेल में विष-पान किया था या आपने उनकी कहानी किसी के मुंह से सुनी थी ?

फीडो–एचेक्रातिस, मैं स्वयं वहां मौजूद था।

एचेक्रातिस–तो हमारे गुरुवर ने मृत्यु के पहले क्या कहा और वे कैसे मरे ? मुझे बड़ी खुशी होगी यदि आप इस संबंध में मुझे बताएंगे। हमारे नागरिकों में से कोई भी अब एथेन्स में नहीं जाता और वहां से बहुत दिनों से कोई अजनबी आया भी नहीं, जो हमें इन वार्ताओं का कुछ ब्यौरा दे सके, सिवा इसके कि उन्होंने विष-पान कर लिया और वह परलोक सिधार गए। इसके अलावा हमें कुछ भी मालूम नहीं है।

फीडो–तो क्या आपने मुकदमे के संबंध में भी नहीं सुना और यह नहीं मालूम किया कि वह कैसे चला ?

एचेक्रातिस–हां, हमें इस संबंध में बताया गया था; हमें इस बात का बहुत आश्चर्य हुआ था कि मुकदमे के बहुत बाद को ही वह मरे। भला ऐसा क्यों हुआ, फीडो ?

फीडो–यह एक आकस्मिक घटना थी, एचेक्रातिस। एथेन्सवासियों ने डेलोस में जो जहाज भेजा था, उसका पिछला हिस्सा मुकदमे के दिन मंडित हुआ था।

एचेक्रातिस–यह जहाज क्या है ?

फीडो–यह वह जहाज है जिसके संबंध में एथेन्सवासियों का कहना है कि थीसियस इससे क्रीट में सात युवकों और सात युवतियों को ले गए थे और उन्हें तथा अपने को मृत्यु से बचाया था। एथेन्सवासियों ने उस समय अपोलो से यह प्रतिज्ञा की थी कि प्रति वर्ष डेलोस में एक पवित्र मिशन भेजा जाएगा और तबसे आज तक वे बराबर इसे देवता के पास भेजते रहे हैं। शहर को पवित्र रखने की एक विधि यह है कि जब यह जहाज चला जाता है, फिर किसी को मृत्यु-दंड तब तक नहीं दिया जाता, जब तक कि जहाज डेलोस लौट न आए। कई बार ऐसा होता है कि प्रतिकूल हवाओं के कारण जहाज रुक जाता है, तब काफी समय लग जाता है। यह पवित्र यात्रा उस समय शुरू होती है जब अपोलो का पुरोहित जहाज के पिछले भाग को मंडित कर देता है, और जैसाकि मैंने बताया, यह मुकदमे के पहले दिन हुआ था, इसीलिए सुकरात

के मुकदमे और मृत्यु के बीच इतने दिनों का अंतर आ गया।

एचेक्राटिस–यदि आप व्यस्त नहीं हों तो आप हमें यह बताने की कृपा करें कि पूरी घटना किस तरह घटित हुई ?

फीडो–नहीं, मुझे कोई काम नहीं है और मैं कोशिश करूंगा कि पूरी बात बताऊं। मेरे लिए सुकरात को स्मरण करना, चाहे मैं उनके विषय में स्वयं बात करूं या उनके विषय में किसी से सुनूं, इससे बढ़कर कोई सुखकर कार्य नहीं है।

एचेक्राटिस–सचमुच, फीडो, जिस तरह उनकी चर्चा करके आप प्रसन्न होते हैं, मेरे लिए भी वैसा ही समझिए। पर जहां तक हो सके, मुझे पूरी बात विस्तारपूर्वक बताइए।

फीडो–बात यह है कि उस दिन मैं अभिभूत था। मुझे ऐसा नहीं लगता था कि मैं एक प्रिय मित्र की मृत्यु पर उपस्थित हूं। मेरे मन में उनके प्रति कोई दया की भावना उत्पन्न नहीं हुई क्योंकि, एचेक्राटिस, वह सुखी लगते थे। चाल-ढाल और चेहरे से वह संतुष्ट और निर्भय लग रहे थे। उन्होंने बड़े भव्य तरीके से मृत्यु का वरण किया। मैं यह सोचे बिना नहीं रह सका कि जब वह परलोक की यात्रा कर रहे होंगे तो देवतागण उन्हें कृपापूर्वक देख रहे होंगे, और जब वह परलोक में पहुंच जाएंगे तो वे उनके साथ वही व्यवहार करेंगे जैसा उन्होंने किसी भी आदमी के साथ किया होगा। इस कारण मेरे मन में शायद ही दया की कोई भावना उत्पन्न हुई हो, जैसाकि आप इस प्रकार की परिस्थिति में स्वाभाविक मानेंगे। इसके साथ ही, दार्शनिक तत्वों पर चर्चा करते समय पहले जो आनंद आया करता था, वह आनंद भी नहीं आ रहा था, यद्यपि हम दर्शनशास्त्र पर ही बातचीत करते रहे थे। जब मुझे याद आता कि वह अभी-अभी मरने ही वाले हैं तब मुझ पर एक अजीब अनुभूति छा जाती, जिसे हम सुख और पीड़ा का एक अद्‌भुत मिश्रण कह सकते हैं। हम में से जो लोग भी वहां उपस्थित थे, सबकी यही हालत थी। हम बारी-बारी से कुछ हंसते थे और कुछ रोते थे, विशेषकर अपोलोडोरस की यही हालत थी। मैं समझता हूं कि आप उस आदमी को तथा उसके स्वभाव को जानते होंगे।

एचेक्राटिस–अवश्य जानता हूं।

फीडो–उसने आत्मसंयम से बिल्कुल काम नहीं लिया और सच बात तो यह है कि मैं स्वयं और दूसरे लोग भी बहुत उत्तेजित थे।

एचेक्राटिस–वहां कौन-कौन थे, फीडो ?

फीडो–पक्के एथेन्सवासियों में अपोलोडोरस, क्रीटोवूलस और उनके पिता क्रीटो, हरमोजीनियम, एपीजिनस, इशीनिश और एण्टीस्थिनिस थे। इसके अलावा पीनिया के कटेसियस, मैनक्वेनस तथा दूसरे एथेन्सवासी थे। मैं समझता हूं कि अफलातून बीमार थे।

एचेक्राटिस–क्या वहां कोई बाहरी लोग भी थे ?

फीडो–हां, थीबिस के सिम्मियास, सिबिस और फिडोन्डिस और मैगारा के

यूक्लीडिस और टर्पसियोन थे।

एचेक्राटिस–क्या अरिसटिप्पस और क्लीओमब्रोटस भी वहां मौजूद थे ?

फीडो–वे लोग नहीं थे। यह बताया गया कि वे इजीना में थे।

एचेक्राटिस–वहां और कोई था ?

फीडो–नहीं, मैं समझता हूं कि इतने ही लोग थे।

एचेक्राटिस–तो आप हमें वार्ता के संबंध में बताएं।

फीडो–मैं आपको शुरू से ही सारी कहानी बताने की चेष्ट करूंगा। इस घटना से पहले मैं और दूसरे लोग बराबर न्यायालय में सवेरे मिला करते थे, जहां मुकदमा चल रहा था और वह स्थल जेल के पास ही था। और तब हम लोग सुकरात के पास भीतर जाते। हम हर रोज प्रातः प्रतीक्षा करते कि जेल खुले, जेल खुले। इस दौरान हम आपस में बातचीत करते रहते और तब जल्दी ही जेल खुल जाती। ज्योंही जेल खुल जाती, हम लोग सुकरात के पास पहुंचते और हम पूरा दिन उन्हीं के साथ गुजारते। घटना के पहले की शाम को जेल से जाने के बाद हमें यह मालूम हो गया था कि जहाज डेलोस से वापस आ गया है, इसलिए हम लोगों ने जितना भी सवेरे हो सके, निश्चित स्थान पर पहुंचना तय किया था। जब हम जेल पहुंचे तो वहां का द्वारपाल, जो हमें रोज जेल में घुसने देता था, स्वयं बाहर आ गया और बोला, आप कुछ प्रतीक्षा करें और तब तक भीतर न जाएं जब तक कि बुलाए न जाएं। उसने कहा, 'बात यह है कि अधिकारी सुकरात को बेड़ियों से मुक्त कर रहे हैं और उनकी मृत्यु के लिए हिदायतें दे रहे हैं।' और यह कह कर वह चला गया और फिर थोड़ी ही देर में वह लौट आया और उसने हमें भीतर जाने के लिए कहा। अतः हम भीतर गए और हमने देखा कि सुकरात अभी-अभी बेड़ियों से मुक्त हुए हैं और जान्थीप देवी उनके पास बैठी हुई है, जिसकी गोद में बच्चा है। जब जान्थीप देवी ने हमें देखा तो वह एकदम से चिल्ला कर रो पड़ी और स्त्रियों की तरह रोने-धोने लगी। बोली, 'सुकरात, यह अंतिम बार है जबकि आप अपने मित्रों से या वे आपसे बात कर पाएंगे।' तब सुकरात ने क्रीटो की ओर देखा और कहा, 'क्रीटो, इन्हें घर ले जाने की व्यवस्था करें।' अतः क्रीटो के सेवक उन्हें वहां से ले गए और वह बहुत जोरों से रोती और छाती पीटती रही। पर सुकरात बिस्तर पर बैठ गए और उन्होंने अपना पैर नीचे कर लिया और उसे हाथों से मलने लगे और उसे मलते हुए उन्होंने यह कहा, 'जिसे मनुष्य सुख कहते हैं, वह कितनी अद्भुत चीज है। इसका दुख के साथ क्या अद्भुत संबंध है, जो है उसका विपरीत लगता है। सुख और दुख कभी किसी मनुष्य के पास एक साथ नहीं आते। कोई व्यक्ति इनमें से एक का अनुसरण और उसे प्राप्त करता है तो उसे दूसरे को भी जबरदस्ती प्राप्त करना पड़ता है। मानो वे दोनों अलग चीजें नहीं हैं और एक का सिरा दूसरे से मिला हुआ हो।'

उन्होंने कहा, 'मैं समझता हूं कि ईसप ने अगर यह बात देखी होती तो उन्होंने

इस संबंध में इस प्रकार की एक कहानी ही बना डाली होती कि ईश्वर ने उस समय इनमें मेल कराना चाहा था, जब वे लड़ रहे थे और जब वह मेल न करा सके तो उन्होंने उन दोनों के सिरों को मिला दिया। इसलिए जब सुख और दुख में से एक मनुष्य को प्राप्त होता है तो दूसरा अवश्य उसके पीछे-पीछे आता है। यही हालत इस समय मेरी है। मेरे पैरों में बेड़ियों की वजह से दर्द है और अब मुझे लगता है कि दर्द के पीछे-पीछे सुख की अनुभूति आई है।'

सिबिस ने उसकी बात बीच में काटते हुए कहा, 'सुकरात, मैं खुश हूं कि आपने मुझे याद दिला दी। कई लोग आपकी कविता अपोलो-स्तोत्र और आपके द्वारा छंदोबद्ध ईसप की कहानियों के संबंध में पूछ रहे थे। एक या दो दिन पहले इवीनस ने मुझसे पूछा कि आप जेल में आकर कविता कैसे लिख लेते हैं, जबकि आपने इससे पहले कभी कविता की एक भी पंक्ति नहीं लिखी थी। यदि आप यह चाहते हैं कि मैं उनका उत्तर दूं (क्योंकि जब वह मुझे फिर से मिलेगा और यही प्रश्न करेगा), मैं जानता हूं कि वह अवश्य ही पूछेगा, तो मुझे यह बताइए कि मैं क्या उत्तर दूं ?'

सुकरात ने इस पर यह कहा, 'सिबिस, उनसे आप सत्य ही बता दीजिएगा। उनसे यह कहिएगा कि मैं उनसे या उनकी कविता से कोई प्रतिद्वंद्विता नहीं करना चाहता और उस इच्छा से मैंने कविताएं लिखी भी नहीं हैं। मैं जानता हूं कि ऐसा करना आसान नहीं है। मैं तो केवल कुछ स्वप्नों के अर्थ की जांच कर रहा था और उस संबंध में अपने विवेक की थाह ले रहा था। हो सकता है कि उन स्वप्नों में मुझे सचमुच संगीत-रचना का आदेश मिला हो। तथ्य यही है। जीवन में बार-बार मुझे स्वप्न आता रहा जो अलग-अलग समयों में विभिन्न रूपों में आता रहा, पर उसमें बराबर यह आदेश होता था, 'सुकरात, संगीत की रचना करो और कोई कृति प्रस्तुत करो।' पहले मैं यह सोचा करता था कि इस स्वप्न में मुझे अपने जीवन कार्य का प्रोत्साहन दिया जाता है जैसाकि दौड़ के समय दर्शक दौड़ने वालों को प्रोत्साहन देते हैं। मैं यह सोचता था कि इस स्वप्न में मुझे यह प्रोत्साहन दिया जाता है कि मैं जो कार्य कर रहा हूं उसी के संगीत को जारी रखूं। मैं सोचता था कि दर्शनशास्त्र सबसे ऊंचा संगीत है और मेरा जीवन तो दर्शनशास्त्र में व्यतीत हुआ ही था। पर इस मुकदमे के बाद जब देवता के भोज के कारण मेरी मृत्यु में देर हो गई, तो मुझे यह ख्याल आया कि शायद इस स्वप्न का शाब्दिक अर्थ हो और मुझे सचमुच संगीत-रचना करने के लिए आदेश दिया जा रहा हो। उस हालत में हमें उस आज्ञा का पालन करना चाहिए और चुप नहीं बैठना चाहिए। मैंने यह सोचा कि मरने से पहले स्वप्नादेश मानकर मेरे लिए संगीत की रचना करना अधिक उचित होगा। इसलिए मैंने उस देवता के सम्मान में एक स्तोत्र की रचना की जिनका भोज त्योहार के रूप में मनाया जा रहा था; और ईसप की जो भी कहानियां मुझे याद थीं, उन्हें भी मैंने पद्यबद्ध किया। मैंने सोचा कि जो मनुष्य कवियशः प्रार्थी है, उसे अपनी कविता के लिए

काल्पनिक कहानियों का, न कि तथ्य का, इस्तेमाल करना चाहिए। मुझमें यह सामर्थ्य नहीं है कि स्वयं कहानियां गढ़ूं।

तो सिबिस, आप इविनस को यही कह दीजिए और उनसे मेरी विदाई मांग लीजिए। उनसे यह भी कहिए कि यदि वह बुद्धिमान हैं तो जितनी भी जल्दी हो सके, वह मेरा अनुगमन करें। ऐसा लगता है कि मैं आज ही जाऊंगा क्योंकि एथेन्सवासियों की यही इच्छा है।

इस पर सिम्मियास ने कहा, सुकरात, आप इविनस को कैसी अजीब सलाह दे रहे हैं। मैं अक्सर उनसे मिलता रहा हूं और मैंने उनको जहां तक देखा है, यदि उनसे बन पड़ा, तो वह सुकरात की सलाह मानेंगे।

तब उन्होंने कहा, क्या इविनस दार्शनिक नहीं हैं ?

सिम्मियास ने कहा, हां, मैं तो ऐसा ही समझता हूं।

सुकरात ने कहा, तब इविनस मरना चाहेंगे और हर आदमी जो इस चर्चा में भाग लेने के योग्य है, मरना चाहेगा। पर ऐसा वह अपने ऊपर किसी प्रकार का बल प्रयोग करके नहीं करेगा क्योंकि लोग कहते हैं कि यह सही नहीं है। सुकरात ने इस प्रकार बोलते हुए अपने पैरों को बिस्तर से हटा लिया और सारी बातचीत के दौरान वह इसी तरह पैर लटकाए बैठे रहे।

(६) तब सिबिस ने उनसे पूछा, सुकरात, आपका इस बात से क्या मतलब है कि मनुष्य के लिए अपनी जान देने में बल प्रयोग गलत है और आपने यह क्या कहा कि जो दार्शनिक होगा, वह मरने वाले व्यक्ति का अनुगमन करना चाहेगा।

इस पर सुकरात ने कहा, अरे सिबिस ! तुम तथा सिम्मियास फिलोलाउस के साथ रह चुके हो और तुमने इस संबंध में कुछ नहीं सुना ?

नहीं सुकरात, हमने कोई विशेष बात नहीं सुनी।

इस पर सुकरात ने कहा, मैंने भी इस संबंध में लोगों से ही सुना है। फिर भी कोई कारण नहीं कि मैंने जो कुछ सुना है, उसे आपको क्यों न बताऊं ? वस्तुतः जब मैं दूसरे जगत की यात्रा पर जा रहा हूं, तो मेरे लिए अपनी यात्रा के विषय में बात करने से अधिक उपयुक्त विषय और क्या हो सकता है। और इस विषय पर सोचने से क्या यह अधिक अच्छा नहीं रहेगा कि हम मृत्यु की प्रकृति के संबंध में विचार-विमर्श करें। इस घड़ी और सूर्यास्त के बीच के समय को काटने का इससे सुंदर उपाय भी क्या हो सकता है ?

सुकरात, तो वे लोग यह क्यों कहते हैं कि आत्महत्या करना गलत है ? यह सत्य है कि मैंने फिलोलाउस से, जब यह थीबिस में रहते थे, यह सुना था कि ऐसा करना सही नहीं है और इस बात को मैंने दूसरों से भी सुना है, पर मैंने इनमें से किसी से भी कोई निश्चित बात नहीं सुनी।

उन्होंने कहा, आपको खुश रहना चाहिए। शायद आप किसी दिन इस संबंध

में कुछ सुनेंगे। पर शायद आपको यह सुन कर आश्चर्य होगा कि यह नियम भी उन सारे नियमों की तरह, जिनके अधीन मनुष्य है, निरवच्छिन्न और अपवादहीन है और यह कहना सही नहीं है कि कुछ ही आदमियों के लिए किसी समय मृत्यु जीवन से अच्छी होती है। शायद आप यह सुनकर आश्चर्य करेंगे कि जिन मनुष्यों के लिए मरना ही बेहतर होता, वे अपनी सेवा आप नहीं कर सकते हैं, उन्हें इसकी प्रतीक्षा करनी पड़ती है कि बाहर से आकर कोई यह उपकार करे।

सिबिस ने शांत ढंग से हंसते हुए कहा, अच्छा। और वह अपनी देशी बोली में बोलते रहे।

सुकरात ने कहा, यदि इस रूप में पेश किया जाए, तो यह अद्‌भुत लगता है। फिर भी इसके पक्ष में एक युक्ति दी जा सकती है। गुह्य विद्या[1] में इसका एक कारण बताया गया है कि मनुष्य एक प्रकार के कारागार में है। वह न तो अपने को मुक्त कर सकता है और न इससे भाग सकता है। यही कारण मुझे गंभीर मालूम होता है और इसकी थाह आसानी से नहीं ली जा सकती। पर सिबिस, मैं ऐसा सोचता हूं कि देवतागण हमारे अभिभावक हैं और मनुष्य उनकी संपत्ति के भाग हैं। क्या आप ऐसा नहीं सोचते ?

सिबिस ने कहा, मेरा यही विचार है।

सुकरात ने कहा, यदि आपका कोई आदमी अपने को मार डालता है, यद्यपि आपने यह नहीं बताया कि आप उसका मरना चाहते हैं, तो उस हालत में क्या आप उससे नाराज नहीं होंगे ? यदि सजा देना संभव हो तो क्या आप उसे सजा नहीं देंगे ?

उन्होंने उत्तर दिया, अवश्य दूंगा।

तब यह मानना शायद अयुक्तिसंगत न होगा कि किसी भी व्यक्ति को अपना जीवन लेने का अधिकार नहीं है और उसे तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए, जब तक ईश्वर इसकी जरूरत नहीं समझे—जैसेकि मुझ पर अब आदेश हुआ है।

सिबिस ने कहा, हां, यह स्वाभाविक मालूम देता है। पर आप अभी यह कह रहे थे कि दार्शनिक अवश्य मरना चाहेगा। सुकरात, क्या यह विरोधाभास नहीं है—यदि हम अब जो कुछ कह रहे थे वह बात सच हो कि ईश्वर हमारा अभिभावक है और हम उनकी संपत्ति हैं ? यह कहना युक्तिसंगत न होगा कि ज्ञानी व्यक्ति उस सेवा से बचा रहना पंसद करेगा, जिसमें सबसे अच्छे शासक देवताओं का ही हाथ है। वह ऐसा नहीं सोचेगा कि स्वतंत्र होने पर देवतागण उसकी जितनी परवरिश करते हैं, वह उससे ज्यादा अपनी परवरिश कर सकेगा। शायद एक मूर्ख ही ऐसा सोचे और यह कहे कि वह अपने मालिक से भाग जाए तो अच्छा रहेगा। शायद वह यह न सोचे कि एक अच्छे मालिक से उसे भागना नहीं चाहिए और उसे अधिक से अधिक समय उसके साथ रहना चाहिए। फिर भी वह विचारहीन अवस्था में भाग सकता है।

1. पाइथागोरस की गुह्य-विद्या

बुद्धिमान व्यक्ति तो हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के साथ रहना पसंद करेगा, जो उससे श्रेष्ठतर है। पर सुकरात, यदि यह बात सत्य है, तो आपने जो कुछ अभी कहा, उसके विपरीत निष्कर्ष निकलता है। वह यह कि बुद्धिमान व्यक्ति मृत्यु से कष्ट का अनुभव करेगा और मूर्ख इस पर चैन की बांसुरी बजाएगा।

मैंने सोचा कि सुकरात सिबिस की जिद्द से खुश हुए। उन्होंने हमारी तरफ देखा और कहा, सिबिस हर समय तर्कों को कसौटी पर कसता रहता है। वह किसी के भी द्वारा कही गई बात पर फौरन विश्वास नहीं कर लेता।

सिम्मियास ने कहा, हां, सुकरात, पर मैं सोचता हूं कि इस समय सिबिस ने जो कुछ कहा, उसमें कोई तत्व नहीं है। भला वास्तविक रूप से ज्ञानी व्यक्ति अपने मालिकों से भाग जाना क्यों पसंद करेगा, जबकि मालिक अच्छा हो ? मैं समझता हूं कि सिबिस के तर्क की धार आपकी ओर है क्योंकि आप इतनी तत्परता से हमें छोड़ जाने के लिए तैयार हैं। आप स्वयं मान रहे हैं कि देवतागण अच्छे शासक हैं।

उन्होंने कहा, ठीक बात कह रहे हैं ? शायद आपका मतलब यह है कि मैं इस दोषारोपण के विरुद्ध अपनी सफाई दूं। उसी प्रकार से सफाई दूं, जैसे किसी न्यायालय में दी जाती है।

सिम्मियास ने कहा, हम लोग सचमुच यही चाहते हैं।

सुकरात ने कहा, मैंने अपने मुकदमे में न्यायाधीशों के सामने जिस प्रकार की सफाई दी, उससे कहीं सफल सफाई आपके सामने पेश करने की चेष्टा करता हूं। सिबिस और सिम्मियास, मृत्यु पर दुख न मानना, उस हालत में गलती होती, जबकि मैं यह न सोचता कि मैं देवताओं के साथ रहने जा रहा हूं, जो अच्छे और ज्ञानी हैं। यही नहीं, ऐसे मृत व्यक्तियों के साथ रहने जा रहा हूं, जो इस संसार के मनुष्यों से अच्छे हैं। आपको जानना चाहिए कि मैं यह आशा करता हूं कि मैं अच्छे लोगों में रहने जा रहा हूं। हां, मैं इस संबंध में पूरी तरह निश्चित नहीं हूं। मैं इस संबंध में तो यथासंभव निश्चित हूं कि मैं देवताओं के साथ रहने जा रहा हूं, जो बहुत अच्छे प्रभु हैं, इसीलिए मैं मृत्यु से इतना दुखी नहीं हूं। मुझे विश्वास है कि मृतकों का किसी न किसी प्रकार अस्तित्व होता है, और जैसाकि पुराने लोग कहते हैं कि वह अस्तित्व अच्छों के लिए अच्छा और दुष्टों के लिए बुरा होता है।

सिम्मियास ने कहा, तो सुकरात, क्या आप इस विश्वास को अपने तक ही रखना और चलाना चाहते हैं या आप यह चाहते हैं कि हम इसमें भागीदार हों ? मुझे ऐसा लगता है कि हमें भी इस भलाई में कुछ दिलचस्पी है और आप जो कुछ कह रहे हैं, उस संबंध में आप हमें अपने मत पर ला सकें, तो यह आपके मत की अच्छी पैरवी रहेगी।

सुकरात ने उत्तर दिया, मैं कोशिश करूंगा। पर मैं सोचता हूं कि क्रीटो मुझसे कुछ कहना चाहते हैं। इसलिए मैं यह सुनूं कि क्रीटो को क्या कहना है।

क्रीटो ने कहा, सुकरात, बस मैं यह कहना चाहता हूं कि वह व्यक्ति जो आपको विष-पान कराने जा रहा है, वह मुझे कहता रहा है कि मैं आपको ज्यादा बातचीत करने के विरुद्ध चेतावनी दूं। वह कह रहा है कि बातचीत से गर्मी आ जाती है और विष की क्रिया गर्मी से प्रतिहत नहीं होनी चाहिए। जो लोग उत्तेजित हो जाते हैं, उन्हें कई बार दो या तीन बार विष-पान करना पड़ता है।

सुकरात ने कहा, उसे छोड़िए। वह अपने काम से काम रखें और यदि जरूरत हो तो मुझे दो बार और फिर जरूरत हो तो तीन बार विष-दान देने के लिए तैयार रहें।

क्रीटो ने कहा, मैं जानता था कि आपका यही जवाब होगा। पर वह व्यक्ति वहुत जिद करता रहा है।

सुकरात ने उत्तर दिया, उसकी परवाह मत कीजिए। जब मैं आप लोगों से, जो हमारे न्यायाधीश हैं, एक बात साफ करना चाहता हूं कि मुझे क्यों ऐसा लगता है कि एक आदमी, जिसने दर्शनशास्त्र की चर्चा में अपना जीवन व्यतीत किया है, वह मरते समय खुश रहेगा और मरने के बाद उसे अगले जगत में अधिक से अधिक भलाई प्राप्त होने की आशा रहेगी। सिम्मियास और सिबिस, मैं आप लोगों को यह दिखाने की चेष्टा करूंगा कि कैसे यह बात हो सकती है। शायद संसार यह नहीं देखता कि जो लोग सही ढंग से दर्शन-शास्त्र का अध्ययन करते हैं, वे वस्तुतः मरने की क्रिया और मृत्यु का ही अध्ययन करते हैं। यदि यह बात सत्य है तो किसी भी व्यक्ति के लिए यह बात अजीब होगी कि वह सारी जिंदगी मृत्यु की आकांक्षा रखे और जब मृत्यु उसके पास आए, तो वह उससे परेशान हो। मृत्यु तो उसके अध्ययन का विषय रहा है और इतने दिनों से वह उसकी आकांक्षा की वस्तु रही है।

इस पर सिम्मियास हंस पड़े और बोले, सचमुच, सुकरात, आप मुझे हंसा रहे हैं यद्यपि मैं इस समय बिल्कुल भी हंसने की स्थिति में नहीं हूं। यदि साधारण लोग इसे सुन लें, तो मैं सोचता हूं, वह यह सोचेंगे कि आप दार्शनिकों के संबंध में जो कुछ कह रहे हैं, वह सही है। और मेरे देशवासी आपसे इस विषय में बिल्कुल सहमत हो जाएंगे कि दार्शनिक मरने के लिए व्यग्र हैं और वे यह कहेंगे कि वे अच्छी तरह जानते हैं कि दार्शनिकों को मृत्यु-दंड देना चाहिए।

इस पर सुकरात ने कहा, और वे सही होंगे, सिवा यह कहने के कि वे इसे जानते हैं। वे यह नहीं जानते कि किस अर्थ में सच्चे दार्शनिक मरने के लिए व्यग्र होते हैं और वह किस प्रकार की मृत्यु चाहते हैं और किस अर्थ में वह इसकी अर्हता रखते हैं। उसको अपने विचारों से निकाल दें और हम आपस में बातचीत करें। क्या हम मृत्यु को कोई वस्तु मानते हैं ?

सिम्मियास ने कहा, हां, हम मानते हैं।

और क्या हम यह विश्वास नहीं करते कि आत्मा की शरीर से वियुक्ति मृत्यु है ? क्या मृत्यु का अर्थ यह नहीं है कि शरीर आत्मा से वियुक्त होकर पड़ा रहता है

और आत्मा अपने में शरीर से वियुक्त रहती है। भला मृत्यु इसके अलावा क्या है ?

उन्होंने कहा, ठीक यही बात है।

अब, मेरे अच्छे मित्र, आप इस बात पर सोचिए। यदि आप और हम एक दूसरे बिंदु पर एकमत हो जाएं तो मैं समझता हूं कि हम इस प्रश्न को और अच्छी तरह समझ सकेंगे। क्या आप यह सोचते हैं कि कोई भी दार्शनिक सुखों के विषय में, जैसे भोजन और पानी के संबंध में, बहुत लिप्सा रखेगा ?

सिम्मियास ने कहा, बिल्कुल नहीं, सुकरात।

या वह यौन-सुख के विषय में परवाह करेगा ?

बिल्कुल नहीं।

और क्या आप यह सोचते हैं कि वह शरीर की अन्य आकांक्षाओं का और अधिक सम्मान करेगा ? क्या वह अच्छे कपड़े, जूते और दूसरे शारीरिक अलंकार पाना पसंद करेगा या वह उनसे घृणा करेगा ? सिवाय उस हद तक कि जहां वह उनसे वास्ता रखने के लिए बिल्कुल मजबूर है।

उन्होंने उत्तर दिया, मैं समझता हूं कि वास्तविक दार्शनिक उनसे घृणा करेगा।

उन्होंने कहा, क्या आप यह समझते हैं कि उसका अध्ययन शरीर से संबद्ध नहीं है ? जहां तक उससे बन पड़ता है, वह उससे वियुक्त होता है और वह आत्मा की तरफ उन्मुख होता है। है न ?

पहली यह बात तो साफ है कि दार्शनिक अपनी आत्मा को शरीर के संपर्क से जहां तक हो सके, दूसरे लोगों के मुकाबले में अलग कर लेता है।

ऐसा ही है।

और सिम्मियास, क्या संसार ऐसा नहीं सोचता कि यदि एक व्यक्ति को इन मामलों में सुख न मिले और वह उनमें भाग न लेना चाहे, तो उसका जीवन जीने योग्य नहीं है ? क्या संसार के लोग, ऐसा नहीं मानते कि जो लोग शारीरिक सुखों की परवाह नहीं करते, वे मृतकवत् ही हैं ?

अवश्य ही आप सही हैं ?

पर ज्ञान की वास्तविक प्राप्ति का क्या रहा ? यदि शरीर को ज्ञान की खोज में एक साथी के रूप में लिया जाए, तो क्या यह ज्ञान की प्राप्ति में बाधा है या नहीं ? उदाहरणस्वरूप, क्या दृष्टि-शक्ति या श्रवण-शक्ति मनुष्य को वास्तविक सत्य का पता देती है ? क्या कवि-गण हमेशा से हमें यह नहीं कह रहे हैं कि हम चीजों को न तो सही तौर से सुनते हैं, न देखते हैं। पर यदि शरीर की ये इंद्रियां सही ज्ञान देने वाली और स्पष्ट नहीं हैं, तो दूसरी भी इन सबके मुकाबले में कम पूर्ण हैं। क्या यह बात सही है या नहीं ?

उन्होंने कहा, हां, अवश्य, मैं ऐसा ही सोचता हूं।

उन्होंने पूछा, तो आत्मा कब सत्य की उपलब्धि करती है ? हम देखते हैं कि

कितनी ही बार आत्मा शरीर के साथ मिलकर किसी मामले की खोज करती है, तो शरीर उसे पथभ्रष्ट कर देता है।

सही बात है।

यदि आत्मा को वास्तविक सत्य भासित होता है, तो क्या वह बुद्धि या युक्ति से ही भासित नहीं होता ?

हां।

और मैं समझता हूं कि आत्मा उस समय सही रूप से तर्क करती है, जब श्रवण, दृष्टि, यातना या सुख आदि अनुभूतियां उसे पीड़ित नहीं करतीं, जब वह शरीर को किनारे रख देती है और जहां तक संभव है वह इसके साथ सब तरह के संपर्क से अपने को मुक्त कर लेती है। और इस प्रकार जहां तक संभव है, एकाकी रह कर वह वास्तविक सत्य के लिए प्रयत्न करती है।

ऐसा ही है।

और इस क्षेत्र में भी दार्शनिक की आत्मा शरीर की अवमानना करती है, उससे हट जाती है और एकाकी होने की चेष्टा करती है। क्या यह बात सही नहीं है ?

बिल्कुल स्पष्ट बात है।

और, सिम्मियास, आप इस विषय में क्या सोचते हैं ? क्या आप यह मानते हैं कि निरवच्छिन्न न्याय नामक कोई वस्तु होती है ?

हां, होती है।

और निरवच्छिन्न सौंदर्य और निरवच्छिन्न भलाई होती है या नहीं ?

अवश्य होती है।

क्या अपने कभी इनमें से किसी को अपनी आंखों से देखा है ?

उन्होंने उत्तर दिया—नहीं। मैंने नहीं देखा।

क्या आपने इंद्रियों के द्वारा उनकी उपलब्धि की है ? मैं सारे निरवच्छिन्न विषयों के बारे में बात कर रहा हूं—चाहे वे आकार, स्वास्थ्य या बल संबंधी हों; दूसरे शब्दों में, किसी वस्तु के सार अथवा शुद्ध अस्तित्व के बारे में। क्या वस्तुओं का सत्य शरीर के द्वारा उपलब्ध होता है ? क्या यह बात सही नहीं है कि मनुष्य तो बहुत प्रयत्न करके प्रत्येक वस्तु के सार को बुद्धि के द्वारा जानने की चेष्टा करता है। क्या वह उस प्रकार ज्ञान के बहुत पास आ जाएगा ?

अवश्य।

क्या मनुष्य उस हालत में पूर्ण रूप से विशुद्ध चिंतन प्राप्त नहीं कर लेगा; जबकि, जहां तक संभव है, वह प्रत्येक वस्तु को केवल मन के द्वारा जानने की चेष्टा करेगा और उसमें दृष्टि या और किसी भी अनुभूति से चिंतन के दौरान काम न लेगा, जो इस संबंध में बाधक हैं। हर मामले में वह विशुद्ध बुद्धि के द्वारा ही विशुद्ध और निरवच्छिन्न सत्ता का अनुसरण करेगा। जहां तक हो सकेगा, वह आंख और कान,

थोड़े में, सारे शरीर से मुक्त हो जाएगा क्योंकि शरीर के साथ संपर्क आत्मा को पीड़ित करता है और उसे ज्ञान तथा सत्य की उपलब्धि से रोकता है। प्रश्न यह है कि यदि कोई मनुष्य चाहे तो क्या वास्तविक सत्ता का ज्ञान प्राप्त कर सकता है या नहीं ?

सिम्मियास ने कहा, सुकरात, आपके शब्द सराहनीय रूप से सत्य हैं।

तब उन्होंने यह कहा कि क्या इन सारे कारणों से, जो लोग वास्तविक रूप से दार्शनिक हैं, वे चिंतन करने के अनंतर एक दूसरे से यही नहीं कहेंगे कि ऐसा लगता है कि कोई संकीर्ण मार्ग अवश्य है, जिसके द्वारा हम बुद्धि को अपना पथ-प्रदर्शक मानकर निरापद रूप से यात्रा के अंत तक पहुंच सकते हैं ? जब तक शरीर है और इस प्रकार की कोई बुराई हमारी आत्माओं के साथ मिली हुई है, हम जो चाहते हैं, उसे कभी प्राप्त नहीं कर सकेंगे और सत्य तो यह है कि शरीर को जिन सेवाओं की जरूरत है, उनमें ही सारा समय लग जाता है। इसके अलावा जब भी शरीर रोगों से पीड़ित हो जाता है, तो वास्तविक सत्ता के अनुसरण में बाधा पहुंचती है। यह हमें आवेगों, इच्छाओं, भयों और सब तरह की काल्पनिकताओं और बहुत-सी मूर्खताओं से भर देता है और हमारी स्थिति यह हो जाती है कि सही दिशा में सोच नहीं पाते। केवल इसी कमी के कारण या शरीर की वृत्तियों के कारण युद्ध, गुटबंदी और लड़ाइयां होती हैं क्योंकि सारे युद्धों का मूल धन प्राप्ति की इच्छा है।[1] हम धन प्राप्ति की चेष्टा इस कारण करने के लिए बाध्य होते हैं क्योंकि हम शरीर की दासता में बंध कर सोचते हैं। इसलिए इन सारे कारणों से हमें दर्शनशास्त्र के लिए समय नहीं मिलता। अंततोगत्वा हम कुछ समय के लिए अपने शरीर से मुक्त भी हो जाएं और किसी विषय पर जांच शुरू करें, तो शरीर उस खोज के हर चरण पर बाधक बन जाता है और उससे विचारों की गड़बड़ी, कष्ट और भगदड़ मच जाती है। नतीजा यह होता है कि हम सत्य की उपलब्धि में समर्थ नहीं होते। इस प्रकार से हमने यह अच्छी तरह देख लिया कि यदि हमें विशुद्ध ज्ञान प्राप्त करना है, तो हमें शरीर से मुक्त होना चाहिए और आत्मा के लिए यह संभव होना चाहिए कि वह वस्तुओं को उनके असली रूप में देख सके। नहीं तो मरने के बाद ही हम वह ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, जिसकी हम इच्छा करते हैं और जिसके लिए हम कहते हैं कि हममें जोश है। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि सशरीर विशुद्ध ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती, तो दो में से एक बात सही होगी—या तो हम ज्ञान प्राप्त कर ही नहीं सकते और या हम मृत्यु के बाद ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। बात यह है कि मृत्यु के बाद ही यह कहा जा सकता है कि आत्मा शरीर से वियुक्त होकर अपने में स्थित है। हां, अपने जीवनकाल में हम ज्ञान के निकट उसी हालत में पहुंच सकते हैं, जबकि हम शरीर के साथ बहुत जरूरी स्थिति के अलावा किसी प्रकार का भी संपर्क या संचार न रखें और उसकी प्रकृति से हम

---

1. देखिए, रिपब्लिक 373-डी

अपवित्र न हो जाएं। हमको चाहिए कि हम शरीर से वियुक्त होकर तब तक रहें, जब तक कि ईश्वर स्वयं हमें मुक्त नहीं कर देते। जब हम शुद्ध होकर उसकी मूर्खताओं से मुक्त हो जाएं, तब हम समझते हैं हम उनके साथ निवास करेंगे, जो हमारी ही तरह शुद्ध हैं और हम स्वयं जान जाएंगे कि विशुद्ध क्या है। मैं यह सोचता हूं कि अशुद्ध वस्तु शुद्ध को प्राप्त नहीं कर सकती। सिम्मियास, मेरा ऐसा ख्याल है कि ज्ञान के सच्चे प्रेमियों की भाषा और चिंतन इसी प्रकार के होंगे। क्या आप मुझसे सहमत नहीं हैं ?

अवश्य, सुकरात, मैं आपसे सहमत हूं।

सुकरात ने कहा, मेरे मित्र, यदि यह सत्य है तो आशा है कि जहां मैं जा रहा हूं, वहां पहुंच जाऊंगा। मैं उस वस्तु को प्राप्त कर लूंगा, जिसे मैंने अतीत में इतनी गंभीरता के साथ प्राप्त करने की चेष्टा की है। इसलिए मैं बहुत खुशी के साथ उस यात्रा के लिए जा रहा हूं, जो आज के लिए निर्दिष्ट है। वे सभी मनुष्य खुशी से मृत्यु का वरण कर सकेंगे जो यह सोचते हैं कि उनका मन प्रस्तुत और समर्थ है।

सिम्मियास ने कहा, यह पूर्णतया सत्य है।

और जैसाकि हमने कहा, क्या शुद्धि का अर्थ नहीं है कि आत्मा शरीर से जहां तक हो सके, वियुक्त हो जाय और हर दिशा में शरीर से अलग अपने को संजो सके और उसके बाद वह जहां तक हो सके, शरीर की दासता से मुक्त होकर अलग रहे ?

उन्होंने कहा, हां अवश्य।

इस प्रकार से क्या यह प्रमाणित नहीं होता कि शरीर से आत्मा की वियुक्ति और मुक्ति ही मृत्यु है ?

उन्होंने कहा, निःसंदेह।

और हम यह मानते हैं कि सच्चा दार्शनिक हमेशा यह चाहेगा कि उसकी आत्मा मुक्त हो जाए। उसके अध्ययन का लक्ष्य केवल यह है कि वह शरीर से आत्मा को मुक्त और वियुक्त कर दे। क्या यह बात सही नहीं है ?

सही है।

तो क्या यह विसंगत न होगा कि मृत्यु को सम्मुख पाकर कोई व्यक्ति घिघियाने लगे, जबकि जीवन में उसने अपने को जहां तक हो सका, मृत्यु की स्थिति में जीने की चेष्टा की है। क्या ऐसा व्यवहार विसंगत न होगा ?

हां, विसंगत होगा।

उन्होंने कहा, तो सिम्मियास, असली बात यों है कि सच्चा दार्शनिक मरने के निमित्त ही अध्ययन करता है और उसकी आंखों में मृत्यु बहुत कम भयंकर होती है। अब इस बात को इस रूप में देखें। वह हर मामले में शरीर से शत्रुता करता है और वह यह इच्छा करता है कि केवल आत्मा ही रहे। उस हालत में क्या यह बात अयुक्तिसंगत न होगी कि जब उसकी इच्छा पूर्ण होने जा रही हो तो वह खुश होने के बजाय डरे और शिकायत करे ? वह तो उस स्थान को जा रहा है जहां उसे वह

ज्ञान पाने की आशा हो सकती है जिसकी उसने जिंदगी भर जोश के साथ कामना की है, और जहां वह अपने शत्रु के संग से मुक्त होने जा रहा है। प्रेमी, पत्नी या पुत्र के मर जाने पर बहुत से इस आशा में इच्छापूर्वक परलोक गए हैं कि वे जिनसे प्रेम करते थे, उनसे फिर मिल सकेंगे और उनके साथ रह सकेंगे। जिसको ज्ञान की वास्तविक भूख है और जो आशा करता है कि परलोक में ही उसे वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है, वह मृत्यु से कष्ट का अनुभव नहीं करेगा और खुश होकर मृत्यु का वरण करेगा। मेरे मित्र, यदि वह सचमुच दार्शनिक है तो आपको फिक्र नहीं करनी चाहिए। वह इस दृढ़ विश्वास के साथ परलोक सिधारेगा कि वहीं पर, और अन्यत्र कहीं नहीं, उसे शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होगी। यदि बात ऐसी है, तो फिर मैं कहता हूं कि ऐसे आदमी के लिए मृत्यु से डरना बहुत अयुक्तिसंगत होगा या नहीं ?

इस पर उन्होंने उत्तर दिया, आप ठीक कह रहे हैं।

सुकरात ने कहा, क्या इससे यह स्पष्टतः प्रमाणित नहीं होता कि जो व्यक्ति मृत्यु को पास आते देखकर कष्ट का अनुभव करता है, वह ज्ञान का प्रेमी नहीं है बल्कि वह शरीर का प्रेमी है ? बहुत संभव है कि वह धन या सम्मान का प्रेमी हो और यह भी हो सकता है कि वह दोनों का प्रेमी हो।

उन्होंने कहा, हां, आप ठीक कहते हैं।

सुकरात ने कहा, तो, सिम्मियास, जिसे हम साहस कहते हैं, क्या वह दार्शनिक का गुण-विशेष नहीं है।

सिम्मियास ने कहा, अवश्य, बिल्कुल ठीक है।

सुकरात ने कहा, इसी प्रकार से संयम—जिसे साधारण लोग भी संयम नाम देते हैं—उसका अर्थ है अपने आवेगों पर नियंत्रण और शासन कायम रखना। क्या वह संयम ऐसे लोगों का ही विशेष गुण नहीं है, जो शरीर से घृणा करते हैं और अपने जीवन को दर्शनशास्त्र की चर्चा में लगाते हैं ?

उन्होंने कहा, ठीक है।

यदि आप दूसरे व्यक्तियों के साहस और संयम को देखें, तो आपको ज्ञात होगा कि वे बिल्कुल भिन्न वस्तु हैं।

सुकरात, यह कैसे ?

सुकरात बोले, आप जानते हैं कि दार्शनिकेतर व्यक्ति मृत्यु को, मनुष्य जाति जिन बड़ी बुराइयों की शिकार है, उन्हीं में से एक मानते हैं।

सिम्मियास ने कहा, हां यह बात सही है।

फिर भी जब उनमें से साहसी व्यक्ति मृत्यु का आलिंगन करते हैं, तो क्या वे इससे भी बड़ी बुराई के डर से ऐसा नहीं करते ?

हां।

तो इसके मायने यह हुए कि दार्शनिकों के अलावा जो लोग भी साहस दिखाते

हैं, वे डर से या डर के कारण ही साहस दिखाते हैं। फिर भी यह बहुत अजीब बात है कि एक आदमी डर और कायरपन की वजह से बहादुरी दिखलाए।

स्थिति ऐसी ही है।

क्या उनमें से जो लोग व्यवस्थित हैं, उनकी भी हू-ब-हू वही हालत नहीं है ? क्या वे इस प्रकार के असंयम के कारण ही संयमी नहीं हैं ? हमें ऐसा लगेगा कि यह सत्य नहीं है, पर इन लोगों के मूर्खतापूर्ण संयम की स्थिति यही है। वे कुछ सुखों की कामना करते हैं और उन्हें खोने से डरते हैं, इसलिए वे दूसरे सुखों से बचते हैं क्योंकि वे उन सुखों से परिचालित हैं। असंयम की परिभाषा इस प्रकार की जाती है कि मनुष्य सुख की इच्छा से परिचालित हैं, पर वे केवल कुछ सुखों पर प्रभुत्व पाते हैं, पर बाकी सुखों के अधीन रहते हैं। उसका मतलब यह है कि लोग भीतर से असंयमी होने के कारण ही ऊपर से संयमी होते हैं।

ऐसा ही लगता है।

प्रिय सिम्मियास, मुझे डर है कि पुण्य या सत्कार्य का इस तरह से सौदा नहीं हो सकता कि उसे एक सुख के बदले दूसरे सुख या एक दुख के बदले दूसरे दुख, एक भय के बदले दूसरे भय, और कम के बदले अधिक लिया जाए जैसेकि हम सिक्कों के मामलों में करते हैं। केवल एक ही विशुद्ध सिक्का है, जिसके आधार पर हम इन चीजों का विनियम कर सकते हैं और वही सिक्का है जिसके आधार पर हम चीजों का विनियम कर सकते हैं। इससे और इसके लिए जो कुछ भी खरीदा जाता है, चाहे वह साहस हो या संयम हो या न्याय हो, वह वास्तविक है। दूसरे शब्दों में, ज्ञान के बिना वास्तविक पुण्य नहीं हो सकता और इससे कुछ आता-जाता नहीं कि सुख, भय और दूसरे ऐसे तत्व उसमें उपस्थित हैं, या अनुपस्थित। मैं सोचता हूं कि जो पुण्य की छाया मात्र है, उसमें न तो स्वतंत्रता है, न स्वास्थ्य, न सच्चाई। शुद्ध सत्कार्य या पुण्य वास्तविक रूप से इन वस्तुओं से शुद्ध होता है और संयम, न्याय, साहस और शुद्धि के स्वरूप हैं। और मैं सोचता हूं कि जिन लोगों ने उलटबांसियां या रहस्मयी उक्तियां चलाईं, उनका एक वास्तविक अर्थ था; सच्ची बात तो यों है कि वे हमसे उपदेशात्मक कहानियों के द्वारा बराबर यही कहते रहे कि जो भी व्यक्ति परलोक में पवित्र और मंत्रसिद्ध होकर नहीं जाता, वह कीचड़ में फंस रहेगा, इसके विपरीत जो शुद्ध और मंत्रसिद्ध होकर जाता है, वह देवताओं के साथ निवास करेगा। उलटबांसियों में यह कहा गया है, जादू की फूलदार छड़ी ढोने वाले बहुत से हैं, पर अनुप्रेरित बहुत थोड़े ही होते हैं। अनुप्रेरित शब्द में शायद सच्चे दार्शनिक का ही उल्लेख है। मैंने अपने जीवन में यही चेष्टा की कि जितना भी मुझसे बने, मैं बन जाऊं। रहा यह है कि मैं सही रास्ते पर जा सका या नहीं और सफल हो सका या नहीं, यह थोड़े समय में मालूम कर लूंगा जब मैं (यदि यह ईश्वर की इच्छा हो) परलोक सिधार जाऊंगा।

सिम्मियास और सिबिस, आप लोगों को और अपने गुरुजनों को छोड़कर जाने

में न तो मुझे क्रोध है और न कष्ट। ऐसा क्यों है ? इस पर मेरा यही स्पष्टीकरण है कि मैं ऐसा विश्वास करता हूं कि अगले जगत में हमारा इस जगत की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छे मित्रों तथा गुरुओं से साबका पड़ेगा, यद्यपि भीड़ इस विषय में विश्वास नहीं करती। यदि अपनी सफाई देने में मैं आपके सामने एथेन्स के न्यायाधीशों को दी गई सफाई की अपेक्षा अधिक सफल रहा हूं, तो यह बहुत अच्छी बात है।

जब सुकरात ने इस प्रकार अपना भाषण समाप्त कर लिया तो सिबिस ने कहा, मैं समझता हूं, सुकरात, आप अधिकांशतः सही हैं। पर आपने आत्मा के संबंध में जो कुछ कहा, उस पर लोगों को विश्वास नहीं है। वे डरते हैं कि जब आत्मा शरीर छोड़ कर चली जाती है, तो वह कहीं नहीं रहती बल्कि वह मृत्यु के दिन ही विनष्ट हो जाती है। वे सोचते हैं कि ज्योंही आत्मा शरीर से मुक्त हो उसे छोड़ जाती है, त्योंही वह सांस और धुएं की तरह बिखर या गायब हो जाती है और उसके बाद उसका कोई अस्तित्व नहीं रहता। यदि वह समग्र रूप में कहीं पर, आपके द्वारा गिनाई हुई बुराइयों से मुक्त होकर, मौजूद होती तो हमें आशा करने के लिए अच्छा कारण होता कि आप जो कुछ कहते हैं वह सही है। पर इस संबंध में लोगों को विशेष समझाने या विश्वास दिलाने की जरूरत है कि आत्मा मृत्यु के बाद कायम रहती है और उसमें शक्ति और ज्ञान की प्राप्ति की सामर्थ्य रहती है।

सुकरात ने कहा, सच है, सिबिस, पर हम क्या करें ? क्या आप इन मामलों पर बातचीत करना चाहते हैं और यह जांचना चाहते हैं कि जो कुछ मैं कर रहा हूं वह शुद्ध और सही है ?

सिबिस ने कहा, जहां तक मेरा संबंध है मैं आपका मत सुनना चाहूंगा।

सुकरात ने कहा, मैं समझता हूं कि जो कोई भी इस समय मेरी बात सुनेगा, भले ही वह हास्यरस का कवि हो, वह कहेगा कि मैं उन बातों के संबंध में बेकार की बकबक करता हूं, जिनसे मेरा कोई वास्ता नहीं है। इस पर भी आप चाहते हों तो हम इस प्रश्न की जांच कर सकते हैं।

हम इस विषय पर विचार करें कि मृत्यु के बाद मनुष्यों की आत्माएं परलोक में रहती हैं या नहीं ? मुझे एक प्राचीन विश्वास याद है कि इस संसार को छोड़ने पर आत्माएं परलोक में निवास करती हैं और वे यहां मृतकों में से लौट कर फिर जन्म लेती हैं। पर यदि यह सत्य हो कि जीवित लोग मृतकों में से पैदा होते हैं, तो हमारी आत्माएं परलोक में अवश्य विद्यमान रहती होंगी, नहीं तो, भला वे फिर से कैसे पैदा होतीं ? यदि हम वास्तविक रूप से यह प्रमाणित कर सकें कि जीवित लोग केवल मृतकों से ही पैदा होते हैं तो यह इस बात का यथेष्ट प्रमाण है कि ऐसा ही होता होगा। पर यदि ऐसा नहीं है, तो हमें कोई और तर्क ढूंढ़ना पड़ेगा।

सिबिस ने कहा, ठीक है।

उन्होंने कहा, अच्छी बात है। इस प्रश्न को सुलझाने का सबसे आसान तरीका

यह है कि इसे केवल मनुष्यों के संदर्भ में न सोचा जाए बल्कि सारे प्राणियों और पौधों के संदर्भ में और जो भी वस्तुएं पैदा होती हैं, उन सबके संदर्भ में सोचा जाए। क्या ऐसा नहीं कि प्रत्येक वस्तु जिसका एक विपर्यय है, केवल अपने विपर्यय से ही उत्पन्न होती है। विपर्यय से मेरा मतलब है जैसे, सम्मानजनक और नीचतापूर्ण, न्यायमूलक और अन्यायमूलक इतयादि, और इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं। हम इस प्रकार विचार करें कि जिस भी वस्तु का विपर्यय मौजूद है, वह केवल अपने विपर्यय से ही उत्पन्न होती है या नहीं ? उदाहरणस्वरूप जब यह कहा जाता है कि कोई वस्तु वृहत्तर हो गई है, तो इसका अर्थ यह है कि पहले यह इससे छोटी रही होगी और तभी यह बाद को चल कर वृहत्तर हुई।

हां।

और यदि यह कहा जाए कि कोई वस्तु क्षुद्रतर हो गई, तो इसका मतलब यही है न कि पहले वह वृहत्तर रही होगी और बाद को वह क्षुद्रतर हुई ?

उन्होंने कहा, ठीक है।

इससे आगे चल कर यह मतलब निकलता है कि दुर्बलतर प्रबलतर से और क्षिप्रतर शिथिलतर से उत्पन्न होती है।

अवश्य।

और अधम उत्तमतर से और अधिक न्यायमूलक अधिक अन्यायमूलक से उत्पन्न होता है।

अवश्य।

तो हम लोगों के लिए अब यह यथेष्ट रूप से स्पष्ट हो गया कि सभी चीजें विपर्यय से पैदा होती हैं।

बिल्कुल ठीक है।

और विपर्यय के हर जोड़े में, जोड़े के दो सदस्यों के बीच में उत्पत्तियों के दो सिलसिले हैं, जो एक से दूसरे और फिर लौट कर दूसरे से प्रथम में पहुंच जाते हैं ? वृहत्तर और क्षुद्रतर के बीच वृद्धि और ह्रास की स्थिति है और हम यह कहते हैं कि बढ़ती हो रही है और घटती हो रही है, है न यही बात ?

हां।

और विभाजन और संघटन, ठंडा और गर्म इत्यादि विपर्यय के रूप हैं। वस्तुतः क्या यह एक सार्वदेशिक नियम नहीं है, चाहे हम इसे इन शब्दों में हमेशा स्पष्ट करके अभिव्यक्त करें या न करें कि विपर्यय हमेशा अपने विपर्यय से पैदा होता है और एक दूसरे की उत्पत्ति की प्रक्रिया इसी प्रकार से चलती है।

हां, ऐसा ही है।

सुकरात ने कहा, अच्छी बात है। क्या जीवन का भी उसी प्रकार से कोई विपर्यय है, जैसे निद्रा का विपर्यय जागरण है ?

अवश्य।

वह क्या है ?

मृत्यु।

सुकरात ने कहा, यदि मृत्यु और जीवन विपर्यय हैं, तो वे एक दूसरे से उत्पन्न होते हैं और वे दो स्थितियां हैं और उन दोनों के बीच में दो प्रकारों की उत्पत्तियां हैं ? क्या यह बात सही है या नहीं ?

हां।

सुकरात ने कहा, अब मैं आपको बताऊंगा कि विपर्यय के दो जोड़ों में से एक की, जिसके संबंध में मैंने अभी बताया, उत्पत्तियां क्या हैं, और आप फिर मुझे दूसरे जोड़े के विषय में बताएंगे। निद्रा जागरण का विपर्यय है। निद्रा से जागरण की अवस्था उत्पन्न होती है और जागरण की अवस्था से निद्रा की अवस्था उत्पन्न होती है। इसी प्रकार उनकी प्रथम अवस्था तो यह है कि नींद आ जाती है और दूसरी यह है कि आदमी जाग जाता है। क्या यह स्पष्ट है ?

बिल्कुल।

आप मेरी बात सुन चुके हैं। अब आप हमें मृत्यु और जीवन के विषय में बताइए। मृत्यु जीवन का विपर्यय है। है या नहीं ?

हां।

और वे एक-दूसरे से उत्पन्न होते हैं ?

हां।

तो जीवित से क्या वस्तु उत्पन्न होती है ?

मृतक उत्पन्न होता है।

मृतक से क्या उत्पन्न होता है ?

मैं यह मानूंगा कि जीवित उत्पन्न होता है।

सुकरात ने कहा, इसके मायने यह हुए कि जीवित वस्तुएं और जीवित मनुष्य मृतकों से उत्पन्न होते हैं। सिबिस, है यह बात कि नहीं ?

बिल्कुल स्पष्ट है।

क्या आत्माएं परलोक में मौजूद रहती हैं या नहीं ?

लगता है कि मौजूद रहती हैं ?

तो इन दोनों उत्पत्तियों से क्या निश्चित है ? मैं समझता हूं कि मृत्यु यथेष्ट निश्चित है, क्यों ?

हां, बिल्कुल।

सुकरात ने कहा, तो फिर हम क्या करें ? क्या हम पहले बताए गए नियम के अनुसार इसकी एक विपर्यय उत्पत्ति की कल्पना करें या हम यह कहें कि इस मामले में प्रकृति असंपूर्ण है ? क्या इसी प्रकार से हम मरने की क्रिया के लिए भी किसी

विपर्यय उत्पत्ति की कल्पना करें या नहीं ?

अवश्य।

तो यह विपर्यय क्या है ?

फिर से जीवित होना।

और फिर से जीवित होने की कोई क्रिया है, तो क्या उसका मतलब यह होगा कि मृतक से जीवित की उत्पत्ति हो रही है ?

अवश्य।

तो हम इस विषय पर सहमत हैं कि जीवित उसी प्रकार मृतक से पैदा होता है, जैसे जीवित से मृतक पैदा होता है। पर हम इस संदर्भ में सहमत थे कि यदि ऐसा हो, तो यह यथेष्ट प्रमाण है कि मृतकों की आत्माएं कहीं रहती होंगी और वहां से वे फिर शरीर धारण करती होंगी।

सुकरात, मैं समझता हूं कि हमने जो स्थापनाएं प्रस्तुत की हैं उनका यह आवश्यक परिणाम है।

सुकरात ने कहा, सिबिस, मैं समझता हूं कि हम इस प्रकार जिस नतीजे पर पहुंचे हैं, वह बेजा नहीं है क्योंकि यदि विपर्यय हमेशा विपर्यय के साथ मिल नहीं पाते, मानो वे चक्राकार घूम रहे हों, और यदि सीधी रेखा में उत्पत्ति की क्रिया आगे की ओर एक विपर्यय से बढ़ जाती और वह कभी पीछे की ओर नहीं लौटती, तो उसका परिणाम यह होता कि यदि वस्तुएं अंत में जाकर एक ही रूप प्राप्त कर एक ही स्थिति अपनातीं और बाद को उनकी उत्पत्ति कतई बंद हो जाती।

सिबिस ने पूछा, आपका मतलब क्या है ?

मेरा मतलब समझना बिल्कुल भी कठिन नहीं है। उदाहरणस्वरूप, यदि विपर्यय निद्रा का अस्तित्व उसके अन्य विपर्यय जागरण के बिना होता—स्मरण रहे कि जागरण निद्रा से उत्पन्न होता है—तो सारी प्रकृति अंत तक एण्डीमियन (ग्रीक पुराणों का एक सुंदर युवक, जिसे चिरंतन निद्रा में सुलाकर चंद्रदेवी उसका चुंबन लेती थी) की कहानी को अर्थहीन बना देती और वह कभी उभरकर प्रमुख नहीं हो पाती, क्योंकि हर चीज उसी नींद की अवस्था में होती जैसी कि वह है। रहा यह कि यदि सब चीजें एक साथ मिला दी जाएं और उन्हें कभी अलग न किया जाय, तो एनेक्सागोरस ने जिस अव्यवस्था की कल्पना की है, वह मूर्त हो जाएगी। इसी प्रकार से, प्रिय मित्र सिबिस, यदि प्राणवान वस्तुएं मर जाएं और मर कर उसी स्वरूप में रहें, फिर जीवित ही न हों, तो क्या इसका आवश्यक परिणाम यह नहीं होगा कि अंततोगत्वा कुछ भी जीवित नहीं रहेगा और सब के सब मर जाएंगे ? यदि जीवित वस्तुएं मृत्यु के अलावा दूसरे स्रोतों से उत्पन्न होतीं और मर जातीं तो उसका अनिवार्य परिणाम यह होता कि सारी चीजें मृत्यु द्वारा नष्ट हो जातीं ?

सिबिस ने कहा, सुकरात, मैं समझता हूं कि ऐसी ही बात है। मैं सोचता हूं कि

आप जो कह रहे हैं वह संपूर्ण रूप से सही है।

सुकरात ने कहा, हां सिबिस, यह बिल्कुल सही है। हमने जो निष्कर्ष निकाला, वह बेजा नहीं। मृतक फिर से जीवन प्राप्त करते हैं और जीवित उनसे पैदा होते हैं और मृतक की आत्माएं रहती हैं। अच्छों की आत्माएं अच्छी रहती हैं और बुरों की आत्माएं बुरी रहती हैं।

सिबिस ने कहा, सुकरात, जिस सिद्धांत को आप कहने के आदी हैं यानी यह कि हमारी शिक्षा मात्र पुनःस्मरण की प्रक्रिया है, यह सिद्धांत यदि सच हो तो इसका मतलब यह हुआ कि हमने किसी पूर्व-काल में वह बात सीखी होगी, तभी हम उसका पुनःस्मरण कर रहे हैं। ऐसा करना उस हालत में असंभव होता, यदि हमारी आत्माएं मनुष्य योनि प्राप्त करने के पहले कहीं और मौजूद न होतीं। आत्मा अमर है, यह विश्वास करने का यह एक और कारण है।

सिम्मियास ने बीच में बोलते हुए कहा, पर सिबिस, इन सारी बातों का प्रमाण क्या है ? आप मुझे याद दिलाइए। उन मामलों में अभी मेरे विचार स्पष्ट नहीं हैं।

सिबिस ने कहा, सबसे बड़ा तर्क तो यह है कि यदि आप मनुष्यों को किसी विषय में सही तौर पर पूछें, तो वे स्वयं उन प्रश्नों का उत्तर सही रूप में देंगे। पर वे ऐसा तभी कर सकते हैं कि उनके अंदर ज्ञान और सही बुद्धि पहले से रही हो। उन्हें ऐसी बातें दिखाइए जैसेकि रेखागणित के खाके, तो फिर इस सिद्धांत का प्रमाण पक्का हो जाएगा।[1]

सुकरात ने कहा, सिम्मियास, यदि इससे आपको विश्वास नहीं होता हो तो इस मामले पर दूसरे तर्क से दृष्टि डालिए और देखिए कि आप उस हालत में इससे सहमत होते हैं या नहीं। मैं जानता हूं कि आपके मन में संदेह है। वह यह कि जिसे ज्ञान कहते हैं वह पुनःस्मरण कैसे हो सकता है ?

सिम्मियास ने उत्तर दिया, नहीं, मुझे कोई संदेह नहीं है। पर मैं पुनःस्मरण संबंधी आपके तर्कों को फिर से याद करना चाहता हूं। सिबिस ने जिस प्रकार से आपकी बातों की व्याख्या की, उनसे मुझे करीब-करीब उस सिद्धांत की याद आ गयी है और मैं समझ गया हूं। फिर भी आप इसे फिर से बताना चाहें तो मैं उसे सुनने के लिए उत्सुक हूं। इस प्रकार से हम इस संबंध में सहमत हैं कि यदि एक मनुष्य कुछ याद रखता है, तो इसका मतलब यह हुआ कि वह उसे पहले कभी जानता होगा ?

अवश्य।

सुकरात ने कहा, और हम इस विषय में सहमत हैं कि जब ज्ञान इस प्रकार

1. इसको एक उदाहरण के रूप में देखिए, मेनो, 82 ए आदि, जिसमें यहां की तरह सुकरात ने रेखागणित से अनभिज्ञ एक दास को उचित प्रश्न पूछ कर नक्शों के सहारे उसमें पुनःस्मरण का सिद्धांत यानी आत्मा की अमरता का सिद्धांत प्रतिपादित किया था।

से आता है, तो वह पुनःस्मरण होता है। ठीक है या नहीं ? जब कोई मनुष्य किसी बात को सुन लेता है, देख लेता है या किसी अन्य इंद्रिय से उसे जान लेता है, तो वह केवल उसी वस्तु को नहीं जानता है, बल्कि उसके मन पर किसी दूसरी वस्तु की भी छाप आ जाती है, जिसका ज्ञान बिल्कुल भिन्न है तो क्या हम सही तौर पर यह नहीं कह सकते कि वह उस वस्तु को याद कर रहे हैं, जिसके संबंध में उसके मन पर एक छाप छूट गई है ?

आपका मतलब क्या है ?

मेरा मतलव यह है कि मनुष्य के ज्ञान का एक रूप एक वीणा के ज्ञान के रूप से भिन्न है। है या नहीं ?

अवश्य।

और आप जानते हैं कि जब प्रेमी वीणा या किसी वस्त्र या किसी ऐसी ही वस्तु को देख लेता है, जिसका उसके प्रेमपात्र से संबंध है, तो उसे एक अनुभूति प्राप्त होती है। वह वीणा देखता है और उसके मन में वीणा की मालिक उस प्रेमीपात्री का चित्र आ जाता है। इसे हम पुनःस्मरण कहते हैं। उदाहरणस्वरूप, जो भी व्यक्ति सिम्मियास को देखता है, उसे सिबिस की याद आती है। इसके अंतहीन उदाहरण हैं।

सिम्मियास ने कहा, हां, अवश्य हैं।

सुकरात ने कहा, तो क्या यह एक प्रकार का पुनःस्मरण नहीं है ? किन्हीं वस्तुओं को समय और अनवधान के कारण जव भुला दिया जाता है तो उन्हें देख कर यह अनुभूति विशेष रूप से तब होती है।

हां, अवश्य।

सुकरात बोलते गए, तो क्या यह संभव है कि घोड़े या वीणा की तस्वीर देखकर किसी व्यक्ति की याद आ जाए या सिबिस का चित्र देख कर सिम्मियास की याद आ जाए ?

अवश्य।

और यह भी संभव है कि सिम्मियास का चित्र देखकर स्वयं सिम्मियास की याद आ जाए।

निस्संदेह ऐसा हो सकता है।

सुकरात ने कहा, तो इन सारे मामलों में समतुल्य वस्तुओं को देखने से पुनःस्मरण हो आता है और ऐसा ही पुनःस्मरण असम तुल्य वस्तुओं को देखने से भी हो सकता है।

हां।

जब एक व्यक्ति को किसी वस्तु को देखने के बाद सदृश वस्तुओं की याद हो आती है, तो क्या इसमें यह भावना उत्पन्न नहीं हो सकती कि जिस वस्तु का वह पुनःस्मरण कर रहा है, वह किसी न किसी रूप में त्रुटिपूर्ण है ?

ऐसा हो सकता है।

सुकरात ने कहा, अब देखिए कि यह बात सही है कि या नहीं ? क्या हम समानता के अस्तित्व में विश्वास करते हैं या नहीं ? हां, समानता से मतलब लकड़ी या पत्थर के टुकड़ों की समानता नहीं है बल्कि उससे कुछ अधिक अमूर्त्त समानता से है। क्या हम यह कह सकते हैं कि एसी कोई वस्तु है या हम ऐसा नहीं कह सकते ?

सिम्मियास ने कहा, हां, कह सकते हैं और निश्चयपूर्वक कह सकते हैं।

और क्या हम जानते हैं कि यह अमूर्त्त समानता क्या है ?

अवश्य।

सुकरात ने कहा, हमें इसका ज्ञान कहां से मिला ? हमारे मन में यह धारणा लकड़ियों, पत्थरों और एसी चीजों के समान टुकड़ों को देखने से नहीं बनी है, जिसके संबंध में अभी मैं बातचीत कर रहा था ? क्या हमने उन्हीं में से अमृत्त समानता का विचार प्राप्त नहीं किया जो उनसे भिन्न है ? या आप सोचते हैं कि यह भिन्न नहीं है ? इस प्रश्न पर इस रूप में विचार कीजिए। क्या ऐसा नहीं है कि लकड़ी और पत्थर के समान टुकड़े हमें कभी तो समान लगते हैं और कभी नहीं लगते यद्यपि वे वास्तविक रूप से समान ही हैं ?

ऐसा होता है।

पर क्या निरवच्छिन्न समान वस्तु कभी आपको असमान लगी या अमूर्त्त समानता कभी असमानता लगी ?

सुकरात, कभी नहीं।

सुकरात ने कहा, तब समान वस्तु अमूर्त्त समानता की भांति बिल्कुल एकरूप नहीं है।

नहीं, सुकरात।

सुकरात ने कहा, फिर भी हम जानते हैं कि उन्हीं समान वस्तुओं से, जो अमूर्त्त समानता से भिन्न हैं, हमने अमूर्त्त समानता की धारणा और ज्ञान प्राप्त किया है ?

यह बिल्कुल सही है।

चाहे वह उनकी तरह हो या उनसे अलग तरह की हो ?

ठीक है।

सुकरात ने कहा, पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यदि एक वस्तु को देखने से दूसरी वस्तु का स्मरण आपको हो आता है, तो उस हालत में यह कहना पड़ेगा कि चाहे वे वस्तुएं एक ही हों या न हों, पुनःस्मरण की क्रिया कार्यशील हुई।

बिल्कुल ठीक है।

सुकरात ने कहा, तो क्या लकड़ी तथा इस प्रकार की समान वस्तुओं के टुकड़ों का, जिनके संबंध में हम बातचीत कर रहे हैं, हम पर इस प्रकार से असर होता है ?

क्या वे हमें उसी प्रकार से समान लगते हैं, जैसे अमूर्त्त समानता समान है ? क्या वे किसी प्रकार से अमूर्त्त समानता से कम पड़ते हैं या नहीं ?

वे अमूर्त्त समानता से कम पड़ते हैं।

तो हम इस संबंध में सहमत हैं। एक व्यक्ति किसी वस्तु को देखता है तो अपने मन में सोचता है—यह वस्तु, जिसे मैं देख रहा हूं, किसी दूसरी वस्तु का उद्रेक करती है। पर यह कम पड़ता है और वह उसकी तरह नहीं हो सकती, यह उससे निकृष्ट है। जो व्यक्ति इस तरह से सोचता है, क्या उसके संबंध में यह कहा जा सकता है कि उसने किसी पूर्व-काल में उस दूसरी वस्तु को जाना था जिसके संबंध में वह कहता है कि वह इसके सदृश है, साथ ही वह इससे घटिया है ?

जरूर।

तो क्या हम लोगों में भी समान वस्तुओं के संदर्भ में इसी प्रकार की अनुभूति पैदा नहीं होती और अमूर्त्त समानता के संबंध में भी हम ऐसा नहीं सोचते ?

हां, अवश्य।

तो इसका अर्थ यह हुआ कि समान वस्तुओं को देखने से पूर्व हमें समानता का ज्ञान था, और उन्हें समान होना चाहिए यह जानते हुए भी तत्संबंधी धारणा उससे कम पड़ती है।

ऐसा ही है।

और हम इस संबंध में भी सहमत हैं कि हमें समानता की धारणा दृष्टि, स्पर्श या और किसी इंद्रियगत अनुभूति से प्राप्त हुई होगी और यही सब इंद्रियानुभूतियों के लिए भी सही है।

सुकरात, ऐसा ही है।

सुकरात बोले, किसी भी हालत में इंद्रियों के द्वारा ही हमको यह ज्ञान होता है कि सारी इंद्रियज्ञानगम्य वस्तुएं निरवच्छिन्न समानता के सदृश होने की चेष्टा करती हैं और वे उससे निकृष्ट हैं। ऐसा है या नहीं ?

हां।

तो देखने, सुनने और दूसरी इंद्रियों का प्रयोग आरंभ करने के पहले ही हमें अमूर्त्त और वास्तविक समानता की प्रकृति का पता रहा होगा। अन्यथा न तो हम अमूर्त्त समानता के साथ समान इंद्रियगम्य वस्तु की तुलना कर सकते थे और न यह देख सकते थे कि प्रथम स्थिति हर हालत में शेषोक्त होने का प्रयत्न करती है, यद्यपि वह स्थिति उससे अवर होती है।

सुकरात, हम लोग अभी तक जो कुछ कहते रहे हैं, उस सबका आवश्यक परिणाम यही है।

क्या यह बात सही नहीं है कि पैदा होने के साथ ही हम आंख, कान तथा दूसरी इंद्रियों के अधिकारी बन गए थे ?

हां, अवश्य।

और हम लोगों ने इन इंद्रियों से पहले ही अमूर्त समानता का यह ज्ञान प्राप्त किया होगा।

हां।

तो इसके मायने यह हुए कि हम पैदा होने के पहले ही इस ज्ञान से समन्वित रहे होंगे ?

हां। यही मतलब निकलता है।

तो हम लोगों ने यदि जन्म के पहले ही यह ज्ञान प्राप्त किया और हम यह ज्ञान लेकर ही पैदा हुए, तो हम जन्म के मुहूर्त और उसके पहले भी न केवल समान, महत्तर और लघुतर की धारणाओं से परिचित थे बल्कि उसी तरह की सभी धारणाओं से परिचित थे। है यह बात कि नहीं ? हमारी वर्तमान तर्कपद्धति केवल समानता से ही संबंध नहीं रखती। इसका संबंध उसी हद तक निरवच्छिन्न उत्तम, निरवच्छिन्न सौंदर्य, निरवच्छिन्न पवित्रता से है। थोड़े में, मैं फिर से इस बात को कहूंगा कि हमारे प्रश्नोत्तर में वास्तविकता के नाम पर जो कुछ भी आया है, उस पर यही बात लागू है। अतः जन्म लेने के पहले ही हमें सभी तरह की वास्तविकताओं का ज्ञान प्राप्त हुआ होगा।

यही बात है।

और हम इसी ज्ञान के साथ सर्वदा पैदा होंगे और इसे हम सारी जिंदगी अवश्य कायम रखेंगे। हां, यदि हम हर बार इस प्राप्त ज्ञान को बाद में भूल न जाएं तो जानने के अर्थ हैं ज्ञान प्राप्त करना और उसे न खोना। क्या, सिम्मियास, हम विस्मृति से यह अर्थ नहीं लेते कि ज्ञान की हानि हुई ?

सिम्मियास ने कहा, हां, अवश्य, सुकरात।

सुकरात ने कहा, पर मैं समझता हूं कि यदि ऐसा हो कि जन्म से पहले हमें जो ज्ञान प्राप्त था, उसे जन्म के समय खो दें और इंद्रियगम्य पदार्थों पर ज्ञानेंद्रियों का प्रयोग करके हम उस ज्ञान को पुनः प्राप्त कर लें तो हम शिक्षा को पुनःप्राप्त ज्ञान कहेंगे, जो हमें पहले से प्राप्त था। इस हालत में इसे पुनःस्मरण का नाम दें, तो क्या वह बेजा होगा ?

नहीं।

बात यह है कि हमने किसी वस्तु का ज्ञान दृष्टिशक्ति, श्रवणशक्ति या और किसी अन्य इंद्रियानुभूति से प्राप्त करना संभव माना है और उससे हमने किसी और वस्तु की आकृति के संबंध में एक धारणा प्राप्त की है। यह दूसरी वस्तु उसके सदृश है या असदृश, यह बात भुला दी गई थी, पर इसके साथ उस प्रथम वस्तु का संपर्क बना रहा था। इसलिए मैं यह कहता हूं कि दो में एक बात सच्ची होगी—या तो हम सब ज्ञान के साथ पैदा होते हैं और सारी जिंदगी इसे कायम रखते हैं या जिनके संबंध

में हम कहते हैं कि जन्म के बाद अमुक शिक्षा प्राप्त कर रहा है, वह सिर्फ इतना ही कर रहा है कि वह पुनःस्मरण कर रहा है और इस प्रकार से हमारे ज्ञान का अर्थ पुनःस्मरण मात्र हुआ।

सुकरात, हां यह बात निश्चित रूप से सत्य है।

अब, सिम्मियास, आप यह बताएं कि आप इनमें से किस को तरजीह देते हैं ? हम ज्ञान के साथ पैदा होते हैं या हम जन्म के पहले जो ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं, उसी का पुनःस्मरण करते हैं ?

सुकरात, मैं इस समय नहीं बता सकूंगा।

पर इस संबंध में आपका कोई मत तो होगा ? क्या एक जानकार आदमी के लिए, जिस वस्तु को वह जानता है, उसका ब्योरा देना संभव है ?

सुकरात, अवश्य ही जानकार आदमी ब्योरा दे सकता है।

और क्या आप यह सोचते हैं कि हम जिन विचारों के संबंध में बातचीत कर रहे हैं, उनके संबंध में भी प्रत्येक व्यक्ति ब्योरा दे सकता है।

सिम्मियास ने कहा, बड़ा अच्छा होता यदि मैं यह सकता कि ऐसा संभव है। पर मुझे डर है कि कल इस समय तक कोई ऐसा जीवित आदमी नहीं रह जाएगा, जो इसका समुचित प्रकार से प्रतिपादन कर सके।

सुकरात ने कहा, सिम्मियास, क्या सभी आदमी इन बातों को जानते हैं ?

बिल्कुल नहीं।

तो जिस बात को लोग एक बार सीख चुके हैं उसी का पुनःस्मरण करते हैं ?

अवश्य।

और हमारी आत्माओं को यह ज्ञान कब प्राप्त हुआ ? मनुष्य रूप में जन्म लेने के बाद हमें यह ज्ञान प्राप्त हुआ होगा।

नहीं, बिल्कुल नहीं।

तो यह इससे पहले था।

हां।

तो, सिम्मियास, हमारी आत्माएं पहले हमारे शरीरों से अलग मौजूद थीं और मनुष्य-जन्म प्राप्त करने के पहले ही उनमें बुद्धि मौजूद थी।[1]

---

1. देखिए, वर्ड्सवर्थ की प्रसिद्ध कविता 'ओड आन इंटिमेशंस ऑफ इम्मार्टेलिटी।' यह द्रष्टव्य है कि एक प्रकार से वर्ड्सवर्थ अफलातून के सिद्धांत को उलट देते हैं। वर्ड्सवर्थ कहते हैं, "स्वर्ग हमारे बचपन में हम में रहता है," और ज्यों-ज्यों हम बड़े होते जाते हैं, त्यों-त्यों हम इसे भूलते जाते हैं। पर अफलातून का मत यह है कि जन्म लेने पर, पूर्व जन्म में जो ज्ञान प्राप्त था, वह नष्ट हो जाता है और हम ज्यों-ज्यों बड़े होते जाते हैं, त्यों-त्यों इस ज्ञान को फिर से प्राप्त करते हैं। (इस अंश पर एक नोट देते हुए आर्चर हिंड ने भी ऐसा ही मंतव्य दिया है।)

सुकरात, यदि हम जन्म के मुहूर्त में ज्ञान प्राप्त करें, तभी यह अनुमान सत्य माना जा सकता है। वह समय अब भी रहता है।

तो मेरे मित्र, हम उस ज्ञान को फिर किस समय खोते हैं ? अभी हम इस बात पर सहमत थे कि हम इसे लेकर पैदा नहीं होते। तो क्या सत्य यह है कि हम ज्यों ही प्राप्त करते हैं, त्यों ही इसे खो देते हैं या किसी और समय इसे खोते हैं ?

सुकरात, मैं कोई समय नहीं बता सकता। मैं ताड़ नहीं पाया कि मैं बुद्धिहीन ढंग से बात कर रहा था।

सुकरात ने कहा, तो सिम्मियास, क्या यह सत्य नहीं है ? अगर सौंदर्य, उत्तमता और अन्य विचारों का वाकई कोई अस्तित्व है, और यदि हम इंद्रियानुभूति की हर वस्तु को पहले से प्राप्त और अब भी अपने लगनेवाले विचारों की कसौटी पर कसते हैं, तो हमारी आत्माएं हमारे जन्म से पहले ही वर्तमान रही होंगी ? यदि ऐसा नहीं है, तो हमारी युक्ति गलत पड़ जाएगी। ऐसा ही है न ? यदि इन विचारों का अस्तित्व है तो हमारे जन्म से पूर्व हमारी आत्माओं का भी अवश्य अस्तित्व रहा होगा और अगर ऐसा नहीं है तो हमारी आत्माएं भी नहीं रही होंगी।

सिम्मियास ने कहा, सुकरात, आपने बहुत सुंदर तरीके से यह बात कही है। मैं समझता हूं कि तर्कतः एक का होना उसी प्रकार सिद्ध है, जैसाकि दूसरे का। हमारे जन्म से पहले भी हमारी आत्माओं का अस्तित्व था, यह युक्ति अकाट्य प्रमाण की स्थिति में पहुंच चुकी है। मुझे यह स्पष्ट भासित हो गया है कि सौंदर्य, उत्तमता और दूसरे विचार, जिनके संबंध में अभी आप बात कर रहे थे, वाकई वास्तविक अस्तित्व रखते हैं। आपका प्रमाण मेरे लिए यथेष्ट है।

सुकरात ने कहा, सिबिस क्या सोच रहे हैं ? मुझे उनको भी समझाना है।

सिम्मियास ने कहा, मैं समझता हूं कि वह संतुष्ट हैं। जहां तक तर्कों का संबंध है, वह बहुत अधिक संदेहवादी लोगों में से हैं। पर मैं समझता हूं कि हमारे जन्म से पहले ही हमारी आत्माओं के मौजूद रहने के संबंध में उन्हें किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं होगा ?

वह बात जारी रखते हुए बोले, सुकरात, मैं नहीं समझता कि आपने यह प्रमाणित कर दिया है कि हमारे मरने के बाद भी आत्माएं वर्तमान रहेंगी। सिबिस ने आमतौर से प्रचलित डर के संबंध में कहा है कि आत्मा शायद मृत्यु के बाद वायु में बिखर जाए और मृत्यु से शायद अस्तित्व का अंत हो। यह डर अब भी रोड़े की तरह बीच में खड़ा है। मान लिया कि आत्मा किन्हीं और तत्वों से पैदा और निर्मित होती है और मानव शरीर में प्रवेश से पहले वह मौजूद रहती है, तो भी यह बात समझ में नहीं आती कि शरीर में प्रविष्ट होने के बाद जब उससे मुक्त होगी तो वह नष्ट क्यों नहीं होगी ?

सिबिस ने कहा, सिम्मियास, आप सही कह रहे हैं। मैं समझता हूं कि सिर्फ

अर्ध-प्रमाण दिया गया है। मात्र यह सिद्ध किया गया है कि हमारे जन्म से पहले आत्माएं वर्तमान थीं, पर इसका भी प्रमाण चाहिए कि हमारे मरने के बाद आत्माएं वर्तमान रहेंगी—उसी प्रकार से जैसेकि वे हमारे जन्म से पहले मौजूद थीं। तभी प्रमाण पूरा समझा जाएगा।

सुकरात ने कहा, सिम्मियास और सिबिस, यह बताया जा चुका है। आप हमारे पहले के उपसंहार के साथ इस युक्ति को जोड़ दें तो उससे यह तथ्य निकलता है कि सभी जीवन मृत्यु से उत्पन्न होते हैं। यदि आत्मा पहले ही से मौजूद रहती है और वह जीवन धारण करके जन्म लेती है, तो वह मृत्यु से और मृत्यु की अवस्था से ही पैदा हो सकती है। तो क्या यह आवश्यक निष्कर्ष नहीं निकलता कि वह मृत्यु के बाद भी मौजूद रहेगी क्योंकि उसे फिर जन्म लेना है ? इस प्रकार जो बात आप उठा रहे हैं, उस पर पहले ही प्रमाण दिया जा चुका है।

फिर भी मैं समझता हूं कि आप तथा सिम्मियास इस प्रश्न पर और विचार करना पंसद करेंगे। बच्चों की तरह आपको यह भय है कि वायु आत्मा को उड़ा ले जाएगी और जिस समय वह शरीर छोड़कर जाएगी, वह उसे बिखरा देगी। यदि कोई व्यक्ति आंधी में मरे तब तो आत्मा के उड़ जाने का बचकाना भय और भी प्रबल होगा।

इस पर सिबिस हंसे और बोले, सुकरात, आप प्रयत्नपूर्वक हमें समझाइये—यह मान कर कि हम सचमुच डरे हुए हैं, यह न समझिए कि हम स्वयं से डरे हुए हैं। शायद हम लोगों के अंदर कोई बच्चा है जिसे यह डर है। हमें प्रयत्न करना चाहिए कि हम उसे समझाएं कि वह हौवे की तरह मृत्यु से न डरे।

सुकरात ने कहा, प्रतिदिन हौवे पर अपना सम्मोहन चलाना पड़ेगा, जब तक कि वह भाग न जाए।

उन्होंने पूछा, सुकरात, आप तो जा रहे हैं, फिर ऐसा अच्छा सम्मोहक हमें कहां मिलेगा ?

सुकरात ने कहा, हेल्लास (ग्रीस) एक बड़ा देश है और इसमें अच्छे आदमी निस्संदेह मिल सकते हैं। फिर बर्बरों की भी कई जातियां हैं। आपको चाहिए कि उन सभी में ऐसे सम्मोहक की खोज करें और इस कार्य में आप धन या परिश्रम के व्यय से न चूकें, क्योंकि ऐसा कोई विषय नहीं है जिस पर व्यय करके आप इससे अधिक लाभ उठा सकते हैं। आपको चाहिए कि आप उसे अपने लोगों में भी खोजें क्योंकि आप लोगों से ज्यादा अच्छे सम्मोहक शायद ही मिलें।

सिबिस ने कहा, हम खोज कर लेंगे। पर यदि आपकी आज्ञा हो तो हम फिर उसी विषय पर लौट आएं, जहां हमने उसे छोड़ा था।

मैं भला क्यों नहीं चाहूंगा, अवश्य ही चाहूंगा।

अच्छी बात है।

सुकरात ने कहा, क्या हम स्वयं से यह प्रश्न न पूछें कि वह किस प्रकार की

वस्तु है जिसे बिखराहट का भय है और वह किस प्रकार की वस्तु है जिसके संबंध में हम बिखराहट का भय रखते हैं ? इसके बाद हमें यह देखना चाहिए कि आत्मा इन प्रकारों में आती है या नहीं ? उससे जो नतीजा निकले उसके अनुसार हम आस्था रखें या न रखें ?

सही है।

न तो यह यौगिक और न ही मिश्र पदार्थ है, जो प्राकृतिक रूप से उसी प्रकार बिखर जाने योग्य है जिस प्रकार से वह मिल-जुलकर मौजूद था। क्या यह बात सही नहीं है कि अ-यौगिक पदार्थ ही बिखराहट से बरी है, बशर्ते कि बिखराहट से बरी कोई चीज हो तो ?

सिबिस ने कहा, मैं ऐसा ही सोचता हूं।

जो वस्तु हमेशा एक ही स्थिति में अपरिवर्तित रहती है, उसी के संबंध में हम यह कह सकते हैं कि वही बिखराहट से सबसे ज्यादा बरी रहेगी, और जो परिवर्तनीय है और बराबर बदल रही है, वह बिखर जाएगी। क्या यह बात सही नहीं है ?

हां, मैं ऐसा ही सोचता हूं।

सुकरात ने कहा, अब हम जिस विषय पर पहले आलोचना कर रहे थे, उसी पर लौटें। जिस सत्ता को हम अपनी आलोचना में निरवच्छिन्न सत्ता बता रहे थे, क्या वह हमेशा उसी स्थिति में रहती है या वह परिवर्तित होती रहती है ? क्या निरवच्छिन्न समानता, निरवच्छिन्न सौंदर्य और हर प्रकर की निरवच्छिन्न सत्ता एकरूप होने के कारण आवश्यक रूप से वही और अपरिवर्तित रहती है, और किसी भी हालत में उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता ?

सिबिस ने कहा, सुकरात, वह एक-सी और अपरिवर्तित रहेगी।

अब यह देखा जाए कि जो बहुत-सी सुंदर वस्तुएं हैं जैसे मनुष्य, घोड़े, कपड़े और इसी प्रकार की अन्य वस्तुएं; जिनमें निरवच्छिन्न विचारों के नाम आ जाते हैं, जैसे समानता, सौंदर्य या दूसरे ऐसे विचार, क्या ये अपरिवर्तित बनी रहती हैं या बिल्कुल इसके विरुद्ध बात होती है ? थोड़े में, क्या ये अपने में या अपने संपर्कों में वही रहती हैं या नहीं ?

सिबिस ने कहा, ये वस्तुएं कभी भी वैसी नहीं रहतीं।

आप उन्हें स्पर्श कर सकते हैं, देख सकते हैं और दूसरी इंद्रियों से उनके संबंध में अनुभूति प्राप्त कर सकते हैं, जबकि आप अपरिवर्तनीय सत्ता को केवल बुद्धि या युक्ति से ही पहचान सकते हैं। अपरिवर्तनीय पदार्थ अदृश्य हैं और दिखाई नहीं पड़ते हैं। यह बात सही है कि नहीं ?

यह बिल्कुल सत्य है।

सुकरात ने कहा, यदि आप चाहें तो हम यह मान लें कि दो प्रकार के अस्तित्व हैं—एक दृश्य और दूसरा अदृश्य।

हां।

जो अदृश्य है, वह अपरिवर्तनीय है; जो दृश्य है वह परिवर्तनीय है।

हां।

क्या हम मनुष्यगण शरीर और आत्मा से नहीं बने हैं ?

इसमें उनके अलावा कोई और तत्व नहीं होता है।

तो हम अस्तित्वों के इन प्रकारों में से किसके संबंध में यह कहेंगे कि शरीर उसके बहुत करीब और उससे बहुत मिला-जुला है ?

शरीर दृश्य के साथ मेल खाता है, यह तो बिल्कुल स्पष्ट है।

और आत्मा ? क्या आत्मा दृश्य है या अदृश्य ?

सुकरात, आत्मा मनुष्य के लिए अदृश्य है।

क्या हम दृश्य और अदृश्य का यह मतलब नहीं ले रहे थे कि मनुष्य के लिए जो दृश्य है, वही दृश्य है; जो मनुष्य के लिए अदृश्य है, वह अदृश्य है ?

हां, मेरा यही मतलब है।

तो हम लोग आत्मा के संबंध में क्या कहते हैं ? यह दृश्य है या अदृश्य ?

यह दृश्य नहीं है।

तो क्या यह अदृश्य है ?

हां।

तो इसका मतलब यह हुआ कि आत्मा शरीर की तुलना में अदृश्य से अधिक मिलती है, और शरीर दृश्य की कोटि में है।

सुकरात, बिल्कुल सही बात है।

क्या हमने यह नहीं कहा कि जब आत्मा शरीर का उपयोग केवल खोज में करती है और दृष्टि, श्रवण या किसी और इंद्रियशक्ति का प्रयोग करती है—शरीर के द्वारा खोज का अर्थ इंद्रियानुभूतियों के द्वारा खोज है—तो आत्मा शरीर के द्वारा ऐसी वस्तुओं की ओर घसीटी जाती है, जो कभी उसी अवस्था में नहीं रहती और आत्मा अंधों की तरह भटकती है, गड़बड़ा जाती है और उस पर तुरंत शराबी की तरह धुंध छा जाती है। और वह अपरिवर्तित चीजों के संबंध में ठीक तरह से विचार नहीं कर पाती।

अवश्य।

पर जब वह स्वयं किसी प्रश्न पर खोज करती है, तब वह पवित्र, चिरंतन, अनश्वर और अपरिवर्तनीय की तरफ जाती है, जिससे उसकी समता है; और वह बराबर उसके साथ निवास करती है। ज्योंही वह अपने आप में आ जाती है, त्योंही वह अपने भटकावों से छुटकारा पाकर उसी के साथ बराबर निवास करती है क्योंकि अब उसका साबका अपरिवर्तनीय के साथ पड़ा है। क्या आत्मा की इसी स्थिति को ज्ञान नहीं कहते ?

सचमुच, सुकरात, आप उत्तम और सत्य बात कहते हैं।

हमारे पहले के और वर्तमान तर्कों के अनुसार आत्मा किस प्रकार के अस्तित्व में अधिक संभव तरीके से रहती है और किस प्रकार का अस्तित्व उसके लिए अधिक सदृश्य और नजदीक है ?

उन्होंने उत्तर दिया, सुकरात, मैं यह सोचता हूं कि इस विचार के बाद, सबसे जड़मति व्यक्ति भी यह मानने के लिए विवश होगा कि आत्मा परिवर्तनीय की श्रेणी में नहीं है।

और शरीर की क्या स्थिति है ?

शरीर परिवर्तनीय की भांति है।

इस मामले पर एक अन्य तरीके से विचार कीजिए। जब आत्मा और शरीर संयुक्त होते हैं, तो प्रकृति एक को दास और शासित बना देती है और दूसरे को मालिक और शासक बना देती है। ऐसी हालत में यह बताइए कि उनमें से कौन दिव्य के करीब है और कौन नश्वर के नजदीक है ? क्या आप नहीं सोचते कि दिव्य स्वाभाविक रूप से शासन करता है, उसके हाथ में बागडोर होती है और नश्वर तत्व स्वाभाविक रूप से उसका शासित और दास होता है ?

ठीक है।

तो यह बताइए कि आत्मा कैसी है ?

सुकरात, यह तो बिल्कुल स्पष्ट है। आत्मा दिव्य की तरह है और शरीर नश्वर है।

अब, सिबिस, हमें यह बताइए कि हमारी चर्चा के फलस्वरूप यह प्रमाणित हो गया न कि आत्मा में दिव्य, अमर, बुद्धिमय, एकरूप, अविच्छेद्य और अपरिवर्तनीय तत्व हैं और शरीर में मानवीय, नश्वर, जड़, बहुरूप, विच्छेद्य और परिवर्तनीय तत्व हैं। सिबिस, क्या कोई ऐसा तर्क है जिससे यह दिखाया जा सकता हो कि स्थिति ऐसी नहीं है ?

कोई तर्क नहीं है।

यदि यही बात है तो क्या शरीर की प्रकृति यह नहीं है कि वह जल्दी से बिखर जाए और आत्मा संपूर्ण रूप से या करीब-करीब अक्षय हो ?[1]

अवश्य।

उन्होंने कहा, आप देखते ही हैं कि जब आदमी मर जाता है तो उसका दृश्यमान भाग यानी उसका शरीर, जो दृश्यमान जगत में मौजूद रहता है और जिसे

1. तुलना कीजिए, बिशप बटलर की पुस्तक 'एनॉलोजी' भाग-1, अध्याय-1, जहां इसी प्रकार का एक तर्क दिया गया है कि आत्मा अविभाज्य होने के कारण अमर है। आत्मा की दिव्य प्रकृति पर आधारित यह तर्क आधुनिक तर्क भी है। उदाहरणस्वरूप, देखिए लार्ड टेनिसन की 'इन मेमोरियम', 54-56।

हम लाश कहते हैं, नश्वर होता है और वह सड़ांध का शिकार हो जाता है। फिर भी वह फौरन न तो नष्ट ही होता है और न ही फौरन सड़ता है। वह बहुत समय तक उसी रूप में—यदि मनुष्य स्थिति में और पूर्ण शक्ति की स्थिति में मरा है—दीर्घकाल तक सड़ांध से बचा रहता है। पर यदि शरीर को दवा आदि से सुरक्षित कर दिया जाए, जैसे मिस्र में ममियों को करते थे, तब वह बहुत समय तक जैसा का तैसा बना रहता है। और जब यह ह्रास को प्राप्त होता भी है तो उसके कुछ अंश जैसे हड्डियां और तंतु लगभग अमर होते हैं। क्या यह बात सही नहीं है ?

हां है।

क्या हम यह विश्वास करें कि अदृश्य आत्मा यहां से गौरवपूर्ण, शुद्ध और अदृश्य किसी स्थान में जाती है, जिसे सही तौर पर अदृश्य जगत कहा जाता है और वहां जाकर वह उत्तम और ज्ञानी ईश्वर के साथ निवास करती है ? यदि ईश्वर की ऐसी इच्छा है तो मेरी आत्मा भी वहीं पर अभी थोड़े समय में जाएगी। क्या हम यह विश्वास करें कि आत्मा, जिसकी प्रकृति गौरवशाली, शुद्ध और अदृश्य है, वह हवाओं से उड़ जाती है और वह शरीर से अलग होते ही नष्ट हो जाती है, जैसाकि लोग कहते हैं। प्रिय सिबिस और सिम्मियास, ऐसा नहीं होता। मैं आपको बताऊंगा कि जब शुद्ध आत्मा प्रयाण करती है तो उसे क्या होता है ? शुद्ध आत्मा से मतलब ऐसी आत्मा से है जो जीवन में शरीर के उन सारे संपर्कों से बचती रहती है, जिनसे वह बच सकती है और उसी प्रकार वह मरने के बाद शरीर की कोई अशुद्धि अपने साथ नहीं ले जाती बल्कि वह उससे भी बचती रहती है और अपने सत्य-अध्ययन से वह अपने चारों तरफ अपने को ही समेटती है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह ज्ञान से सही रूप से प्रेम करती थी और उसने मृत्यु का सच्चा अभ्यास किया। क्या यही मृत्यु का अभ्यास नहीं ?

हां, अवश्य।

तो क्या उस स्थिति में आत्मा उस अदृश्य जगत में नहीं जाती, जो उसकी तरह दिव्य, अमर और ज्ञानमय नहीं—जहां वह भ्रांतियों, मूर्खताओं, भयों, दुर्दांत मनोवेगों तथा मनुष्य के हिस्से में पड़नेवाली दूसरी बुराइयों से मुक्त हो जाती है ? और वह उसी तरह सुखी होकर देवताओं के साथ रहती है, जैसाकि मंत्र-दीक्षित लोग रहते हैं। लोगों का यही कहना है। सिबिस, क्या हम इसे मानेंगे ?

सिबिस ने कहा, हां अवश्य।

पर यदि आत्मा शरीर छोड़ते समय कलुषित और अपवित्र रही, वह शरीर के साथ बराबर बंधी रही, उसकी गुलाम रही, उससे प्रेम करती रही, उसकी इच्छाओं और सुखों से मोहग्रस्त रही—इस हद तक मोहग्रस्त रही कि सिवा शारीरिक सुख और केवल स्पर्श, दृष्टि, खाने-पीने की धारणाओं के वह कोई और सत्य-धारणा नहीं बना पाई, मनुष्य की काम-वासनाओं में बंधी रही, अदृश्य और अज्ञात लोक से घबराती और

घृणा करती रही, दर्शनशास्त्र से कतराती रही, तो क्या आप समझते हैं कि ऐसी आत्मा अपनी यात्रा के समय अकलुषित रह सकती है ?

नहीं, अवश्य ही नहीं।

मतलब यह हुआ कि उस हालत में आत्मा पर शरीर व्याप्त होगा क्योंकि शरीर के साथ निरंतर संपर्क, सहभोग और उसकी देखभाल के कारण आत्मा की प्रकृति ही ऐसी बन जाती है।

हां।

मेरे प्रिय मित्र, आत्मा पर व्याप्त शारीरिक तत्व बोझिल, भारी, ऐहिक और दृश्य होंगे और इसी के कारण आत्मा को फिर से खिंच कर दृश्य जगत में आना पड़ेगा। क्योंकि वह परलोक के अदृश्य जगत से डरती है और तब वह, जैसाकि कहा जाता है, कब्रों और समाधियों का चक्कर काटती रहती है—इनके इर्द-गिर्द आत्माओं के छायाग्रस्त रूप देखे गए हैं। ये उन आत्माओं की छायाएं हैं, जो शरीर से मुक्ति के समय कलुषित थीं और अभी तक दृश्य जगत के साथ चिपकी हुई हैं। यही कारण है कि वे इस रूप में देखी जाती हैं।[1]

बहुत संभव है, सुकरात, ऐसा ही हो।

सिबिस, यह बहुत संभव है और ये आत्माएं अच्छे लोगों की आत्माएं नहीं बल्कि बुरे लोगों की आत्माएं हैं, जो ऐसे स्थानों में दुष्ट जीवन की सजा के तौर पर भटकने के लिए बाध्य होती हैं और उनका भटकना शारीरिक मोह के कारण तब तक चलता रहता है, जब तक कि आत्माएं फिर से किसी शरीर में कैद नहीं हो जातीं।

सुकरात बोलते रहे, और वे पूर्व-जीवन के स्वभाव के अनुकूल सम-स्वभाव जानवरों के शरीरों में कैद हो जाती हैं।

सुकरात, इससे आपका क्या मतलब है ?

मेरा मतलब यह है कि जिन मनुष्यों ने बेलगाम होकर पेटूपन किया, मनचलेपन से काम लिया, शराबी रहे, उनकी आत्माएं शायद गदहों और ऐसे पशुओं के शरीरों में जा पहुंचती हैं। क्या आप ऐसा नहीं मानते ?

निश्चित रूप से यह संभव है।

और जिन लोगों ने अन्याय, अत्याचार, लूटमार का जीवन बिताया है, उनकी आत्माएं भेड़िया, बाज और भालुओं के शरीरों में प्रवेश कर जाती हैं। उनकी आत्माएं भला और कहां जा सकती हैं ?

सिबिस ने कहा, निस्संदेह वे ऐसे ही शरीरों में प्रवेश करती हैं।

थोड़े में, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि आत्माएं सम-स्वभाव प्राणियों के शरीर में जाती हैं।

---

1. अध्यापक जोवेट इसकी तुलना मिल्टन के कोमस, 163 से करते हैं।

अवश्य ऐसा है।

सुकरात ने कहा, उनमें से सबसे सुखी वे हैं, जिन्होंने सामाजिक और जनप्रिय कार्य किए हैं यानी संयम और न्याय से काम लिया है और ऐसा वे अपने अभ्यास और आदत से करते रहे हैं बिना किसी दर्शनशास्त्र या युक्ति के।

उन्हें आप सबसे अधिक सुखी क्यों मान रहे हैं ?

क्योंकि यह संभव है कि वे अपनी ही तरह मधुर और सामाजिक प्रकृति वाले प्राणियों में लौट आते हैं जैसे, मधुमक्खी, तितली या चींटियों की योनि में लौट आते हैं और ऐसा भी हो सकता है कि वे फिर से मनुष्यों के शरीर में लौट आएं और योग्य नागरिक बनें।

बहुत संभव है।

पर दार्शनिकों या जीव-प्रेमी के अतिरिक्त लोग, जो जहां से जाते समय बिल्कुल शुद्ध होते हैं, वे देवताओं की नस्ल में नहीं जा सकते हैं। इसीलिए प्रिय सिम्मियास और सिबिस, सच्चे दार्शनिक संयमी होते हैं, शरीर के सुख से अपने को बचाते हैं और शारीरिक सुखों के हाथों आत्म-समर्पण नहीं करते। भीड़ के लोग तथा धन के प्रेमी गरीबी और अपना धन लुटाने से डरते हैं, साथ ही शक्ति तथा सम्मान के प्रेमियों की तरह दुष्ट लोगों के हाथों असम्मानित होने या अपमानिन होने से भी नहीं डरते। वे इनसे परिचालित होने के कारण संयमी नहीं होते।

सिबिस ने कहा, सुकरात, यदि ऐसा होता तो वह अशोभन होता।

सुकरात ने कहा, अवश्य, जैसा आप कह रहे हैं, वही बात है। जो लोग अपनी आत्माओं की परवाह करते हैं, वे केवल अपने शरीर को बनाने, संवारने और उसी के पीछे नहीं चलते, वे ऐसे लोगों से विदाई ले लेते हैं, वे ऐसे लोग जिस मार्ग पर चलते हैं, वे उस मार्ग पर नहीं चलते, क्योंकि ऐसे लोग तो जानते ही नहीं कि वे कहां जा रहे हैं। वे उसी दिशा में चलते हैं, जिस दिशा का दिग्दर्शन दर्शनशास्त्र में है। इसके उद्धारप्रकरण या शुद्धिप्रकरण का प्रतिरोध नहीं करना चाहिए।

यह कैसी बात हुई, सुकरात ?

सुकरात ने कहा, मैं आपको बताऊंगा। ज्ञान के प्रेमी यह जानते है कि जब दर्शन आत्मा पर प्रभाव डालता है, उस समय आत्मा शरीर से बुरी तरह बंधी और चिपकी होती है। वह यह सोच नहीं पाती कि क्या तत्त्व स्वयं वर्तमान है। हां, वह अपने जेलखाने रूपी शरीर के सींखचों के अंदर से थोड़ा-बहुत जान जाती है, बाकी वह बिल्कुल अज्ञान में भटकती रहती है। दर्शन इस बात को स्पष्ट कर देता है कि इस शारीरिक कैद में सबसे भयंकर तत्व वासना है और आत्मा जब इसकी कैद में हो जाती है, तो स्वयं अपनी कैद की प्रोत्साहक बन जाती है। मैं फिर से कहता हूं कि ज्ञान के प्रेमी यह जानते हैं कि दर्शनशास्त्र आत्मा को उस हालत में नरम ढंग से प्रोत्साहित करता है कि वह अपनी कैद से मुक्त होने की चेष्टा करे। वह उसे दिखाता

है कि आंख, कान और दूसरी इंद्रियों से प्राप्त अनुभूतियां भ्रांतिपूर्ण हैं। यह सलाह देता है कि आत्मा इंद्रियानुभूतियों से अलग-थलग खड़ी हो जाए और उनका इस्तेमाल तभी करे जब उनका इस्तेमाल बिल्कुल आवश्यक हो। दर्शनशास्त्र आत्मा को यह उपदेश देता है कि वह केवल अपने ऊपर विश्वास करे और उस वास्तविक सत्ता का अनुसरण करे जिसे वह स्वयं जान पाता है। दर्शनशास्त्र आत्मा को यह विश्वास दिलाता है कि परिवर्तनहीन वस्तुओं में, जिन्हें वह ज्ञानेंद्रियों से देखते हैं, कोई सत्य नहीं है क्योंकि ऐसी वस्तुएं दृश्यमान और इंद्रियगम्य होती हैं, जबकि आत्मा का अनुभव युक्ति से हो सकता है, वह सूक्ष्म है। सच्चे दार्शनिक की आत्मा यह सोचती है कि इस कैद से छुटकारे के विरुद्ध प्रतिरोध करना गलत होगा। इसलिए जहां तक बन पड़ता है, वह सुख, वासना, कष्ट और भय से बचती है। बात यह है कि वह हिसाब लगाकर देखती है कि जब मनुष्य, सुख, भय, कष्ट और वासना का शिकार होता है, तो उनसे वे आशंकित बुराइयां प्राप्त होती हैं जैसे, बीमारी और वासनाओं को तृप्त करने के बाद का कष्ट आदि। इसके अलावा वह सबसे बड़ी और अंतिम बुराई की शिकार होती है, और उसे कानोंकान इसकी खबर नहीं होती।

सिबिस ने पूछा, सुकरात, आपका क्या मतलब है ?

मेरा मतलब यह है कि जब किसी मनुष्य की आत्मा उग्र सुख या कष्ट का अनुभव करती है, तो यह सोचने के लिए भी बाध्य होती है कि इन अनुभूतियों का आधार चाहे वह जो कुछ भी हो, सुख या दुख बहुत सुथरा और सत्य है। वस्तुस्थिति यह है कि यह कतई सत्य नहीं है। ऐसी वस्तुएं मुख्यतः दृश्यमान होती हैं। है यह बात कि नहीं ?

हां।

फिर क्या यह बात सही नहीं है कि ऐसी परिस्थिति में आत्मा शरीर की संपूर्ण रूप से गुलाम होती है।

कैसे ?

क्योंकि हर सुख और दुख में एक कील-सी है और उसी कील के कारण आत्मा शरीर से बंध जाती है। आत्मा को एक शारीरिक प्रकृति प्राप्त होती है, जिससे वह यह सोचने लगती है कि शरीर जो कुछ भी कह रहा है, वही सत्य है। इसलिए वह उन्हीं कल्पनाओं और सुखों में भटकने लगती है, जिनमें शरीर भटकता है और मैं समझता हूं कि वह उसी प्रकार के तौर-तरीके और जीवन-क्रम अपना लेती है। वह शरीर से जब भी अलग होती है तो हमेशा कलुषित स्थिति में आ जाती है। अतः वह परलोक में शुद्ध होकर नहीं जा सकती। यही कारण है कि वह जल्दी से किसी दूसरे शरीर में आ जाती है, उसमें जड़ पकड़ती है, जैसे बीज बोए जाने पर जड़ फेंकता है, इसी प्रकार से वह दिव्य, शुद्ध और एकरूप सत्ता से संपर्क खो डालती है।

सिबिस ने कहा, यह बिल्कुल सत्य है, सुकरात।

सिबिस, इन्हीं कारणों से ज्ञान के वास्तविक प्रेमी संयमी और साहसी होते हैं और ऐसा वे ऐहिक कारणों से नहीं होते। आपका इस संबंध में क्या विचार है ?

मेरा विचार वही है, जो आपका है।

ठीक है।[1] दार्शनिक की आत्मा यह समझती है कि दर्शनशास्त्र का कार्य मुक्ति दिलाना है। दर्शन से प्रभावित होकर आत्मा यह समझती है कि एक बार फिर उसे ऐसे पचड़ों में नहीं पड़ना जिससे वह सुख और दुख की गुलामी में पड़ जाए। वह पेनीलोप की तरह ऐसा न करे कि किए हुए काम को नष्ट कर दे यानी बजाए बुनने के वह बुनावट ही खोल डाले। वह दर्शन से अपने लिए शांति प्राप्त करती है, युक्ति का अनुसरण करती है; बराबर सत्य, दिव्य और वास्तविक के चिंतन में स्थित रहती है और उन्हीं से आगे बढ़ती है। वह इसी के अनुसार जीवन में चलेगी, और जब मृत्यु हो तो वह समझेगी कि वह अपने योग्य लोक में जाएगी और मानवीय बुराइयों से मुक्त होगी। सिम्मियास और सिबिस, यदि मनुष्य की आत्मा इस तरह के विचारों में पली और प्रशिक्षित हुई है, तो वह इस बात से नहीं डरेगी कि शरीर से छुटकारा पाते समय किसी तरह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी या हवा में उड़ जाएगी या लुप्त हो जाएगी या बिल्कुल नापैद होगी।

इन बातों पर दीर्घकाल तक चुप्पी रही और सुकरात अपने तर्कों में डूबे रहे और यही हालत हम लोगों में से अधिकांश की रही। सिबिस और सिम्मियास कुछ देर तक बातचीत करते रहे। जब सुकरात ने उनको देखा तो उन्होंने कहा, क्या ? क्या आप समझते हैं कि हमने जो युक्ति दी है, उसमें कुछ कमी है। यदि इस पर पूर्ण रूप से विचार किया जाए तो इसमें अभी संदेह और आक्रमण की बहुत-सी बातें निकल सकती हैं, हां, यदि आप दूसरे किसी प्रश्न पर तर्क कर रहे हों, तो मुझे कुछ नहीं कहना है। पर यदि आपको इस विषय से संबंधित कोई कठिनाई हो, तो आप यह बताने में न हिचकिचाएं कि वह कठिनाई क्या है और यदि आपका यह मत हो कि तर्क को अच्छी तरह पेश किया जाए, तब आप अपने विचारों को स्वयं बताइए और मुझे अपने साथ ले चलिए, बशर्ते कि आप यह समझें कि आप मेरी संगति में सत्य की खोज में अधिक सफल होंगे।

सिम्मियास ने उत्तर दिया, अच्छी बात है, सुकरात, मैं आपको सच्ची बात बताना चाहूंगा। हम दोनों को एक कठिनाई है और हम एक-दूसरे पर यह जोर डालते रहे हैं कि हम इस संबंध में आपसे पूछताछ करें। हम यह जानने के लिए व्यग्र हैं कि आपको क्या कहना है। पर हम आपको कष्ट देने के अनिच्छुक हैं क्योंकि हम इससे डरते रहे कि इस समय प्रश्नों का उत्तर देना आपके लिए अप्रिय होगा।

इस उत्तर पर सुकरात हंस पड़े और बोले, सिम्मियास, अजीब बात है। मैं दूसरों को भला यह कैसे समझाऊंगा कि मैं अपने वर्तमान भाग्य को दुर्भाग्य नहीं मानता,

---

1. स्टालबाउम और इसका कुछ पाठांतर है।

जबकि मैं आपको ही यह बात समझा नहीं सका। दुख है कि आप यह समझते हैं कि मैं इस समय पहले से ज्यादा विचलित हूं। ऐसा लगता है कि आप यह समझते हैं कि मैं हंसों से कम भविष्य-ज्ञान रखता हूं। जब हंस यह जान लेते हैं कि उन्हें मरना है तो वे अभूतपूर्व जोर से गाना शुरू कर देते हैं क्योंकि वे ईश्वर के समक्ष, जिसके वे दास हैं, जाने में आनंद का अनुभव करते हैं। पर मनुष्यों में मृत्यु के लिए जो डर है, उसी से परिचालित होकर वे हंसों के विषय में इस प्रकार झूठी बात कहते हैं और वे कहते हैं कि हंस आनंद का गीत नहीं गाते बल्कि मृत्यु पर विलाप करते हैं और चिल्ला कर कष्ट-प्रदर्शन करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि कोई भी पक्षी भूख, ठंड या और किसी कष्ट से पीड़ित होने की स्थिति में नहीं गाता। यहां तक कि नाइटिंगेल स्वालो भी कष्ट में हाहाकार नहीं करते, न गाते हैं, जैसाकि मनुष्य कहा करते हैं। पर मेरा यह विचार है कि ये पक्षी और हंस दुख के कारण नहीं गाते हैं। मैं यह विश्वास करता हूं कि उन्हें अगले जगत की अच्छी चीजों के पूर्वज्ञान तथा भविष्यज्ञान की शक्ति प्राप्त है क्योंकि वे अपोलो के पक्षी हैं और इसलिए वे अपनी मृत्यु के दिन जीवन के अन्य किसी भी दिन से बढ़कर गाते और हर्ष मनाते हैं। मैं स्वयं विश्वास करता हूं कि मैं हंसों के सदृश्य उसी ईश्वर का एक दास हूं, उनकी सेवा में अर्पित हूं और मुझमें उनसे घटकर नहीं बल्कि उसी तरह की भविष्यज्ञान की शक्ति है, जो मुझे अपने गुरु से प्राप्त हुई है और मैं जीवन को छोड़ जाने पर हंसों से अधिक निराश नहीं हूं। इसलिए मेरी परेशानी को भुला कर आप इच्छानुसार मुझसे तब तक बात कर सकते हैं या प्रश्न कर सकते हैं, जब तक कि ग्यारह जल्लाद आकर आपको ऐसा करने से न रोकें।[1]

सिम्मियास ने कहा, अच्छी बात है। मैं आपको अपनी कठिनाई बताऊंगा और सिबिस भी आपको यह बताएंगे कि वह क्यों आपके वक्तव्य से असंतुष्ट हैं। सुकरात, मैं साहस करके यह कहता हूं कि आप भी शायद यही सोचते होंगे कि इस जीवन में इन मामलों में स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करना कठिन ही नहीं, शायद असंभव भी है। फिर भी मैं उसे एक अकिंचन ही मानूंगा, जो इन विषयों की जांच नहीं करता और उन पर यथासाध्य मंथन नहीं करता। दो में से एक काम करना हमारा कर्तव्य है। इन मामलों में हमें सच्चाई जाननी चाहिए या उसकी हमें पड़ताल करनी चाहिए और यदि यह असंभव हो, तो हमें मानवीय सिद्धांतों में से सबसे श्रेष्ठ और सबसे अकाट्य सिद्धांत को ग्रहण कर लेना चाहिए और उसकी नाव पर सवार होकर, उस पर भरोसा करके, हमें जीवन की यात्रा पर जाना चाहिए।[2] हां, जीवनयात्रा के दौरान इससे बढ़कर कोई दृढ़ नौका या दिव्य वाणी मिले, जिसके भरोसे पर हम अपनी यात्रा और

1. जल्लाद से यहां मतलब उन अधिकारियों से है जो मृत्यु-दंड की देखरेख करते हैं। देखिए, वही 59 ई।

2. देखिए बिशप बटलर की 'ऐनॉलोजी' की भूमिका।

भी निरापदता और आनंद से कर सकें, तो बात दूसरी है। इतना कुछ सुन लेने के बाद मैं आपसे एक प्रश्न करने में कोई संकोच नहीं करूंगा ताकि बाद को मुझे अपने ऊपर यह दोष न लगाना पड़े कि हाय ! मैंने क्यों अपने विचार आपके सामने नहीं रखे। सिबिस और मैं आपके तर्कों पर विचार करते रहे हैं और हम यह समझते हैं कि आपके तर्क कसौटी पर पूरे नहीं उतरते।

सुकरात ने कहा, अवश्य ही आप सही बात कर रहे हैं। पर यह तो बताइए कि मेरे तर्क में छिद्र आपको दिखाई कहां देता है ?

सिम्मियास ने कहा, मेरी दृष्टि में यह तर्क अयथेष्ट है क्योंकि यही तर्क समरसता (हार्मनी), वीणा और उसके तारों के संबंध में दिया जा सकता है। यह कहा जा सकता है कि स्वर में बंधी हुई वीणा में समरसता अदृश्य और अशरीरी होती है और वह नितांत सुंदर और दिव्य है। इसके विपरीत वीणा और उसके तार शारीरिक हैं और शरीरों की प्रकृति के अनुसार यौगिक, ऐहिक और नश्वर हैं। मान लीजिए, वीणा टूट चुकी है और उसके तार काटे जा चुके हैं या विच्छिन्न हो चुके हैं। उस पर कोई आदमी वही तर्क दे सकता है, जो आप देते रहे हैं और वह यह कि समरसता नष्ट नहीं हुई, वह अभी तक मौजूद है यद्यपि वीणा और तार नहीं हैं। वह यह भी कह सकता है कि इसी प्रकार समरसता वीणा और तार की नश्वर प्रकृति की तुलना में सदैव वर्तमान रहती है : यद्यपि तार टूट चुके हैं और दिव्य और अमर समरसता नश्वर वीणा के पहले ही नष्ट हो चुकी है। वह यह भी कहेगा कि समरसता कहीं न कहीं वर्तमान है और लकड़ी और तार समरसता को कुछ होने के पहले सड़ जाएंगे। मैं समझता हूं, सुकरात, कि आप भी यह मानते होंगे कि हम में से बहुतेरे यह समझते हैं कि आत्मा शायद, बहुत संभव है, उन तत्वों का मिश्रण और समरसता है, जिनसे शरीर बना हुआ है और उसमें ऐसे तत्व हैं जैसे, गर्मी और ठंडक, सूखापन और गीलापन इत्यादि। इस प्रकार से आत्मा यदि समरसता है तो यह स्पष्ट है कि जब शरीर अनुपात से बाहर ठंडा या गरम, गीला या सूखा आदि हो जाता है या रोग या दूसरी बुराइयों से अधिक तेजी से बंध जाता है, तो दिव्य आत्मा शब्दों के अन्य सामरस्यों तथा कलाकृतियों की तरह नष्ट हो जाती है, जब शरीर का कुछ हिस्सा तब तक बचा रहता है, जब तक कि वह जला न दिया जाए या सड़ न जाए। तब इस प्रकार के आदमी से क्या कहेंगे, जो कहता है कि आत्मा शरीर के तत्वों का एक मिश्रण होने के कारण मृत्यु की कथित स्थिति से पहले ही नष्ट हो जाती है ?

इन बातों को सुनकर सुकरात ने हम लोगों को बहुत ध्यान से देखा—जैसेकि वह अक्सर देखा करते थे और तब वह मुस्कराए। उन्होंने कहा, सिम्मियास की आपत्ति बहुत सुंदर है। यदि आप में से कोई मुझसे ज्यादा तैयार है, तो वह उनका उत्तर क्यों नहीं देते क्योंकि सिम्मियास बहुत जबरदस्त चोट करनेवाले के रूप में दिखाई पड़ रहे हैं। पर मैं समझता हूं कि उनके संदेहों के निराकरण के पहले यह

अच्छा होगा यदि सिबिस भी यह बताएं कि मेरी युक्ति में क्या त्रुटि थी और इस प्रकार से हमें सोचने का समय मिल जाएगा कि इसका उत्तर क्या हो सकता है। जब हम उन दोनों की बात सुन चुकेंगे तो हमें अपनी युक्ति के बचाव में तर्क देने होंगे। सिबिस, अब यह बताइए कि आपको किस बात पर अड़चन है और आपका संदेह क्या है ?

सिबिस ने उत्तर दिया, मैं आपको अवश्य बताऊंगा। मैं समझता हूं कि तर्क वहीं का वहीं है जहां से शुरू हुआ था और हमने जो आपत्ति की थी, वह जहां की तहां है। आपने बहुत चतुरता से, और यदि ऐसा कहना आपको उद्धत न लगे, तो मैं कहूंगा कि आपने अंतिम तरीके से यह दिखाया है कि हमारी आत्माएं मनुष्य रूप धारण करने के पहले से मौजूद हैं। इस विषय में मैंने जो कुछ स्वीकार किया है, मैं उससे मुकरता नहीं हूं। पर मैं यह नहीं मानता कि वे हमारी मृत्यु के बाद कायम न रहेंगी। मैं सिम्मियास की आपत्ति से सहमत नहीं हूं कि आत्मा शरीर की तुलना में प्रबल और स्थायी नहीं है। मैं यह समझता हूं कि आत्मा इन दृष्टियों से शरीर से कहीं श्रेष्ठ है। इस पर यह तर्क दिया जा सकता है—'जब मृत्यु के बाद मनुष्य का दुर्बलतर भाग बना रहता है, फिर भी आप संदेह क्यों करते हैं ? क्या आप यह नहीं मानते कि उसका स्थायी भाग आवश्यक रूप से उतने ही समय तक बना रहेगा ?' अब देखिए कि मैं जो कुछ कहता हूं उसमें कोई तत्व है या नहीं। मैं सिम्मियास की तरह यह मानता हूं कि मैं अपने वक्तव्य को एक उपमा से अधिक अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सकता हूं। मुझे ऐसा लगता है कि कोई भी आदमी यह प्रमाणित करने की चेष्ट कर सकता है कि कोई जुलाहा, जो बुढ़ापे में मर गया है, वह वस्तुतः नष्ट नहीं हुआ बल्कि कहीं न कहीं वह जीवित है। वह इस तर्क पर कि जुलाहे ने अपने लिए तथा दूसरों के लिए जो कपड़ा बनाया था, वह नष्ट नहीं हुआ, अतः जुलाहा भी मौजूद है। यदि इस पर कोई अविश्वास करे, तो वह यह पूछ सकता है कि मनुष्य और कपड़ा इन दोनों में कौन अधिक दिनों तक टिकता है ? और जब उसे यह बताया जाएगा कि मनुष्य ही अधिक दिनों तक टिक सकता है, तब वह यह सोच सकता है कि उसने निस्संदेह यह दिखला दिया कि मनुष्य निरापद है क्योंकि जो मनुष्य से कम समय तक टिकता है यानी कपड़ा, वह तो नष्ट नहीं हुआ। पर सिम्मियास, मैं यह समझता हूं कि वास्तविकता यह नहीं है। अतः आपको मैं जो कुछ कह रहा हूं, उस पर विचार करना चाहिए। हरेक यह समझ जाएगा कि इस प्रकार का तर्क देना बिल्कुल ऊलजलूल और अर्थहीन है। उस जुलाहे ने बहुत से कपड़े बुने और पहन डाले। वह सिवाय अंतिम कपड़े के अधिकतर दिनों तक जीवित रहा, यानी वह उस अंतिम कपड़े को पहन डालने के पहले के अधिकतर दिनों तक जीवित रहा पर वह उस अंतिम कपड़े को पहन डालने के पहले ही मर गया। फिर भी कोई व्यक्ति किसी भी हालत में अपने कपड़ों से न तो निकृष्ट है, न कमजोर। इस कारण मैं यह समझता हूं कि शरीर के साथ आत्मा के संबंध को इसी प्रकार की उपमा से व्यक्त किया जा सकता है। भला

मनुष्य यह क्यों न कहे कि आत्मा दीर्घकाल तक टिकती है, जबकि शरीर अपेक्षाकृत कमजोर होने के कारण कम समय तक टिकता है। इस पर वह यह कह सकता है कि हर आत्मा उस जुलाहे की तरह बहुत से शरीरों को पहन डालती है, विशेषकर यदि वह बहुत वर्षों तक जीवित रहती है। यदि शरीर अपने जीवन-काल में परिवर्तन और ह्रास की स्थिति में रहता है और आत्मा हर समय उसके फटे हुए हिस्से की मरम्मत कर रही है, तो निश्चित रूप से निष्कर्ष यह निकलेगा कि नष्ट होते समय आत्मा अंतिम कपड़ों को पहने होगी और केवल उसी कपड़े के पहले वह नष्ट हो जाएगी। पर जब आत्मा नष्ट हो चुकी होगी, तब शरीर अपनी कमजोरी दिखाएगा और जल्दी से सड़ जाएगा। इसलिए अब तक जो तर्क दिए गए, उनसे हम यह विश्वासपूर्वक नहीं कह सकते कि हमारे मरने के बाद हमारी आत्माएं वर्तमान रहती हैं। कोई मनुष्य उसके तर्क को इस्तेमाल करनेवाले अपने प्रतिपक्षी की अधिक बात मान सकता है।[1] वह न केवल यह मानेगा कि हमारे जन्म से पहले आत्माएं मौजूद थीं बल्कि इस बात में भी वर्तमान रहेंगी, हमारे मरने के बाद बार-बार जन्म लेंगी और मरेंगी क्योंकि आत्मा बहुत से जन्मों को झेलने के लायक बल रखती है। यह बिना माने कि आत्मा इन जन्मों से कुछ भी क्षतिग्रस्त नहीं होती और वह अंत में इन मृत्युओं में से किसी में भी पूर्ण रूप से नष्ट नहीं होती, वह यह तो मान और कह सकता है कि कोई भी आदमी यह नहीं जानता कि कब यह मृत्यु या शरीर का बिखराव आत्मा के विनाश का कारण हो सकता है क्योंकि किसी भी आदमी के लिए यह पता लगाना मुश्किल है। पर यदि यह सत्य है, तो मृत्यु के विषय में मनुष्य की आस्था अयौक्तिक होगी। हां, यदि वह यह प्रमाणित कर सके कि आत्मा संपूर्ण रूप से अनश्वर और अमर है, तो बात और है। नहीं तो जो भी मरेगा, उसे यह भय रहेगा कि इस बार जब आत्मा और शरीर की वियुक्ति होगी, उस समय उसकी आत्मा भी नष्ट हो जाएगी।

अब हम लोग ये बातें सुन रहे थे तो हमें बहुत परेशानी हो रही थी—जैसाकि हमने बाद में एक दूसरे से कहा भी। हम पहले की चर्चा से पूरी तरह सुकरात के मत पर आ चुके थे और अब ऐसा लगा कि इन तर्कों से हमारे विश्वास को उल्टी तरफ ले जाया जा रहा है और आनेवाले तर्कों पर, साथ ही पहले के तर्कों पर, पानी फिर रहा है। यह भी संदेह हो रहा था कि हमारे निर्णय का कोई मूल्य भी है या नहीं और यदि हम इस संबंध में किसी निश्चय पर पहुंचे, तो उसका भी कोई अर्थ है कि नहीं ?

एचेक्राटिस—फीडो, देवताओं की कसम, मैं आपकी भावनाओं को अच्छी तरह समझ सकता हूं। जब आप बोल रहे थे, तो मैं भी अपने से पूछ रहा था, 'तो भविष्य में हम किन युक्तियों पर विश्वास करें ? सुकरात की युक्ति बहुत ही आस्था उत्पन्न करनेवाली थी, पर अब लगता है कि उस पर भी अविश्वास उत्पन्न हुआ है।' आत्मा

---

1. यहां ग्रीक भाषा में कुछ पाठांतर भी है।

समरसता है, यह सिद्धांत मुझे बहुत अच्छा तर्क लगा था। आपने याद दिला दी, इसलिए मुझे यह बताएं कि सुकरात ने इस तर्क का क्या उत्तर दिया। क्या उन्होंने, जैसाकि आपने बताया, कोई चंचलता का परिचय दिया या उन्होंने शांति के साथ अपने तर्क का बचाव किया ? प्रश्न यह भी है कि क्या उन्होंने संतोषजनक रूप में प्रश्न का उत्तर दिया। मुझे यह सारी कहानी, जहां तक पूरी-पूरी आप बता सकें, बताएं।

फीडो–एचेक्राटिस, मैं अक्सर सुकरात पर आश्चर्य करता रहा, पर उस समय मैंने सुकरात को जितनी प्रशंसा की दृष्टि से देखा, उतनी प्रशंसा की दृष्टि से कभी नहीं देखा। उन्होंने जो उत्तर दिया उसमें कोई अजीब बात नहीं थी। हमें पहले जिस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ, वह यह था कि उन्होंने युवकों की आपत्तियों को कितनी सहृदयता, श्रद्धा और सम्मान से सुना। दूसरी बात यह है कि उन्होंने, हम पर उन तर्कों का क्या असर हुआ, यह तुरंत समझ लिया और अंतिम बात यह हुई है कि उन्होंने किस सफाई से हमारे घावों को भर दिया और जबकि हम लड़ाई से मार खाकर भाग खड़े हुए थे, उन्होंने हमें बिखराव की स्थिति से निकालकर एकत्र करके रख दिया। उन्होंने हमें यह प्रोत्साहन दिया कि हम उनके पीछे चलें और उनके साथ उनकी युक्ति की जांच करें।

एचेक्राटिस–कैसे ?

फीडो–मैं आपको बताऊंगा। मैं उनके दाहिने हाथ की तरफ एक तिपाई पर बैठा हुआ था और उनका आसन मुझसे काफी ऊंचा था। उन्होंने मेरे सिर को सहलाया और मेरे कंधे पर के बालों को धीरे-धीरे थपथपाया। आप यह जानते हैं कि वह अक्सर मेरे बालों से खेला करते थे। तब बोले, फीडो, मुझे विश्वास है कि कल तुम इन सुंदर बालों को काट डालोगे ?

मैंने उत्तर दिया, सुकरात, मैं समझता हूं कि ऐसा ही होगा।

यदि तुम मेरी सलाह मानो तो तुम ऐसा न करो।

मैंने पूछा, क्यों न करूं ?

इस पर उन्होंने कहा, यदि हमारे तर्क मर जाएं और हम इसमें प्राण का संचार न कर सकें, तो तुम और मैं दोनों ही अपने बाल आज ही काट डालें। यदि मैं तुम होता और तर्क मुझसे भाग जाता, तो मैं यह शपथ लेता–जैसाकि आर्जवाइस किया करते थे–कि मैं लंबे बाल तब तक न रखूंगा जब तक कि मैं फिर से लड़ाई कर सिम्मियास और सिबिस को तर्क से परास्त न कर लूंगा।

मैंने उत्तर दिया, पर जैसाकि लोग कहते हैं, हैरेक्लिस स्वयं दोनों के लिए काफी नहीं है।

तो फिर आप मुझे इओलाउस के रूप में सहायता के लिए बुलाइए जबकि अभी रोशनी बाकी है।

मैं आपको इस तरीके से नहीं बुलाता हूं जैसे हैरेक्लिस ने इओलाउस को बुलाया था बल्कि उस प्रकार से बुलाता हूं जैसे इओलाउस हैरेक्लिस को बुलाना चाहेगा।

उन्होंने उत्तर दिया, रहेगा यह उसी प्रकार, पर पहले हमें इस बात की सावधानी बरतनी चाहिए कि कहीं कोई गलती न हो।

मैंने पूछा, कैसी गलती ?

गलती यह कि कहीं हम युक्ति से उसी प्रकार घृणा न करने लग जाएं, जैसेकि लोग मनुष्य से घृणा करने लगते हैं। युक्ति से घृणा और मनुष्य के प्रति घृणा ये दोनों एक ही प्रकार के कारणों से उत्पन्न होती हैं। मनुष्य के प्रति घृणा इस प्रकार से उत्पन्न होती है कि मित्र पर बिना प्रश्न पूछे अयुक्तिसंगत ढंग से विश्वास किया जाता है, वह इस आधार पर कि उसका मित्र बहुत ही सच्चा, ईमानदार और विश्वासपात्र है, पर जल्दी ही उसे यह मालूम होता है कि वह एक खराब आदमी है और अविश्वासपात्र है। ऐसा बार-बार होता है। जब एक आदमी को ऐसे लोगों के हाथों इस प्रकार का तजुर्बा बार-बार होता है, जिन्हें वह अपने सबसे निकट और प्रिय मित्र मानता रहा, और जब वह ऐसे बहुत से लोगों से लोहा ले चुकता है, तो वह सब व्यक्तियों से घृणा करने लगता है और वह यह सोचता है कि किसी मनुष्य में भी कोई भलाई नहीं है। क्या आपने ऐसा होते नहीं देखा ?

मैंने कहा, हां, अवश्य देखा है।

उन्होंने कहा, क्या यह लज्जाजनक नहीं है ? क्या यह स्पष्ट नहीं कि है ऐसा आदमी जो बाद को चलकर मनुष्य-द्वेषी बन जाता है, वह मनुष्य प्रकृति को बिना समझे व्यवहार करता रहा है। यदि वह मनुष्य की प्रकृति समझता तो वह जान जाता कि बहुत थोड़े लोग ही अच्छे या बुरे हैं। अधिकांश लोग न तो अच्छे हैं और न बुरे।

मैंने पूछा, इसके क्या मायने हुए।

बहुत बड़ी और बहुत छोटी चीजों के संबंध में जो स्थिति है, वैसी ही स्थिति इस मामले में भी है। यदि आप बहुत लंबा या बहुत छोटा आदमी या कुत्ता या दूसरी कोई चीज खोजें, तो उसका पाना सबसे कठिन होगा, है न ? इसी प्रकार से बहुत तेज और बहुत सुस्त, बहुत नीच और बहुत उदार, बहुत काला और बहुत सफेद आदमी भी प्राप्त करना इसी तरह कठिन है या नहीं ? क्या आपने यह नहीं देखा कि इन सारे मामलों में अति वाले नमूनों की बहुत कमी है और औसत नमूने ही अधिक और बहुसंख्यक हैं ?

मैंने कहा, हां, अवश्य।

इसी प्रकार से यदि दुष्टता के क्षेत्र में कोई प्रतियोगिता हो, तो प्रमुख पापी बहुत कम मिलेंगे।

आप जो कह रहे हैं, वह बहुत संभव है।

सुकरात ने कहा, हां, यह बात ऐसी ही है। इसी प्रकार मनुष्यों की तरह तर्क पर से भी विश्वास उठ सकता है। आपने ही इस विषय पर मुझसे बातचीत चलाई थी। मनुष्यों पर आस्था और तर्कों में आस्था में समता इस प्रकार है। जब कोई मनुष्य यह विश्वास करता है कि एक युक्ति सच्ची है, यद्यपि वह युक्ति की कला को नहीं समझता, और उसके बाद सही या गलत तौर से यह पाता है कि तर्क या युक्ति झूठी है और ऐसा उसके साथ बार बार होता है, तो वह संपूर्ण रूप से युक्ति पर से विश्वास खो बैठता है। आप यह जानते हैं कि जो लोग अपना समय वाद-विवाद में लगाते हैं, वे अंत तक अपने को ज्ञानियों का सरताज मानते हैं और यह कल्पना करने लगते हैं कि उन्होंने ही इस बात का आविष्कार किया है कि युक्तियां या वस्तुएं अकाट्य और निश्चित नहीं हैं और यूरीपस की लहरों की तरह सारा अस्तित्व चिरंतन उतार-चढ़ाव के अंदर लहराता रहता है और एक मुहूर्त के लिए भी शांत नहीं रहता।

मैंने उत्तर दिया, हां, यह निश्चित रूप से सत्य है।

सुकरात ने कहा, फीडो, यदि युक्ति की कोई सच्ची और निश्चित पद्धति है, जिसे हमारा मन ग्रहण कर सकता हो, तो उस हालत में यह बहुत ही दुखजनक होगा कि किसी व्यक्ति का ऐसे तर्कों से सावका पड़े जो कभी सच्चे लगें और कभी झूठे ज्ञात हों। तो अंततोगत्वा वह कड़वे हृदय से युक्ति पर सारा दोष लादेगा, न कि अपने ऊपर या अपनी कलाहीनता के ऊपर। फिर सारी जिंदगी वह युक्ति के प्रति घृणा व्यक्त करने, उसे गालियां देने और सत्य तथा वास्तविकता का ज्ञान खो देने में लगाएगा।

मैंने कहा, सचमुच यदि ऐसा हो तो वह बहुत ही अफसोस की बात होगी।

सुकरात ने कहा, पहली बात यह है कि हम अपने मन में यह धारणा न आने दें कि संभव है सारी युक्तियां बहुत ही अनिश्चित हों। बल्कि हमें यह सोचना चाहिए कि हम लोग अभी तक सही रास्ते पर नहीं पहुंचे। हमें गंभीरता के साथ यह चेष्टा करनी चाहिए कि मनुष्य सही रास्ते पर लगे। मेरे मित्र, आप अपने भावी जीवन के लिए ऐसा करें और मैं अपनी मृत्यु के लिए ऐसा करूं। मैं इस वक्त डर रहा हूं कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं मृत्यु के प्रति दार्शनिक दृष्टि नहीं रख सकता, कहीं मैं उन अनपढ़ व्यक्तियों की तरह महज तर्क के लिए तो तर्क नहीं कर रहा, जो विचाराधीन प्रश्न की सचाई पर विचार नहीं करते बल्कि केवल अपने श्रोताओं को यह समझाने के लिए व्यग्र रहते हैं कि उनकी ही बात सही है। एक बात तो स्पष्ट है कि आज भी मैं उन लोगों से एक मामले में अलग हूं। मैं इस बात के लिए व्यग्र नहीं हूं कि मैं अपने श्रोताओं को यह समझाऊं कि मैं सही हूं, सिवा इसके कि चलते हुए ऐसा हो जाए तो ठीक ही है। मेरे सामने असली समस्या यह है कि मैं अपने को समझाने में लगा हुआ हूं। मेरे प्रिय मित्र, देखिए कि मेरी युक्ति कितनी स्वार्थ-पूर्ण है। जो कुछ मैं कह रहा हूं, यदि वह सत्य है, तो उस पर विश्वास करना ठीक होगा। पर यदि मृत्यु के बाद

कुछ नहीं है तो किसी भी हालत में इतना तो लाभ है ही कि मरने के पहले मैं यदि विलाप करता और उससे मेरे मित्रों को कष्ट पहुंचता, उससे बचत तो हो ही गई। फिर यह अज्ञान हमेशा टिकने का नहीं। टिकता तो वह एक बुराई होती। यह अज्ञान जल्दी ही समाप्त हो जाएगा। सिम्मियास और सिबिस, इस प्रकार प्रस्तुत होकर मैं इस तर्क को उठा रहा हूं और यदि आप मेरी सलाह लेते हैं तो आप सुकरात की बात न सोचें वल्कि सत्य की बात सोचें। यदि आप सोचें कि जो कुछ मैं कह रहा हूं, वह सत्य है तभी आप मुझसे सहमत हों, नहीं तो आप अपने सारे तर्कों से विरोध करें। सावधान रहें कि कहीं आपको अपने मत से सहमत कराने की व्यग्रता में मैं आप लोगों को और अपने को भी धोखा न दे दूं। कहीं मैं मधुमक्खी की तरह चला न जाऊं और पीछे डंक छोड़ जाऊं।

उन्होंने आगे और कहा, अव हम आगे वढ़ते हैं। यदि आप यह देखें कि मैंने आपके तर्क भुला दिए हैं, तो पहली बात यह है कि आप उन तर्कों को फिर से सामने रखें। मुझे ऐसा लगता है कि सिम्मियास को यह भय और संदेह है कि आत्मा समरसता की प्रकृति की होने के कारण शरीर से पहले नष्ट हो सकती है यद्यपि वह शरीर की तुलना में अधिक दिव्य और भव्य है। यदि मैं गलती नहीं कर रहा तो सिबिस ने यह माना था कि आत्मा शरीर से अधिक टिकाऊ है। पर उनका कहना यह है कि कोई यह नहीं कह सकता कि बहुत थोड़े से शरीरों को बहुत बार कपड़े की तरह पहन लेने के बाद अपने अंतिम शरीर को छोड़ने के बाद आत्मा नष्ट नहीं हो जाती। उनका यह भी कहना है कि मृत्यु का अर्थ आत्मा का विनाश नहीं क्योंकि शरीर का विनाश तो लगा ही रहता है। सिम्मियास और सिबिस, क्या कोई और प्रश्न है जिस पर हमें विचार करना है ?

वे दोनों यह मान गए कि इन्हीं प्रश्नों पर विचार हो रहा था।

क्या आप हमारे पहले के सारे उपसंहारों को नामंजूर करते हैं या उनमें से कुछ को ही नामंजूर करते हैं ?

सिबिस और सिम्मियास ने उत्तर दिया, उनमें से कुछ को ही हम नामंजूर करते हैं।

सुकरात ने कहा, अच्छी बात है, आप हमारे ज्ञान संवंधी इस सिद्धांत के विषय में क्या कहते हैं कि वह पुनःस्मरण मात्र है, इसलिए हमारी आत्माएं हमारे इन शरीरों में कैद होने के पहले कहीं अवश्य रही होंगी ?

सिबिस ने उत्तर दिया, मैं उस समय बहुत आश्चर्यजनक ढंग से इस मत का था और अव कोई भी सिद्धांत ऐसा नहीं है जिस पर मैं इतना दृढ़ होऊं।

सिम्मियास ने बताया, मेरा भी यही विचार है और मुझे बहुत आश्चर्य होगा यदि मैं इस सिद्धांत को कभी बदल दूं।

सुकरात ने कहा, पर मेरे थिबी बंधु, आपको यह मत बदलना पड़ेगा। यदि

आपका यह मत है कि समरसता एक यौगिक वस्तु है और आत्मा भी तनावयुक्त शरीर के तत्वों से बनी हुई एक वस्तु है, तो आपको अपना मत बदलना पड़ेगा। आप शायद यह न कहना चाहेंगे कि जिन तत्वों से समरसता बनी है, उन तत्वों से पहले समरसता मौजूद थी ? क्या आप ऐसा कहेंगे ?

सुकरात, अवश्य नहीं।

आप यह कहते हैं कि आत्मा मनुष्य के शरीर और स्वरूप में आने के पहले मौजूद थी, फिर भी क्या वह ऐसे तत्वों से बनी थी जो पहले मौजूद नहीं थे ? आप देखते हैं कि आप जो कुछ कह रहे हैं, उसका मतलब यही निकलता है। आपकी समरसता वही नहीं है जैसाकि आप उपमा में उस पर आरोप कर रहे हैं। वीणा, उसके तार, अभी तक सुर में अनबंधी आवाज पहले अस्तित्व में आते हैं और समरसता सबसे अंत में प्रस्तुत होती है और पहले समाप्त हो जाती है। आपका यह विश्वास दूसरे विश्वासों के साथ कैसे तालमेल रख पाएगा ?

सिम्मियास ने उत्तर दिया, हां, तालमेल नहीं रख पाएगा।

और फिर उन्होंने कहा, समरसता संबंधी तर्क से असहमति प्रकट करने की कोई सार्थकता भी नहीं है।

बिल्कुल ठीक है, सिम्मियास ने कहा।

खैर, आपके तर्क से असहमति प्रकट करने की गुंजाइश अवश्य है। आपको किसी एक सिद्धांत को चुन लेना होगा—वह यह कि ज्ञान पुनःस्मरण है अथवा आत्मा समरसता है।

इनमें से पहले सिद्धांत को मैं चुनना चाहूंगा, सुकरात, उन्होंने उत्तर दिया। दूसरे सिद्धांत का मैं कभी साक्षात्कार नहीं कर सका; यह तो संभावना पर आधारित होने के कारण प्रसिद्धि प्राप्त कर गया है। मैं यह जानता हूं कि जो सिद्धांत संभावनाओं पर आधारित होता है, वह झूठा होता है और अगर सावधानी न बरती जाए तो ज्यामिति से लेकर किसी भी वस्तु तक में उससे पथभ्रष्ट हो जाने की आशंका रहती है। पर पुनःस्मरण और ज्ञान का सिद्धांत ऐसे तथ्यों पर आधारित है जो विश्वसनीय हैं। हम इस बात से सहमत हो चुके हैं कि शरीर में प्रवेश करने से पहले ही आत्मा का अस्तित्व रहता है। वैसे ही जैसे सार, जो कि वस्तुतः जीवन है, का अस्तित्व होता है। मैं इस बात के लिए निश्चिंत हूं कि मेरे इस विश्वास के लिए प्रचुर प्रमाण उपलब्ध हैं। अतः मैं स्वयं और अन्य किसी को भी यह बात कहने की इजाजत नहीं दे सकता कि आत्मा समरसता है।

सुकरात ने आगे कहा, सिम्मियास, आप इस प्रश्न पर दूसरे ढंग से विचार कीजिए। क्या आप समझते हैं कि समरसता या और कोई संरचना, जिन तत्वों से वह बनी है, उसके सिवा किसी अन्य स्थिति में रह सकती है ?

बिल्कुल नहीं।

और न तो यह उनके पर कोई काम कर सकती है या न ही कुछ झेल सकती है।

इस पर वे सहमत हो गए।

तो इसका अर्थ यह हुआ कि समरसता उन तत्वों का अग्रणित्व नहीं कर सकती, जिनसे वह बनी है; वह उनका अनुसरण ही करेगी न ?

इसे भी उन्होंने मान लिया।

और अपने भागों के विरुद्ध न तो वह गतिशील है, न आवाज उत्पन्न कर सकती है। और कुछ भी नहीं कर सकती। है यही बात न ?

बिल्कुल ठीक है।

क्या समरसता प्राकृतिक रूप से जिस प्रकार संरचित होती है, उसी प्रकार की नहीं है।

मैं समझ नहीं पा रहा हूं।

यदि उसका सुर-ताल और अच्छी तरह बांधा जाए, बशर्ते कि ऐसा संभव हो, तो क्या यह अधिक सुंदर समरसता नहीं होगी। और जब सुरताल उतना बंधा नहीं हो, तो क्या उस दृष्टि से वह शिथिल समरसता नहीं होगी ?

अवश्य।

तो क्या यही बात आत्मा के बारे में भी सत्य नहीं है ? क्या आत्मा भी दूसरी आत्मा की तुलना में अधिक और कम हद तक आत्मा हो सकती है ?

नहीं, बिल्कुल नहीं।

सुकरात ने कहा, तो मुझे एक बात बताइए। क्या एक आत्मा के विषय में यह नहीं कहा जाता कि उसमें बुद्धि है, पुण्य है, बल है और दूसरी में मूर्खता, पाप और दोष है ? क्या यह सही नहीं है ?

हां, अवश्य सही है।

तो जो लोग यह कहते हैं कि आत्मा एक समरसता है, वे हमारी आत्माओं के पाप और पुण्य के लिए क्या कहेंगे ? क्या वे यह कहेंगे कि यह दूसरे ही प्रकार की समरसता और किसी दूसरे प्रकार का बेसुरापन है ? क्या वे यह कहेंगे कि अच्छी आत्मा सुरताल में बंधी हुई है और वह स्वयं एक समरसता है और ऐसी होते हुए भी उसके अंदर एक दूसरी समरसता है और बुरी आत्मा सुर में बंधी नहीं है और उसके अंदर कोई समरसता नहीं है ?

सिम्मियास ने कहा, मैं नहीं कह सकता, पर यह स्पष्ट है कि इन्हें कुछ इस प्रकार का कहना पड़ेगा।

उन्होंने कहा, पर यह माना जा चुका है कि कोई भी आत्मा दूसरी आत्मा के मुकाबले न तो अधिक है, न अल्प। दूसरे शब्दों में, हम यह मान चुके हैं कि एक समरसता दूसरी समरसता से न तो बड़ी है, न बड़ी हद तक है। है न ?

हां, अवश्य।

और जो समरसता अधिक या अल्प समरसता नहीं है, क्या वह सुरताल की दृष्टि से अधिक या अल्प बंधी हुई नहीं है ? क्या ऐसा कहा जा सकता है ?

हां। अवश्य।

और जो समरसता सुरताल की दृष्टि से न तो अधिक बंधी है, न कम बंधी है, क्या वह समरसता की दृष्टि से अधिक या अल्प या समान हिस्सा रखती है ?

समान हिस्सा रखती है।

एक आत्मा दूसरी आत्मा से अधिक या अल्प नहीं है, तो क्या यह कहना ठीक होगा कि वह सुरताल में अधिक बंधी है या सुर में अल्प बंधी है।

हां। ठीक न होगा।

तो यह मानना पड़ेगा कि उसमें समरसता या बेसुरेपन का अधिक या अल्प भाग नहीं हो सकता।

निश्चय ही नहीं।

यदि पाप को हम बेसुरापन मानें और पुण्य को समरसता मानें तो क्या किसी आत्मा में दूसरी आत्मा की तुलना में अधिक पाप या पुण्य हो सकता है ?

किसी भी हालत में नहीं।

सिम्मियास, ठीक तरह सोचा जाए तो कहना पड़ेगा कि आत्मा यदि एक समरसता है, तो किसी भी आत्मा में कोई पाप नहीं लगा होगा। मैं इसलिए मान लेता हूं कि समरसता में कभी बेसुरापन नहीं हो सकता बशर्ते कि वह पूर्ण समरसता हो।

अवश्य ही नहीं।

इसी प्रकार से यदि एक आत्मा पूर्ण आत्मा है तो उसमें पाप भी नहीं हो सकता ?

जो कुछ कहा गया है उससे यही निष्कर्ष निकलता है।

तो इस तर्क का परिणाम यह निकला कि सारे जीवित जंतुओं की आत्माएं समान रूप से अच्छी होंगी बशर्ते कि सारी आत्माओं की प्रकृति समान हो।

उन्होंने कहा, सुकरात, मैं ऐसा ही सोचता हूं।

क्या आप सोचते हैं कि यह सत्य है और हमारे तर्क का यही नतीजा निकला ? यदि माना जाए कि आत्मा समरसता है तो सही मान्यता यही होती। है न ?

नहीं, अवश्य नहीं।

उन्होंने कहा, क्या आप यह नहीं कहेंगे कि मनुष्य पर सभी अंशों में आत्मा और विशेषकर ज्ञानी आत्मा ही शासन करती है।

मैं कहूंगा।

क्या वह शरीर के आवेगों के अधीन रहती है या वह उसका विरोध करती है ?

मेरा मतलब यही है। जब शरीर गर्म होता है और प्यास लगती है तो क्या आत्मा इसे अलग नहीं ले जाती और इसे पीने से नहीं रोकती और जब शरीर भूखा होता है, तब क्या आत्मा उसे खाने से नहीं रोकती ? क्या हम यह नहीं देखते कि आत्मा हजारों दूसरे प्रकारों से शरीर के आवेगों का विरोध करती है।

हां, अवश्य।

पर हम यहां सहमत हो चुके हैं कि यदि वह समरसता है, तो वह तनावों, तनाव-मुक्तियों, स्पंदनों तथा शरीर के अन्य तत्वों के, जिनसे वह बनी है, विरुद्ध कोई आवाज नहीं उठा सकती। उसे उनका अनुसरण करना पड़ता है और आत्मा कभी उनका अग्रणित्व नहीं कर सकती ?

उन्होंने कहा, हां, हम ऐसा ही समझते हैं।

अच्छी बात है। अब क्या हम आत्मा को बिल्कुल विपरीत ढंग से काम करते तथा जिन तत्वों से बताया जाता है कि वह बनी है, सारा जीवन लगभग हर बात में उनका विरोध करती हुई, हर तरीके से उन पर शासन करती हुई, उन्हें सजा, कभी कभी बहुत भयंकर सजा देती हुई और कष्टकर अनुशासन के साथ, जैसेकि व्यायाम या चिकित्सा में होता है और कभी कुछ हल्के ढंग से चलती हुई, कभी वासनाओं, आवेगों और भयों को धमकाती हुई और उन्हें ललकारती हुई, मानो वह अपने से बाहर किसी को कुछ कह रही हो, चलती है, जैसाकि होमर ने ओडीसी नामक महाकाव्य में ओडिसियस को कहलाया है–

उसने उसके वक्ष पर प्रहार किया, हृदय को धमकाया
है मेरा हृदय तू इसे सह, क्योंकि तू इससे भी अधिक सह चुका है।[1]

क्या आप सकझते हैं कि होमर ने जब यह लिखा था, तो ऐसा आत्मा को एक समरसता मान कर लिखा था जो शरीर के संवेगों से परिचालित होती है ? और इस रूप में उसे चित्रित नहीं किया कि वह उनकी शासक और उनकी प्रभु है और इतनी दिव्य वस्तु है कि समरसता की तरह होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

अवश्य ही, सुकरात, मैं ऐसा नहीं सोचता ?

तो मेरे उत्तम बंधु, ऐसा कहना बिल्कुल गलत है कि आत्मा एक समरसता है। उस हालत में दिव्य कवि होमर या हम लोगों में मतभेद ही होगा।

उन्होंने कहा, यह सच है।

सुकरात ने कहा, अच्छी बात है। हमने अपनी थिबी हारमोनिया को कुछ सफलता के साथ समझा-बुझा लिया है, पर सिबिस, कैडमस का क्या होगा ? हम उन्हें किस युक्ति से और कैसे समझा-बुझा पाएंगे ?

सिबिस ने कहा, मुझे विश्वास है कि आप जानते होंगे कि यह कैसे करना

---

1. होमर, ओडीसी 20-17

चाहिए। हर हालत में आपने इस तरीके से यह तर्क दिया है कि आत्मा समरसता नहीं है, जिससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। जब सिम्मियास अपनी आपत्ति का ब्यौरा दे रहे थे, तो मुझे आश्चर्य हो रहा था कि कैसे कोई उनके तर्कों का खंडन कर सकता है। इसलिए मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, जब मैंने आपके पहले ही वार से उसके तर्कों को छिन्न छिन्न होते देखा। मुझे आश्चर्य नहीं होगा, यदि कैडमस के तर्क की भी वही हालत हो।

सुकरात ने कहा, मेरे प्रिय मित्र, आप जरूरत से अधिक आस्था न रखें, नहीं तो जो तर्क आनेवाला है, उस पर कोई नजर मार देगा। कुछ भी हो, हम तो इसे ईश्वर पर ही छोड़ देते हैं। अब होमर के वीरों की तरह 'साहस के साथ आगे बढ़ते हुए' हम यह देखें कि आप जो कुछ कह रहे हैं उसमें तत्व क्या है ? आप जो कुछ तलाश रहे हैं, उसका लुब्बेलुबाब यह है। आप हमें यह प्रमाणित करने को कहते हैं कि आत्मा अविनाशी और अमर है—यदि वह ऐसी नहीं है, तो आप समझते हैं कि मृत्यु पर आस्थावाले तथा यह विश्वास करनेवाले कि मरनेवाला मरने के बाद परलोक में इस संसार में कहीं अच्छा जीवन प्राप्त करेगा, की आस्था मूर्खतापूर्ण और आलस्यपूर्ण प्रमाणित होगी। आप चाहते हैं कि आत्मा प्रबल और दिव्य है और हमारे मनुष्य रूप में जन्म लेने के पहले वह मौजूद थी यह प्रमाणित करना यथेष्ट नहीं है, क्योंकि इससे आवश्यक रूप से उसका अमरत्व प्रमाणित नहीं होता। बल्कि इतना ही प्रमाणित होता है कि वह दीर्घतर काल तक स्थायी रहती है और बहुत काल से रही है और उसने पूर्व स्थितियों में बहुत कुछ जाना और बहुत सी बातें की हैं। फिर भी वह इस कारण अधिक अमर नहीं हो जाती। वह जिस प्रकार से मनुष्य-शरीर में प्रवेश करती है, वह एक रोग की तरह है और वह तो विनाश का आरंभ है। आपका यह कहना है कि वह इस जीवन को दुख में गुजारती है और अंत में वह, हम जिसे मृत्यु कहते हैं, उससे नष्ट हो जाती है। आप सोचते हैं कि हम लोगों के भयों में इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, चाहे वह शरीर में एक बार प्रवेश करे या बहुत बार। मूर्ख के अलावा सभी मृत्यु से डरेंगे बशर्ते कि वह यह न जानें और यह प्रमाणित न कर सकें कि आत्मा अमर है। सिबिस, मैं समझता हूं कि आपकी आपत्ति का सार यही है। मैं बार-बार इसे जानबूझ कर कह रहा हूं ताकि हमसे कुछ छूट न जाए। यदि आप चाहें, तो आप इसमें घट-बढ़ कर सकते हैं।

सिबिस ने उत्तर दिया, मेरा मतलब यही है। मैं इसमें इस समय कोई घट-बढ़ नहीं करना चाहता।

सुकरात कुछ देर के लिए चुप रहे और चिंतन करते रहे। इसके बाद वह बोले, सिबिस, आपने जो प्रश्न उठाया है, वह कोई आसान प्रश्न नहीं है। हमें उत्पत्ति और ह्रास के कारणोंवाले सारे विषयों पर पूर्ण रूप से चिंतन करना पड़ेगा। यदि आप चाहें तो मैं अपनी अभिज्ञताओं को पेश करूंगा। यदि आप सोचें कि मैं जो कुछ कह रहा

हूं, उसका आप कुछ इस्तेमाल कर सकते हैं, तो आप अपने संदेह को दूर करने के लिए उसका प्रयोग करें।

सिबिस ने कहा, अवश्य, मैं आपकी अभिज्ञता सुनना चाहूंगा।

सिबिस, आप सुनिए और मैं आपको बताता हूं। जब मैं युवक था, तो मुझमें पदार्थज्ञान के लिए बहुत जबरदस्त इच्छा थी। मैं हर वस्तु के कारणों को जानना चाहता था कि चीज क्यों उत्पन्न होती है, क्यों नष्ट होती है और क्यों वर्तमान रहती है। मैं बराबर इन प्रश्नों पर सिर खपाया करता था। जैसाकि कुछ लोग कहते हैं, प्राणी उत्ताप या ठंडक की खमीर से निर्दिष्ट रूप ग्रहण करते हैं। हम सोचते थे कि किस प्रकार से उत्पत्ति हो सकती है, रक्त से, हवा से या अग्नि से या इनमें से कोई भी बात नहीं है ? मस्तिष्क ही श्रवण, दृष्टि, प्राण की अनुभूति देता है और इन्हीं से स्मृति और मत उत्पन्न होते हैं ?

मस्तिष्क शांत रहने पर स्मृति और मत से ज्ञान उत्पन्न होता है। इसी तरह मैं इन वस्तुओं के विनाश तथा आकाश व पृथ्वी पर के परिवर्तनों पर चिंतन किया करता था। सोचते-सोचते मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं इन अध्ययनों के लिए बिल्कुल ही अनुपयुक्त हूं। मैं आपसे यह बात पूर्णरूप से प्रमाणित कर दूंगा। मैं इन अध्ययनों से इतना अंधा हो गया था कि यह भूल गया कि पहले मैं अपने निकट तथा दूसरों के निकट बहुत बड़ा जानकार समझा जाता था। जो कुछ मैं सोचा करता था और समझा करता था, मैंने वह सब भुला दिया। यहां तक कि मैंने मनुष्य की वृद्धि का कारण भी भुला दिया। पहले मैं यह स्वतःसिद्ध रूप से सोचा करता था कि वृद्धि का कारण भोजन और पान है। सोचता था, खाद्य से मांस उत्पन्न होकर मांस में जुड़ता है और हड्डी हड्डी में जुड़ती है, उसी प्रकार शरीर के अन्य भाग भी अपने तत्वों से बढ़ते जाते हैं, फिर धीरे-धीरे छोटा-सा आकार बढ़ जाता है और शिशु मानव हो जाता है। क्या आप नहीं समझते कि मेरा विश्वास युक्तिसंगत था ?

सिबिस ने कहा, हां।

एक दूसरी अभिज्ञता लीजिए। जब मैं किसी लंबे आदमी को किसी नाटे आदमी की बगल में खड़ा देखता था, तो निस्संदेह रूप से मैं यह सोचा करता था कि यह लंबा आदमी एक माथा ऊंचा है, उसी तरह से जैसे एक घोड़ा दूसरे घोड़े से बड़ा होता है। इसी तरह से मैं यह समझता था कि 8 से 10 दो ज्यादा है और दो हाथ लंबी कोई चीज एक हाथ लंबी चीज से दुगुनी है।

सिबिस ने कहा, यह तो आप तब सोचते थे। अब आप क्या सोचते हैं ?

मैं सोचता हूं कि इन वस्तुओं के कारणों के ज्ञान से मैं बहुत दूर हूं। यों देखिए कि जब आप एक में एक जोड़ते हैं, तो मैं निश्चित नहीं हूं कि एक में एक जोड़ने पर एक ही दो हो जाता है या एक में एक जोड़ने पर उस जोड़ के द्वारा वे दो हो जाते हैं। मैं यह समझ नहीं पाता कि जब दोनों को एकत्र रखा जाता है, तो इन दोनों का

यह एक या एक के पास में दूसरे को रखने के फलस्वरूप दो कैसे बन जाते हैं, जबकि अलग रहने पर संख्या में से हरेक एक था और अब जुड़ने पर दो हो गए हैं। इसके अलावा यदि आप एक को दो में विभाजित करें, तो क्या मैं अपने को यह समझा सकता हूं कि इस विभाजन में उनके दो होने का कारण अंतर्निहित है, क्योंकि तब वह बिल्कुल विपरीत कारण से दो हो जाता है ? प्रथमोक्त मामले में कारण यह था कि दो इकाइयां एक साथ की गईं और एक को दूसरे में मिलाया गया, जबकि अब स्थिति यह है कि उनको अलग कर दिया गया है और एक को दूसरे से पृथक कर दिया गया है। मैं यह भी नहीं समझ पाता कि एक की उत्पत्ति का ज्ञान मुझे है। थोड़े में, इस तर्क से वस्तु की उत्पत्ति का ज्ञान तो मुझे है, पर इस तर्क से वस्तु की उत्पत्ति या विनाश या सत्ता के कारण के विषय में कुछ पता नहीं लगता। मेरे मन में एक दूसरी ही पद्धति के संबंध में एक विक्षिप्त विचार है, पर मैं इसे एक भी मुहूर्त के लिए मान नहीं सकता।

एक दिन मैंने एक व्यक्ति को कहते सुना कि उसने एनैक्सागोरस की एक पुस्तक में यह बात पढ़ी है कि मन ही सब वस्तुओं को व्यवस्थित करता है और वही सब वस्तुओं का कारण है। मुझे इस सिद्धांत से बहुत आनंद मिला। मुझे लगा यह सिद्धांत, कि मन सब वस्तुओं का कारण है, सही है और मैंने अपने मन में सोचा कि यदि ऐसा ही है तो मन प्रत्येक वस्तु को उत्तम से उत्तम रूप में व्यवस्था के लिए समझाएगा। इसलिए यदि हम एक वस्तु की उत्पत्ति, विनाश या अस्तित्व का कारण ढूंढना चाहते हैं, तो हमें यह जानना पड़ेगा कि उस वस्तु के मौजूद रहने का, कार्य करने का या उस पर क्रिया करने का सबसे अच्छा उपाय क्या है ? इसलिए मनुष्य को इस बात पर विचार करना है कि उसके अपने लिए और दूसरे के लिए सबसे उत्तम और उपयुक्त क्या है ? तब आवश्यक रूप से उसे यह मालूम हो जाएगा कि क्या बुरा है क्योंकि दोनों पक्षों का ज्ञान उसी विज्ञान के अंतर्गत है। इन चिंतनों से मुझे बड़ा आनंद हुआ और मैंने सोचा कि एनैक्सागोरस के रूप में मुझे अस्तित्व के कारण के संबंध में अपने मन के लायक एक शिक्षक मिल गया है और मैं यह आशा करता था कि वह पहले मुझे यह बताएगा कि पृथ्वी चपटी है या गोल है, फिर वह यह बताएगा कि उसका कारण और आवश्यकता क्या है और फिर यह बताएगा कि क्या सर्वोत्तम है और धरती के लिए वह आकार क्यों सर्वोत्तम है ? यदि वह यह कहते कि पृथ्वी विश्व के मध्य-स्थल में है, तो मैं यह सोचता था कि वह इस बात की व्याख्या करेंगे कि यही उसके लिए सर्वोत्तम है। और यदि वह मुझ से यह स्पष्ट कर देता तो मैं इस बात के लिए तैयार था। मैं और किसी प्रकार का कारण न ढूंढता। इसी प्रकार से मैं सूर्य, चंद्र और सितारों के संबंध में, उनकी तुलानात्मक गति और घूर्णनों तथा पृथ्वी के संबंध में जानना चाहता था और यह सुनना चाहता था कि उनमें से प्रत्येक का कार्य क्या है और उस पर क्रिया कैसे हो सकती है। मैं कभी यह नहीं सोचता था कि

जब वह यह कहते हैं कि वस्तु मन से व्यवस्थित है, तो वह उनकी वर्तमान स्थिति के संबंध में इसके सिवाय कोई युक्ति देंगे कि ऐसा होना उनके लिए सर्वोत्तम है। मैं यह सोचता था कि वह हर वस्तु का कोई कारण बताएंगे और वह विश्व का भी कारण बताएंगे। उसके बाद मुझे यह बताएंगे कि हर वस्तु के लिए सर्वोत्तम क्या है और सब की सामान्य भलाई क्या है। मैं एक बहुत बड़े सौदे के लिए अपनी आशाओं को बेचता। मैंने उनकी पुस्तकों को बड़ी व्यग्रता से लिया और उन्हें जितनी भी जल्दी हो सका पढ़ गया ताकि मुझे यह मालूम हो कि क्या सर्वोत्तम है और क्या सर्वाधम है।

पर मेरे मित्र, मेरी सारी ऊंची आशाएं टकराकर चूर-चूर हो गई। ज्यों ज्यों मैं पढ़ता गया, मैंने यह देखा कि लेखक ने मन का कहीं इस्तेमाल ही नहीं किया और उसने वस्तुओं की व्यवस्था का कोई कारण नहीं बताया। उनके कारण थे—वायु, व्योम, जल और इसी प्रकार की बहुत-सी अजीब चीजें। मैंने सोचा कि वह उस आदमी की तरह है जो यह कह कर शुरू करता है कि सुकरात जो कुछ भी करते हैं मन से करते हैं, पर जब मेरी हर क्रिया का कारण बताता है तो वह और ही कारण देता है। जैसे मैं यहां बैठा हूं तो वह कहता है कि मेरा शरीर हड्डियों और पेशियों से बना है; हड्डियां कड़ी हैं और जोड़ों के द्वारा एक-दूसरे से अलग हैं, पेशियों को कड़ा या ढीला किया जा सकता है। मांस और चर्म के साथ वे एकाकार बनी हुई हैं। वे हड्डियों को ढके हुए हैं। इस प्रकार हड्डियों को अपने कोटरों में हिलाने से पेशियों का प्रसारण और संकुचन मेरे लिए यह संभव करता है कि मैं अपने अंगों को नीचा करूं और यही कारण है कि मैं इस वक्त पैर मोड़ कर बैठा हूं। इसी प्रकार से, हम क्यों बात कर रहे हैं, वह इसकी भी व्याख्या करेंगे। वह कंठस्वर के कारण के रूप में हवा की बात करेंगे और सुनने तथा सैकड़ों ऐसी वस्तुओं को कारण रूप में बताएंगे पर वह वास्तविक कारण बताना भूल जाएंगे। चूंकि एथेन्सवासियों ने मुझे सजा दी है, मैंने यह उचित समझा कि वे जो भी सजा दें; उसे मैं झेलूं। मिस्र के कुत्ते की कसम ! मैं यह सोचता हूं कि ये पेशियां और हड्डियां बहुत पहले ही मेगारा या बीटियां में होतीं। मैं यह नहीं सोचता कि भाग कर बचने के बजाय मेरे लिए यह ज्यादा सम्मानजनक होगा कि राज्य जो भी सजा दे उसे मैं वरण करूं, पर इनका कारण बताना बहुत ही अजीब बात होगी। यदि यह कहा जाए कि हड्डियों, पेशियों तथा शरीर के दूसरे भागों के बिना मैं अपने संकल्प को कार्य-रूप में परिणत नहीं कर सकता था, तो वह सच्ची बात होगी। पर यह कहना कि जो कुछ मैं कर रहा हूं, उसके कारण वे हैं और इस प्रकार से मैं मन के द्वारा परिचालित हूं और सर्वोत्तम क्या है, इससे मैं परिचालित नहीं हूं, तो वह तर्क या बातचीत बहुत ही सड़ी-गली और ऊलजलूल मानी जाएगी। इसका साफ मतलब यह हुआ कि असली कारण को गड़बड़ाया जा रहा हैं। भीड़ के लोग अंधेरे में टटोलते हुए इसी तरह का कारण बताते हैं और इस प्रकार वह उसे वह नाम देते हैं, जो इसे प्राप्य नहीं है। इस प्रकार से एक व्यक्ति पृथ्वी को भंवर से घिरी कहता

है और आकाश को उसे कायम रखने के लिए मजबूर कहता है। दूसरा यह कहता है कि धरती एक चपटी थाली की तरह है और इस तर्क का समर्थन हवा के रूप में करता है, पर वे कभी इन चीजों में संलग्न शक्ति को नहीं देखते कि वह शक्ति उनके लिए सर्वोत्तम रूप से चलती है और न वे यह सोचते हैं कि इस प्रकार की शक्ति दिव्य बल से मंडित है। वे एक प्रबल और अमर एटलस की कल्पना करते हैं, जो सारे संसार को धारण करने में समर्थ है। वे कभी एक मुहूर्त के लिए भी यह कल्पना नहीं करते कि भलाई को बांधनेवाली शक्ति ही वास्तविक रूप से चीजों को बांधती और उन्हें एक साथ बनाए रखती है। इस प्रकार के आदि कारण की प्रकृति क्या है, मैं इसे खुशी से किसी भी व्यक्ति से जानना चाहूंगा। पर मैं इसे स्वयं जानने या किसी दूसरे से शिक्षा प्राप्त करने में पूर्णतः असफल रहा। फिर भी मेरे धनुष में एक दूसरी रस्सी थी और शायद, सिबिस, आप यह चाहेंगे कि मैं इसका वर्णन करूं कि मैं किस प्रकार के कारण की तलाश में आगे बढ़ा?

सिबिस ने कहा, मैं सचमुच इसे जानना चाहूंगा।

वह कहते चले गए, जब मैंने वास्तविक सत्ता के विषय में खोज करना छोड़ दिया, तो मैंने सोचा कि ग्रहण के समय सूर्य की तरफ देखते समय जिस तरह से लोगों को कष्ट होता है, उस तरह से मुझे कोई कष्ट न हो। ऐसे समय में वे यदि सूर्य के बिंब को पानी में या किसी ऐसे माध्यम से न देखें, तो उनकी दृष्टि-शक्ति नष्ट हो सकती है। यही खतरा मुझे उत्पन्न हुआ। मैं डर गया कि यदि मैं अपनी खोज के दौरान वस्तुओं की तरफ देखूं, तो मेरी आत्मा बिल्कुल अंधी हो सकती है और मैं इन्हीं ज्ञानेंद्रियों से उन्हें समझने की चेष्टा करने लगा। इसी से मैंने यह सोचा कि मुझे धारणाओं की शरण में जाना चाहिए।[1] मैंने उन्हीं के जरिए अस्तित्व के सत्य की जांच की। शायद मैं जो उदाहरण दे रहा हूं, वह बहुत साफ नहीं है। मैं यह मानने को तैयार नहीं हूं कि जो धारणाओं के जरिए अस्तित्व की परीक्षा करते हैं, वे महज बिंबों से कारोबार कर रहे हैं, और वे उससे कुछ भिन्न नहीं हैं, जो इंद्रियग्रह्य पदार्थों में अभिव्यक्त वस्तुओं की जांच करते हैं। जो कुछ भी हो, मैंने इस तरह से आरंभ किया। मैंने हर मामले में वह सिद्धांत मान लिया जो उस क्षेत्र में सबसे तगड़ा लगा, फिर मैंने उसे चाहे वह कारण के क्षेत्र का हो या और कुछ हो, सत्य करके माना जो उसके साथ तालमेल खाता था और उसे असत्य करके माना, जो उससे तालमेल नहीं खाता था। मैं अपने वक्तव्य को और भी स्पष्ट करना चाहूंगा। मैं समझता हूं कि आपने मुझे अब तक नहीं समझा।

---

1. वर्तमान विचार का मनुष्य के मन में जो अपूर्ण बिंब पड़ता है, उसी को धारणा बताया गया है। इसी के संबंध में अफलातून ने अलग अध्याय में बातचीत की है। देखिए पहले 74-ए आदि, 'रिपब्लिक' 507 ए आदि।

सिबिस ने कहा, सच्ची बात है, मैं अच्छी तरह नहीं समझा।

सुकरात ने कहा, मैं कोई नयी बात पेश नहीं कर रहा हूं। वही बात कह रहा हूं, जिसे मैंने आज और पहले भी कहा है। मैं आपको यह बताने की चेष्टा कर रहा हूं कि किस प्रकार के कारणों पर मैंने काम किया है और तब मैं लौटकर उस बात पर आऊंगा जिसके संबंध में मैंने अक्सर बातचीत की है। मैं इस बात को मान कर चलूंगा कि निरवच्छिन्न सौंदर्य, निरवच्छिन्न उत्तमता और निरवच्छिन्न महत्ता इत्यादि वर्तमान है। यदि आप इस बात को मान लेते हैं और इस प्रकार की निरवच्छिन्नता को स्वीकार करते हैं, तो मैं यह आशा करता हूं कि मैं यह देख सकूंगा कि कारण क्या है। और मैं यह प्रमाणित कर दूंगा कि आत्मा अमर है।

सिबिस ने कहा, आप यह मान ले सकते हैं कि मैं इसे स्वीकार करता हूं। अब आप अपना प्रमाण दीजिए।

सुकरात ने कहा, तो मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं, क्या आप उससे सहमत हैं ? मुझे ऐसा लगता है कि निरवच्छिन्न सौंदर्य के अलावा यदि कोई वस्तु सुंदर है, तो यह केवल इस कारण है कि यह निरवच्छिन्न सौंदर्य की भागीदार है और यही बात इस प्रकार के सभी लक्षणों के विषय में मैं कहता हूं। क्या आप इस प्रकार के कारणों को मानते हैं ?

सिबिस ने उत्तर दिया, मैं मानता हूं।

सुकरात ने कहा, बुद्धिमतापूर्ण अन्य कारण क्या हैं, उन्हें न तो मैं मानता हूं और न मैं स्वीकार ही करता हूं। यदि मुझे बताया जाता है कि कोई वस्तु इसलिए सुंदर है कि उसका रंग ऐश्वर्यशाली है, आकार अच्छा है इत्यादि, तो मैं उसकी तरफ ध्यान नहीं देता, क्योंकि इस प्रकार की भाषा से मेरा बोध गड़बड़ा जाता है और सरल, सादे और शायद मूर्खतापूर्ण ढंग से मैं यह मानता हूं कि वस्तु इसलिए सुंदर है क्योंकि उसमें निरवच्छिन्न सौंदर्य—उसे चाहे जो नाम दीजिए—मौजूद है या उसका संचार है। मैं संचार की प्रकृति पर यहां जोर देना नहीं चाहता, पर जिस संबंध में मैं बिल्कुल निश्चित हूं, वह यह है कि निरवच्छिन्न सौंदर्य से ही सारी सुंदर चीजें सुंदर होती हैं। मैं अपने को या किसी दूसरे को जो सबसे निरापद उत्तर दे सकता हूं, वह यही है। मैं विश्वास करता हूं कि यदि मैं इस परिभाषा पर खड़ा रहूं, तो मैं कभी गलती नहीं करूंगा। मेरे लिए और मेरे लिए ही क्यों, यह किसी दूसरे के लिए भी, एक निरापद उत्तर है कि निरवच्छिन्न सौंदर्य से ही सुंदर चीजें सुंदर होती हैं। क्या आप ऐसा नहीं समझते ?

समझता हूं।

फिर यह भी है कि आकार से ही बड़ी चीज बड़ी और वृहत्तर वस्तु वृहत्तर और क्षुद्रता से ही क्षुद्रतर चीज क्षुद्रतर होती है। है कि नहीं ?

हां।

यदि आपसे यह कहा जाए कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से एक सिर ऊंचा है

और नाटा आदमी एक सिर से नाटा है, तो आप इस वक्तव्य में कुछ नहीं पाएंगे। आप यह प्रतिवाद करेंगे कि जो वृहत्तर है, वह आकार में वृहत्तर है और आकार ही उसके वृहत्तर होने का कारण है और इसी प्रकार से क्षुद्रतर क्षुद्रता के कारण क्षुद्रतर है और क्षुद्रता ही उसके क्षुद्रतर होने का कारण है। आप यह कहने में इसलिए झिझकेंगे कि एक आदमी एक सिर से लंबा या नाटा है कि कहीं आपको यह जवाब न मिले कि पहली बात यह है कि वृहत्तर वृहत्तर है और क्षुद्रतर उसी कारण से क्षुद्रतर है। दूसरी बात यह है कि वृहत्तर छोटी चीज से एक सिर से वृहत्तर है। यह बहुत ही आश्चर्यजनक है कि एक छोटी चीज के कारण एक आदमी वृहत्तर हो जाएगा। क्या आपको ऐसा डर नहीं होगा ?

सिबिस ने हंसते हुए कहा, हां, अवश्य डर होगा।

आप यह कहने से झिझकेंगे कि दस आठ से दो बड़ा है और दो ही इस बढ़ती का कारण है। आप यह कहेंगे कि संख्या की दृष्टि से दस आठ से बड़ा है और संख्या ही इस बढ़ती का कारण है। ठीक इसी प्रकार से आप यह कहने से झिझकेंगे कि दो हाथ लंबी वस्तु की तुलना में एक हाथ लंबी वस्तु उससे आधी है और इसमें आकार की बात नहीं बल्कि बात है लंबाई की। है यह बात कि नहीं ?

हां, अवश्य।

फिर आप देखें कि आप यह कहने से झिझकेंगे कि यदि एक में एक जोड़ा जाता है, तो जोड़ के कारण ही दो बनता है या यदि एक का विभाजन होता है, तो भाग ही उसका कारण है। आप इस पर बहुत जोरदार प्रतिवाद करेंगे कि आप कोई ऐसा उपाय नहीं जानते जिसके द्वारा एक वस्तु उत्पादित हो सकती है, सिवाय इसके कि उसके सार भाग में भाग लिया जाए। दो की उत्पत्ति में सिवा द्वित्व की निरवच्छिन्न धारणा में भाग लेने के आप कोई कारण नहीं बता सकते और सारी चीजें जो दो होंगी वे द्वित्व में भागीदार हैं, जबकि जो चीज एक होगी वह एकता की धारणा में भागीदार होगी। आप इन भागों, गुणाओं और इसी प्रकार सूक्ष्मताओं को अपने से अधिक बुद्धिमान लोगों पर छोड़ देंगे। जैसाकि कहा जाता है, आप अपनी छाया और अज्ञता से डर जाएंगे और हमारे सिद्धांत की निरापदता से चिपके रहकर अपना उत्तर देंगे। पर यदि कोई इस सिद्धांत पर ही चोट करे, तो आप उसकी परवाह नहीं करेंगे और उसका तभी उत्तर देंगे, जब आपको इस सिद्धांत का ब्योरा देना पड़ेगा। आप उसको उसी प्रकार से किसी और सिद्धांत को मानकर, जिसे आप उच्चतर सिद्धांतों में सबसे बलिष्ठ मानते हैं, ब्योरा देंगे और इस प्रकार से आप चलते जाएंगे जब तक कि आप एक संतोषजनक विश्रामस्थल पर न पहुंच जाएं। यदि आप वास्तविक रूप से अस्तित्व के संबंध में कुछ जानना चाहते हैं, तो आप अपने तर्क में प्रथम सिद्धांत और उसके परिणामों को गड़बड़ा नहीं देंगे, जैसाकि शास्त्रार्थ करनेवाले लोग गड़बड़ा देते हैं। संभव है ऐसा व्यक्ति इस पर एक शब्द या एक विचार भी खर्च करना न चाहे क्योंकि

अव्यवस्थित तर्क के बावजूद वे यथेष्ट चालाक हैं कि वे अपने को पूर्ण रूप से संतुष्ट नहीं करना चाहते। पर मैं समझता हूं कि आप दार्शनिक हैं और इस नाते, जैसा मैं कह रहा हूं, वैसा ही करेंगे।

इस पर सिम्मियास और सिबिस दोनों ने एक साथ कहा, सत्य वचन है।

एचेक्राटिस–फीडो, और वे सही थे। मैं समझता हूं कि अत्यंत जड़मति के लिए भी उसकी युक्ति बड़ी ही आश्चर्यजनक है।

फीडो–यही बात है एचेक्राटिस। जो भी लोग वहां पर मौजूद थे, वे ऐसा ही सोचते थे।

एचेक्राटिस–और जो वहां नहीं थे, पर उनकी कहानी सुन रहे हैं, वे भी ऐसा ही समझेंगे। अब बताइए कि इसके बाद तर्क किस तरह चले ?

फीडो–उन लोगों ने यह मान लिया था कि निरवच्छिन्न विचारों का अस्तित्व है और ऊपर प्रकट होनेवाला दृश्य उन विचारों में भाग लेकर उन विचारों के नाम ग्रहण करता है।

सुकरात इसके बाद पूछने लगे, यदि आप यह कहते हैं कि सिम्मियास सुकरात से लंबे हैं और फीडो से नाटे हैं, तो क्या आप यह नहीं कहते कि सिम्मियास में लंबाई और नाटापन दोनों मौजूद हैं।

अवश्य।

सुकरात ने कहा, पर आप यह मानते हैं कि सिम्मियास सुकरात से लंबे हैं, बिल्कुल सही नहीं है। सिम्मियास वास्तविक रूप से दीर्घतर नहीं हैं कि वह सिम्मियास हैं बल्कि उनकी तुलानात्मक लंबाई के कारण ऐसा है। अतः वह सुकरात से इसलिए दीर्घकाल नहीं हैं कि सुकरात सुकरात हैं बल्कि इसलिए कि सिम्मियास से लंबाई की तुलना में सुकरात छोटे हैं।

सही बात है।

और सिम्मियास फीडो से इसलिए नाटे नहीं हैं क्योंकि फीडो फीडो हैं बल्कि फीडो की ऊंचाई की तुलना में सिम्मियास की छोटाई देखी गई, तभी इसका आभास हुआ।

यही बात है।

तो इस प्रकर सिम्मियास को लंबा तथा साथ ही नाटा दोनों कहा गया है जबकि वह दोनों के बीच में हैं। वह अपनी ऊंचाई की बढ़ती के कारण एक की छोटाई से ऊंचे हैं और अपनी छोटाई के कारण दूसरे के सिर पर लंबा होने का सेहरा बंधता है। सुकरात ने हंसते हुए कहा कि आप सोचते होंगे, मेरी भाषा सहीपन और औपचारिकता की दृष्टि से एक कानूनी अभिलेख की तरह है, पर मैं सोचता हूं कि स्थिति वही है जैसी कि मैं कहता हूं।

वह इस बात पर सहमत हो गए।

मैं इसे इसलिए कहता हूं क्योंकि मैं चाहता हूं कि आप उसी तरह सोचें जैसे

में खुद सोचता हूं। मुझे ऐसा लगता है कि निरवच्छिन्न महत्ता कभी एक साथ छोटी और बड़ी नहीं होगी बल्कि हम में जो बड़ाई है, उसमें छोटाई नहीं समाती। वह उसके आगे नहीं जाती। दोनों वस्तुओं में से एक बात होगी—या तो जो वृहत्तर है, वह हार मानेगा और अपने विपरीत क्षुद्रतर के आने पर दौड़ जाएगा और या वह समाप्त हो जाएगा। वह लोहा नहीं ले सकता और क्षुद्रता को ग्रहण नहीं कर सकता। वह जो है, उससे अलग नहीं हो सकता। मैं अपने स्थान पर खड़ा हूं और क्षुद्रता को ग्रहण करता हूं और वही क्षुद्र आदमी रहता हूं जैसाकि मैं था। पर महत्ता क्षुद्र होना सहन नहीं कर सकती क्योंकि वह महत है। फिर उसी प्रकार से कहा जाएगा कि हम में क्षुद्रता कभी न तो फबेगी और न वृहत होगी, न कोई विपरीत होगा, और वह वही रहेगा जैसाकि वह था। और जो कुछ वह था उसके विपरीत होगा या रहेगा—या तो वह चला जाएगा या यह परिवर्तन में समाप्त हो जाएगा।

सिबिस ने कहा, बिल्कुल यही बात मैं सोचता हूं।

इस पर किसी ने, मुझे याद नहीं है कौन, यह कहा—पर क्या यह उसी बात की बिल्कुल उलटी बात नहीं है जिस पर हमने तर्क करते हुए इससे पहले सचाई की छाप लगा दी थी। वह यह है कि वृहत्तर क्षुद्रतर से उत्पन्न होता है और विपर्यय विपर्ययों से उत्पन्न होता है। पर अब ऐसा लगता है कि इसी से इनकार किया जा रहा है।

सुकरात ने बोलनेवाले की तरफ मुंह करके सुना। उन्होंने कहा, बहुत अच्छी बात है और बड़े साहस के साथ कही गई है। पर आपने दोनों कथनों के बीच के फर्क पर ध्यान नहीं दिया। उस समय मैंने जो कुछ कहा था, वह यह था कि एक स्थूल पदार्थ अपने विपर्यय से पैदा होता है। इस समय मैं जो कुछ कह रहा हूं, वह यह है कि निरवच्छिन्न विपर्यय कभी भी अपना ही विपर्यय नहीं बन सकता—भले ही वह हम में हो या प्रकृति में। उस समय हम उन वस्तुओं की बात कर रहे थे जिनमें विपर्यय निहित हैं और हमने उन-उन विपर्ययों के अनुसार उनका नामकरण किया था। पर अब हम सीधे विपर्ययों के विषय में ही बात कर रहे हैं, जिनके अंतर्गत तत्वों से वस्तुओं को उनके नाम प्राप्त होते हैं; और वे कभी एक दूसरे से उत्पन्न नहीं होंगे। इसी के साथ वह सिबिस की तरफ उन्मुख हुए और पूछा, सिबिस, क्या उन की आपत्ति से आपको किसी प्रकार संदेह हुआ ?

सिबिस ने उत्तर दिया, नहीं। मैं यह कठिनाई महसूस नहीं करता। पर मैं यह अस्वीकार नहीं करूंगा कि बहुत-सी अन्य बातें मुझे उलझा रही हैं।

सुकरात ने कहा, तो हम इस विषय पर सहमत हैं कि विपर्यय कभी अपना विपर्यय नहीं हो सकता।

नहीं, कभी नहीं।

सुकरात ने कहा, अब फिर से बताइए कि क्या आप मुझसे इस बात में सहमत हैं ? क्या ऐसी वस्तुएं नहीं हैं, जिन्हें आप उत्ताप और शीत कहते हैं ?

हां।

क्या वे बर्फ और आग ही हैं ?

नहीं, अवश्य नहीं।

उत्ताप आग से अलग है और शीत बर्फ से अलग है ?

हां।

पर जैसाकि हमने विचार किया, मैं समझता हूं कि आप यह नहीं ही सोचते होंगे कि बर्फ अपने में उत्ताप समाकर बनी रह सकती है और वही बनी रह सकती है जो वह थी यानी बर्फ और गर्मी : या तो उत्ताप की निकटता पर बर्फ लुप्त या नष्ट हो जाएगी।

सही बात है।

इसी प्रकार ठंडक के पास आने पर आग या तो पीछे हट जाएगी या नष्ट हो जाएगी। यह कभी ठंड को ग्रहण करना बरदाश्त नहीं करेगी और वह जो थी, वही रहेगी यानी ऐसा न होगा कि वह एक साथ आग भी हो और ठंडक भी ?

सच्ची बात है।

तो कुछ चीजों के विषय में यह सत्य है कि विचार को हमेशा अपना निर्दिष्ट नाम प्राप्त करने का अधिकार होता है और इतना ही नहीं, कुछ विचारेतर तत्व भी जो उस विचार का आकर ग्रहण किए हैं, उसी नाम के भागीदार हो जाते हैं। शायद मैं जो कुछ कह रहा हूं वह एक उदाहरण से स्पष्ट हो जाए। फुट संख्या को हमेशा फुट ही कहा जाएगा। है कि नहीं ?

हां, अवश्य।

तो मेरा प्रश्न यह है कि क्या फुट इस नाम की एकमात्र वस्तु है ? या इसके अलावा भी कोई वस्तु है, जो फुट से भिन्न है और जिसे हमेशा यह नाम अपने नाम के साथ प्राप्त होगा क्योंकि उसकी प्रकृति ऐसी है कि वह कभी फुटत्व से वियुक्त नहीं होती ? मैं जो कुछ कह रहा हूं, उसके बहुत से उदाहरण हैं। उनमें से एक को लें। संख्या तीन को लें और उस पर विचार करें। क्या आप यह नहीं सोचते कि हम हमेशा इसे फुट संख्या ही कहेंगे और साथ ही इसका अपना नाम भी है यद्यपि फुट और तीन की संख्या एक बात नहीं है। फिर भी तीन की संख्या की प्रकृति और पांच की संख्या की प्रकृति तथा जितनी भी अन्य संख्याएं हैं, उनमें से आधी की प्रकृति ऐसी है कि उनमें से हरेक फुट है, यद्यपि उनमें से कोई भी फुट के साथ बिल्कुल भिन्न नहीं है। इसी प्रकार से संख्या दो, संख्या चार और अन्य संख्याओं की दूसरी शृंखला को लिया जाए। क्या उनमें से हरेक जोड़ा नहीं है, यद्यपि वे फुट से अलग हैं ? आप इसे मानते हैं कि नहीं ?

हां, अवश्य।

तो देखिए, मैं आपको क्या दिखाना चाहता हूं। केवल विपर्यय विचार में उनके

विपर्यय विचार समा नहीं सकते। यह बात नहीं। ऐसी वस्तु भी, जो विपर्यय नहीं है पर उसमें हमेशा विपर्यय वर्तमान है, ऐसा लगता है मानो उसमें जो विचार है उसके विपर्यय विचार उसमें समा नहीं सकते। वे या तो उसके पास आने पर नष्ट हो जाते हैं या पीछे हट जाते हैं। क्या हम ऐसा नहीं कहेंगे कि तीन की संख्या जोड़ा होने के पहले ही नष्ट हो जाएगी ?

सिबिस ने कहा, हां, अवश्य।

सुकरात ने कहा, फिर भी संख्या दो संख्या तीन का विपर्यय नहीं है।

नहीं, बिल्कुल नहीं।

तो केवल निरवच्छिन्न विचार ही ऐसे नहीं हैं, जो अपने विपर्ययों के पास आना बरदाश्त नहीं करते, कुछ और भी चीजें हैं, जो उस प्रकार के पास आने को सहन नहीं करतीं।

बिल्कुल सही है।

सुकरात ने कहा, यदि हम से हो सके, क्या हम यह पता लगाएं कि उनकी प्रकृति क्या है ?

अवश्य।

सिबिस, क्या वे वह चीजें न होंगी, जो विपर्यय को अपने में समेटती हैं बल्कि किसी और विपर्यय के भी विचार को समेटती हैं ?

आपका मतलब क्या है ?

मेरा मतलब वही है जो मैं अभी कह रहा था। आप जानते हैं कि तीन का विचार चाहे जो कुछ भी हो, वह तीन भी है और साथ ही फुट भी है।

अवश्य।

उस हालत में हम यह कहते हैं : उस स्वरूप का विपर्यय विचार, जिससे यह परिणाम उत्पन्न होता है, कभी उस वस्तु तक नहीं पहुंचेगा।

अवश्य नहीं।

पर क्या फुट का विचार इसे उत्पन्न करता है ?

हां।

क्या जोड़े का विचार फुट के विचार का विपर्यय है ?

हां।

तो जोड़े का विचार कभी तीन में नहीं रहेगा ?

कभी नहीं।

इसी प्रकार से तीन का जोड़े में कोई भाग नहीं है।

कोई नहीं।

तो तीन की संख्या अ-जोड़ा है ?

हां।

जो वस्तुएं विपर्यय होते हुए भी विपर्ययों को सहन नहीं करतीं, उनकी जो परिभाषा मैंने देनी चाही थी, उनके संबंध में मैं कह चुका। इस प्रकार से हमने यह देखा कि संख्या तीन जोड़े को अपने पास आने नहीं देती यद्यपि वह जोड़े का विपर्यय नहीं है, पर वह हमेशा जोड़े के विपर्यय को अपने साथ रखती अवश्य है। इस प्रकार से संख्या दो फुट को पास आने नहीं देती और न आग ठंडक को, इत्यादि। क्या आप मुझसे सहमत हैं कि विपर्यय न केवल विपर्यय को अपने पास फटकने नहीं देता बल्कि इसके साथ यह भी है कि जो भी वस्तु अपने साथ उस वस्तु के विपर्यय को ले आती है, वह कभी भी विपर्यय को सहन नहीं करती। अब मैं फिर से आपको याद दिलाऊं। पुनरावृत्ति में कोई हानि नहीं है। चार के अंदर जोड़े का विचार नहीं आता और पांच की दुगुनी संख्या दस में फुट का विचार नहीं समाता। वह स्वयं एक विपर्यय नहीं है। फिर भी यह फुट के विचार को अपने में नहीं आने देती। इसी प्रकार से डेढ़, आधा और इसी प्रकार की दूसरी संख्याएं पूर्णांक के विचार को आने नहीं देतीं और न ऐसी संख्याएं जैसे 1/3 किसी पूर्णांक को पास आने देती हैं। क्या आप इससे सहमत हैं ?

उन्होंने कहा, मैं आपकी बात समझ रहा हूं और आपसे पूर्णतः सहमत हूं।

सुकरात ने कहा, अब फिर से शुरू कीजिए और मेरा जवाब दीजिए। मेरा अनुकरण कीजिए, मुझे मेरे प्रश्न की शब्दावली में उत्तर न दीजिए। मेरा मतलब यह है कि वह पहले वाला निरापद उत्तर न दीजिए, जिसका हम पहले ही जिक्र कर चुके हैं। क्योंकि मैं निरापदता का एक और मार्ग देख रहा हूं जो, हम जो कुछ कहते रहे हैं, उसका परिणाम है। यदि आप मुझसे पूछें कि शरीर में क्या होना चाहिए, जिससे कि वह गर्म हो, तो मैं अपना वह पुराना निरापद तथा मूर्खतापूर्ण उत्तर नहीं दूंगा और यह नहीं कहूंगा कि यह गर्मी है। मैं इससे और सूक्ष्म उत्तर दूंगा—जो हम लोगों की बातचीत से निकलता है—और उत्तर में कहूंगा, अग्नि। यदि आप मुझसे पूछेंगे कि शरीर में ऐसा क्या तत्व होना चाहिए जिससे कि यह बीमार हो, तो मैं यह नहीं कहूंगा कि इसका उत्तर बीमारी है बल्कि मैं कहूंगा कि उत्तर ज्वर है। इस प्रकार यदि आप यह पूछें कि संख्या में वह कौन-सा तत्व होना चाहिए, जिससे कि वह फुट हो जाए तो मैं यह नहीं कहूंगा कि उसमें फुटत्व चाहिए बल्कि मैं कहूंगा कि एकत्व चाहिए। दूसरे प्रश्नों का भी इस प्रकार उत्तर समझ लीजिए। क्या आप मेरी बात को साफ-साफ समझ गए ?

उन्होंने कहा, अवश्य।

वह बोलने लगे, तो मुझे यह बताइए कि शरीर में वह कौन-सा तत्व होना चाहिए जिससे यह जीवित हो ?

उत्तर मिला, आत्मा।

क्या हमेशा यह बात सही है ?

उत्तर मिला, हां, निश्चय ही।

तो आत्मा हमेशा जिस चीज में भी निवास करती है, उसमें प्राण संचार करती है।

उत्तर मिला, निस्संदेह।

क्या जीवन का विपर्यय कुछ है या नहीं ?

है।

क्या है ?

मृत्यु।

और हम इस बात पर सहमत हो चुके हैं न कि आत्मा जो कुछ लाती है, वह कभी उसके विपर्यय को ग्रहण नहीं कर सकती।

इस पर सिबिस ने कहा, हां, अवश्य हम लोग यह मान चुके हैं।

तो यह बताइए कि हमने फुट के विचार में न समाने वाले विचार को क्या नाम दिया ?

अ-फुट।

इसी प्रकार जो अपने में न्याय या संगीत को नहीं समा सकता उसे हम क्या कहते हैं ?

अन्यायी और संगीत-विरोधी।

अच्छी बात है। उसे हम क्या कहते हैं, जो मृत्यु नहीं है ?

उसे अमर कहते हैं।

और आत्मा वह है जो मृत्यु को पास नहीं आने देती ?

हां।

तो आत्मा अमर है ?

हां है।

सुकरात ने कहा, अच्छी बात है। क्या हम इसे मान लें कि यह प्रमाणित हो गया ? आप क्या समझते हैं ?

हां, सुकरात। और बहुत यथेष्ट रूप से।

सुकरात ने कहा, अच्छी बात है। सिबिस, यदि फुट आवश्यक रूप से अविनाशी होता, तो तीन भी अविनाशी होता ?

हां, अवश्य।

यदि ठंडक आवश्यक रूप से अविनाशी होती, तो गर्मी लगने पर भी बर्फ निरापद और बिना गले रहती, वह नष्ट नहीं होती और वह गर्मी को अपने में समा कर मौजूद रहती।

सच बात है।

इसी प्रकार से मैं समझता हूं कि यदि उत्ताप अविनाशी होता, तो जब भी आग पर ठंडक का आक्रमण होता, तो आग नहीं बचती और नष्ट होती या वह निरापद रहती।

यही मतलब निकलता है।

और क्या हम अमर के संबंध में भी यही बात नहीं कह सकते। यदि अमर अविनाशी है, तो आत्मा मृत्यु के आने पर नष्ट नहीं हो सकती। हमने जो कुछ कहा, उससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वह कभी मृत्यु को अपने पास फटकने नहीं देगी या वह मृत्यु की स्थिति में नहीं होगी—जिस प्रकार तीन या फुट न तो कभी जोड़ा होगा या आग या गर्मी न कभी ठंडी होगी, ठीक उसी प्रकार जैसे फुट जोड़ा नहीं हो सकता। कहा जा सकता है कि फुट जोड़े के पास आने पर जोड़ा नहीं होता, पर जब फुट नष्ट हो चुका, तो क्या उसकी जगह पर जोड़ा नहीं आएगा ? हम इसके उत्तर में यह नहीं कहेंगे कि यह नष्ट नहीं होता क्योंकि अ-फुट अविनाशी नहीं है। यदि हम इस बात पर सहमत होते कि अ-फुट अविनाशी नहीं है, तो हम आसानी से यह कह सकते थे कि जोड़े के पास आने पर फुट और तीन चले जाते और यही बात हम आग, गर्मी और बाकी चीजों के संबंध में भी कह सकते। है न यही बात ?

हां अवश्य।

अब हम यदि इस बात पर सहमत हैं कि अमर माने अविनाशी है, तो आत्मा न केवल अमर है बल्कि वह अविनाशी भी है। नहीं तो हमें फिर दूसरे तर्क ढूंढ़ने पड़ेंगे।

उन्होंने कहा, नहीं। इस विषय के इस बिंदु का जहां तक संबंध है, तर्क की कोई जरूरत नहीं है। अगर अमर चिरंतन है, उसका विनाश नहीं हो सकता है, तो फिर क्या नहीं हो सकता ?

सुकरात ने कहा, सब लोग मानेंगे कि ईश्वर, जीवन का आवश्यक स्वरूप, और बाकी जो कुछ भी अमर है, वह कभी नष्ट नहीं होता।

उसने कहा, सभी आदमी ही नहीं, इसे सभी देवता भी मानेंगे। जो अमर है, वह अविनाशी है, तो अमर होने के नाते क्या आत्मा भी अविनाशी न होगी ?

अवश्य होगी।

तो ऐसा लगता है कि जब मृत्यु मनुष्य पर आक्रमण करती है, तो उसका नश्वर अंश नष्ट हो जाता है, पर उसका अमर हिस्सा मृत्यु से दूर होता जाता है और निरापद होता जाता है, उसका नाश नहीं होता।

उन्होंने कहा, तो, सिबिस, यह निर्विवाद है कि आत्मा अमर और अविनाशी है। हमारी आत्मा परलोक में मौजूद रहेगी।

उन्होंने उत्तर दिया, सुकरात, मुझे अब कोई आपत्ति नहीं है। आपकी युक्ति से हमें पूर्ण संतोष हुआ। यदि सिम्मियास या दूसरों को कुछ कहना है, तो उनके लिए यह अच्छा होगा कि वह अभी बात कर लें क्योंकि वह इस संबंध में कोई बात कहना या सुनना चाहें तो मैं नहीं जानता कि इस तर्क को और किस समय के लिए टाला जा सकता है।

सिम्मियास ने कहा, बिल्कुल ठीक है। अब मुझे भी आपके कथन पर कोई

संदेह नहीं रहा लगता। तब भी मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मन में कुछ संदेह रह गया है क्योंकि हमारी बातचीत का विषय बहुत विशाल है और मैं मनुष्य की दुर्बलता पर आस्था नहीं रखता।

सुकरात ने कहा, सिम्मियास, आपको हमारी मौलिक स्थापनाओं पर पुनर्विचार करना चाहिए, भले ही वे आपको बहुत निश्चित लगें। जब आप उनका विश्लेषण कर चुकें, तो मैं समझता हूं कि हम उस तर्क का अनुसरण वहां तक करेंगे, जहां तक कि मनुष्य के लिए ऐसा करना संभव है और जब उस प्रश्न का उत्तर आप पर स्पष्ट हो जाए, तो आप आगे कुछ भी नहीं चाहेंगे।

उन्होंने कहा, बिल्कुल सही बात है।

सुकरात ने कहा, तो मेरे मित्र, हमें इस बात पर चिंतन करना चाहिए। यदि यह सच है कि आत्मा अमर है, तो हमें उसकी न केवल उस अवधि तक, जिसे हम जीवन कहते हैं, सेवा करनी चाहिए बल्कि चिरकाल के लिए उसकी सेवा करनी चाहिए। स्पष्ट ही है कि अवहेलना के क्या खतरे हो सकते हैं। यदि मृत्यु सभी बातों से मुक्ति होती तो दुष्टों के लिए यह बहुत बड़े वरदान के रूप में होती क्योंकि मरने के बाद वे अपनी आत्मा और शरीर से साथ ही की हुई दुष्टता से वियुक्त हो जाते। पर अब हमने देख लिया कि आत्मा तो अमर है, पर बुराई से उसका एकमात्र त्राण है अधिक से अधिक पूर्ण और ज्ञानी बनने में। बात यह है कि आत्मा परलोक में अपनी शिक्षा और संस्कृति के अतिरिक्त कुछ नहीं ले जाती और कहा जाता है कि यही बात यात्रा के आरंभ में व्यक्ति के लिए सबसे बड़ा लाभ या सबसे बड़ी हानि है। यह कहा जाता है कि जिस देवदूत पर जीवन में व्यक्ति का भार था, वही हर व्यक्ति को मर जाने पर अपने साथ एक विशेष स्थान में ले जाता है। परलोक गए हुए व्यक्ति एकत्र होकर फल प्राप्त करते हैं और फिर वे निम्न जगत में अपने पथ-प्रदर्शक के साथ, जो उन्हें वहां ले जाने के लिए नियुक्त होते हैं, जाते हैं। जब उन्हें वहां अपना फल मिल जाता है और वह निर्दिष्ट समय तक रह कर फल भोग चुकते हैं, तो एक दूसरा पथ-प्रदर्शक युगों की लंबी संक्रातियों के बाद उन्हें फिर वापिस ले जाता है। इस प्रकार से यह यात्रा उसी प्रकार की नहीं है, जैसेकि ईशिलस ने टेलीफस में वर्णन किया है। वहां उन्होंने यह कहा है, "परलोक का रास्ता सरल है।" पर मेरा ऐसा विचार है कि यह मार्ग न तो सरल है और न एक क्योंकि यदि रास्ता एक होता तो पथ-प्रदर्शन की जरूरत क्यों होती ? इसलिए इस रास्ते की कई शाखाएं और कई मोड़ होंगे जैसाकि मैं पृथ्वी पर चालू समाधि के समय की क्रियाओं से समझता हूं।[1] व्यवस्थित और ज्ञानी आत्मा अपने नेता का अनुसरण करती है और उस संसार की वस्तुओं से अनभिज्ञ नहीं होती। पर जो आत्मा शरीर की भूखों से पीड़ित है, वह शरीर और दृश्यमान

1. जहां तीन रास्ते मिलते हैं, वहां पर निम्नतर जगत के देवताओं को चढ़ावा दिया जाता है।

जगत के इर्दगिर्द दीर्घकाल तक फड़फड़ाती रहती है। जैसाकि मैंने कहा है, वह हर रूप में बहुत कठिन द्वंद्व करती है और अंत में पथ-प्रदर्शक के द्वारा जबरदस्ती और इच्छा के विरुद्ध खींची जाकर उस स्थान पर पहुंचती है, जहां दूसरी आत्माएं हैं। यदि आत्मा अशुद्ध और कलुषित है, घृणित हत्याओं में संयुक्त रही है या उसने ऐसे अपराध किए हैं जो उन अपराधों में समतुल्य हैं, तो सारी आत्माएं जो वहां इकट्ठी हैं, उस आत्मा से बचती हैं, उससे मिलना नहीं चाहती और कोई आत्मा या पथ-प्रदर्शक उसका साथ नहीं चाहता है। वह बड़ी विपत्तियों में निर्दिष्ट काल तक भटकती रहती है, फिर उसे जबरदस्ती उस निवास में ले जाया जाता है, जिसके वह योग्य है। पर जिस आत्मा ने शुद्धता और संयम में अपना जीवन विताया है, उसके साथी और पथ-प्रदर्शक देवता होते हैं और वह योग्य स्थानों में निवास करती है। धरती पर बहुत से आश्चर्यजनक स्थान हैं, और जैसाकि एक मित्र ने मुझे बताया है, आत्माओं के उस स्थान के संबंध में धरती की प्रकृति या आकार से कोई धारणा नहीं बन सकती।

सिम्मियास ने कहा, सुकरात, आपका मतलब क्या है ? मैंने धरती के विषय में बहुत कुछ सुना है, पर मेरा कभी उस दृष्टिकोण से सावका नहीं पड़ा जिसके संबंध में आप दृढ़ मत रखते हैं। मैं उसके विषय में सुनना चाहूंगा।

सुकरात ने कहा, अच्छी बात है, सिम्मियास। मैं नहीं समझता कि उसका वर्णन करने के लिए ग्लाउकास के शिल्प की आवश्यकता है यद्यपि ग्लाउकास का शिल्प इसे सत्य प्रमाणित नहीं कर सकता। मैं निश्चित हूं कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। इसके अलावा, सिम्मियास, मैं यह जानता भी तो यह चर्चा इतनी वड़ी है कि इसके समाप्त होने के पहले ही मेरा जीवन समाप्त हो जाएगा। फिर वह यह पृथ्वी कैसी है और इसके इलाके कैसे हैं, इनका स्वरूप क्या है, इस संबंध में मुझे जो कुछ भी ज्ञात है, उसे बताने में कोई हर्ज नहीं है।

सिम्मियास ने कहा, बस इतना ही चाहता हूं। मैं विश्वास करता हूं कि पृथ्वी विश्व के मध्य एक गोल वस्तु है और इसे किसी शक्ति की आवश्यकता नहीं है। सर्वभागों में आकाश की एकरूपता तथा स्वयं धरती का संतुलन ही इसे बनाए रखने के लिए यथेष्ट है। जो वस्तु समस्वरूप वस्तुओं के बीच संतुलन में रखी गई है, वह किसी एक दिशा में अधिक या कम नहीं झुक सकती। यह पूर्ण रूप से संतुलित और स्थित रहेगी। यह पहली बात है जिस पर कि मैं विश्वास करता हूं।

सिम्मियास ने कहा, यही विश्वास है।

सुकरात ने कहा, मैं यह भी समझता हूं कि धरती बहुत बड़ी है और हम लोग जो फासिस और हैराक्लिस के स्तंभों के बीच रहते हैं, इसके एक छोटे भाग में ही रहते हैं और हम उसी प्रकार से समुद्र के इर्दगिर्द रहते हैं जैसेकि चींटियां और मेंढक एक दलदल के इर्दगिर्द रहते हैं। मैं समझता हूं कि बहुत से दूसरे लोग इस प्रकार के दूसरे स्थानों में अन्यत्र रहते हैं। वे पृथ्वी पर सर्वत्र हर आकार और नाप के बहुत से खोखले

हैं, जिनमें पानी, कोहरा और वायु एकत्र है। पर पृथ्वी स्वयं आकाश की पवित्रता से पवित्र है और यह आकाश कैसा है कि इसमें सितारे हैं। इसके संबंध में लोग आमतौर से व्योम शब्द का इस्तेमाल करते हैं। पृथ्वी के खोखलों में पानी, कुहरा और हवा एकत्र होकर तलछट बन जाता है। हम इन्हीं खोखलों में रहते हैं यद्यपि हम समझते हैं कि हम पृथ्वी के धरातल पर मौजूद हैं। हम एक ऐसे व्यक्ति की तरह हैं, जो समुद्र की गहराइयों में रहता है और यह सोचता है कि वह उसके धरातल पर है क्योंकि वह विश्वास करता है कि समुद्र ही आकाश है। वह पानी के जरिए से ही सूर्य तथा नक्षत्रों को देखता है। पर यह विश्वास बहुत ही कमजोर और शिथिल है और इस कारण वह पानी के धरातल पर पहुंच नहीं सकता और समुद्र के अंदर से अपना सिर नहीं उठा सकता। अपनी उस गहराई से उसने हमारा यह जगत देखा है जो कितना शुद्ध और सुंदर है, पर वह न तो इसे देख सकता है और न सुन ही सकता है। हम लोग हू-ब-हू इसी स्थिति में हैं। हम धरती के खोखले में रहते हैं और यह समझते हैं कि हम इसके धरातल पर रहते हैं। हम वायु को आकाश कहते और मानते हैं, जहां सितारे घूमते रहते हैं। पर यह सत्य है कि हम इतने कमजोर और मंदगति हैं कि हम हवा के धरातल को चीर कर नहीं जा सकते।[1] यदि कोई आदमी धरातल तक पहुंच सकता और पंख लगाकर ऊपर उड़ सकता, तो वह देखता कि एक ऐसा दूसरा जगत है, जैसेकि मछलियां समुद्र से उठकर हमारे जगत को देख लेती हैं। उस हालत में वह व्यक्ति जानता कि वास्तविक आकाश, वास्तविक आलोक और वास्तविक मिट्टी क्या है, बशर्ते कि उसकी प्रकृति उसे देखना बरदाश्त कर सकती। यह धरती, इसके पत्थर और इसके इलाके उसी प्रकार से भ्रष्ट और घर्षित हुए हैं, जिस प्रकार से समुद्र की चीजें नमक से कट जाती हैं। समुद्र में कोई मूल्यवान वस्तु पैदा नहीं होती और थोड़े में कहा जा सकता है कि वहां कोई भी त्रुटिहीन वस्तु नहीं है। पर जहां भी जमीन है, वहां केवल खोह, बालू और चिपचिप कीचड़ तथा काई के विशाल इलाके हैं, जिनकी तुलना पृथ्वी की सुंदर वस्तुओं से नहीं की जा सकती है। पर आप सोचेंगे कि उस दूसरे जगत की वस्तुएं हमारे जगत की वस्तुओं से कहीं श्रेष्ठ हैं। सिम्मियास, मैं आपको एक कहानी सुनाता हूं कि आकाश के नीचे इस धरती में क्या है ? यह कहानी सुनने लायक है।

सिम्मियास ने कहा, सचमुच हम आपकी कहानी बहुत खुशी से सुनना चाहेंगे।

सुकरात ने कहा, तो मेरे मित्र, मेरी कहानी यों है। पहली बात तो यह है कि यदि कोई मनुष्य ऊपर से इस धरती को देखे, तो उसे यह एक गोल पदार्थ की तरह लगेगी जो चमड़े के बारह टुकड़ों से ढंकी हुई है। इसमें कई रंग हैं। वे रंग ऐसे हैं

---

1. यह शांत्स में छोड़ दिया गया है।

जिनके संबंध में यह कहा जा सकता है कि हमारे कलाकार जिन रंगों का इस्तेमाल करते हैं, वे उसके नमूने हैं। सारी धरती उनसे ढंकी हुई है। यहीं नहीं, अन्य वस्तुओं से भी ढंकी हुई है, जो उनसे कहीं बढ़कर उज्जवल और विशुद्ध हैं। इसका एक हिस्सा बहुत ही आश्चर्यजनक रूप से सुंदर बेंगनी रंग का है, दूसरा हिस्सा सुनहरे रंग का है और इसकी सफेदी खड़िया मिट्टी या बर्फ से भी अधिक सफेद है।

यह उसी प्रकार के दूसरे रंगों तथा और भी अदृष्टपूर्व सुंदर रंगों से बनी है। जल और वायु से भरे हुए इसके खोखलों में भी एक तरह का रंग है और उनमें दूसरे दूसरे रंगों के जीव चमकते रहते हैं। नतीजा यह निकला कि यह एक अटूट और विचित्र धरातल के रूप में दिखाई देती है। इस सुंदर पृथ्वी पर जो कुछ भी पैदा होता है यानी पेड़, फूल, फल इत्यादि जो कुछ पैदा होता है, उसकी तुलना में बहुत सुंदर हैं। इस प्रकार से जो पहाड़ और पत्थर हैं, वे भी चिकनेपन, पारदर्शिता और रंग की दृष्टि से बहुत अच्छे हैं। इस संसार में जिन पत्थरों के टुकड़ों को हम कद्र की दृष्टि से देखते हैं यानी कर्नेलियन, जैस्पर और पन्ने आदि सब उनके सामने तुच्छ हैं। यही नहीं, वहां के सारे पत्थर हमारे कीमती पत्थरों की तरह हैं बल्कि सच तो यह है कि उनसे भी सुंदर हैं। इसका कारण यह है कि वे शुद्ध हैं और हमारे पत्थरों की तरह घिसे हुए और बिगड़े हुए नहीं हैं। हमारे खोखलों में जो नमक तथा तलछट जमा होता है, उससे उनमें कुरूपता और रोग पैदा होते हैं। वहां वैसा नहीं होता और इन पर प्राणी और पौधे स्वस्थ रहते हैं। इन सारी चीजों और सोना-चांदी आदि से वहां की वास्तविक मिट्टी सुसज्जित है और वे सारी वस्तुएं अपनी संख्या और आकार के कारण बहुत उभर कर सामने आती हैं। नतीजा यह है कि जो कोई भी उसे देखता है, उसे सुख मिलता है। इस पर बहुत से प्राणी रहते हैं और इसमें कुछ मनुष्य हैं, जो समुद्र से दूर रहते हैं, और कुछ हवा से घिरे टापुओं में रहते हैं जिस तरह से हम समुद्र के चारों तरफ रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो वे हवा का उसी प्रकार व्यवहार करते हैं, जैसे हम पानी और समुद्र का करते हैं और वे व्योम का वही प्रयोग करते हैं, जो हम हवा का करते हैं। उनके यहां मौसम का तापमान ऐसा है कि उसमें रोग नहीं लगता और वे लोग हमसे कहीं दीर्घजीवी होते हैं। दृष्टि, श्रवण और घ्राणशक्ति तथा अन्य अनुभूतियों की दृष्टि से वे हमसे उतने ही श्रेष्ठ हैं, जैसे वायु जल से शुद्धतर है और व्योम वायु से शुद्धतर है। इसके अलावा उनके यहां देवताओं के पवित्र स्थान और मंदिर हैं, जिनमें देवता सचमुच निवास करते हैं और वे देवताओं की आवाज तथा उनकी भविष्यवाणी सुनते हैं और उनका दर्शन करते हैं और सीधे-सीधे उनसे उनका संपर्क होता है। वे सूर्य, चंद्र और नक्षत्र को उनके असली रूप में देखते हैं और दूसरे मामलों में उनका सुख भी इसी अनुपात में है।

कुल मिलाकर पृथ्वी और जो कुछ भी इस पर है, उसकी यही प्रकृति है और धरती पर सर्वत्र खोखलों में बहुत से इलाके हैं। कुछ हमारे निवासस्थान की तुलना में

ज्यादा गहरे हैं और कुछ ज्यादा खुले हुए हैं। कुछ ज्यादा गहरे हैं और उनके मुंह संकीर्ण हैं और हमसे छिछले और पोढ़े हैं। ये सब खोखली धरती के नीचे बहुत-सी धाराओं के द्वारा संपृक्त हैं। धाराओं में से कुछ तो पतली और दूसरी काफी चौड़ी हैं। कुछ ऐसे रास्ते भी हैं जिनमें से होकर एक से दूसरी तरफ अथाह पानी बहता है। पृथ्वी के नीचे बहुत विशाल तथा कभी न सूखने वाली गर्म और ठंडे पानी की नदियां हैं। आग तथा आग की बड़ी नदियां, कीचड़ की कुछ साफ और पतली तथा कुछ गाढ़ी नदियां हैं। इनकी तुलना सिसली की लावा से पहले की कीचड़ और लावा की नदियों से की जा सकती है। जैसे-जैसे हर धारा बह कर खोखले के इर्दगिर्द आती है, वैसे-वैसे खोखल भर जाती है। पृथ्वी में एक प्रकार का आलोड़न है, जिससे धाराएं ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर की ओर जाती रहती हैं और यह आलोड़न निम्न प्रकार के प्राकृतिक कारणों से बनते हैं। पृथ्वी में एक खाई दूसरी सब खाइयों से बड़ी है और वह एक तरफ से निकल कर दूसरी तरफ निकल जाती है। कविवर होमर उसका इन शब्दों में वर्णन करते हैं : **दूर बहुत दूर जहां गहरी से गहरी गहराई पृथ्वी के नीचे हैं।**[1] और दूसरी जगह होमर तथा दूसरे कवियों ने इसे टार्टरस का नाम दिया है। सारी नदियां बहकर उसी खाई में पहुंच जाती हैं और सब उसी में से फिर निकलती हैं। उनमें से निकलती हुई हरेक नदी उसी जमीन की तरह हो जाती है और उसी में फिर निकलती है। इसका कारण यह है कि तरल पदार्थ का कोई पेंदा नहीं है, जिस पर कि वह विश्राम करे। इसलिए तरल पदार्थ आलोड़ित होता और ऊपर-नीचे जाता है और उसके चारों तरफ की हवा भी इसी तरह उतरती-चढ़ती रहती है। वे पृथ्वी की दूसरी तरफ तक आने-जाने में समय देती है, ठीक उसी प्रकार जैसेकि सांस लेने में हमेशा प्रश्वास और निःश्वास ये दो क्रियाएं चलती रहती हैं। वहां हवा पानी के साथ मिलकर निरंतर बहुत भयंकर और दुर्दांत धड़ाके उत्पन्न करती है। ऐसा इस कारण होता है कि हवा कभी बाहर निकलती है और कभी अंदर जाती है। जब पानी, जिसे हम पृथ्वी का निम्नतर भाग कहते हैं, उसमें बहुत तेजी के साथ जाता है, तो यह उन नदियों के इलाकों से होकर बहता है और उन्हें इसी प्रकार से भर देता है मानो उनमें पंप करके यह पानी भरा जा रहा हो। फिर जब पानी इन इलाकों से पीछे की ओर लौटता है तो फिर नदियां यहां भर जाती हैं और वे पृथ्वी की धाराओं में होकर बहती हैं और वे कई जगहों को जाती हैं और इस प्रकार से समुद्र, झील, नदी और चश्मे पैदा होते हैं। इसके बाद वे एक बार फिर पृथ्वी में डूब जाती हैं और बहुत से इलाकों में काफी घुमाव के बाद, और कुछ तो थोड़े ही घुमाव के बाद, फिर टार्टरस में जाकर मिल जाती हैं। कुछ तो उस बिंदु से नीचे जाकर गिरती हैं, जहां उनकी उत्पत्ति हुई थी और कुछ उससे भी नीचे मिलती हैं। पर वे सभी अपने उद्गम-स्थान से नीचे ही जाकर मिलती हैं। उनसे

1. इलियड 8, 14

कुछ फिर अपने प्रवेश-पथ की तरफ दौड़ निकलती हैं। बाकी विपरीत दिशा में जाती हैं। कुछ ऐसी हैं जो संपूर्ण रूप से पृथ्वी को घेर कर सांपों की तरह उसे लपेट लेती हैं। वे एक बार लपेटती हैं या कई बार ? फिर वे टार्टरस में यथासंभव नीचे पहुंच जाती हैं, वे दोनों तरफ से पृथ्वी के मध्यबिंदु में पहुंच सकती हैं, पर उससे आगे नहीं। उस बिंदु के बाद दोनों तरफ उन्हें ऊपर की तरफ बहना पड़ेगा।

ये धाराएं बहुत बड़ी और विविध हैं। पर ऐसी धाराओं में जो सबसे बड़ी और व्यापक हैं और सारी पृथ्वी की परिक्रमा करती हैं, ओशनस कहलाती हैं। प्रत्येक ओशनस के विपरीत और उसकी उलटी तरफ बहती हुई धारा ही एशरन है, जो मरुभूमियों में धरती के नीचे होकर तब तक बहती है, जब तक कि यह एचेरुसियन झील में नहीं पहुंच जाती। वहां मृत व्यक्तियों की आत्माएं आमतौर से जाती हैं और वहां निर्दिष्ट समय तक रहने के बाद, जो कुछ आत्माओं के लिए दीर्घतर होता है और कुछ के लिए ह्रस्वतर, इन्हें फिर प्राणियों के रूप में पैदा होने के लिए भेजा जाता है। तीसरी नदी इन दो नदियों के बीच में उत्पन्न होती है और इसके उद्‌गमस्थल के पास एक बहुत बड़ा आग वाला इलाका है। उससे हमारे समुद्र में बड़ा खोखल पैदा होता है, जिसमें पानी और कीचड़ बिलबिलाता है। इसके बाद वह नदी गंदी और कीचड़ भरी होकर, पृथ्वी के चारों ओर घूमने के बाद, एचेरुसियन झील के छोर पर आ जाती हैं। पर यह इस झील के पानी से मिलती नहीं और पृथ्वी के नीचे बहुत से घुमावों के बाद, यह टार्टरस के निम्नतर भाग में गिर पड़ती है। इसी नदी को लोग पाइरिफलरगथन कहते हैं और इसमें से कुछ अंश लावा की धाराओं में चला जाता है—चाहे ये धाराएं पृथ्वी में कहीं भी मिलें। चौथी नदी विपरीत दिशा में है। इसके संबंध में कहा जाता है कि यह पहले तो बहुत भयंकर और वन्य इलाके में गिरती है, जिसका रंग गाढ़ा नीला होता है। इसे स्टाइजीयन धारा कहते हैं और इसके पानी से जो झील पैदा होती है, उसका नाम स्टिक्स है। झील में गिरने के बाद तथा अपने पानी को अद्‌भुत शक्ति से परिपूर्ण कर लेने के बाद यह पृथ्वी में डूब जाती है और विपरीत दिशा में चलने के बाद पाइरिफ्लेगेथन में पहुंचती है। वह विपरीत दिशा के एचेरुसियन झील में फिर मिलती है। इसका भी पानी किसी और पानी में नहीं मिलता। यह एक वृत्त में बहती और पाइरिफ्लेगेथन के विपरीत टार्टरस में जाकर गिरती है। कवियों ने इसका नाम रखा है कोसीटस।

इन इलाकों की प्रकृति ऐसी ही है और जब मृत व्यक्ति उस स्थान पर देवदूत द्वारा लाया जाता है, तब उसकी जिंदगी अच्छी, पवित्र या इसके विपरीत जैसी भी रही हो, उसी के अनुसार फैसला सुनाया जाता है। जिनके जीवन न तो बहुत अच्छे थे, न बुरे, वे एशरन नदी में जाते हैं; और जो भी नाव मिल जाए, उस पर चढ़कर, वे उस झील में जाते हैं। वहां वे रहते हैं और उन्हें कृत पापों के लिए सजा दी जाती है और फिर वहां शुद्ध करके निर्दोष बना दिया जाता है। अच्छे कामों के लिए लोगों को

पुरस्कार दिए जाते हैं, पर जो लोग अपने पापों की भयानकता के कारण, बिल्कुल अचिकित्स्य मालूम होते हैं, जिन्होंने बहुत बड़े बड़े पाप किए हैं, घृणित और अवैध हत्याएं की हैं या इसी तरह के अन्य अपराध किए हैं, वे भाग्य के द्वारा उचित रूप से टार्टरस में फेंके जाते हैं। वे वहां से कभी नहीं निकलते। जिन लोगों ने बड़े पाप किए हैं, पर वे इतने बड़े नहीं हैं कि उसका प्रायश्चित न हो सके, उदाहरणस्वरूप जिन लोगों ने गुस्से में आकर मां-बाप पर हिंसा का प्रयोग किया है और फिर सारी जिंदगी उसके लिए अफसोस किया है या जिन लोगों ने अचानक किसी की हत्या कर डाली है, उन्हें भी टार्टरस में उतरना पड़ता है। पर जब वे वहां एक वर्ष रह लेते हैं, तो एक-एक लहर उन्हें उबारती है। हत्या करने वाले लोगों को कोकीटस की लहर अचानक उबारती है, पितृहंता तथा मातृहंता लोगों को पाइरिफ्लेगथन की लहर उबारती है। फिर वे एचेरूसियन झील तक ले जाए जाते हैं। वहां वे चिल्लाकर उनको पुकारते हैं, जिन्हें उन्होंने मारा है या जिनके साथ उन्होंने अन्याय किया है और तब वे यह प्रार्थना करते हैं कि उन्हें भी इस झील में आने दिया जाए और साथियों के रूप में उनका स्वागत हो। यदि उनकी प्रार्थना मानी जाती है, तो वे बाहर निकल आते हैं और उनके कष्टों का अंत हो जाता है। पर यदि प्रार्थना नहीं मानी जाती, तो वे वहां से निकाले नहीं जाते और उन्हें टार्टरस में वापस जाना पड़ता है। उनकी यह सजा तब तक खत्म नहीं होती, जब तक कि वे राजी नहीं हो जाते जिनकी हानि उन्होंने की है। बात यह है कि न्यायाधीशों ने उन्हें यही सजा दे रखी है। पर जो लोग अपने पवित्र जीवन के लिए ख्यात रहे हैं, वे इस संसार रूपी कारागार से मुक्त कर दिए जाते हैं और अपने शुद्ध निवासस्थान में पहुंच जाते हैं। वे पृथ्वी के धरातल पर रहते हैं। इनमें से जिन लोगों ने दर्शनशास्त्र के जरिए अपने को यथेष्ट शुद्ध कर लिया है, वे अब विदेह होकर रहते हैं और ऐसे लोग इनसे भी अच्छे और सुंदर निवासस्थान में जाते हैं, जिनका आसानी से वर्णन नहीं किया जा सकता और जिनके संबंध में इस समय बोलने का मेरे पास समय नहीं है।[1] सिम्मियास, अतः हमें यथासाध्य चेष्टा करके इसी जीवन में ज्ञान तथा पुण्य प्राप्त करना चाहिए। इसका पुरस्कार बहुत भव्य और अपेक्षा बहुत बड़ी है।

मैंने जिस प्रकार से वर्णन किया है, कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह नहीं कहेगा कि सभी बातें ऐसी ही हैं। पर वह यह विश्वास जरूर करेगा कि आत्मा और उसके निवासस्थान के संबंध में इसी प्रकार की बात सत्य है। ऐसा यह देखते हुए कहा जा रहा है कि आत्मा अमर है, यह प्रमाणित है और इसी विश्वास पर सब कुछ न्योछावर करना उपयुक्त है। इस सौदे में जोखिम कम है और मनुष्य को चाहिए कि अपने

---

1. परलोक में जो सजा और जजा दी जाती है, उनका ब्योरा रिपब्लिक 10, 6 ए, 14 बी आदि में दिया गया है। इस संबंध में इस अंश के साथ आर्मीनियस के पुत्र एर की कहानी पढ़ने लायक है।

संदेहों को ऐसे मंत्रों से सम्मोहित कर ले। इसीलिए मैं बराबर सारे समय इस कहानी को बढ़ाता रहा हूं। यदि मनुष्य ने इस जीवन में सुख नहीं भोगे और शरीर की सज्जा आदि का परित्याग कर दिया है, तो उसे आत्मा के भविष्य को देखकर खुश रहना चाहिए क्योंकि ये भोग तुच्छ हैं। और वह यह समझ चुका है कि इन चीजों से उसे लाभ नहीं बल्कि हानि ही होगी। इसके बजाए यदि उसने गंभीरता के साथ शिक्षा के सुख का अनुसरण किया है और संयम, न्याय, साहस, स्वतंत्रता और सत्य के अलंकार से अपनी आत्मा को अलंकृत किया है (बात यह है कि यह अलंकार उसी के हैं) तो परलोक की यात्रा के लिए जब भी भाग्य उसे निमंत्रण दे, वह तैयार ही रहेगा। सिम्मियास और सिबिस, आप और बाकी लोग किसी भव्य दिन अपने-अपने समय के अनुसार इस यात्रा के लिए चलेंगे। पर मुझे तो दिखता है कि कोई दुखांत कवि कहेगा, भाग्य ने अब बुलाया है। मेरे स्नान का समय हो रहा है। मैं समझता हूं कि विषपान के पहले मैं स्नान कर लूं और स्त्रियों को यह कष्ट न दूं कि वे मेरी मृत देह को स्नान कराएं।

जब वह बोल चुके तो क्रीटो ने कहा, सुकरात, ऐसा ही हो। पर क्या आपको अपने बच्चों या किसी और चीज के बारे में अपनी स्त्री को या मुझे कोई आदेश देना है ? हम आपकी सबसे अच्छी सेवा किस तरह कर सकते हैं ?

क्रीटो, आप ऐसे सब कार्य करें, जिनका मैं हमेशा जिक्र करता रहा हूं, मेरी सेवा करेंगे। अपनी सम्हाल रखिए। उस हालत में आप मेरी और मेरे लोगों की और साथ ही अपने लोगों की भी सेवा करेंगे यद्यपि आप अभी इसके लिए कोई वायदा नहीं कर रहे हैं। पर यदि आप अपने संबंध में लापरवाही करेंगे और आज की आलोचना में तथा दूसरे समय में जीवन के मार्ग के संबंध में जो कुछ बताया है, आप उस मार्ग पर न चलेंगे, तो आप चाहे इस समय कितनी भी गंभीर और कड़ी प्रतिज्ञा करें, वे किसी काम की न होंगी।

क्रीटो ने कहा, हम यथासाध्य प्रयास करेंगे। पर यह तो बताइए कि हम आपको किस प्रकार समाधि दें ?

सुकरात ने उत्तर दिया, जैसे भी आप चाहें। बस इतनी बात का ख्याल करें कि आप मुझे पहले पकड़ें और मुझे अलग न होने दें।

यह कहकर उन्होंने हम लोगों की तरफ मुस्कराहट के साथ देखा और कहा, मेरे मित्र, मैं क्रीटो को यह नहीं समझा सका कि मैं वह सुकरात हूं जो आपके साथ बात कर रहा था और अपने तर्कों को पेश कर रहा था। वह सोचते हैं कि मैं वह शरीर हूं जिसे वह अभी थोड़ी देर में लाश के रूप में देखेंगे और अब वह यह पूछते हैं कि मुझे कैसे दफनाना चाहिए। मैंने जो भी तर्क दिए हैं, उनसे यही प्रमाणित होता है कि विषपान करने के बाद मैं आपके साथ नहीं रहूंगा बल्कि मैं दिव्य सुख में विलीन हो जाऊंगा और यही कह कर हमने आपको और अपने को समझाया था। पर लगता है कि समझाने का क्रीटो पर कोई असर नहीं हुआ। इस प्रकार से, आप सब लोग उनके

सामने मेरे जमानतदार हो जाएं जैसे वह इस मुकदमे के दौरान मेरे जमानतदार थे—पर एक दूसरे रूप में। वह इसके जमानतदार हों कि जब मर जाऊंगा तो चला जाऊंगा और आपके साथ नहीं रहूंगा। उस हालत में वह मेरी मृत्यु पर अधिक उत्तेजित न होंगे और जब वह मेरे शरीर को जलते हुए या दफन होते हुए देखेंगे, तो उनको कष्ट नहीं होगा क्योंकि तब वह यह नहीं सोचेंगे कि मैं बहुत भयानक कष्ट भोग रहा हूं। मेरी अंत्येष्टि क्रिया पर वह यह नहीं कहेंगे कि वह सुकरात को दफना रहे हैं या कब्र में ले जा रहे हैं या मिट्टी के नीचे डाल रहे हैं। बात यह है, प्रिय क्रीटो, आपको यह जानना चाहिए कि शब्दों को गलत तरीके से इस्तेमाल करना न केवल एक दोष है बल्कि इससे आत्मा में बुराई पैदा होती है। आप लोग खुश रहें और यह कहें कि आप मेरे शरीर को दफना रहे हैं—चाहे जिस भी तरह से उसे दफनाया जाए, यह आपकी खुशी है।

इन शब्दों के साथ वह उठे और दूसरे कमरे में स्नान करने के लिए गए। क्रीटो उनके साथ गए और हमें प्रतीक्षा करने के लिए कह गए। पहले हम लोग प्रतीक्षा करते रहे और जो चर्चा हुई थी, उसी पर बातचीत करते और उस पर बहस करते रहे और हम पर जो विपत्ति पड़ी है उसकी भयंकरता पर बातचीत करते रहे। ऐसा लगता था जैसे हमारे पिता की मृत्यु होने जा रही हो और हम सारी जिंदगी अनाथ रहेंगे। जब वह नहा चुके, उनके बच्चे उनके पास लाए गए। उनके दो बच्चे बहुत छोटे और एक बच्चा बड़ा था। और जब उनके परिवार की स्त्रियां आईं, तो उन्होंने क्रीटो के सामने उनसे बातचीत की और उन्हें अपनी अंतिम आज्ञाएं दीं। इसके बाद उन्होंने स्त्रियों और बच्चों को भेज दिया और वह हमारे पास लौट आए। इस समय तक सूर्यास्त की बेला आ चुकी थी क्योंकि वह दीर्घकाल तक भीतर रहे। स्नान के कमरे से हमारे पास चले आने के बाद कोई विशेष बातचीत नहीं हुई। तुरंत ही जल्लाद लोग आ गए और उनके सामने खड़े हो गए और बोले, सुकरात, मैं जानता हूं कि मैं आपको दूसरों की तरह युक्तिहीन नहीं पाऊंगा। दूसरे मुझसे क्रोध करते हैं और मुझे उस समय गालियां देते हैं—जब मैं उन्हें विषपान करने के लिए कहता हूं और बताता हूं कि अधिकारियों ने हमें ऐसा करने के लिए मजबूर किया है। अब तक जो लोग यहां आए हैं, मैंने उन सबमें आपको बहुत भव्य, श्रेष्ठ और शिष्ट पाया है। मैं निश्चित हूं कि आप मुझ पर क्रोध नहीं करेंगे बल्कि उन पर क्रोध करेंगे जिनके संबंध में आप जानते हैं कि दोष उनका है। अतः विदाई ! जहां तक हो सके इसे साधारण ढंग से सहिए। आप जानते होंगे कि मैं किसलिए आया हूं। यह कहकर रोता हुआ वह दूसरी तरफ चला गया।

सुकरात ने उसकी तरफ देखा और कहा, विदाई ! आप जो कुछ कहेंगे उसका मैं पालन करूंगा।

इसके बाद वह हमारी तरफ मुड़े और बोले, देखिए यह आदमी कितना शालीन और श्रेष्ठ व्यक्तियों में है। जब से मैं यहां हूं, तब से यह बराबर मेरे पास आता रहा

है और बातचीत करता रहा है। और अब यह मेरे लिए किस तरह उदारता के साथ रो रहा है। क्रीटो, आइए हम उनकी आज्ञा का पालन करें। यदि विष तैयार है, तो उसे लाया जाए और यदि तैयार नहीं है तो उसे जल्दी तैयार किया जाए।

क्रीटो ने उत्तर दिया, नहीं सुकरात, मैं समझता हूं कि सूर्य अभी पहाड़ों पर है और अस्त नहीं हुआ। इसके अलावा मैं जानता हूं कि बहुत से लोग घोषणा कर दिए जाने के बाद बड़ी देर में विषपान करते हैं और बहुत प्रेम से खाते-पीते हैं और अपने चुने हुए मित्रों की संगत करते हैं। इसलिए आप अभी जल्दी न कीजिए। अभी समय है।

सुकरात ने कहा, क्रीटो, आप जिनके संबंध में बातचीत कर रहे हैं, वे स्वाभाविक रूप से ऐसा करते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि ऐसा करके वे लाभवान होंगे। पर मैं स्वाभाविक रूप से ऐसा नहीं करूंगा क्योंकि सोचता हूं कि थोड़ी देर बाद विषपान करने से मुझे कुछ लाभ नहीं होगा। बल्कि इससे मेरा ओछापन ही जाहिर होगा कि मैं लोभी बन कर जीवन को कुछ मुहूर्त बचाने की कोशिश कर रहा हूं, जो पहले ही समाप्त हो गया है। इसलिए मैं जो कुछ कर रहा हूं, उसे करने से इनकार न करें।

तब क्रीटो ने अपने दास से, जो पास खड़ा था, एक इशारा किया और वह दास बाहर चला गया और थोड़ी देर बाद वह उस व्यक्ति के साथ लौटा जो विष देनेवाला था और एक प्याले में तैयार करके लाया था। जब सुकरात ने उनको देखा तो कहा, मेरे प्रिय बंधु, आप जानते तो होंगे कि मुझे क्या करना है।

उसने कहा, आपको इसे पीना है और इसके बाद टहलना है, जब तक कि आपको पैर भारी न लगें। फिर आप लेट जाएं। यह स्वयं अपना काम करेगा—यह कह कर उसने सुकरात को वह प्याला थमाया जिसे, एचेक्राटिस, सुकरात ने बड़ी खुशी से बिना कांपे ले लिया। न तो उनके चेहरे का रंग बदला, न माथे पर शिकन आई। उन्होंने उस आदमी को अपनी निर्दोष दृष्टि से देखा और पूछा, पानी से मैं कुछ चढ़ाऊं तो कैसा रहे ? क्या मैं ऐसा कर सकता हूं ?

उसने उत्तर दिया, सुकरात, हम उतना ही विष तैयार करते हैं, जितना कि हम जरूरी समझते हैं।

सुकरात ने कहा, मैं समझता हूं। पर मुझे देवताओं से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि इसके बाद मेरी यात्रा शुभ हो। यही मेरी प्रार्थना है। तथास्तु ! इन शब्दों के साथ उन्होंने प्याले को अपने होंठों से लगा लिया और उस विष को शांति के साथ खुशी से पी लिया। उस समय तक हम लोगों में से अधिकांश अपने को काफी अच्छी तरह नियंत्रित रख सके थे। पर जब हमने उन्हें विष पीते हुए देखा और जब वह विष समाप्त हो गया, तब फिर हम लोग अपने को संयत नहीं रख सके। मेरे न चाहने पर भी आंसू झरझर गिरने लगे और मैंने अपना मुंह ढंक लिया और मैं रोने लगा। यह मैं

उनके लिए नहीं कर रहा था बल्कि एक दुर्भाग्य पर कर रहा था कि मैंने एक ऐसा मित्र खो दिया। इसके पहले ही क्रीटो अपने आंसुओं को रोक नहीं सके थे और वह चले गए थे। अपोलोडोरस, जो बराबर रोता ही रहा था, बहुत चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगा और उसका नतीजा यह हुआ कि उसके चिल्लाने और कष्ट से हम लोग भी सब बिल्कुल संयमहीन हो गए। सुकरात शांत बने रहे। उन्होंने कहा, मेरे मित्र, आप लोग यह क्या कर रहे हैं। मैंने स्त्रियों को खास करके इसीलिए भेज दिया कि वे इस तरह कष्ट न दें क्योंकि मैंने यह सुन रखा है कि मनुष्य को शांति से मरना चाहिए। इसलिए आप लोग शांत रहें और अपने को जब्त करें।

जब हम लोगों ने यह सुना तो हम लोग लज्जित हुए और हम लोगों ने रोना बंद कर दिया। पर वह टहलने लगे और तब तक टहलते रहे जब तक कि उनके पैर भारी नहीं हो गए और फिर वह चित्त होकर शांति से सो गए—जैसाकि उन्हें करने के लिए कहा गया था। जिस व्यक्ति ने उनको विष दिया था, वह अब उनके पैरों और तलुओं की समय समय पर जांच करने लगा।

इसके बाद उसने सुकरात से उनके पैरों को जोरों से दबाकर पूछा कि क्या इनमें अनुभूति है ? सुकरात ने उत्तर दिया, नहीं। उसने फिर उनके पैरों को दबाया और इस तरह वह ऊपर और ऊपर दबाता गया और हमें यह दिखाया कि वह ठंडे और कड़े पड़ रहे हैं। सुकरात ने खुद शरीर को टटोला और ऐसा ही अनुभव किया। कहा कि जब यह मेरे हृदय तक पहुंच जाएगा तब मैं मर जाऊंगा। इस समय तक वह कमर तक अनुभूतिहीन हो चुके थे। तब उन्होंने अपना मुंह खोल दिया जो ढंक दिया गया था और अंतिम बार उन्होंने कुछ कहा। उन्होंने कहा, क्रीटो, एस्क्लेपियस के एक मुर्गे का ऋणी हूं। याद करके उसे दे देना।[1]

क्रीटो ने कहा, यह कर दिया जाएगा। और कोई बात हो तो आप कहें।

उन्होंने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया, पर थोड़ी देर बाद एक स्पंदन हुआ और उस आदमी ने उनका चेहरा खोल दिया। उनकी आंखें स्थिर हो चुकी थीं। तब क्रीटो ने उनका मुंह और उनकी आंखें बंद कर दीं।

एचेक्राटिस, हमारे मित्र का अंत इस प्रकार हुआ। वह एक आदर्श पुरुष थे। वह सबसे ज्ञानी, न्यायी और श्रेष्ठतम व्यक्ति थे।

---

1. ये शब्द शायद इस प्रथा से संबंध रखते हैं, जिसमें साधारणतः किसी रोग से मुक्त होने पर एस्क्लेपियस को कुछ भेंट में दिया जाता है। मृत्यु 'जीवन रूपी ज्वर से' मुक्ति है। उदाहरण के लिए देखिए 66 बी, 67 सी आदि। एक दूसरी व्याख्या यह है कि इसमें एक तुच्छ धार्मिक कर्तव्य को न करने का हवाला दिया गया।